Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1116/1052-54/છ, તા. 28-11-2016-થી મંજૂર

हिन्दी

(प्रथम भाषा)

कक्षा 10

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।
सभी भारतवासी मेरे भाई–बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परम्परा पर गर्व है।
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता–पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

तमसो मा ज्योतिर्गमय
गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेक्टर 10–ए, गांधीनगर–382 010

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर
इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन हैं।
इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

विषय परामर्शन

डॉ. वीरेन्द्रनारायण सिंह

लेखन-संपादन

डॉ. किशोरीलाल कलवार (कन्वीनर)

श्री विजयकुमार तिवारी

डॉ. सुल्तान अहमद

डॉ. राजेन्द्रपाल सिंह राणा

डॉ. शान्तिबहन शर्मा

श्री जे. पी. चौहान

समीक्षा

डॉ. रायसींग चौधरी

श्री मुकेशकुमार तिवारी

डॉ. पारूल एम. दवे

डॉ. ईश्वरसिंह चौहान

संयोजन

डॉ. कमलेश एन. परमार

(विषय संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-संयोजन

श्री आशिष एच. बोरीसागर

(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया

(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष्य में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई यह **कक्षा 10, हिन्दी (प्रथम भाषा)** की पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नई पाठ्यपुस्तक के हस्तप्रत निर्माण में एन.सी.ई.आर.टी. तथा अन्य राज्यों के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात की नई पाठ्यपुस्तकों को गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय, इसके लिए संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयास किया है।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रकाशित करने से पहले इसी विषय के विषय विशेषज्ञों तथा इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों द्वारा सर्वांगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिविर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक का मंजूरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड से प्राप्त हुए सुझावों के अनुरूप इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके इसे प्रकाशित किया गया है।

नये अभ्यासक्रम का एक उद्देश्य है, इस स्तर के छात्र व्यावहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा अभिव्यक्ति को विशेष असरकारक बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा के परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खूबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में उनका प्रयोग करना सीखें, इसलिए भाषा-अभिव्यक्ति एवं लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रुचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है।

डॉ. एम. आई. जोषी	**डॉ. नीतिन पेथाणी**
नियामक	कार्यवाहक प्रमुख
दिनांक : 16-10-2017	गांधीनगर

प्रथम आवृत्ति : 2017 **पुनः मुद्रण :** 2018

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से डॉ. एम. आई. जोषी, नियामक

मुद्रक :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह *

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में सँजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) माता-पिता या संरक्षक के रूप में 6 से 14 वर्ष तक की उम्रवाले अपने बालक या प्रतिपाल्य को यथास्थिति शिक्षा का अवसर प्रदान करे।

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

1.	दो पद	(मुक्तक)	रैदास	1
2.	जिन्दगी और गुलाब के फूल	(कहानी)	उषा प्रियंवदा	4
3.	कृष्णभक्ति के पद	(मुक्तक)	1. सूरदास 2. मीराबाई	13
4.	तुम कब जाओगे, अतिथि	(व्यंग्य)	शरद जोशी	18
5.	वाटिका-प्रसंग	(महाकाव्य-अंश)	तुलसीदास	22
6.	उत्साह	(निबंध)	रामचन्द्र शुक्ल	25
7.	रानी और कानी	(कविता)	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	32
8.	अशफ़ाक उल्ला खाँ	(आत्मकथांश)	रामप्रसाद बिस्मिल	35
9.	समर शेष है	(कविता)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	40
10.	शत्रु	(कहानी)	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	44
11.	क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !	(गीत)	हरिवंशराय 'बच्चन'	48
12.	एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा	(यात्रावर्णन)	बचेन्द्रीपाल	51
13.	मैं तुम लोगों से दूर हूँ	(कविता)	गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	58
14.	डायरी का एक पन्ना	(डायरी)	मोहन राकेश	61
15.	विश्वशांति (अनूदित)	(कविता)	उमाशंकर जोशी	64
16.	विवेक वाणी	(व्याख्यान)	स्वामी विवेकानंद	67
17.	शबरी	(खंडकाव्य-अंश)	नरेश मेहता	71
18.	गिरगिट	(कहानी)	अंतोन चेखव	74
19.	डेली पैसेंजर	(कविता)	अरुण कमल	79
20.	हानूश	(नाटक-अंश)	भीष्म साहनी	82
21.	किस्सा जनतंत्र	(कविता)	सुदामा पांडेय 'धूमिल'	92
22.	द	(निबंध)	प्रतापनारायण मिश्र	96
23.	चक्रवात	(कविता)	ओमप्रकाश वाल्मीकि	99
24.	जहाँ आकाश नहीं दिखाई देता	(रिपोर्ताज)	विष्णु प्रभाकर	103
25.	उजले दिन जरूर	(कविता)	वीरेन डंगवाल	108
26.	तताँरा-वामीरो	(लोक-कथा)	लीलाधर मंडलोई	111
27.	याद करेगी धरती	(कविता)	निर्मला गर्ग	117
28.	दान की बात	(उपन्यास अंश)	रघुवीर चौधरी	120
29.	गज़ल	(गज़ल)	ज्ञानप्रकाश विवेक	129
30.	नदी बहती रहे	(लेख)	भगवतीशरण सिंह	132
31.	प्रेमपत्र	(कविता)	बद्री नारायण	137

- भाषा-विश्लेषण (व्याकरण) : संधि, समास, अलंकार 140
- रचनात्मक लेखन : निबंध लेखन, सूचना लेखन, अनौपचारिक पत्र लेखन 146
- प्रयोजनमूलक हिन्दी : सार लेखन, संचार माध्यम, हिन्दी की विविध भूमिकाएँ, डायरी-लेखन 151

पूरक वाचन

1.	ऐ अजनबी	(कविता)	राही मासूम रजा	158
2.	काबुलीवाला	(कहानी)	रवीन्द्रनाथ टैगोर	160
3.	मेरे हिमालय के पासबानो	(गीत)	गोपालदास 'नीरज'	166
4.	राजर्षि का जीवन-दर्शन	(संस्मरण)	माखनलाल चतुर्वेदी	168

●●●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1 पद

रैदास

(जन्म : सन् 1388 ई.; निधन : 1518 ई.)

(अनुमानित)

संत रैदास का जन्म काशी में हुआ था। निम्न वर्ग में जन्म पाकर भी उत्तम जीवन शैली, सदाचरण तथा उत्कृष्ट साधना के कारण वे भारतीय धर्मसाधना के इतिहास में आज भी आदर के साथ याद किए जाते हैं। अपनी संत प्रकृति के अनुरूप ही उन्होंने प्रयाग, मथुरा, वृंदावन, दिल्ली, पुष्कर इत्यादि स्थानों का परिभ्रमण किया था।

रैदास-रचित लगभग दो सौ पद मिलते हैं। वे गुरुभक्ति, नाम-स्मरण, प्रेम, कर्तव्यपालन तथा सत्संग को महत्व देते हैं। उन्होंने मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा आदि बाह्य विधानों का विरोध करते हुए आभ्यंतरिक साधना पर बल दिया। उनकी भाषा ब्रजभाषा ही है, किन्तु उसमें अवधी, खड़ीबोली, राजस्थानी और उर्दू-फ़ारसी शब्दों का भी मिश्रण है। भावों की तन्मयता के कारण उनकी भाषा प्रभावशाली बनी है।

इस पद में रैदास ने ईश्वर-भक्ति के लिए सभी आशाओं को छोड़कर एकमात्र ईश्वर की शरण में जाने का मार्ग सुझाया है। ईश्वर के प्रति एकात्मभाव से समर्पण ही ईश्वर-प्राप्ति का एकमात्र साधन है।

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ।
गावनहार को निकट बताऊँ।
जब लगि है इहि तन की आसा, तब लगि करै पुकारा।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की तब को गावनहारा॥
जब लगि नदी न समुद्र समावै, तब लगि बढ़ै हँकारा॥
जब मन मिल्यौ रामसागर सौं, तब यह मिटी पुकारा॥
जब लगि भगति मुकति की आसा, परमतत्व सुनि गावै॥
जहँ जहँ आस धरत है इहि मन, तहँ तहँ कछु न पावै॥
छाँड़ै आस निरास परम पद, तब सुख सतिकर होई॥
कहि रैदास जासौं और करत है, परम तत्व अब सोई॥

शब्दार्थ-टिप्पण

गावनहार गानेवाला **लगि** तक **इहि** इस **को** कौन **हँकारा** अहंकार, घमंड, **मुकति** मुक्ति, मोक्ष **छाड़ै** छोड़कर, **सतिकर** निश्चय ही।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) रैदास अब क्यों गाना नहीं चाहते ?

(2) आदमी ईश्वर को कब तक पुकारता रहता है ?

(3) नदी में अहंकार कब तक रहता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्य में दीजिए :

(1) वास्तविक सुख कब मिलता है ?

(2) मन की पुकार कब मिट जाती है, क्यों ?

3. नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) जहँ-जहँ आस धरत है, इहि मन तहँ-तहँ कछु न पावै।

(2) जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावनहारा।

4. समानार्थी शब्द लिखिए :

अहंकार, मयूर, सत्य।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पाठ में दिए गए पद को याद करके कक्षा में गाकर सुनाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों से कबीर, गुरुनानक के पाँच पदों का संकलन तैयार करवाइए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 जिन्दगी और गुलाब के फूल

उषा प्रियंवदा

(जन्म : सन् 1930 ई.)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के ज़िले कानपुर में हुआ था। ये उन कथाकारों में से एक हैं, जिनके उल्लेख के बिना हिंदी साहित्य का इतिहास पूरा नहीं होता। इन्होंने अपनी उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। आज के युग में संबंधों में दिखायी देनेवाली विडंबनाओं को उजागर करनेवाली इनकी कहानियाँ 'ज़िंदगी और गुलाब के फूल' और 'वापसी' बहुत अधिक प्रसिद्ध हैं। इनके कहानी-संग्रहों में 'ज़िंदगी और गुलाब के फूल' के अलावा 'कितना बड़ा झूठ' और 'एक कोई दूसरा' भी काफ़ी प्रसिद्ध हैं। इनके उपन्यास 'पचपन खंभे, लाल दीवारें' पर धारावाहिक भी बन चुका है।

यहाँ संकलित 'ज़िंदगी और गुलाब के फूल' कहानी आज के समय की उस विडंबना को सामने लाती है, जिसमें रिश्ते रक्त से नहीं, बल्कि पैसों से तय होते हैं। इसमें सुबोध, उसकी माँ, उसकी बहन वृंदा और उसकी प्रेमिका शोभा की कहानी है, आर्थिक परिस्थितियों के बदल जाने से जिनके रिश्ते भी बदल जाते हैं। सुबोध के पास जब तक नौकरी रहती है, उसका घर उसे ही केंद्र बनाकर चलता है, लेकिन जैसे ही उसकी नौकरी छूट जाती है और उसकी बहन वृंदा की नौकरी लग जाती है, उसका घर वृंदा को केंद्र बनाकर चलने लगता है। ऊपर से उसकी प्रेमिका शोभा की सगाई भी कहीं और हो जाती है।

सुबोध काफी शाम को घर लौटा। दरवाज़ा खुला था, बरामदे में हल्की रोशनी थी, और चौके में आग की लपटों का प्रकाश था। अपने कमरे में घुसते ही उसे वह खाली-खाली-सा लगा। दूसरे क्षण ही वह जान गया कि कमरे का कालीन निकाल दिया गया है और किनारे रखी हुई मेज़ भी नहीं है। मेज़ पर कागज़ के फूलों का जो गुलदस्ता रहता था, वह कुछ ऐसे कोण से खिड़की पर रखा था कि लगता था, जैसे मेज़ हटाते वक्त उसे वहाँ वैसे ही रख दिया गया हो।

उसने बहुत कोमलता से गुलदान उठा लिया। कागज़ के फूल थे तो क्या, गुलदान तो बहुत बढ़िया कट ग्लास का था। पहले कभी-कभी शोभा अपने बाग के गुलाब लगा जाती थी, पर अब तो इधर, कई महीनों से यही बदरंग फूल थे और शायद यही रहेंगे। सुबोध ने फिर खिड़की पर गुलदान रखते हुए सोचा, हाँ, यही रहेंगे, क्योंकि शोभा की सगाई हो गई थी, और उसका भावी पति किसी अच्छी नौकरी पर था। सुबोध ने कोट उतारकर खूँटी पर टाँग दिया...आखिर कब तक शोभा के पिता उसके लिए अपनी लड़की कुँवारी बैठाए रखते ?...सुबोध खिड़की के पार देख रहा था—धूल-भरी साँझ, थके चेहरे, बुझे हुए मन...

फिर वह माँ के पास आया। उसकी माँ चौके में चूल्हे के पास बैठी थी। वह वहीं पीढ़े पर बैठ गया। कुछ देर कोई नहीं बोला। माँ ने दो-एक बार उसे देखा ज़रूर, पर कुछ कहा नहीं, पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी रही, ऐसी मूर्ति जिसकी केवल आँखें जीवित थीं।

एकाएक सुबोध पूछ बैठा, ''अम्मा, मेरे कमरे का कालीन कहाँ गया ? धूप में डाला था क्या ?''

बाएँ हाथ से धोती का पल्ला सिर पर खींचती हुई माँ बोली, ''वृन्दा अपने कमरे में ले गई है। उसकी कुछ सहेलियाँ आज खाने पर आएँगी।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सुबोध को अपने पर आश्चर्य हुआ कि वह इतनी-सी बात पहले ही क्यों न समझ गया ? उसकी सारी चीज़ें वृन्दा के कमरे में जा चुकी थीं, सबसे पहले पढ़ने की मेज़, फिर घड़ी, आरामकुर्सी और अब कालीन और छोटी मेज़ भी। पहले अपनी चीज़ वृन्दा के कमरे में सजी देख उसे कुछ अटपटा लगता था, पर अब वह अभ्यस्त हो गया था यद्यपि उसका पुरुष-हृदय घर में वृन्दा की सत्ता स्वीकार न कर पाता था।

उसे अनमना हो आया देख माँ ने कहा, ''तुम्हारे इन्तज़ार में मैंने चाय भी नहीं पी। अब बना रही हूँ, फिर कहीं चले मत जाना।'' और पतीली का ढंकना उठाकर देखने लगी।

सुबोध दोनों हाथों की उँगलियाँ एक-दूसरे में फँसाए बैठा रहा। उसके कन्धे झुक गए और उसके चेहरे पर विषाद और चिन्ता की रेखाएँ गहरी हो गई। सशंक नेत्रों से माँ उसे देखती रही। मन-ही-मन कई बातें सोची। कहने की, मौन का अन्तराल तोड़ने की, पर न जाने क्यों वाणी न दे सकी। उसकी आँखों के सामने ही सुबोध बदलता जा रहा था। इस समय उसके नेत्र माँ पर अवश्य थे, पर वह उनसे हज़ारों मील दूर था। मौन रहकर जैसे वह अपने अन्दर अपने-आपसे लड़ रहा हो। काश, सुबोध फिर वही छोटा-सा लड़का हो जाता, जिसके त्रास वह अपने स्पर्श से दूर कर देती थी। पर सुबोध जैसे अब उसका बेटा नहीं था, वह एक अनजान, गम्भीर, अपरिचित पुरुष हो गया था, जो दिन-भर भटका करता था, रात को आकर सो रहता था। सुख के दिन उसने भी जाने थे। अच्छी नौकरी थी, शोभा थी । अपने पुराने गहने तुड़ाकर माँ ने कुछ नई चीज़ें बनवा ली थीं, और अब वे नये बुन्दे और बालियाँ, हार और कंगन बक्स में पड़े थे। शोभा की शादी होने वाली थी और सुबोध बदलता जा रहा था।

दो धुंधली, जल-भरी आँखें दो उदास आँखों से मिलीं। उनमें एक मूक अनुनय थी। सुबोध ने माँ के चेहरे को देखा और मुसकरा दिया। शब्द निरर्थक थे, दोनों एक-दूसरे की गोपन व्यथा से परिचित थे। उनमें एक मूक समझौता था। माँ ने इधर बहुत दिनों से सुबोध से नौकरी के विषय में नहीं पूछा था, और सुबोध भी अपने-आप यह प्रसंग न छेड़ना चाहता था।

उसने कहा, ''देखो, शायद पानी खौल गया।''

माँ चौंकी, दो बार जल्दी-जल्दी पलक झपकाए। फिर खड़ी होकर आलमारी से चायदानी उठाई। उसे गर्म पानी से धोया, बहुत सावधानी से चाय की पत्ती डाली और पानी उंड़ेला। फिर उसपर टीकौजी लगा दी। वह टीकौजी वृन्दा ने काढ़ी थी और उसकी शादी की आशा में बरसों माँ बक्स में रखे रहीं। अब उसे रोज़ व्यवहार करना माँ की पराजय थी। उससे बड़ी पराजय थी सुबोध की, जो अपनी छोटी बहन की शादी नहीं कर पाया था। टीकौजी पर एक गुलाब का फूल बना था और सुबोध उन गुलाब के फूलों की याद कर रहा था, जो शोभा उसके कमरे में सजा जाती थी, उन बाली और बुन्दों की सोच रहा था, जो शोभा अब नहीं पहनेगी...

दूध गरम कर और प्याला पोंछकर माँ ने सुबोध के आगे रख दी। सुबोध पीढ़े पर पालथी मारकर बैठ गया, और चाय छानने लगा।

माँ अपनी कोठरी में जाकर कुछ खटर-पटर कर रही थी। ज़रा देर में ही एक तश्तरी में चाँदी का वर्क लगा हुआ सेब का मुरब्बा लाकर माँ ने उसके सामने रख दिया और बड़े दुलार से कहा, ''खा लो !''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अपने विचार पीछे ठेलकर, कुछ सुस्त हो, हँसते हुए सुबोध ने कहा, ''अरे अम्मा ! बड़ी खातिर कर रही हो ! क्या बात है ?''

माँ ने स्नेह-कातर कंठ से कहा, ''तुम कभी ठीक वक्त से आते भी हो ! रात को दस-ग्यारह बजे आए। ठण्डा-सूखा खा लिया। सुबह देर से उठे, दोपहर को फिर गायब। कब बनाऊँ, कब दूँ ?''

यह चर्या तो सुबोध की पहले भी थी। तब वृन्दा और माँ दोनों उसके इंतज़ार में बैठी रहती थीं। वृन्दा हमेशा बाद में खाती थी। सुबोध की दिनचर्या के ही अनुसार घर के काम होते थे। पर तब वृन्दा नौकरी नहीं करती थी, तब सुबोध बेकार न था। अब खाना वृन्दा की सुविधा के अनुसार बनता था। सुबह जल्दी उठना होता था, इसलिए रात को जल्दी खाकर सो जाती थी। अब सुबोध जब साढ़े आठ पर सोकर उठता तो आधा खाना बन चुकता था। जब नौ बजे वृन्दा खा लेती, तो वह चाय पीता। पहले जब तक वह स्वयं अखबार न पढ़ लेता था, वृन्दा को अख़बार छूने की हिम्मत न पड़ती थी, क्योंकि वह हमेशा पन्ने गलत तरह से लगा देती थी। अब उसे अखबार लेने वृन्दा के कमरे में जाना पड़ता था और इसीलिए उसने घर का अखबार पढ़ना छोड़ दिया था।

जूठे बर्तन समेटते हुए माँ ने कुछ कहना चाहा, पर रुक गई। उसका असमंजस भाँपकर सुबोध ने पूछा, ''क्या है ?''

प्याला धोते हुए मंद स्वर में माँ ने कहा, ''घर में तरकारी कुछ नहीं है।''

सुबोध ने उठकर कील पर टँगा मैला थैला उतार लिया। माँ ने आंचल की गांठ खोलकर मुड़ा-तुड़ा एक रुपये का नोट उसे थमा दिया और कहा, ''जरा जल्दी आना ! अभी सारी चीजें बनाने को पड़ी हैं।''

सुबोध कोट पहने बिना ही बाज़ार चल दिया। यह पतलून वह काफी दिनों से पहन रहा था। कमीज़ के फटे हुए कफ और कालर काफी गन्दे थे, पर उसने परवाह नहीं की। पर दोनों हाथों से थैले का मुँह पकड़कर उसमें गन्दी तराजू से मिट्टी-लगे आलू डलवाते हुए सुबोध को एक झटका-सा लगा। उसके पास ही किसी का पहाड़ी नौकर भाव पूछ रहा था। उसके चीकट बालों से माथे पर तेल बह रहा था, मुँह से बीड़ी का कड़वा धुआँ निकल रहा था। वह भी थैला लिए था और तरकारी लेने आया था। सुबोध अचानक ही सोच उठा कि वह कहाँ से कहाँ आ पहुँचा है ! अपने अफसर की अपमानजनक बात सुनकर तो उसने अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए इस्तीफा दे दिया था, लेकिन अब कहाँ है वह आत्मसम्मान ? छोटी बहन पर भार बनकर पड़ा हुआ है। उसे देखकर माँ मन ही मन घुलती रहती है। ज़िन्दगी ने उसे भी गुलाब के फूल दिए थे, लेकिन उसने स्वयं ही उन्हें ठुकरा दिया और अब शोभा भी.....

हाथ झाड़कर सुबोध ने पैसे दिए और चल पड़ा। उस सबके बावजूद उसके अन्दर एक तुष्टि का हल्का-सा आलोक था कि इस्तीफा देकर उसने ठीक ही किया। उसके जैसा स्वाभिमानी व्यक्ति अपमान का कड़वा घूँट कैसे पी लेता ? स्वाभिमान ? सुबोध के ओंठ एक कड़वी मुस्कान से खिंच उठे। वाह रे स्वाभिमानी ! उसने अपने-आपसे कहा। उसे वे सब बातें स्पष्ट होकर फिर याद आ गईं, वे बातें, जो रह-रहकर टीस उठती थीं। सुबोध स्मृति का एलबम खोलने लगा। हर चित्र स्पष्ट था।

नौकरी छोड़कर वह कुछ महीने घर नहीं लौटा, वहीं दूसरी नौकरी खोजता रहा और जब लौटा तो उसने घर का चित्र ही बदला हुआ पाया। उसकी अनुपस्थिति में वृन्दा ने उसकी मेज़ ले ली थी और उसके लौटने

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पर वृन्दा ने अवज्ञा से कहा था, "दादा, आप क्या करेंगे मेज़ का ? मुझे काम पड़ेगा।"

सुबोध कुछ तीखी-सी बात कहते-कहते रुक गया। कई साल में घिसट-घिसटकर बी.ए., एल.टी. (लाइसेंस ऑफ टीचिंग) कर लेने और मास्टरनी बन जाने से ही जैसे वृन्दा का मेज़ पर हक हो गया हो ! कोई अध्यापिका होने से ही पुस्तकों का प्रेमी नहीं हो जाता। सुबोध की उस मेज़ पर अब जूड़े के काँटे, नेल-पालिश की शीशी और गर्द-भरी किताबें पड़ी रहती थीं और फिर कुछ दिनों बाद माँ ने कहा, "वृन्दा को रोज़ स्कूल जाने में देर हो जाती है। अपनी अलार्म घड़ी दे दो, सुबोध !"

सुबोध ने कठोर होकर कहा था, "नई घड़ी खरीद क्यों नहीं लेती ? उसे क्या कमी है ?"

माँ ने आहत और भर्त्सनापूर्ण दृष्टि से उसे देखकर कहा, "उसके पास बचता ही क्या है ! तुम खर्च करते होते तो जानते !"

"नहीं, मुझे क्या पता ! हमेशा से तो वृन्दा ही घर का खर्च चलाती आई है। मैं तो बेकार हूँ, निठल्ला।" और झुँझलाकर सुबोध ने घड़ी उसे दे दी थी।

सबसे अधिक आश्चर्य तो उसे वृन्दा पर था। अक्सर वह सोच उठता कि यह वही वृन्दा है, जो उसके आगे-पीछे घूमा करती थी, उसके सारे काम दौड़-दौड़कर किया करती थी ! जब भी उसने चाय माँगी, वृन्दा ने चाय तैयार कर दी। और अब ? एक रात ज़रा देर से आने पर उसने सुना, वृन्दा बिगड़कर माँ से कह रही थी, "काम न धन्धा, तब भी दादा से यह नहीं होता कि ठीक वक्त पर खाना खा लें। तुम कब तक जाड़े में बैठोगी, माँ ? उठाकर रख दो, अपने-आप खा लेंगे।"

उसके बाद सुबोध रात को चुपचाप आता। ठंडा खाना खाकर अपने कमरे में लेट जाता। सुबह जग जाने पर भी पड़ा रहता और वृन्दा के चाय पी लेने पर उठकर चाय पीता। बाज़ार से सौदा ला देता। मैले ही कपड़े पहनकर बाहर चला जाता। और जब थक जाता, तो खिड़की के बाहर देखने लगता।

माँ प्रतीक्षा में दरवाज़े पर खड़ी थी। उनके हाथ में थैला देकर वह अपने कमरे में चला गया। कमरा उसे फिर नग्न और सूना-सा लगा। जूते उतारकर वह चारपाई पर लेट गया। चारपाई बहुत ढीली थी। उसके लेटते ही दरी सिकुड़ गई, तकिया नीचे खिसक आया। दरी की सिकुड़नें पीठ में गड़ती रहीं। सुबोध की आँखें बन्द थीं। हाथ शिथिल और कान अन्दर और बाहर के विभिन्न स्वर सुनते रहे। खिड़की के पास से गुज़रते दो बच्चे, सड़क पर किसी राही की बेसुरी बाजती बाँसुरी, खटखट करते दो भारी जूते, अन्दर बर्तन की हल्की खटपट, तरकारी में पानी पड़ने की छन्न और खींची जाती चारपाई के पायों की फर्श से रगड़...।

तभी बाहर का दरवाज़ा अचानक खुला और वृन्दा ने कुछ तीखे-से स्वर में पूछा, "अम्मा, दादा घर में हैं ?"

सुबोध सुनकर भी न उठा। माँ का उत्तर सुन वृन्दा उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़ी होकर बोली, "दादा, ताँगेवाले को रुपया भुनाकर बारह आने दे दो।"

सुबोध ने चप्पलों में पैर डाले, उसके हाथ से रुपया लिया और बाहर आया।

उसकी दृष्टि सामने खड़ी शोभा से मिल गई। उसके नमस्कार का संक्षिप्त उत्तर दे वह बाहर आ गया। नोट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुड़ाकर ताँगे वाले को पैसे दिए और फिर अन्दर नहीं गया। पड़ोस में एक परिचित के घर बैठ गया, और शतरंज की बाज़ी देखने लगा।

वहाँ बैठे-बैठे जब उसने मन में अन्दाज़ लगा लिया कि अब तक शोभा और निर्मला खाना खाकर चली गई होंगी, तो वह घर आया। सड़क पर सन्नाटा हो गया था। बत्तियों के आस-पास धुँधले प्रकाश का घेरा था, और पानवाला, ग्राहकों की प्रतीक्षा में चुप और स्थिर बैठा था।

वृन्दा ने झुंझलाकर कहा, ''कहाँ चले गए थे, दादा ? शोभा और निर्मला कब से घर जाने को बैठी हैं ! तुम्हें पहुँचाने जाना है।''

''मुझे मालूम नहीं था,'' सुबोध ने कहा।

''जैसे कभी शोभा को घर पहुँचाया नहीं है !'' वृन्दा ने कहा।

''तब,'' सुबोध ने सोचा, तब शोभा की सगाई कहीं और नहीं हुई थी, तब वह बेकार न था। शोभा उससे शरमाती थी, पर उसके गुलदान में फूल लगा जाती थी। माँ नये गहने बनवा रही थीं, और वृन्दा अपने कमरे में बैठी-बैठी कुढ़ती थी, क्योंकि बदसूरत थी और उससे कोई शादी करने को राज़ी नहीं होता था...

''अच्छा तो चलें,'' सुबोध ने शोभा की ओर नहीं देखा।

पर शोभा बोल पड़ी, ''हमें जल्दी नहीं है। आप खाना खा लीजिए।''

माँ ने कड़ाही चूल्हे पर चढ़ा दी। वृन्दा निर्मला को लेकर अपने कमरे में चली गई। सुबोध बैठ गया और शोभा ने उसके आगे तिपाई रख दी। फिर उसके रेशमी साड़ी का आँचल कमर में खोंस लिया और थाली लाकर उसके सामने रख दी। सुबोध नीची नज़र किए खाने लगा। चौके से बरामदे, बरामदे से चौके में बार-बार जाती हुई शोभा की साड़ी का बार्डर उसे दिखाई देता रहा, हरी साड़ी, जोगिया बार्डर, जिसपर मोर और तोते कढ़े हुए थे। कभी-कभी एड़ियाँ भी झलक उठतीं, उजली, चिकनी एड़ियाँ। सुबोध को लगता कि वह अतीत में पहुँच गया है। और शोभा वही है, वही जिससे कभी उसकी प्यार की बातें नहीं हुई, पर जो अनायास ही उससे शरमाने लगी थी। शायद उसे पता चल गया था कि उसके पिता ने सुबोध की बातचीत शुरू कर दी है...और शायद अब तक शादी भी हो जाती, अगर सुबोध को कोई दूसरी नौकरी मिल जाती, या अगर सुबोध पहली अच्छी नौकरी न छोड़ता...

सुबोध ने खाना बन्द कर दिया। पानी पीकर, हाथ धोने उठा, तो शोभा झट से हाथ धुलाने लगी। उसकी आँखों में विनयभरी कातरता थी, उसके मुख पर उदासी, पर उसके बालों से सुबास आ रही थी।

जब वह ताँगा लेकर आया, तो शोभा माँ के पास चुप खड़ी थी और माँ उसके सिर पर हाथ फेर रही थी।

रास्ते-भर दोनों चुप रहे। सबसे पहले निर्मला का घर आया, उसके उतर जाने पर शोभा ने आँसू-भरे कंठ से कहा, ''आप यहाँ पीछे आ जाइए न !'' वह उतरकर पीछे आ गया, तब बोली, ''कुछ बोलेंगे नहीं ?''

''क्या कहूँ ?'' सुबोध ने उसकी ओर मुड़कर उसे देखते हुए कहा।

शोभा की आँखें छलक रही थीं। पोंछकर कहा, ''मैंने तो पिताजी से बहुत कहा।...फिर आखिर मैं क्या करती ?''

''मैं तो कुछ भी नहीं कह रहा हूँ। इस बात को स्वीकार कर लो कि मैं ज़िंदगी में फेलियर कम्पलीट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फेलियर । कुछ नहीं कर सका ! जैसे मेरी ज़िन्दगी में अब फुलस्टाप लग गया है। अब ऐसे ही रहूँगा। तुम्हारे फादर ने ठीक ही किया। तुम सुखी होओगी। प्यार से बड़ी एक और आग होती है, भूख की ! वह आग धीरे-धीरे सब कुछ लील लेती है...''

''आप इतने बिटर क्यों हो गए हैं ?''

''ज़िन्दगी ने ही मुझे बिटर बना दिया है'', फिर जैसे जागकर ताँगे वाले से कहा, ''अरे बड़े मियाँ ! लौटा ले चलो, घर तो पीछे छूट गया।''

शोभा उतरी। कुछ क्षण अनिश्चित-सी खड़ी रही। सुबोध के हाथ बढ़े, पर फिर पीछे लौट आए, ''अच्छा, शोभा।''

''नमस्ते,'' शोभा ने कहा और वह अन्दर चली गई। ताँगे में अकेला सुबोध सड़क पर घोड़े की एकरस टापों के शब्द को सुन रहा था। कभी-कभी ताँगेवाला खाँस उठता और वह खाँसी उसका शरीर झिंझोड़ जाती। अँधेरा...खाँसी...और आखिरी सपने की भी मौत !

सुबह उठकर सुबोध ने सबसे पहले बरामदे में बैठे धोबी को देखा। जितनी देर में उसके लिए चाय बनी, उसने अपने सारे गन्दे कपड़े इकट्ठे कर, उनका ढेर लगा दिया। आलमारी में सिर्फ एक साफ कमीज़ बची थी, पीठ पर फटी हुई। उसे ढकने के लिए सुबोध ने कोट पहन लिया। कोट को भी काफी दिनों से धोबी को देने का इरादा था, परन्तु अब जब तक धोबी कपड़े लाए, तब तक यही सही।

चाय पीकर वह बाहर चला आया। कोट की जेबों की तलाशी करने पर उँगलियाँ एक इकन्नी से जा टकराई। पानवाले की दुकान पर सिगरेट खरीदा और जलाकर एक गहरा कश खींचा, और दो-एक जगह रुककर वापस चला। रास्ते में उसे धोबी मिला, और उसने सुबोध को दुबारा सलाम किया।

''कपड़े ज़रा जल्दी लाना, समझे ?'' कुछ रोब से सुबोध ने कहा।

''अच्छा बाबूजी,'' धोबी चला गया।

कमरे में घुसते ही मैले कपड़ों का ढेर उसे वैसे ही दिखाई पड़ा, जैसा कि छोड़ गया था। उसने वहीं रुककर पुकारा, ''अम्मा ! मेरे कपड़े धुलने नहीं गए।''

''पता नहीं, बेटा ! वृन्दा दे रही थी, उससे कहा भी था कि तुम्हारे भी दे...''

सुबोध को न जाने कहाँ का गुस्सा चढ़ आया। चीखकर बोला, ''कितने दिनों से गन्दे कपड़े पहन रहा हूँ ! पन्द्रह दिन में नालायक धोबी आया, तो उसे भी कपड़े नहीं दिए गए। तुम माँ-बेटी चाहती क्या हो ? आज मैं बेकार हूँ, तो मुझसे नौकरों-सा बर्ताव किया जाता है ! लानत है ऐसी ज़िन्दगी पर !''

माँ त्रस्त हो उठी। जब सुबोध का कष्ठ-स्वर इतना ऊँचा हो गया कि बाहर तक आवाज़ जाने लगी, तो वह रो दी। उसने कुछ कहना चाहा, मगर सुबोध ने अवसर नहीं दिया। कहता गया, ''मुझे मुफ्त का नौकर समझ लिया है ? पहले कभी तुमने मुझे यह सब काम करते देखा था ?'' फिर उसके कंठ की नकल करता हुआ बोला, ''घर में तरकारी नहीं है ! वृन्दा की सहेलियाँ खाना खाएँगी। उधर हमारी बहन है कि हुकूमत किया करती है ! अब मैं समझ गया हूँ कि मेरी इस घर में क्या कद्र है। मैं आज ही चला जाऊँगा। तुम दोनों चैन से रहना।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहता-कहता वह घर से बाहर आ गया। अपनी छटपटाहट में उसके अन्दर एक तीव्र विध्वंसक प्रवृत्ति ज़ग उठी थी। उसका मन चाह रहा था कि जो कुछ भी सामने, पड़े, उसे तहस-नहस कर डाले। वह चलता गया और उसी धुन में एक साइकिल सवार से टकरा गया। वह गिर पड़ा। उसके ऊपर साइकिल आ गई और वह व्यक्ति सबसे ऊपर । जब उसकी कोहनियाँ खुरदरी सड़क से छिलीं, और एक तीव्र पीड़ा हुई, तो उसका ध्यान बँटा। वह कुछ हक्का-बक्का-सा रह गया। उसने पाया कि उस व्यक्ति ने उससे तकरार नहीं की, अपने कपड़े झाड़े और साइकिल उठाते हुए कहा, ''भाई साहब, ज़रा देखकर चला कीजिए। चोट तो नहीं आई।''

अगर वह लड़ता तो उस मूड में शायद सुबोध मार-पीट करने को उतारू हो जाता। पर उसकी अप्रत्याशित विनम्रता से सुबोध ठिठककर रह गया।

जब सुबोध ने उठकर चलने की कोशिश की, तो पाया कि बायाँ पैर सूजने लगा है। लंगड़ाता हुआ वह पार्क की बेंच पर आकर बैठ गया। उसकी दाहिनी कोहनी से खून टपक रहा था। ज़रा-सा भी हिलने से पैर में तीव्र पीड़ा होने लगती थी। उसने संभालकर पैर बेंच पर रख लिया और लेट गया।

अपना ध्यान पीड़ा से हटाने के लिए वह फूलों को देखने लगा। उसकी बेंच के पास ही गुलाब की घनी वेल थी, जिसमें हल्के पीले फूल थे। दर्द बढ़ता जा रहा था। उसने हिलना-डुलना भी बन्द कर दिया। कुछ देर स्थिर पड़े रहने से दर्द में विराम हुआ, तो उसके ख्याल फिर सवेरे की घटना पर केन्द्रित हो गए।

उसका पैर हिला और दर्द की एक तेज़ लहर उठकर पूरे बायें पैर में व्याप्त हो गई। सुबोध ने ओंठ भींच लिए ।

जाड़ों की धूप थी पर लोहे की बेंच धीरे-धीरे गरम होती जा रही थी और बेंच का एक उठा हुआ कोना उसकी पीठ में गड़ रहा था। पर वह हिला-डुला नहीं। आँखें खोलकर सड़क की ओर देखा, तो स्कूल जाते हुए बच्चे, साइकिलें, खोमचेवाले...उसने आँखें बन्द कर लीं। जब पैर का दर्द कम होता, तो कोहनी छरछराने लगती। पर इस आत्मपीड़न से जैसे उसे कुछ सन्तोष-सा हो रहा था।

वह कब सो गया, उसे पता नहीं। जब आँखें खुलीं, तो सूरज सर पर था और बेंच तप रही थी। वह उठकर, बायाँ पैर घसीटता और दर्द सहता हुआ छाँह में घास पर लेट गया। उसपर एक बेहोशी-सी छाई जा रही थी। घास का स्पर्श शीतल था, सुखदायी हवा में गुलाब के फूलों की सुबास थी, पर उसे चैन न था।

उसे अचानक माँ का ध्यान आ गया। शायद वह चिन्तित दरवाज़े पर खड़ी हो, शायद वह उसके इन्तज़ार में भूखी हो। उसने एक लम्बी साँस ली और बाँहें सिर के नीचे रख लीं।

दिन कितना लम्बा हो गया था कि बीत ही नहीं रहा था। जैसे एक युग के बाद आकाश में एक तारा चमका और फिर अनेक तारे चमक उठे। सुबोध घास से उठकर फिर बेंच पर लेट गया। उसके सिर में भारीपन था, मुँह में कड़वाहट, पैर में जैसे एक भारी पत्थर बंधा था। सारा दिन हो गया था, पर कोई खोजता हुआ नहीं आया। वृन्दा को तो पता था कि वह अक्सर पार्क में बैठा करता है। मगर उसे क्या फिक्र ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पार्क से लोग उठ-उठकर जाने लगे थे। बच्चे, उनकी आयाएँ, स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए घूमने आनेवाले प्रौढ़, दो-दो चोटियाँ किए, हँस-हँसकर एक-दूसरे पर गिरती मुहल्ले की लड़कियाँ...पार्क शान्त हो गया। हरी घास पर बच गए मूँगफली के छिलके, पुड़ियों के कागज़ के टुकड़े, तोड़े गए फूलों की मसली हुई पंखुड़ियाँ...

तीन फाटक बन्द कर लेने के बाद चौकीदार सुबोध की बेंच के पास आकर खड़ा हो गया।

''अब घर जाओ, बाबू, पार्क बन्द करने का टेम हो गया।''

बिना कुछ कहे सुबोध उठ गया। दो-एक कदम लड़खड़ाया, फिर चलने लगा। हर बार जब बायाँ पैर रखता, तो दर्द होता। धीरे-धीरे लंगड़ा-लंगड़ाकर वह पार्क से बाहर निकल आया।

दरवाज़ा खुला था। बरामदे में मद्धिम रोशनी थी। चौके में अंधेरा। वह अपने कमरे में आया। कोने में मैले कपड़ों का ढेर था। ढीली चारपाई, गन्दा बिस्तर, तिपाई पर खाना ढंका हुआ रखा था।

सुबोध चारपाई पर बैठ गया, और तिपाई खींचकर लालचियों की तरह जल्दी-जल्दी बड़े-बड़े कौर खाने लगा।

शब्दार्थ-टिप्पण

अनुनय अनुरोध **कालीन** गलीचा **एकाएक** अचानक **हुकूमत** शासन **अभ्यस्त** आदी, आदती **विषाद** दु:ख, उदासी **अंतराल** मध्य का अवकाश **इस्तीफा** त्यागपत्र **तुष्टि** संतोष।

मुहावरे

आँखें मिलना प्रेम हो जाना **तहस-नहस कर देना** नष्ट कर देना **खटर-पटर** काम करते समय होने वाली ध्वनि **आँखें छलक आना** भावुक हो जाना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**
   (1) शोभा की सगाई सुबोध के साथ क्यों नहीं हो पाई ?
   (2) सुबोध ने नौकरी क्यों छोड़ दी ?
   (3) शाम को घर लौटने पर सुबोध ने अपने कमरे में क्या परिवर्तन देखा ?
   (4) माँ ने अपने गहने तुड़वाकर क्या बनवाए थे ?
   (5) 'उसके पास बचता ही क्या है !' कौन, किससे कहता है ?
   (6) वृन्दा ने धोबी को सुबोध के कपड़े क्यों नहीं दिए ?
   (7) सुबोध ने अखबार पढ़ना क्यों छोड़ दिया ?
   (8) वृन्दा की कौन-सी सहेलियाँ उसके घर आई थीं ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) सुबोध के उत्तर न देने पर शोभा ने छलकती हुई आँखों से क्या कहा ?

(2) वृन्दा किस पर झुंझलायी और क्यों ?

(3) चारपाई पर लेटे-लेटे सुबोध को क्या-क्या सुनाई दे रहा था ?

(4) तांगावाले को पैसे देने के बाद सुबोध कहाँ चला गया ?

(5) साइकिल सवार से टकराने पर सुबोध को कहाँ चोट आई ?

(6) सुबोध ने गुस्से में आकर माँ को क्या-क्या कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के आठ-दस पंक्तियों में उत्तर लिखिए :

(1) वृन्दा के स्वभाव में परिवर्तन क्यों आ गया ?

(2) नौकरी छोड़ देने के बाद सुबोध को किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा ?

(3) 'जिंदगी और गुलाब के फूल' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(4) माँ और बेटे की गोपन व्यथा के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) कोई अध्यापिका होने से ही पुस्तकों का प्रेमी नहीं हो जाता।

(2) प्यार से बड़ी एक और आग होती है, भूख की।

5. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :

आँखें मिलना, खटर-पटर करना।

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

बाग, फूल, पवन, वृक्ष।

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

मूक, सावधानी, पराजय, आशा, निश्चित।

8. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :

स्वास्थ्य, सुंदरता, प्रफुल्लता, कठोरता।

9. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए :

निरर्थक, निर्जन।

10. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करके समास-भेद लिखिए :

तिपाई, चारपाई, नवरत्न, पंचवटी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11. सही विकल्प चुनकर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) यद्यपि उसका पुरुष-हृदय वृन्दा की .... स्वीकार न कर पाता था।

(A) सत्ता (B) हैसियत (C) प्रतिष्ठा (D) स्थिति

(2) वाह रे .... ! उसने अपने आप से कहा।

(A) स्वाभिमानी (B) आत्मविश्वासी (C) अभिमानी (D) विरोधाभासी

(3) अपनी छटपटाहट में उसके अंदर एक तीव्र .... प्रवृत्ति जाग उठी थी।

(A) विभेदक (B) विध्वंसक (C) आक्रामक (D) प्रभावक

(4) आरंभ में कभी-कभी .... अपने बाग के गुलाब के फूल गुलदान में लगा जाती थी।

(A) वृन्दा (B) शोभा (C) निर्मला (D) निधि

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- किसी व्यक्ति की नौकरी छूट जाने पर उसके प्रति लोगों के व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों पर चर्चा कीजिए।
- अपने शब्दों में कहानी को संक्षेप में सुनाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- आत्मसम्मान और अभिमान का अंतर स्पष्ट करें।
- उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी के बारे में विद्यार्थियों को बताएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 कृष्णभक्ति के पद

1. सूरदास

(जन्म : सन् 1478 ई.; निधन : 1583 ई.)

(अनुमानित)

हिन्दी साहित्य में कृष्णभक्ति की अजस्र धारा को प्रवाहित करनेवाले अद्वितीय कवि सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट 'सीही' नामक गाँव में सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था । कुछ लोगों के मतानुसार इनका जन्मस्थान मथुरा के निकट 'रुनकता' क्षेत्र बताया जाता है। सूरदास का जन्मांध होना विवाद का विषय है। इनके काव्य में वर्ण्य-विषयों को देखते हुए इस बात पर विश्वास नहीं होता कि वे जन्मांध थे। इन्होंने अपनी कविता में बालकों की स्वाभाविक चेष्टाओं तथा प्राकृतिक दृश्यों का जैसा सजीव और यथार्थ चित्रण किया है, वह बिना देखे सम्भव नहीं है। कहा जाता है कि मथुरा के गऊघाट पर पुष्टिमार्गीय महाप्रभु वल्लभाचार्यजी से प्रेरणा-प्रकाश प्राप्तकर श्रीनाथजी के मंदिर में वे कृष्णलीला संबंधी पद बनाकर गाने लगे। गायन विद्या में निपुण होने के कारण इनकी ख्याति चारों ओर फैल गई।

सूरदास के काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है। सूरदास बाल-मानस के बड़े पारखी थे। वात्सल्य और शृंगार रस के चित्रण में सूर अद्वितीय हैं। इनका बाल-लीला चित्रण-हिन्दी साहित्य में ही नहीं बल्कि विश्व-साहित्य में बेजोड़ माना जाता है। कृष्ण के मनोहारी रूपों का वर्णन करने में सूर की कला निखर उठी है। इनका 'भ्रमरगीत' भ्रमरगीत-परम्परा का सर्वोत्तम उपालम्भ काव्य है। इसमें गोपियों की विरह-वेदना आँसुओं के रूप में उमड़ पड़ी है। ब्रजभाषा की माधुरी उनके पदों में संगीत के नाद-सौंदर्य के साथ सहज ही बह निकलती है। 'सूर सारावली', 'साहित्य लहरी' और 'सूर सागर' में से 'सूर सागर' इनका सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ है और यही इनकी अमर कीर्ति का आधार है।

यहाँ संकलित एकमात्र पद में कवि ईश्वर को समदर्शी स्वरूप की याद दिलाने के लिए विभिन्न दृष्टांत देते हुए उससे कृपा करने का निवेदन कर रहे हैं।

हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौ।
इक लोहा पूजा मैं राखत, इक घर बधिक परौ।
सो दुबिधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरौ।
इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरौ।
जब मिलि गए तब एक बरन ह्वै, सुरसरि नाम परौ।
तन माया, ज्यौ ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ।
कै इनकौ निरधार कीजियै, कै प्रन जात टरौ ॥ २ ॥

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

औगुन दोष, अवगुण **सोई** वही **नार** नाला **पार करो** पार लगाएगा **समदरसी** समदर्शी सबको एक-सा समझने या देखने वाला **बधिक** कसाई **मैलो** गंदा **एक बरन** एक वर्ण **ज्यौ** जीव **निरधार** पृथक **कै** या तो, **इक** एक **पारस** एक कल्पित पत्थर जिसके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि यदि लोहा उससे छूजाय तो सोना हो जाता है **सुरसरि** देवनदी, गंगा नदी।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) 'हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ' किसकी पंक्ति है ?

(2) सूरदासजी प्रभु से क्या विनती करते हैं ?

(3) समदर्शी किसे कहा गया है ?

(4) लोहा खरा सोना कब बन जाता है ?

(5) पारस किनमें भेद नहीं करता ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) प्रभु को समदर्शी क्यों कहा गया है ?

(2) 'इक नदिया इक नार कहावत' के माध्यम से सूरदासजी क्या कहना चाहते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-सात वाक्यों में लिखिए :

सूर के इस पद का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) जब मिलि गए तब एक बरन ह्वै, सुरसरि नाम परौ।

(2) तन माया, ज्यौ ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ।

5. सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) सूरदास के मतानुसार शरीर माया है और जीव .... है।

(A) ब्रह्म (B) सत् (C) चित् (D) आनंद

(2) सो दुबिधा पारस नहिं जानत, ... करत खरौ।

(A) सोना (B) कंचन (C) कनक (D) कुंदन

(3) जब मिलि गए तब एक .... ह्वै, सुरसरि नाम परौ।

(A) वरन् (B) वर्ण (C) बरन (D) वरण

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

तन, नदी, सोना, पानी, पूजा, ईश्वर।

7. विलोम शब्द लिखिए :

दुविधा, अवगुण, गंदा, घर।

8. तत्सम रूप लिखिए :

औगुन, समदरसी, प्रन, ज्यौ, इक।

2. मीराबाई

(जन्म : सन् 1498 ई.; निधन : 1563 ई.)
(अनुमानित)

श्रीकृष्ण की अनुरागिनी अनन्य भक्त कवयित्री मीराबाई का जन्म राव रत्नसिंह के यहाँ कुड़की नामक गाँव में हुआ था। बचपन में ही माता का निधन हो जाने के कारण ये अपने पितामह राव दूदाजी के साथ मेड़ता रहती थीं और प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं प्राप्त की। राव दूदाजी के धार्मिक एवं उदार विचारों का मीराबाई पर पूरा प्रभाव था। मीराबाई का विवाह चित्तौड़ के महाराजा राणा साँगा के जयेष्ठ पुत्र भोजराज के साथ हुआ था। विवाह के कुछ वर्ष बाद ही दुर्भाग्यवश मीराबाई विधवा हो गयीं। वैधव्य के बाद इनका सारा समय श्रीकृष्णभक्ति में ही बीतने लगा। मीरा श्रीकृष्ण को अपना प्रियतम मानकर उनके विरह में पद गातीं और साधु-संतों के साथ कीर्तन एवं नृत्य करती थीं।

स्वजनों के दुर्व्यवहार से दु:खी होकर वे मेवाड़ छोड़कर मथुरा और वृन्दावन जाकर अपने प्रियतम एवं आराध्य श्रीकृष्ण के गुणों का गान करने लगीं। मीरा के पदों में सरलता, सरसता, सहजता का अद्‌भुत समन्वय है। मीरा की रचनाओं में इनके हृदय की विह्वलता स्पष्ट झलकती है। मीरा की भक्ति मूलत: माधुर्य भक्ति है, जिसमें दैन्य और दास भाव की छाया मिलती है। श्रीकृष्ण-प्रेम की दीवानी इस संत-कवयित्री ने विरह वेदना के जो गीत गाए हैं, वे हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि हैं। इनके पदों में ब्रजभाषा के साथ राजस्थानी और गुजराती भाषा का सुखद मिश्रण है। गुजराती भाषा में भी मीरा के पद प्राप्त होते हैं। कहा जाता है कि द्वारिका के रणछोड़जी के मंदिर में वे मृत्युपर्यन्त भजन-कीर्तन करती रहीं।

या ब्रज में कछू देख्यो री टोना।
ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नंदजी के छोना।
दधि को नाम बिसरि गयौ प्यारी, लेलहुँ री कोई स्याम सलोना।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, आँख लगाइ गयो मोहना।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सुन्दर स्याम सुघर सलोना ॥
कोई स्याम मनोहर ल्योरी, सिर धरे मटकिया डोले।
दधि को नाम बिसर गई ग्वालन 'हरि ल्यो, हरि ल्यो' बोले।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई विण मोलै।
कृष्ण रूपी छकी है ग्वालिन, औरहि, और बोले ॥

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

टोना जादू **गुजरिया** ग्वालिन, गूजर जाति की स्त्री **छोना** लड़का, बच्चा **दधि** दही, **सलोना** सुन्दर, लावण्य **सुघर** सुघड़, गठा हुआ **ल्यौ री (लेलहुँ)** ले लो **डोले** घूम रही है **बिसरना** भूलना **चेरी** दासी **विण मोल** बिना कीमत दिए **छकी** तृप्त होकर **कुंज** वृक्षों या लताओं के झुरमुट से मंडप के समान आच्छादित स्थान।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) ग्वालिन सिर पर क्या रखकर निकली है ?

(2) ग्वालिन क्या बेचने निकली है ?

(3) ग्वालिन को मोहन कहाँ मिले ?

(4) ग्वालिन क्या भूल गई ?

(5) बाद में ग्वालिन दही के बदले किसका नाम लेकर बेचने लगी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'हरि ल्यौ हरि ल्यौ' का क्या तात्पर्य है ?

(2) ग्वालिन के अंड-बंड बोलने का क्या कारण है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-सात वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) ग्वालिन की दशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) वृंदावन की कुंज गलिन में, आँख लगाइ गयो मोहना।

(2) दधि को नाम बिसर गई ग्वालन हरि ल्यौ, हरि ल्यौ बोले।

(3) चेरी भई विण मोलै।

5. सही विकल्प चुनकर पंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) या ब्रज में कछू देख्यो री ....।

(A) मोना (B) छोना (C) टोना

(2) .... को नाम बिसरि गयौ प्यारी, लेलहु री को स्याम सलोना।

(A) दधि (B) मधु (C) खीर

(3) मीरा के प्रभु गिरधर नागर .... भई विण मोलै।

(A) केरी (B) चेरी (C) वैरी

(4) कृष्ण रूपी छकी है .... औरहि और बोलै।

(A) मालिन (B) गामिन (C) ग्वालिन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

सुंदर, वृक्ष, आँख, सिर, गिरधर।

7. विलोम शब्द लिखिए :

स्मरण, एक, पेट, आगे।

8. वर्तनी सुधारकर लिखिए :

गूजरिया, गीरधर, मटकीया, ग्वालीन।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- मीराबाई के पद को कंठस्थ करके वर्ग में सस्वर सुनाएँ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- सूरदास तथा मीराबाई के कुछ अन्य पदों का संकलन करवाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 तुम कब जाओगे, अतिथि

शरद जोशी

(जन्म : सन् 1931 ई.; निधन : 1991 ई.)

इनका जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन नगर में हुआ। वे कुछ समय तक सरकारी नौकरी में रहे। बाद में स्वतंत्र लेखन करने लगे। हिंदी व्यंग्य-लेखन में हरिशंकर परसाई के बाद सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठा इन्हें प्राप्त हुई। इनकी कहानियों पर आधारित 'लापतागंज' नाम का धारावाहिक भी बनाया गया है। 1990 में पद्मश्री सम्मान प्राप्त हुआ। मध्य प्रदेश सरकार ने इनके नाम पर शरद जोशी सम्मान भी आरंभ किया है।

'परिक्रमा', 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'तिलिस्म' आदि इनके प्रमुख व्यंग्य-संग्रह हैं, तो 'अंधों का हाथी' और 'एक था गधा' इनके लोकप्रिय व्यंग्य-नाटक हैं।

'तुम कब जाओगे, अतिथि' में ऐसे अतिथियों का ब्यौरा है, जिनके बारे में शरद जोशी ने स्वयं कहा है, 'अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।' प्रकट है कि यह उन अतिथियों की कहानी है, जो पहले से बिना कोई सूचना दिये मेज़बान के यहाँ आ धमकते हैं और फिर जल्दी जाने का नाम नहीं लेते । ऐसे मेहमानों की मेज़बानी डिनर से शुरू होती है और खिचड़ी पर जा पहुँचती है। मेज़बान के दिल से हमेशा एक ही पुकार उठती रहती है, 'उफ़, तुम कब जाओगे, अतिथि ?'

आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है – तुम कब जाओगे, अतिथि ?

तुम जहाँ बैठे निस्संकोच सिगरेट का धुआँ फेंक रहे हो, उसके ठीक सामने एक केलेंडर है। देख रहे हो ना ! उसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन ! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली; तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि ! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात् हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती ?

उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुसकराहट के साथ मैं तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की थी। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्ज़ियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी। आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाज़ी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ ! दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुसकान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हम तुम्हें ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया। हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते। पर तुमने ऐसा नहीं किया ।

तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा, ''मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।''

यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी। तुम्हारे सामीप्य की वेला एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था। पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

''किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे।'' मैंने कहा। मन-ही-मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है।

''कहाँ है लॉण्ड्री ?''

''चलो चलते हैं।'' मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा।

''कहाँ जा रहे हैं ?'' पत्नी ने पूछा।

''इनके कपड़े लॉण्ड्री पर देने हैं।'' मैंने कहा।

मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गई। आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर बिस्तर खोल दिया था। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है । वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों ठहरेगा।

और आशंका निर्मूल नहीं थी, अतिथि ! तुम जा नहीं रहे। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। तुम्हें देखकर फूट पड़नेवाली मुसकराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोनलों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है। अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं। कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो। शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए। परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, मँहगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी ज़िक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है। सौहार्द अब शनैः-शनैः बोरियत में रूपांतरित हो रहा है। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद से तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है, मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ। बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है - तुम कब जाओगे, अतिथि ?

कल पत्नी ने धीरे से पूछा था, ''कब तक टिकेंगे ये ?''

मैंने कंधे उचका दिए, ''क्या कह सकता हूँ !''

''मैं तो आज खिचड़ी बना रही हूँ। हलकी रहेगी।''

''बनाओ।''

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए। अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा। तुम्हारे-मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुज़र रहे हैं। तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि !

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है न ! मैं जानता हूँ। दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं। होम को इसी कारण स्वीट-होम कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें। तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफ़त भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है।

अपने खर्राटों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी। आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे। मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं स्टैंड नहीं कर सकूँगा और लड़खड़ा जाऊँगा। मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ। मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं। एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। तुम लौट जाओ अतिथि ! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा। यह मनुष्य अपनीवाली पर उतरे, उसके पूर्व तुम लौट जाओ !

उफ़, तुम कब जाओगे, अतिथि ?

शब्दार्थ-टिप्पण

अतिथि मेहमान **आघात** चोट, पीड़ा, कष्ट **डिनर** रात का भोजन **सदैव** हमेशा **सुलभ** सहजता से प्राप्त, उपलब्ध **लंच** दोपहर का भोजन **भरकम** भारी, वजनदार **शनैः-शनैः** धीरे-धीरे **उपवास** व्रत **आगमन** आना **निस्संकोच** संकोचरहित, बिना संकोच के **नम्रता** नत होने का भाव, स्वभाव में नरमी होना **एकाएक** अचानक **विगत** बीते हुए, पिछले

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है ?

(2) पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया ?

(3) दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई ?

(4) तीसरे दिन अतिथि ने सुबह क्या कहा ?

(5) सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ ?

(6) अतिथि को देवता क्यों कहा जाता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) लेखक को अतिथि का चौथा दिन भारी क्यों लगने लगा ?

(2) लेखक अतिथि से क्यों कहता है कि यह तुम्हारे जाने का उच्च समय है ?

(3) लेखक अतिथि से लौट जाने के लिए क्यों कहता है ?

(4) लेखक ने स्वीट होम एवं गेट आउट शब्द का उल्लेख क्यों किया है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए :

(1) प्रारंभ में लेखक ने अतिथि का सत्कार कैसे किया ?

(2) कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(3) लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था ?

(4) जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए ?

4. निम्नलिखित पंक्तियों के आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) अंदर ही अंदर मेरा बटुआ काँप गया।

(2) अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

(3) मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।

(4) एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

चांद, पृथ्वी, जिक्र, आघात।

6. संधि-विच्छेद करके लिखिए :

सदैव, निर्मूल, नमस्ते।

7. विरोधी शब्द लिखिए :

सीमित, अप्रत्याशित, अज्ञात, मेहमान।

8. शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए :

(1) जिसके आगमन की कोई तिथि न हो।

(2) रात को किया जाने वाला भोजन।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी अपने घर आए अतिथियों के सत्कार का अनुभव कक्षा में सुनाएँ।
- ''आधुनिक युग में अतिथि बोझरूप क्यों हो जाते हैं'' इस विषय पर विद्यार्थी कक्षा में अपनी प्रतिक्रिया दें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक कक्षा में ''अतिथि देवो भव'' की भावना स्पष्ट करें।
- शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को अतिथि सत्कार के बारे में समझाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5 वाटिका-प्रसंग

तुलसीदास

(जन्म : सन् 1532 ई.; निधन : 1623 ई.)

हिन्दी साहित्य की सगुण काव्यधारा की राम-भक्ति शाखा के प्रमुख कवि लोकनायक तुलसीदासजी का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। कहा जाता है कि इनके माता-पिता ने इन्हें बचपन में ही त्याग दिया था, इसलिए इनकी बाल्यावस्था अत्यन्त अभावों में व्यतीत हुई। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था। अपनी पत्नी रत्नावली के प्रति मोहांध तुलसी उसी के द्वारा धिक्कारे जाने पर संसार से विमुख हो राम-भक्ति में लीन हो गये। वर्षों तक काशी, अयोध्या और चित्रकूट में रहकर साधना की। बाबा नरहरिदास ने ही इन्हें राम नाम की दीक्षा दी थी। अवधी भाषा में रचित 'रामचरितमानस' उनका सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है।

तुलसी का व्यक्तित्व समन्वयवादी था और दृष्टिकोण मर्यादावादी। ये मानव मूल्यों के उपासक थे। इनके राम मानवीय आदर्शों के प्रतीक हैं, तो रावण मूल्यहीनता का प्रतिनिधि है। लोकमंगल के उदात्त आदर्श से अनुप्राणित उनकी कविता रावणत्व पर रामत्व के विजय की कविता है। इनके काव्य को पढ़ने से स्पष्ट विदित होता है कि ये संस्कृत भाषा के भी पंडित थे, किन्तु इन्होंने जानबूझकर अवधी और ब्रजभाषा को अपने काव्य के लिए चुना। अवधी और ब्रजभाषा दोनों में ही तुलसी ने काव्य रचना की है। 'रामचरितमानस' जैसे श्रेष्ठ महाकाव्य के अलावा 'गीतावली', 'कवितावली', 'दोहावली', 'कृष्ण गीतावली', 'विनय पत्रिका' आदि इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

यह अंश 'रामचरितमानस' के बालकाण्ड से लिया गया है। यह प्रसंग उस समय का है जब राम और लक्ष्मण अपने गुरु के साथ सीताजी के स्वयंवर में जनकपुर आए थे। स्वयंवर के पहले दोनों भाई वाटिका में भ्रमण हेतु आते हैं और उसी समय सीताजी भी अपनी सखियों के साथ वहाँ आई हुई हैं। यहाँ राम और सीता का एक-दूसरे से सामना होता है। उसी का यह सुन्दर वर्णन तुलसीदास ने यहाँ किया है।

देखन बागु कुँअर दुइ आए । बय किसोर सब भूमि सुहाए ॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन बिनु बानी ॥
सुनि हरषीं सब सखीं सयानी । सिय हियँ अति उतकंठा जानी ॥
एक कहइ नृपसुत तेइ आली । सुने जे मुनि सँग आपाकाली ॥
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्हे स्वबस नगर नर नारी ॥
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिअहिं देखन जोगू ॥
तासु बचन अति सियहि सोहाने । दरस लागि लोचन अकुलाने ॥
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई । प्रीति पुरातन लखइ न कोई ॥
दो० - सुमिरि सीय नारद वचन, उपजी प्रीति पुनीत।
चकित विलोकति सकल दिसि, जनु सिसु मृगी सभीत ॥

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ॥
मानहुँ वदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व विजय कहँ कीन्ही ॥
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥
भए बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥
देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदय सराहत बचनु न आवा ॥
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई ॥
सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छबि गृह दीपसिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी। केहिं पटतरौं बिदेहकुमारी ॥

दो० - सिय सोभा हियैं बरनि प्रभु, आपनि दसा विचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन, बचन समय अनुहारि ॥

शब्दार्थ-टिप्पण

बागु बाग, वाटिका, उपवन **दुई** दो **बय** वय, उम्र **छवि** शोभा **बखानी** वर्णन, प्रशंसा **गिरा** वाणी **सयानी** चतुर, चालाक **उतकंठा** जिज्ञासा **नृपसुत** राजपुत्र **बरनत** वर्णन **अवसि** अवश्य **लोचन** नेत्र **प्रीति** प्रेम **पुरातन** प्राचीन **पुनीत** पवित्र **मृगी** हिरनी **सभीत** भयभीत **चितए** देखा **ओरा** तरफ **ससि** चन्द्र **अचंचल** स्थिर **सराहना** प्रशंसा करना **बिरंचि** ब्रह्माजी **निपुनाई** चतुराई, निपुणता **दीप-शिखा** दीपक की ज्योत **पटितरौ** तुलना **जुठारी** जूठा, पहले प्रयोग किया हुआ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) वाटिका देखने के लिए कौन-कौन आए थे ?

(2) श्री राम का मुख कैसा था ?

(3) सीताजी के हृदय में उत्कंठा कब उत्पन्न हुई ?

(4) ब्रह्माजी ने अपनी निपुणता किस प्रकार प्रकट की है ?

(5) श्री राम ने कौन-कौन से आभूषण धारण किए हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) श्री राम को देखकर सीताजी पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(2) सीताजी के नेत्र क्यों व्याकुल होने लगे ?

(3) सीताजी सभी दिशाओं में किस प्रकार देख रही थीं ?

(4) सीताजी ने किसके वचनों का स्मरण किया ? उसका सीताजी के मन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए :

(1) रामचंद्रजी की छवि का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(2) 'वाटिका-प्रसंग' का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

4. समानार्थी शब्द लिखिए :

बाग, वय, नृप, मदन, विश्व।

5. खड़ीबोली रूप दीजिए :

दुइ, बिनु, लखनु, बचनु, रामु, सुचि।

6. विलोम शब्द लिखिए :

प्रिय, सुंदर, अग्र, निशा, शुचि।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- यहाँ संकलित चौपाई-दोहों का गान कीजिए।
- तुलसीदास की अन्य रचनाओं के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को कवित्त, दोहा तथा चौपाई गान की पद्धति समझाइए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6 उत्साह

रामचन्द्र शुक्ल
(जन्म : सन् 1884 ई.; निधन : 1941 ई.)

हिंदी के महान आलोचकों में से एक। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के ज़िला बस्ती में हुआ। 'हिंदी साहित्य का इतिहास' इनकी सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण पुस्तक है। 'चिंतामणि' में भावों से संबंधित विश्लेषणात्मक निबंध इनके प्रमुख हस्ताक्षर हैं। 'कविता क्या है ?' नाम का निबंध भी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है। 'रस मीमांसा' में इन्होंने संस्कृत काव्यशास्त्र की रीढ़ 'रस' की जो पुनर्व्याख्या की है, उसे भी नहीं भुलाया जा सकता।

'उत्साह' उनका मनोविश्लेषणात्मक श्रेणी का निबंध है, जिसमें उन्होंने भावों या मनोविकारों का अध्ययन किया है । सभी जानते हैं कि 'वीर रस' का स्थायी भाव 'उत्साह' है। यहाँ रामचंद्र शुक्ल ने बनी-बनायी लीक का अनुसरण नहीं किया है। उन्होंने व्यंग्य और आत्मीयता से भरी अपनी शैली के द्वारा 'वस्तुनिष्ठ निबंध' को भी 'ललित निबंध' की ऊँचाई तक पहुँचा दिया है। रामचंद्र शुक्ल एक तरफ़ स्वीकार करते हैं कि 'उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है ।' तो दूसरी तरफ़ ये भी कहते हैं, 'तुच्छ मनोवृत्तियों द्वारा प्रेरित साहसी और दयावान भी मिलते हैं।' इससे उनके व्यंग्य की क्षमता का पता चलता है।

दु:ख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनन्द-वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दु:खी और कभी-कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान् भी होते हैं । उत्साह में हम आनेवाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म-सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान् होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्ति होने के आनन्द का योग रहता है। साहस-पूर्ण आनन्द की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म-सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं ।

जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है उन सबके प्रति उत्कण्ठापूर्ण आनन्द उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है। कष्ट या हानि के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य-मीमांसकों ने इसी दृष्टि से युद्ध-वीर, दान-वीर, दया-वीर इत्यादि भेद किये हैं। इनमें सबसे प्राचीन और प्रधान युद्ध वीरता है, जिसमें आघात, पीड़ा या मृत्यु की परवा नहीं रहती । इस प्रकार की वीरता का प्रयोजन अत्यन्त प्राचीन काल से पड़ता चला आ रहा है, जिसमें साहस और प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर पहुँचते हैं। पर केवल कष्ट या पीड़ा सहन करने के साहस में ही उत्साह का स्वरूप स्फुरित नहीं होता। उसके साथ आनन्द-पूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कण्ठा का योग चाहिए। बिना बेहोश हुए भारी फोड़ा चिराने को तैयार होना साहस कहा जायगा, पर उत्साह नहीं। इसी प्रकार चुपचाप, बिना हाथ-पैर हिलाये, घोर प्रहार सहने के लिए तैयार रहना साहस और कठिन से कठिन प्रहार सहकर भी जगह से न हटना धीरता कही जायगी । ऐसे साहस और धीरता को उत्साह के अन्तर्गत तभी ले सकते हैं जब कि साहसी या धीर उस काम को आनन्द के साथ करता चला जायगा जिसके कारण उसे इतने प्रहार सहने पड़ते हैं। सारांश यह कि आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कण्ठा में ही उत्साह का दर्शन होता है, केवल कष्ट सहने में निश्चेष्ट साहस में नहीं। धृति और साहस दोनों का उत्साह के बीच संचरण होता है।

दान-वीर में अर्थ-त्याग का साहस अर्थात् उसके कारण होनेवाले कष्ट या कठिनता को सहने की क्षमता अन्तर्हित रहती है। दानवीरता तभी कही जायगी जब दान के कारण दानी को अपने जीवन-निर्वाह में किसी प्रकार का कष्ट या कठिनता दिखाई देगी, इसी कष्ट या कठिनता की मात्रा या सम्भावना जितनी ही अधिक होगी, दानवीरता उतनी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ही ऊँची समझी जायगी। पर इस अर्थ-त्याग के साहस के साथ ही जब तक पूर्ण तत्परता और आनन्द के चिह्न न दिखाई पड़ेंगे तब तक उत्साह का स्वरूप न खड़ा होगा।

युद्ध के अतिरिक्त संसार में और भी ऐसे विकट काम होते हैं जिनमें घोर शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है और प्राण-हानि तक की संभावना रहती है। अनुसंधान के लिए तुषार-मण्डित अभ्रभेदी अगम्य पर्वतों की चढ़ाई, ध्रुव देश या सहारा के रेगिस्तान का सफर; क्रूर, बर्बर जातियों के बीच अज्ञात घोर जंगलों में प्रवेश इत्यादि भी पूरी वीरता और पराक्रम के कर्म हैं। इनमें जिस आनन्दपूर्ण तत्परता के साथ लोग प्रवृत्त हुए हैं वह भी उत्साह ही है।

मनुष्य शारीरिक कष्ट से ही पीछे हटनेवाला प्राणी नहीं है। मानसिक क्लेश की सम्भावना से भी बहुत से कर्मों की ओर प्रवृत्त होने का साहस उसे नहीं होता। जिन बातों से समाज के बीच उपहास, निन्दा, अपमान इत्यादि का भय रहता है उन्हें अच्छी और कल्याणकारिणी समझते हुए भी बहुत से लोग उनसे दूर रहते हैं। प्रत्यक्ष हानि देखते हुए भी कुछ प्रथाओं का अनुसरण बड़े-बड़े समझदार तक इसलिए करते चलते हैं कि उनके त्याग से वे बुरे कहे जायेंगे, लोगों में उनका वैसा आदर-सम्मान न रह जायगा। उसके लिए मानग्लानि का कष्ट सब शारीरिक क्लेशों से बढ़कर होता है । जो लोग मान-अपमान का कुछ भी ध्यान न करके निन्दा-स्तुति की कुछ भी परवा न करके किसी प्रचलित प्रथा के विरुद्ध पूर्ण तत्परता और प्रसन्नता के साथ कार्य करते जाते हैं वे एक ओर तो उत्साही और वीर कहलाते हैं दूसरी ओर भारी बेहया।

किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निन्दा-स्तुति, मान-अपमान आदि की कुछ परवा न करके प्रचलित प्रथाओं का उल्लंघन करनेवाले वीर या उत्साही कहलाते हैं, यह देखकर बहुत से लोग केवल इसके विरुद्ध लोभ में ही अपनी उछल-कूद दिखाया करते हैं। वे केवल उत्साही या साहसी कहे जाने के लिए ही चली आती हुई प्रथाओं को तोड़ने की धूम मचाया करते हैं। शुभ या अशुभ परिणाम से उनसे कोई मतलब नहीं, उनकी ओर उनका ध्यान लेशमात्र नहीं रहता। जिस पक्ष के बीच की सुख्याति का वे अधिक महत्व समझते हैं उसकी वाहवाही से उत्पन्न आनन्द की चाह में वे दूसरे पक्ष के बीच की निन्दा या अपमान की कुछ परवा नहीं करते। ऐसे ओछे लोगों के साहस या उत्साह की अपेक्षा उन लोगों के साहस—भाव की दृष्टि से—कहीं अधिक मूल्यवान हैं जो किसी प्राचीन प्रथा की—चाहे वास्तव में हानिकारिणी ही हो—उपयोगिता का सच्चा विश्वास रहते हुए प्रथा तोड़नेवालों की निन्दा, उपहास, अपमान आदि सहा करते हैं।

समाज-सुधार के वर्तमान आन्दोलनों के बीच जिस प्रकार सच्ची अनुभूति से प्रेरित उच्चाशय और गम्भीर पुरुष पाये जाते हैं उसी प्रकार तुच्छ मनोवृत्तियों द्वारा प्रेरित साहसी और दयावान भी बहुत मिलते हैं। मैंने कई छिछोरों और लम्पटों को विधवाओं की दशा पर दया दिखाते हुए उनके पापाचार के लम्बे-चौड़े दास्तान हर दम सुनते-सुनाते पाया है। ऐसे लोग वास्तव में काम-कथा के रूप में ऐसे वृत्तांतों का तन्मयता के साथ कथन और श्रवण करते हैं। इस ढाँचे के लोगों से सुधाार के कार्य में सहायता पहुँचाने के स्थान पर बाधा पहुँचाने की ही सम्भावना रहती है। 'सुधार' के नाम पर साहित्य के क्षेत्र में भी ऐसे लोग गन्दगी फैलाते पाये जाते हैं।

उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वही उत्साह जो कर्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुन्दर दिखाई पड़ता है, अकर्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाघ्य नहीं प्रतीत होता। आत्मरक्षा, पर-रक्षा, देश-रक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग देखी जाती है उसके सौन्दर्य को पर-पीड़न, डकैती आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुँच सकता। यह बात होते हुए भी विशुद्ध उत्साह या साहस की प्रशंसा संसार में थोड़ी-बहुत होती ही है। अत्याचारियों या डाकुओं के शौर्य और साहस की कथाएँ भी लोग तारीफ करते हुए सुनते हैं।

अब तक उत्साह का प्रधान रूप ही हमारे सामने रहा, जिसमें साहस का पूरा योग रहता है। पर कर्ममात्र के संपादन में जो तत्परतापूर्ण आनन्द देखा जाता है वह उत्साह ही कहा जाता है। सब कामों में साहस अपेक्षित नहीं होता, पर थोड़ा-बहुत आराम, विश्राम, सुभीते आदि का त्याग सबसे करना पड़ता है, और कुछ नहीं तो उठकर बैठना, खड़ा होना या दस-पाँच कदम चलना ही पड़ता है। जब तक आनन्द का लगाव किसी क्रिया, व्यापार या

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उसकी भावना के साथ नहीं दिखाई पड़ता तब तक उसे 'उत्साह' की संज्ञा प्राप्त नहीं होती। यदि किसी प्रिय मित्र के आने का समाचार पाकर हम चुपचाप ज्यों के त्यों आनन्दित होकर बैठे रह जायें या थोड़ा हँस भी दें तो यह हमारा उत्साह नहीं कहा जायगा। हमारा उत्साह तभी कहा जायगा जब हम अपने मित्र का आगमन सुनते ही उठ खड़े होंगे। उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ेंगे और उसके ठहरने आदि के प्रबन्ध में प्रसन्न-मुख इधर-उधर आते-जाते दिखाई देंगे। प्रयत्न और कर्म संकल्प उत्साह नामक आनन्द के नित्य लक्षण हैं।

प्रत्येक कर्म में थोड़ा या बहुत बुद्धि का योग भी रहता है। कुछ कर्मों में तो बुद्धि की तत्परता और शरीर की तत्परता दोनों बराबर साथ-साथ चलती है। उत्साह की उमंग जिस प्रकार हाथ-पैर चलवाती है, उसी प्रकार बुद्धि भी काम कराती है। ऐसे उत्साहवाले वीर को कर्मवीर कहना चाहिए या बुद्धिवीर—यह प्रश्न मुद्राराक्षस-नाटक बहुत अच्छी तरह हमारे सामने लाता है। चाणक्य और राक्षस के बीच जो चोटें चली हैं वे नीति की हैं—शस्त्र की नहीं। अत: विचार करने की बात यह है कि उत्साह की अभिव्यक्ति बुद्धि-व्यापार के अवसर पर होती है अथवा बुद्धि द्वारा निश्चित उद्योग में तत्पर होने की दशा में। हमारे देखने में तो उद्योग की तत्परता में ही उत्साह की अभिव्यक्ति होती है; अत: कर्मवीर ही कहना ठीक है।

बुद्धि-वीर दृष्टान्त कभी-कभी हमारे पुराने ढंग के शास्त्रार्थों में देखने को मिल जाते हैं। जिस समय किसी भारी शास्त्रार्थी पण्डित से भिड़ने के लिए कोई विद्यार्थी आनन्द के साथ सभा में आगे आता है, उस समय उसके बुद्धि-साहस की प्रशंसा अवश्य होती है। वह जीते या हारे बुद्धि-वीर समझा ही जाता है। इस जमाने में वीरता का प्रसंग उठाकर वाग्वीर का उल्लेख आदि न हो तो बात अधूरी ही समझी जायगी। ये वाग्वीर आजकल बड़ी-बड़ी सभाओं के मंचों पर से लेकर स्त्रियों के उठाये हुए पारिवारिक प्रपंचों तक में पाये जाते हैं और काफी तादाद में।

थोड़ा यह भी देखना चाहिए कि उत्साह में ध्यान किस पर रहता है। कर्म पर, उसके फल पर अथवा व्यक्ति या वस्तु पर ? हमारे विचार में उत्साही वीर का ध्यान आदि से अन्त तक पूरी कर्म शृङ्खला पर से होता हुआ उसकी सफलता रूपी समाप्ति तक फैला रहता है। इसी ध्यान से जो आनन्द की तरंगें उठती हैं वे ही सारे प्रयत्न को आनन्दमय कर देती हैं। युद्ध-वीर में विजेतव्य को आलम्बन कहा गया है उसका अभिप्राय यही है कि विजेतव्य कर्म प्रेरक के रूप में वीर के ध्यान में स्थित रहता है, वह कर्मस्वरूप का भी निर्धारण करता है। पर आनन्द और साहस के मिश्रित भाव का सीधा लगाव उसके साथ नहीं रहता। सच पूछिए तो वीर के उत्साह का विषय विजय-विधायक कर्म या युद्ध ही रहता है। दानवीर और धर्मवीर पर विचार करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है। दान दयावश, श्रद्धावश या कीर्ति-लोभवश दिया जाता है। यदि श्रद्धा-वश दान दिया जा रहा है तो दान-पत्र वास्तव में श्रद्धा का और यदि दया-वंश दिया जा रहा है तो पीड़ित यथार्थ में दया का विषय या आलम्बन ठहरता है। अत: उस श्रद्धा या दया की प्रेरणा से जिस कठिन या दुस्साध्य कर्म की प्रवृत्ति होती है उसी की ओर उत्साही का साहसपूर्ण आनन्द उन्मुख कहा जा सकता है। अत: और रसों में आलम्बन का स्वरूप जैसा निर्दिष्ट रहता है वैसा वीररस में नहीं। बात यह है कि उत्साह एक यौगिक भाव है जिसमें साहस और आनन्द का मेल रहता है।

जिस व्यक्ति या वस्तु पर प्रभाव डालने के लिए वीरता दिखाई जाती है उसकी ओर उन्मुख कर्म होता है और कर्म की ओर उन्मुख उत्साह नामक भाव होता है। सारांश यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ उत्साह का सीधा लगाव नहीं होता। समुद्र लाँघने के लिए जिस उत्साह के साथ हनुमान उठे हैं उसका कारण समुद्र नहीं—समुद्र लाँघने का विकट कर्म है। कर्म भावना ही उत्साह उत्पन्न करती है, वस्तु या व्यक्ति की भावना नहीं।

किसी कर्म के सम्बन्ध में जहाँ आनन्दपूर्ण तत्परता दिखाई पड़ी कि हम उसे उत्साह कह देते हैं। कर्म के अनुष्ठान में जो आनन्द होता है उसका विधान तीन रूपों में दिखाई पड़ता है—

१. कर्म-भावना से उत्पन्न,

२. फल-भावना से उत्पन्न और

३. आगन्तुक, अर्थात् विषयान्तर से प्राप्त।

इनमें कर्म-भावना-प्रसूत आनन्द को ही सच्चे वीरों का आनन्द समझना चाहिए, जिसमें साहस का योग प्राय:

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बहुत अधिक रहा करता है। सच्चा वीर जिस समय मैदान में उतरता है उसी समय उसमें उतना आनन्द भरा रहता है जितना औरों को विजय या सफलता प्राप्त करने पर होता है। उसके सामने कर्म और फल के बीच या तो कोई अन्तर होता ही नहीं या बहुत सिमटा हुआ होता है। इसी से कर्म की और यह उसी झोंक से लपकता है जिस झोंक से साधारण लोग फल की ओर लपका करते हैं। इसी कर्मप्रवर्तक आनन्द की मात्रा के हिसाब से शौर्य और साहस का स्फुरण होता है ।

फल की भावना से उत्पन्न आनन्द भी साधक कर्मों की ओर हर्ष और तत्परता के साथ प्रवृत्त करता है। पर फल का लोभ जहाँ प्रधान रहता है वहाँ कर्म-विषयक आनन्द उसी फल की भावना की तीव्रता और मन्दता पर अवलम्बित रहता है। उद्योग के प्रभाव के बीच जब-जब फल की भावना मन्द पड़ती है—उसकी आशा कुछ धुँधली पड़ जाती है तब-तब आनन्द की उमंग गिर जाती है और उसी के साथ उद्योग में भी शिथिलता आ जाती है। पर कर्म-भावना-प्रधान बराबर एकरस रहता है। फलासक्त उत्साही असफल होने पर खिन्न और दु:खी होता है, पर कर्मासक्त उत्साही केवल कर्मानुष्ठान के पूर्व की अवस्था में हो जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि कर्म-भावना-प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है। फल-भावना-प्रधान उत्साह तो लोभ ही का एक प्रच्छन्न रूप है।

उत्साह वास्तव में कर्म और फल की मिली-जुली अनुभूति है जिसकी प्रेरणा से तत्परता आती है। यदि फल दूर ही पर दिखाई पड़े, उसकी भावना के साथ हो उसकी लेशमात्र भी कर्म या प्रयत्न के साथ लगाव न मालूम हो तो हमारे हाथ-पाँव कभी न उठें और उस फल के साथ हमारा संयोग ही न हो। इससे कर्म शृंखला की पहली कड़ी पकड़ते ही फल के आनन्द की भी कुछ अनुभूति होने लगती है। यदि हमें यह निश्चय हो जाय की अमुक स्थान पर जाने से हमें किसी प्रिय व्यक्ति का दर्शन होगा तो उस निश्चय के प्रभाव से हमारी यात्रा भी अत्यन्त प्रिय हो जायेगी। हम चल पड़ेंगे और हमारे अंगों की प्रत्येक गति में प्रफुल्लता दिखाई देगी। यही प्रफुल्लता कठिन से कठिन कर्मों के साधन में भी देखी जाती है। वे कर्म भी प्रिय हो जाते हैं और अच्छे लगने लगते हैं। जब तक फल तक पहुँचनेवाला कर्म-पथ अच्छा न लगेगा तब तक केवल फल का अच्छा लगना कुछ नहीं। फल की इच्छा मात्र हृदय में रखकर जो प्रयत्न किया जायेगा वह अभावमय और आनन्दशून्य होने के कारण निर्जीव-सा होगा।

कर्म-रुचि-शून्य प्रयत्न में कभी-कभी इतनी उतावली और आकुलता होती है कि मनुष्य साधना के उत्तरोत्तर क्रम का निर्वाह न कर सकने के कारण बीच ही में चूक जाता है। मान लीजिए कि एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर विचरते हुए किसी व्यक्ति को नीचे बहुत दूर तक गई हुई सीढ़ियाँ दिखाई दीं और यह मालूम हुआ कि नीचे उतरने पर सोने का ढेर मिलेगा। यदि उसमें इतनी सजीवता है कि उक्त सूचना के साथ ही वह उस स्वर्ण-राशि के साथ एक प्रकार के मानसिक संयोग का अनुभव करने लगा तथा उसका चित्त प्रफुल्ल और अंग सचेष्ट हो गये, उसे एक-एक सीढ़ी स्वर्णमयी दिखाई देगी, एक-एक क्षण उसे सुख से बीता हुआ जान पड़ेगा और वह प्रसन्नता के साथ स्वर्णराशि तक पहुँचेगा। इस प्रकार उसके प्रयत्न-काल को भी फल-प्राप्ति काल के अन्तर्गत ही समझना चाहिए। इसके विरुद्ध यदि उसका हृदय दुर्बल होगा और उसमें इच्छामात्र ही उत्पन्न होकर रह जायेगी; तो अभाव के बोध के कारण उसके चित्त में यही होगा कि कैसे झट से नीचे पहुँच जायँ। उसे एक-एक सीढ़ी उतरना बुरा मालूम होगा और आश्चर्य नहीं कि वह या तो हारकर बैठ जाय या लड़खड़ाकर मुँह के बल गिर पड़े।

फल की विशेष आसक्ति से कर्म के लाघव की वासना उत्पन्न होती है; चित्त में यही आता है कि कर्म बहुत सरल करना पड़े और फल बहुत-सा मिल जाय। श्रीकृष्ण ने कर्म-मार्ग से फलासक्ति की प्रबलता हटाने का बहुत ही स्पष्ट उपदेश दिया; पर उनके समझाने पर भी भारतवासी इस वासना से ग्रस्त होकर कर्म से तो उदास हो बैठे और फल के इतने पीछे पड़े कि गरमी में ब्राह्मण को एक पेठा देकर पुत्र की आशा करने लगे; चार आने रोज का अनुष्ठान कराके व्यापार से लाभ, शत्रु पर विजय, रोग मे मुक्ति, धन-धान्य की वृद्धि तथा और भी न जाने क्या-क्या चाहने लगे। आसक्ति प्रस्तुत या उपस्थित वस्तु में ही ठीक कही जा सकती है। कर्म सामने उपस्थित रहता है। इससे आसक्ति उसी में चाहिए, फल दूर रहता है, इससे उसकी ओर कर्म का लक्ष्य काफी है। जिस आनन्द से कर्म की उत्तेजना होती है और जो आनन्द कर्म करते समय तक बराबर चला चलता है उसी का नाम उत्साह है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करनेवाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी; क्योंकि एक तो कर्म-काल में उसका जो जीवन बीता वह सन्तोष या आनन्द में बीता, उसके उपरान्त फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंग की योजना होती है। बुद्धि-द्वारा पूर्ण रूप से निश्चित की हुई व्यापार-परम्परा का नाम ही प्रयत्न है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है और इधर-उधर दौड़-धूप करता जाता है तब तक उसके चित्त में जो सन्तोष रहता है—प्रत्येक नये उपचार के साथ जो आनंद का उन्मेष होता रहता है—यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वहाँ रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश सन्तोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दु:ख में कटता । इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्मग्लानि के उस कठोर दु:ख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच-सोचकर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया ।

कर्म में आनन्द अनुभव करनेवालों ही का नाम कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनन्द भरा रहता है कि कर्त्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और क्लेश का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास और तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्म-वीर का सच्चा सुख है। उसके लिए सुख तब तक के लिए रुका नहीं रहता जब तक कि फल प्राप्त न हो जाय; बल्कि उस समय से थोड़ा-थोड़ा करके मिलने लगता है जब से वह कर्म की ओर हाथ बढ़ाता है।

कभी-कभी आनन्द का मूल विषय तो कुछ और रहता है, पर उस आनन्द के कारण एक ऐसी स्फूर्ति उत्पन्न होती है जो बहुत से कामों की ओर हर्ष के साथ अग्रसर करती है। इसी प्रसन्नता और तत्परता को देख लोग कहते हैं कि वे काम बड़े उत्साह से किये जा रहे हैं। यदि किसी मनुष्य को बहुत-सा लाभ हो जाता है या उसकी कोई बड़ी भारी कामना पूर्ण हो जाती है तो जो काम उसके सामने आते हैं। उन सबको वह बड़े हर्ष और तत्परता के साथ करता है । उसके इस हर्ष और तत्परता को भी लोग उत्साह ही कहते हैं। इसी प्रकार किसी उत्तम फल या सुखप्राप्ति की आशा या निश्चय से उत्पन्न आनन्द, फलोन्मुख प्रयत्नों के अतिरिक्त और दूसरे व्यापारों के साथ संलग्न होकर, उत्साह के रूप में दिखाई पड़ता है। यदि हम किसी ऐसे उद्योग में लगे हैं जिससे आगे चलकर हमें बहुत लाभ या सुख की आशा है तो हम उस उद्योग को तो उत्साह के साथ करते ही हैं, अन्य कार्यों में भी प्राय: अपना उत्साह दिखा देते हैं।

यह बात उत्साह में नहीं, अन्य मनोविकारों में भी बराबर पाई जाती है। यदि हम किसी बात पर क्रुद्ध बैठे हैं और इसी बीच में कोई दूसरा आकर हमसे कोई बात सीधी तरह भी पूछता है तो हम उस पर झुँझला उठते हैं। इस झुँझलाहट का न तो कोई निर्दिष्ट कारण होता है न उद्देश्य। यह केवल क्रोध की स्थिति व्याघात को रोकने की क्रिया है, क्रोध की रक्षा का प्रयत्न है। इस झुँझलाहट द्वारा हम यह प्रकट करते हैं कि हम क्रोध में हैं और क्रोध ही में रहना चाहते हैं। क्रोध को बनाये रखने के लिए हम उन बातों से भी क्रोध ही संचित करते हैं जिनसे दूसरी अवस्था में हम विपरीत भाव प्राप्त करते। इसी प्रकार यदि हमारा चित्त किसी विषय में उत्साहित रहता है तो हम अन्य विषयों में भी अपना उत्साह दिखा देते हैं। यदि हमारा मन बढ़ा हुआ रहता है तो हम बहुत से काम प्रसन्नतापूर्वक करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी बात का विचार करके सलाम-साधक लोग हाकिमों से मुलाकात करने के पहले अर्दलियों से उनका मिजाज पूछ लिया करते हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

सुभीता सुविधा **प्रयोजन** उद्देश्य, हेतु **वाग्वीर** बोलने में होशियार **मीमांसक** समालोचक **तुषार-मंडित** बर्फ से ढँका हुआ **अभ्रभेदी** आकाशभेदी **धृति** धैर्य **श्लाघ्य** प्रशंसनीय **दृष्टांत** उदाहरण **शृंखला** कड़ी, जंजीर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) किसी कार्य को उत्साह की संज्ञा कब दी जा सकती है ?

(2) उत्साही वीर और बेहया में क्या अंतर है ?

(3) उत्साह किसे कहते हैं ?

(4) कर्मवीर किसे कहते हैं ?

(5) उत्साह के प्रमुख भेद लिखिए।

(6) युद्धवीर में आलंबन किसे कहा गया है ?

(7) सच्ची दानवीरता किसे कहेंगे ?

(8) साहस और उत्साह में क्या अंतर है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) उत्साही व्यक्ति का ध्यान कहाँ तक फैला रहता है ?

(2) एक कार्य की सफलता दूसरे कार्य को किस प्रकार प्रभावित करती है ?

(3) कर्म में लाघव की वासना क्यों उत्पन्न होती है ?

(4) सलाम-साधक लोग हाकिमों से मिलने से पहले अर्दलियों से उनका मिज़ाज क्यों पूछ लिया करते हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) किस प्रकार के लोगों से सुधार-कार्य में सहायता के स्थान पर बाधा पहुँचने की संभावना रहती है ?

(2) फल की इच्छाभाव से किया जाने वाला प्रयत्न आनंदशून्य क्यों होता है ?

(3) कर्म के अनुष्ठान में आनंद के विविध रूपों को समझाइए।

(4) 'फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता' पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है।

(2) कर्म-सौंदर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

(3) फलप्रधान भावना लोभ का ही एक प्रच्छन्न रूप है।

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

ग्लानि, लाभ, मुक्ति, क्लेश, दिव्य, औषधि।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

अपेक्षित, धीरता, अशुभ, निश्चेष्ट, तत्परता, श्लाघ्य, पापाचार, खिन्न।

7. सही विकल्प चुनकर वाक्य पूरा कीजिए :

(1) युद्धवीर में .... को आलंबन कहा गया है।

(A) विजित (B) विजेतव्य (C) विजेता (D) विजयी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) फल की विशेष आसक्ति से कर्म के .... की वासना उत्पन्न होती है।

(A) लघुता (B) प्रारब्ध (C) लाघव (D) विभाजन

(3) कर्म में आनंद अनुभव करनेवालों ही का नाम .... है।

(A) कर्मण्य (B) नम्य (C) आनंदी (D) अनुभवी

(4) फल .... रहता है, इससे उसकी ओर कर्म का लक्ष्य काफी है।

(A) निकट (B) सामने (C) दूर (D) ऊपर

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'उत्साह' विषय पर आठ-दस वाक्यों का अनुच्छेद लिखिए।
- कर्म एवं फल की शृंखला के अनुभव की चर्चा कीजिए।
- नीचे दिए गए परिच्छेद का एक तिहाई में सार लिखिए :

  ''फल की विशेष आसक्ति से .... का नाम उत्साह है।''

शिक्षक-प्रवृत्ति

- कर्म एवं फल की शृंखला के दौरान विद्यार्थियों को धीरज रखने की सीख दीजिए।
- लेखक के 'क्रोध' निबंध का सारांश समझाइए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7 रानी और कानी

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(जन्म : सन् 1897 ई.; निधन : 1961 ई.)

छायावाद के प्रमुख ओजस्वी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल में मेदनीपुर जिले के महिषादल में हुआ था। इन्होंने संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का अध्ययन घर पर ही किया था। ये जीवन पर्यन्त अभावों से जूझते रहे। इसके बावजूद वे किसी के सामने झुके नहीं और एक निराली मस्ती तथा फक्कड़पन के साथ जीते रहे। यथार्थवादी आलोचकों के उग्र प्रहार और प्रकाशकों के शोषण का शिकार होने के बाद भी इन्होंने कभी दैन्यवृत्ति स्वीकार नहीं की। माता, पिता, पत्नी और पुत्री की असमय मृत्यु के आघात ने तो इन्हें इतना हिला दिया कि 'दुख ही जीवन की व्यथा रही' जैसी पंक्तियों के रूप में इनका हृदय फूट पड़ा। 'महाप्राण' और 'निराला' शब्द इनके स्वभाव और वैचित्र्य के अनुरूप हैं।

निराला के साहित्य और स्वभाव का मूल स्वर विद्रोही रहा है। अपनी विद्रोही चेतना के कारण इन्होंने हर दिशा में परम्पराएँ तोड़ी और यहाँ तक कि स्वयं अपनी ही परम्परा में भी न बंध सके। सबसे पहले इन्होंने ही छायावाद का अतिक्रमण कर प्रगतिशील एवं प्रयोगशील काव्य-दृष्टि का परिचय दिया । इनकी कविता में छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, राष्ट्र-प्रेम, प्रकृति-वर्णन के साथ विद्रोह और मानव के प्रति सहानुभूति का स्वर है। छंद के बंधन तोड़कर मुक्त छन्द का प्रवर्तन किया और नवगीत की नवदिशा की ओर निर्देश किया। कोमलकांत पदावली के साथ-साथ ओजपूर्ण शब्दावली का भी इन्होंने सफल प्रयोग किया।

'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'बेला', 'नये पत्ते', 'अपरा' इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। इनकी 'भिक्षुक', 'विधवा', 'जूही की कली' कविताएँ बहुत ही प्रसिद्ध हुईं। 'राम की शक्तिपूजा' निराला की ही नहीं समग्र छायावादी काव्य की एक श्रेष्ठ उपलब्धि है। कुछ समय तक निराला ने 'मतवाला' और 'समन्वय' का सम्पादन भी किया। निराला ने उपन्यास, कहानियाँ, निबंध, समीक्षा तथा संस्मरण भी लिखे हैं।

'रानी और कानी' कविता में एक ऐसी लड़की की वेदना का वर्णन है, जिसकी 'माँ' उसे प्यार से 'रानी' कहती है, लेकिन इसके उलट चेहरा कुरूप है। पड़ोस की औरतें भी उसकी कुरूपता को याद कराके उसकी और उसकी माँ की यातना बढ़ाती रहती हैं। विडंबना यह है कि यह यातना उसे अपने चरित्र के तमाम गुणों के बावजूद झेलनी पड़ती है।

माँ उसको कहती है रानी
आदर से, जैसा है नाम;
लेकिन उसका उल्टा रूप,
चेचक के दाग, काली, नक-चिप्टी,
गंजा-सर, एक आँख कानी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रानी अब हो गयी सयानी,
बीनती है, काँड़ती है, कूटती है, पीसती है,
डलियों के सीले अपने रूखे हाथों मीसती है,
घर बहारती है, करकट फेंकती है,
और घड़ों भरती है पानी;
फिर भी माँ का दिल बैठा रहा,
एक चोर घर में पैठा रहा,
सोचती रहती है दिन-रात
कानी की शादी की बात,
मन मसोसकर वह रहती है
जब पड़ोस की कोई कहती है-
"औरत की ज़ात रानी,
ब्याह भला कैसे हो
कानी जो है वह।"
सुनकर कानी का दिल हिल गया,
काँपे कुल अंग,
दायीं आँख से
आँसू भी बह चले माँ के दुख से,
लेकिन वह बायीं आँख कानी
ज्यों-की-त्यों रह गयी रखती निगरानी।

शब्दार्थ-टिप्पण

नकचिप्टी जिसकी नाक चपटी हो **सयानी** प्रौढ़, वयस्क, चालाक **गंजा** जिसके सिर पर बाल न हो **काँड़ना** कूटना, कुचलना **बुहारना** झाड़ना, झाड़ू लगाना **करकट** कूड़ा **निगरानी** निरीक्षण, पहरेदारी।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) माँ प्यार से कानी बेटी को किस नाम से पुकारती थी ?

(2) बेटी के विषय में माँ क्यों चिंतित थी ?

(3) बेटी के चेहरे पर किसके दाग थे ?

(4) रानी का रंग कैसा था ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) रानी क्या-क्या कार्य करती थी ?

(2) बेटी की चिन्ता में माँ के मन में कौन-कौन से विचार आते ?

(3) पड़ोसिन रानी के विषय में क्या कहती है, क्यों ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) पड़ोसिन की बात का रानी पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(2) काव्य का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

4. भाव स्पष्ट कीजिए :

''औरत की जात रानी,
ब्याह भला कैसे हो
कानी जो है वह।''

5. काव्य के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) रानी अब हो गयी ....।

(A) सयानी (B) नौकरानी (C) दानी (D) स्वाभिमानी

(2) सोचा करती है दिन-रात, रानी की .... की बात।

(A) शादी (B) बर्बादी (C) दादी (D) खादी

6. मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) दिल बैठना

(2) मन मसोस कर रह जाना

7. समानार्थी शब्द लिखिए :

घर, हाथ, दिल, रात।

8. विरोधी शब्द लिखिए :

आदर, काली, दाईं, दु:ख।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- छात्र कक्षा में इस काव्य का सस्वर वाचन करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'चेचक' उन्मूलन कार्यक्रम की जानकारी दें।
- 'माँ की वेदना' से संबंधित अन्य काव्यों का संकलन करवाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8 अशफ़ाक उल्ला खाँ

रामप्रसाद बिस्मिल

(जन्म : सन् 1887 ई.; निधन : सन् 1927 ई.)

रामप्रसाद का जन्म शाहजहाँपुर (उ. प्र.) में एक निम्नवित्त ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके जन्म के कुछ वर्ष पहले ही उनके पितामह रोजी-रोटी की तलाश में ग्वालियर के अपने गाँव से आकर यहाँ बसे थे। पिता साधारण पढ़े-लिखे थे। कचहरी में सरकारी स्टाम्प बेचकर परिवार का पालन किया तथा बच्चों को शिक्षा दिलाई। बिस्मिल ने उर्दू मिडिल की परीक्षा में दो बार असफल होने पर अंग्रेजी मिडिल की पढ़ाई की। स्वाध्याय से बांग्ला भाषा सीखी। आरंभ में आर्यसमाज की प्रवृत्तियों से जुड़े बाद में क्रांतिकारी संगठन में सक्रिय हुए। 'काकोरी रेल डकैती' कांड का मुख्य अभियुक्त मानकर इन्हें फाँसी की सजा हुई और वे शहीद हो गए।

आरंभ में 'राम' तथा 'अज्ञात' नाम से पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे। बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद भी किए। 'आत्मकथा' फाँसी के दो दिन पहले जेल में पूरी करके उन्होंने किसी तरह बाहर भिजवाई। जिसके कुछ अंश श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के संपादन में 'काकोरी के शहीद' नाम से छपा।

यहाँ संकलित अंश में उनके साथी अशफ़ाक उल्ला खाँ की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है। बकौल रामप्रसाद बिस्मिल: 'बहुधा क्रांतिकारी सदस्यों को भी बड़ा आश्चर्य होता कि मैंने एक मुसलमान को क्रांतिकारी दल का एक प्रतिष्ठित सदस्य बना लिया। मेरे साथ तुमने जो कार्य किए, वे सराहनीय हैं। तुम्हारा हृदय बड़ा विशाल था। तुम्हारे भाव बड़े उच्च थे।'

मुझे भली-भाँति याद है, कि जब मैं बादशाही एलान के बाद शाहजहाँपुर आया था, तो तुमसे स्कूल में भेंट हुई थी। तुम्हारी मुझसे मिलने की बड़ी हार्दिक इच्छा थी। तुमने मुझसे मैनपुरी षड्यंत्र के सम्बन्ध में कुछ बातचीत करनी चाही थी। मैंने यह समझकर कि एक स्कूल का मुसलमान विद्यार्थी मुझसे इस प्रकार की बातचीत क्यों करता है, तुम्हारी बातों का उत्तर उपेक्षा की दृष्टि से दे दिया था। तुम्हें उस समय बड़ा खेद हुआ था। तुम्हारे मुख से हार्दिक भावों का प्रकाश हो रहा था। तुमने अपने इरादे को यों ही नहीं छोड़ दिया, अपने निश्चय पर डटे रहे। जिस प्रकार हो सका काँग्रेस में बातचीत की। अपने इष्ट-मित्रों द्वारा इस बात का विश्वास दिलाने की कोशिश की कि तुम बनावटी आदमी नहीं, तुम्हारे दिल में मुल्क की खिदमत करने की ख्वाहिश थी। अंत में तुम्हारी विजय हुई। तुम्हारी कोशिशों ने मेरे दिल में जगह पैदा कर ली। तुम्हारे बड़े भाई मेरे उर्दू मिडिल के सहपाठी तथा मित्र थे, यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। थोड़े दिनों में ही तुम मेरे छोटे भाई के समान हो गए थे, किन्तु छोटे भाई बनकर तुम्हें संतोष न हुआ। तुम समानता का अधिकार चाहते थे, तुम मित्र की श्रेणी में अपनी गणना चाहते थे। वही हुआ। तुम सच्चे मित्र बन गए। सब को आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्य-समाजी और मुसलमान का मेल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कैसा ? मैं मुसलमानों की शुद्धि करता था। आर्य-समाज मंदिर में मेरा निवास था, किन्तु तुम इन बातों की किंचितमात्र चिंता न करते थे। मेरे कुछ साथी तुम्हें मुसलमान होने के कारण घृणा की दृष्टि से देखते थे, किन्तु तुम अपने निश्चय में दृढ़ थे। मेरे पास आर्य-समाज मंदिर में आते-जाते थे। हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा होने पर, तुम्हारे मुहल्ले के सब कोई तुम्हें खुल्लमखुल्ला गालियाँ देते थे, काफ़िर के नाम से पुकारते थे, पर तुम कभी भी उनके विचारों से सहमत न हुए। सदैव हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के पक्षपाती रहे। तुम एक सच्चे मुसलमान तथा सच्चे स्वदेश-भक्त थे। तुम्हें यदि जीवन में कोई विचार था, तो यही कि मुसलमानों को खुदा अकल देता, कि वे हिन्दुओं के साथ मिलकर के हिन्दुस्तान की भलाई करते। जब मैं हिन्दी में कोई लेख या, पुस्तक लिखता तो तुम सदैव यही अनुरोध करते कि उर्दू में क्यों नहीं लिखते, जो मुसलमान भी पढ़ सकें ? तुमने स्वदेशभक्ति के भावों को भलीभांति समझने के लिए ही हिन्दी का अच्छा अध्ययन किया। अपने घर पर जब माताजी तथा भ्राताजी से बातचीत करते थे, तो तुम्हारे मुँह से हिन्दी शब्द निकल जाते थे, जिससे सबको बड़ा आश्चर्य होता था।

तुम्हारी इस प्रकार की प्रवृत्ति को देखकर बहुतों को संदेह होता था कि कहीं इस्लाम-धर्म त्याग कर शुद्धि न करा लो। पर तुम्हारा हृदय तो किसी प्रकार अशुद्ध न था, फिर तुम शुद्धि किस वस्तु की कराते ? तुम्हारी इस प्रकार की प्रगति ने मेरे हृदय पर पूर्ण विजय पा ली। बहुधा मित्र मण्डली में बात छिड़ती कि कहीं मुसलमान पर विश्वास करके धोखा न खाना। तुम्हारी जीत हुई, मुझमें तुममें कोई भेद न था। बहुधा मैंने तुमने एक थाली में भोजन किए। मेरे हृदय से वह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथा अगाध प्रीति रखते थे। हाँ ! तुम मेरा नाम लेकर पुकार नहीं सकते थे। तुम तो सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हारे हृदय-कम्प (Palpitation of heart) का दौरा हुआ, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह में बारंबार 'राम' 'हाय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई-बाँधवों को आश्चर्य था कि 'राम', 'राम' कहता है। कहते कि 'अल्लाह' 'अल्लाह' कहो, पर तुम्हारी 'राम-राम' की रट थी। उसी समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो 'राम' के भेद को जानते थे। तुरंत मैं बुलाया गया । मुझसे मिलने पर तुम्हें शांति हुई, तब सब लोग 'राम-राम !' के भेद को समझे।

अंत में इस प्रेम, प्रीति तथा मित्रता का परिणाम क्या हुआ ? मेरे विचारों के रंग में तुम भी रँग गए। तुम भी कट्टर क्रांतिकारी बन गए। अब तो तुम्हारा दिन-रात प्रयत्न यही था कि किसी प्रकार मुसलमान नवयुवकों में भी क्रांतिकारी भावों का प्रवेश हो। वे भी क्रांतिकारी आंदोलन में योगदान दें। जितने तुम्हारे बन्धु तथा मित्र थे सब पर तुमने अपने विचारों का प्रभाव डालने का प्रयत्न किया। बहुधा क्रांतिकारी सदस्यों को भी बड़ा आश्चर्य होता कि मैंने कैसे एक मुसलमान को क्रांतिकारी दल का प्रतिष्ठित सदस्य बना लिया। मेरे साथ तुमने जो कार्य किये, वे सराहनीय हैं। तुमने कभी भी मेरी आज्ञा की अवहेलना न की। एक आज्ञाकारी भक्त के समान मेरी आज्ञा पालन में तत्पर रहते थे। तुम्हारा हृदय बड़ा विशाल था। तुम्हारे भाव बड़े उच्च थे।

मुझे यदि शांति है तो यही कि तुमने संसार में मेरा मुख उज्जवल कर दिया। भारत के इतिहास में यह घटना भी उल्लेखनीय हो गई कि अशफ़ाक उल्ला ने क्रांतिकारी आंदोलन में योग दिया। अपने भाई-बन्धु तथा सम्बन्धियों के समझाने पर कुछ भी ध्यान न दिया। गिरफ्तार हो जाने पर भी अपने विचारों में दृढ़ रहे ! जैसे तुम शारीरिक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बलशाली थे, वैसे ही मानसिक वीर तथा आत्मा से उच्च सिद्ध हुए। इन सबके परिणामस्वरूप अदालत में तुमको मेरा सहकारी (लेफ्टीनेन्ट) ठहराया गया और जज ने मुकदमे का फैसला लिखते समय तुम्हारे गले में जयमाला (फाँसी की रस्सी) पहना दी। प्यारे भाई, तुम्हें यह समझकर संतोष होगा कि जिसने अपने माता-पिता की धन-संपत्ति को देश-सेवा में अर्पण करके उन्हें भिखारी बना दिया, जिसने अपने सहोदर के भावी भाग्य को भी देश-सेवा की भेंट कर दिया, जिसने अपना तन-मन-धन सर्वस्व मातृ-सेवा में अर्पण करके अपना अंतिम बलिदान भी दे दिया, उसने अपने प्रिय सखा अशफ़ाक को भी उसी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।

'असगर' हराम इश्क में हस्ती ही जुर्म है।
रखना कभी न पाँव यहाँ सर लिये हुए ॥

शब्दार्थ-टिप्पण

बादशाही एलान बादशाह द्वारा जारी की गई घोषणा, राजाज्ञा (यहाँ मैनपुरी षड्‌यंत्र से संबंधित घोषणा) **हार्दिक** दिली, आंतरिक **षड्‌यंत्र** साजिश, दुरभिसंधि **उपेक्षा** अवहेलना (अपेक्षा का विलोम) **मुल्क़** देश, वतन, राज्य, प्रदेश **ख़िदमत** सेवा-टहल, चाकरी **काफ़िर** नास्तिक (इस्लाम धर्म को न मानने वाले के संकुचित अर्थ में) **ऐक्य** एकता, एका **अनुरोध** आग्रह, विनती, प्रार्थना **अगाध** अथाह, अपार **हृदयकंप** (Palpitation of heart) हृदय का तेजी से धड़कना, नाड़ी चलना, धुकधुकाना **अवहेलना** अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार **सहकारी** सहकर्मी, सहायक कार्यकर्ता, साथ में काम करने वाला (वर्तमान में इसका Co-operative के अर्थ में भी प्रयोग हो रहा है।) **हराम** दूषित, निषिद्ध, अनुचित **हस्ती** अस्तित्व, जीवन **जुर्म** अपराध, वह काम जिसे कानूनन दंडनीय माना गया हो

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) स्कूल में पहली मुलाकात पर रामप्रसाद ने अशफ़ाक की बातों का उत्तर कैसे दिया ?

(2) अशफ़ाक के किस परिचय को जानकर 'बिस्मिल' को बहुत प्रसन्नता हुई ?

(3) अशफ़ाक तथा बिस्मिल की मैत्री को लोग आश्चर्य क्यों मानते थे ?

(4) अशफ़ाक के हिन्दी सीखने का क्या कारण था ?

(5) अशफ़ाक 'बिस्मिल' को किस नाम से पुकारते थे ?

(6) लोगों को अशफ़ाक की 'शुद्धि' का भय क्यों था ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) अशफ़ाक ने बिस्मिल के दिल में जगह कैसे बनाई ?

(2) बीमारी के दिनों में अशफ़ाक द्वारा राम-राम बोलने का क्या रहस्य था ?

(3) काकोरी कांड में अशफ़ाक को रामप्रसाद बिस्मिल का लेफ्टीनेन्ट क्यों ठहराया गया ?

(4) शहादत के पूर्व रामप्रसाद बिस्मिल को किस बात का संतोष था ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छ वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) अशफ़ाक 'बिस्मिल' के सच्चे मित्र किस प्रकार बन गए ?

(2) क्रांतिकारी जीवन काल में अशफ़ाक किन-किन बातों के लिए प्रयत्नशील रहे ?

(3) पाठ के आधार पर अशफ़ाक की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

(4) 'बिस्मिल' के जीवन से आपको क्या-क्या प्रेरणा मिलती है ? सविस्तार लिखिए।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

मिलन, उपेक्षा, प्रकाश, नाखुशी, प्रतिष्ठित, उच्च, विशाल, अनुरोध

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द बताइए :

अमाघ, अवहेलना, मुल्क, ख्वाहिश, ख़िदमत

6. उदाहरण समझकर प्रत्यय अलग करके लिखिए :

उदाहरण : बादशाही – बादशाह + ई

उल्लेखनीय –

मित्रता –

हिन्दुओं –

पक्षपाती –

समझकर –

7. उदाहरण के अनुसार उपसर्ग अलग कीजिए :

उदाहरण : अप्रसन्न – अ + प्रसन्न

सहकर्मी –

प्रगति –

आगमन –

नाखुश –

8. विग्रह करके समास का नाम बताइए :

इष्ट-मित्र, मातृ-सेवा, स्वदेश-भक्ति, हिन्दू-मुसलमान, प्रतिदिन

9. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(काफ़िर, भक्त, शुद्धि, अवहेलना)

(1) अशफाक ने 'बिस्मिल' की आज्ञा की कभी .... नहीं की।

(2) एक आज्ञाकारी .... की तरह मेरी (बिस्मिल की) आज्ञापालन में तत्पर रहते थे। (अशफ़ाक)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) आर्यसमाज द्वारा उन दिनों मुसलमानों की .... की जाती थी।

(4) सांप्रदायिक झगड़ों के दिनों में अशफ़ाक को उसके मुहल्ले के लोग .... कहते थे।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' की 'आत्मकथा' प्राप्त करके पढ़िए।
- 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में गुजरात के क्रांतिकारियों के योगदान के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को भारतीय स्वाधीनता संग्राम के कुछ अन्य क्रांतिकारी वीरों का परिचय दीजिए।
- 'बसंत-रज्जब' (हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए) की शहादत के बारे में जानकारी दीजिए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9 समर शेष है

रामधारी सिंह 'दिनकर'

(जन्म : सन् 1908 ई.; निधन : 1974 ई.)

जन-जागरण की काव्य-धारा को प्रखर बनानेवाले ओजस्वी कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार में मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। कुछ वर्षों तक अध्यापन कार्य किया, हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक रहे, बिहार सरकार के प्रचार-विभाग में उप-निदेशक, मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा भागलपुर विश्वविद्यालय के उप कुलपति के रूप में इन्होंने अपनी सेवाएँ दीं। ये भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार तथा राज्यसभा के सदस्य भी रहे।

ये भारतीय इतिहास के ज्ञाता थे। दिनकरजी का व्यक्तित्व एवं कवित्व राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत रहा। दिनकरजी की सबसे बड़ी विशेषता है - अपने देश और युग के प्रति जागरूकता। कवि ने तत्कालीन घटनाओं, विषमताओं का खुलकर चित्रण किया है। इन्होंने प्राचीन कथाओं को वर्तमान युग की समस्याओं नए जीवनमूल्यों, नए विचारों को उपेक्षित सामान्य मानव की आकांक्षाओं के साथ जोड़ा। इनकी वाणी में शक्ति है, ओज है। इनकी कविता में शोषित और पीड़ित वर्ग की व्यथा और उससे मुक्ति का संघर्ष है। इस राष्ट्रीय प्रतिभा के कवि ने चिंतनात्मक निबंध भी लिखे हैं। 'संस्कृति के चार अध्याय' तो दिनकरजी की राष्ट्रीय एवं चिंतनात्मक प्रतिभा का शीर्षस्थ प्रमाण है, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'उर्वशी' के लिए इन्हें सन् 1972 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। दिनकरजी ने अधिकांश ऐसी कविताओं का सृजन किया है, जो जन-जीवन को शौर्य, पराक्रम एवं ओज से परिपूर्ण करके कर्मण्यता की ओर उन्मुख करनेवाली है।

'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'नई दिल्ली' तथा 'विपथगा' इनके प्रसिद्ध काव्य हैं। 'अर्ध नारीश्वर', 'मिट्टी की ओर' तथा 'रेती के फूल' आदि इनके निबंध संग्रह हैं।

प्रस्तुत कविता में दिनकरजी ने अपनी ओजस्वी वाणी से भ्रष्टाचारी और अन्यायी शासन व्यवस्था को ललकारते हुए सावधान किया है, और साथ ही जन साधारण को जाग्रत करते हुए एकजुट होने का आह्वान किया है। कवि कहता है कि अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ है - 'समर शेष है'।

ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो।
किसने कहा, युद्ध की वेला गई, शान्ति से बोलो।
किसने कहा, और मत बेधो हृदय वह्नि के शर से,
भरो भुवन का अंग कुसुम से, कुंकुम से, केशर से ?

कुंकुम लेपूँ किसे ? सुनाऊँ किसको कोमल गान ?
तड़प रहा आँखों के आगे भूखा हिन्दुस्तान।

फूलों की रंगीन लहर पर ओ उतरानेवाले !
ओ रेशमी नगर के वासी ! ओ छवि के मतवाले !
सकल देश में हालाहल है, दिल्ली में हाला है।
दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में अंधियाला है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मखमल के परदों के बाहर, फूलों के उस पार,
ज्यों का त्यों है खड़ा आज भी मरघट-सा संसार।

वह संसार जहाँ पर पहुँची अब तक नहीं किरण है,
जहाँ क्षितिज है शून्य अभी तक अंबर तिमिर-वरण है।
देख जहाँ का दृश्य आज भी अंतस्तल हिलता है,
माँ को लज्जावसन और शिशु को न क्षीर मिलता है।

पूछ रहा है जहाँ चकित हो जन-जन देख अकाज
सात वर्ष हो गये, राह में अटका कहाँ स्वराज ?

अटका कहाँ स्वराज ? बोल दिल्ली ! तू क्या कहती है ?
तू रानी बन गयी, वेदना जनता क्यों सहती है ?
सब के भाग दबा रक्खे हैं किसने अपने कर में ?
उतरी थी जो विभा, हुई बन्दिनी, बता, किस घर में ?

समर शेष, है यह प्रकाश बन्दीगृह से छूटेगा।
और नहीं तो तुझ पर पापिनि ! महावज्र टूटेगा।।

समर शेष है, इस स्वराज्य को सत्य बनाना होगा।
जिसका है यह न्यास, उसे सत्वर पहुँचाना होगा।
धारा के मग में अनेक पर्वत जो खड़े हुए हैं।
गंगा का पथ रोक इन्द्र के गज जो अड़े हुए हैं;

कह दो उनसे, झुकें अगर तो जग में यश पायेंगे,
अड़े रहे तो ऐरावत पत्तों-से बह जायेंगे।

समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो,
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो।
पथरीली, ऊँची जमीन है, तो उसको तोड़ेंगे,
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे।

समर शेष है, चलो ज्योतियों के बरसाते तीर,
खंड-खंड हो गिरे विषमता की काली जंजीर।

समर शेष है, अभी मनुज-भक्षी हुंकार रहे हैं।
गांधी का पी लहू जवाहर पर फुफकार रहे हैं।
समर शेष है, अहंकार इनका हरना बाकी है।
वृक को दंतहीन, अहि को निर्विष करना बाकी है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समर शेष है, शपथ धर्म की, लाना है वह काल,
विचरें अभय देश में गाँधी और जवाहरलाल।

तिमिर-पुत्र ये दस्यु कहीं कोई दुष्काण्ड रचें ना।
सावधान हो खड़ी देश भर में गाँधी की सेना।
बलि देकर भी बली ! स्नेह का यह मृदु व्रत साधो रे !
मन्दिर औ' मस्जिद, दोनों पर एक तार बांधो रे !

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।

शब्दार्थ-टिप्पण

तरकस तीर रखने का चोंगा, तूणीर, निषंग **कस** वह रस्सी जिससे कोई चीज़ बांधी जाय **वेला** समय, अवसर **वह्नि** अग्नि, आग **शर** बाण, तीर **हलाहल** जहर **क्षितिज** जिस स्थान पर जमीन आसमान मिलते हुए दिखाई दें **अंबर** आकाश **क्षीर** दूध **तिमिर** अंधकार **विभा** प्रभा, कांति, किरण, सौंदर्य **महावज्र** इन्द्र का अस्त्र, दधीचि की हड्डी से बना नोकदार अस्त्र **सत्वर** शीघ्र **वृक** भेड़िया **अहि** सर्प **निर्विष** विष रहित **दस्यु** डाकू **व्याध** बहेलिया, शिकारी।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि की दृष्टि से हिन्दुस्तान की दशा कैसी है ?

(2) कवि ने माता और शिशु की दुर्दशा के बारे में क्या कहा है ?

(3) कवि 'दिल्ली' से क्या प्रश्न पूछता है ?

(4) ऐरावत किसके समान बह जायेंगे ?

(5) मंदिर-मस्जिद के बारे में कवि क्या कहते हैं ?

(6) तटस्थ लोगों का अपराध कौन लिखेगा ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने देशवासियों एवं दिल्लीवासियों में क्या अन्तर दर्शाया है ?

(2) स्वराज लाने के लिए कवि बाधक तत्वों को क्या चेतावनी देते हैं ?

(3) विषमता दूर करने के विषय में कवि के क्या विचार हैं ?

(4) मनुजभक्षियों के बारे में कवि ने क्या कहा हैं ?

(5) कवि गांधी की सेना को क्या निर्देश देता है ?

3. प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) 'समर शेष है' काव्य में व्यक्त कवि के आक्रोश को अपने शब्दों में लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) 'समर शेष है' ऐसा कवि क्यों कहता है ? काव्य के आधार पर समझाइए।

(3) काव्य का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

4. काव्य पंक्तियों का भाव समझाइए :

समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो,
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो।
पथरीली, ऊँची जमीन है, तो उसको तोड़ेंगे,
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे।

समर शेष है, चलो ज्योतियों के बरसाते तीर
खंड-खंड हो गिरे विषमता की काली जंजीर।

5. सही विकल्प चुनकर काव्य-पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(1) तड़प रहा आँखों के आगे भूखा ....।

(A) पाकिस्तान (B) हिन्दुस्तान (C) अफगानिस्तान (D) रेगिस्तान

(2) .... वर्ष हो गये राह में अटका कहाँ स्वराज।

(A) दस (B) आठ (C) पाँच (D) सात

(3) अड़े रहे तो ऐरावत पत्तों से ....।

(A) उड़ जायेंगे (B) सड़ जायेंगे (C) बह जायेंगे (D) लहरायेंगे

(4) समर शेष है, शपथ धर्म की, लाना है वह ....।

(A) साल (B) काल (C) माल (D) थाल

(5) खंड-खंड हो गिरे विषमता की ....।

(A) काली जंजीर (B) सोने की जंजीर (C) चाँदी की जंजीर (D) लोहे की जंजीर

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- इस कविता को कंठस्थ कीजिए ।
- छात्र इस काव्य का कक्षा में सस्वर गान करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक वीररस के अन्य काव्यों का संकलन कराएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10 शत्रु

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(जन्म : सन् 1911 ई.; निधन : 1987 ई.)

बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार, कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार और साथ ही यात्रा-वृत्तांत के लेखक। 1929 में बी.एससी. करने के बाद एम.ए. में अंग्रेजी विषय रखा, मगर क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सेदारी के चलते पढ़ाई पूरी न हो सकी। हिंदी और अंग्रेज़ी की कई पत्रिकाओं का संपादन किया। प्रयोगवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। 1964 में 'आँगन के पार द्वार' पर साहित्य अकादेमी और 1979 में 'कितनी नावों पर कितनी बार' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

इनके उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' और 'नदी के द्वीप' बहुत चर्चित रहे। 'लौटती पगडंडियाँ' और 'छोड़ा हुआ रास्ता' के नाम से इनकी समग्र कहानियों का संकलन उपलब्ध है।

'शत्रु' एक प्रतीकात्मक नीतिकथा है। इसका चरित्र 'ज्ञान' सचमुच ज्ञान का प्रतीक प्रतीत होता है। वह जब मानव-जाति के 'शत्रु' से लड़ने के लिए निकलता है, तो क्रम से धर्म, समाज, विदेशी सरकार और भूख से लड़ने को तत्पर होता है। जब संसार बदलता नहीं है, बल्कि उसे दंडित करता है, तो वह आत्महत्या के लिए तैयार हो जाता है। तभी उसके भीतर से आवाज़ आती है, 'बस, अपनेआप से लड़ चुके ?' कहानी का निष्कर्ष यह निकलता है कि 'जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि हम निरंतर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं।'

ज्ञान को एक रात सोते समय भगवान् ने स्वप्न में दर्शन दिये और कहा—''ज्ञान, मैंने तुझे अपना प्रतिनिधि बनाकर संसार में भेजा है। उठो, संसार का पुनर्निर्माण करो।''

ज्ञान जाग पड़ा। उसने देखा, संसार अन्धकार में पड़ा है, और मानव-जाति उस अन्धकार में पथ-भ्रष्ट होकर विनाश की ओर बढ़ती चली जा रही है। वह ईश्वर का प्रतिनिधि है, तो उसे मानव-जाति को पथ पर लाना होगा, अन्धकार से बाहर खींचना होगा, उसका नेता बनकर उसके शत्रु से युद्ध करना होगा।

और वह इस तरह चौराहे पर खड़ा हो गया और सबको सुनाकर कहने लगा, ''मैं मसीह हूँ, पैगम्बर हूँ, भगवान का प्रतिनिधि हूँ। मेरे पास तुम्हारे उद्धार के लिए एक संदेश है।''

लेकिन किसी ने उसकी बात न सुनी। कुछ उसकी ओर देखकर हँस पड़ते, कुछ कहते, पागल है; अधिकांश कहते, यह हमारे धर्म के विरुद्ध शिक्षा देता है, नास्तिक है, इसे मारो। और बच्चे उसे पत्थर मारा करते।

आखिर तंग आकर वह एक अँधेरी गली में छिपकर बैठ गया, सोचने लगा। उसने निश्चय किया कि मानव-जाति का सबसे बड़ा शत्रु है धर्म; उसी से लड़ना होगा।

तभी पास कहीं से उसने स्त्री के करुण-क्रंदन की आवाज़ सुनी। उसने देखा, एक स्त्री भूमि पर लेटी है, उसके पास एक बहुत छोटा-सा बच्चा पड़ा है, जो या तो बेहोश है या मर चुका है, क्योंकि उसके शरीर में किसी प्रकार की गति नहीं है।

ज्ञान ने पूछा—''बहन, क्यों रोती हो ?''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उस स्त्री ने कहा—"मैंने एक विधर्मी से विवाह किया था। जब लोगों को इसका पता चला, तब उन्होंने उसे मार डाला और मुझे निकाल दिया। मेरा बच्चा भी भूख से मर रहा है।"

ज्ञान का निश्चय और दृढ़ हो गया। उसने कहा—"तुम मेरे साथ आओ, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।" और उसे अपने साथ ले गया।

ज्ञान ने धर्म के विरुद्ध प्रचार करना शुरू किया। उसने कहा—"धर्म झूठा बन्धन है। परमात्मा एक है, अबाध है और धर्म से परे है। धर्म हमें सीमा में रखता है, रोकता है, परमात्मा से अलग रखता है, अत: हमारा शत्रु है।"

लेकिन किसी ने कहा—"जो व्यक्ति पराई और बहिष्कृत औरत को अपने साथ रखता है, उसकी बात हम क्यों सुनें ।" तब लोगों ने उसे समाजच्युत करके बाहर निकाल दिया।

*

ज्ञान ने देखा कि धर्म से लड़ने के पहले समाज से लड़ना है। जब तक समाज पर विजय नहीं मिलती, तब तक धर्म का खण्डन नहीं हो सकता।

तब वह इसी प्रकार का प्रचार करने लगा। वह कहने लगा—"ये धर्मध्वजी, ये पोंगे पुरोहित-मुल्ला, ये कौन हैं ? इन्हें क्या अधिकार है हमारे जीवन को बाँध रखने का ? आओ, हम इन्हें दूर कर दें, एक स्वतन्त्र समाज की रचना करें, ताकि हम उन्नति के पथ पर बढ़ सकें।"

तब एक दिन विदेशी सरकार के दो सिपाही आकर उसे पकड़ ले गए; क्योंकि वह वर्गों में परस्पर विरोध जगा रहा था।

*

ज्ञान जब जेल काटकर बाहर निकला, तब उसकी छाती में इन विदेशियों के प्रति विद्रोह धधक रहा था। यही तो हमारी क्षुद्रताओं को स्थायी बनाये रखते हैं, और उनसे लाभ उठाते हैं। पहले अपने को विदेशी प्रभुत्व से मुक्त करना होगा, तब समाज को तोड़ना होगा, तब—

और यह गुप्त रूप से विदेशियों के विरुद्ध लड़ाई का आयोजन करने लगा।

एक दिन उसके पास एक विदेशी आदमी आया ! वह मैले-कुचैले, फटे-पुराने; खाकी कपड़े पहने हुए था। मुख पर झुर्रियाँ पड़ी थीं, आँखों में एक तीखा दर्द था। उसने ज्ञान से कहा—"आप मुझे कुछ काम दें, ताकि मैं अपनी रोजी कमा सकूँ। मैं विदेशी हूँ, आपके देश में भूखा मर रहा हूँ। कोई भी काम मुझे दें, मैं करूँगा। आप परीक्षा लें। मेरे पास रोटी का टुकड़ा भी नहीं है।"

ज्ञान ने विवश होकर कहा—"मेरी दशा तुमसे अच्छी नहीं है, मैं भी भूखा हूँ।"

वह विदेशी एकाएक पिघल-सा गया। बोला—"अच्छा, मैं आपके दु:ख से बहुत दु:खी हूँ। मुझे अपना भाई समझें । यदि आपस में सहानुभूति हो, तो भूखे मरना मामूली-सी बात है। परमात्मा आपकी रक्षा करे। मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूँ।"

ज्ञान ने देखा कि विदेशी-देशी का प्रश्न तब उठता है, जब पेट भरा हो। सबसे पहला शत्रु तो यह भूख ही है । पहले भूख को जीतना होगा, तभी आगे कुछ सोचा जा सकेगा—

और उसने 'भूख' के लड़ाकों का एक दल बनाना शुरू किया, जिसका उद्देश्य था, अमीरों से धन छीनकर सबमें समान रूप से वितरण करना, भूखों को रोटी देना इत्यादि। लेकिन जब धनिकों को इस बात का पता चला,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तब उन्होंने एक दिन चुपचाप अपने चरों द्वारा उसे पकड़वा मँगवाया और एक पहाड़ी क़िले में क़ैद कर दिया। वहाँ एकान्त में वे उसे सताने के लिए नित्य एक मुट्ठी चबैना और एक लोटा पानी दे देते थे, बस।

धीरे-धीरे ज्ञान का हृदय ग्लानि से भरने लगा। जीवन उसे बोझ-सा जान पड़ने लगा। निरन्तर यह भाव उसके भीतर जगा करता कि मैं ज्ञान, परमात्मा का प्रतिनिधि इतना विविश हूँ कि पेट-भर रोटी का प्रबन्ध भी मेरे लिए असम्भव है ? यदि ऐसा है तो कितना व्यर्थ है यह जीवन, कितना छूँछा, कितना बेमानी !

एक दिन वह किले की दीवार पर चढ़ गया। बाहर खाई में भरा हुआ पानी देखते-देखते उसे एकदम से विचार आया, और उसने निश्चय कर लिया कि वह उसमें कूदकर प्राण खो देगा। परमात्मा के पास लौट कर प्रार्थना करेगा कि मुझे इस भार से मुक्त करो, मैं तुम्हारा प्रतिनिधि हूँ; लेकिन ऐसे संसार में मेरा स्थान नहीं है।

यह स्थिर, मुग्ध दृष्टि से खाई के पानी में देखने लगा। वह कूदने को ही था कि, एकाएक उसने देखा, पानी में उसका प्रतिबिम्ब झलक रहा है, मानो कह रहा है—''बस, अपने-आपसे लड़ चुके ?''

*

ज्ञान सहमकर रुक गया, फिर धीरे-धीरे दीवार पर से नीचे उतर आया और किले में चक्कर काटने लगा।

और उसने जान लिया कि जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि हम निरन्तर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

नास्तिक ईश्वर में विश्वास न रखने वाला **तंग** परेशान, हैरान **क्रंदन** रोना, रुदन **विधर्मी** दूसरे धर्म का व्यक्ति **बहिष्कृत** निष्कासित, समाज से निकाला गया **समाजच्युत** समाज से अलग, बहिष्कृत **विवश** मजबूर **दल** समूह **चर** सेवक, **ग्लानि** पश्चाताप **प्रतिबिम्ब** तसवीर, परछाईं **प्रबन्ध** व्यवस्था, इन्तजाम **एकाएक** सहसा, अचानक

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) ज्ञान को किसने दर्शन दिए ?

(2) ज्ञान ने चौराहे पर खड़े होकर क्या कहा ?

(3) मानव-जाति का सबसे बड़ा शत्रु क्या है ?

(4) सिपाही ज्ञान को पकड़कर क्यों ले गए ?

(5) ज्ञान के पास विदेशी आदमी क्यों आया ?

(6) ज्ञान पानी में क्यों नहीं कूदा ?

(7) जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई क्या है ?

2. संक्षेप में उत्तर दीजिए :

(1) ज्ञान ने स्वप्न में से जागकर क्या देखा ?

(2) बच्चे ज्ञान को पत्थर क्यों मारा करते थे ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) स्त्री क्यों रो रही थी ?

(4) विदेशी आदमी ने ज्ञान से क्या कहा ?

(5) "भूख" के लड़ाकों का दल क्यों बनाया गया ?

(6) ज्ञान किले की दीवार पर चढ़कर क्या करना चाहता था ?

(7) ज्ञान ने धर्म के विरुद्ध प्रचार करते हुए क्या कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) लोग ज्ञान को पागल क्यों कहते थे ?

(2) स्त्री ने किससे विवाह किया था ? उसका क्या परिणाम हुआ ?

(3) ज्ञान कहाँ छिपकर बैठ गया ? उसने किसकी आवाज सुनी ?

(4) विदेशी आदमी की वेशभूषा कैसी थी ? उसने ज्ञान से क्या कहा ?

4. समानार्थी शब्द लिखिए :

पथ, संसार, पानी, अमीर।

5. विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

(1) पथ-भ्रष्ट, (2) समाजच्युत, (3) पेट-भर।

6. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विग्रह कीजिए :

परमात्मा, संसार, पुनर्निर्माण, व्यर्थ।

7. विरोधी शब्द लिखिए :

नास्तिक, अंधकार, शत्रु, धर्म, बहिष्कृत, विदेशी, विनाश, मामूली, विजय, उन्नति।

8. भाववाचक संज्ञा लिखिए :

बच्चा, पागल, व्यर्थ, स्त्री।

9. विशेषण बनाकर लिखिए :

विचार, विदेश, विवाह, धर्म, करुणा।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी स्वदेशी-विदेशी में अंतर समझें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- "सभी समस्याओं का मूल भूख है" समझाएँ।
- विद्यार्थियों को उनके कर्त्तव्यों के बारे में समझाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11 क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !

हरिवंशराय 'बच्चन'

(जन्म : सन् 1907 ई.; निधन : 2003 ई.)

हिन्दी के प्रसिद्ध और लोकप्रिय गीतकार हरिवंशराय 'बच्चन' जी का जन्म उत्तर प्रदेश के प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ था। हिन्दी के इस यशस्वी रचनाकार को विशिष्ट राष्ट्रीय – अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों और सम्मानों पद्मभूषण, सोवियत लैण्ड पुरस्कार, अकादमी पुरस्कार, के. के. बिड़ला फाउण्डेशन 'सरस्वती पुरस्कार' तथा एफ्रोएशियन लेखकों के 'लोटस पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। सन् 1996 में बच्चनजी को राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया था।

'आकुल अन्तर', 'निशा निमन्त्रण', 'मधुबाला', 'मधुशाला', 'मिलन यामिनी', 'सूत की माला', 'दो चट्टानें', 'प्रणय पत्रिका', 'बंगाल का अकाल', 'एकान्त संगीत', 'मधु कलश' आदि इनके काव्य संग्रह हैं। इसमें से मधुशाला इनकी अति प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचना है। गाँधीजी पर इन्होंने सबसे अधिक कविताएँ लिखीं हैं जो 'सूत की माला' और 'खादी के फूल' में संग्रहित हैं। इन्होंने अंग्रेजी नाटकों और उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद भी किया है।

प्रस्तुत कविता में कवि के मन में इतनी सारी यादें हैं कि उनको लेकर एक मधुर असमंजस में पड़ जाता है कि 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं !' बेशक उसके पास 'उन्मादों', 'अवसादों' के भी क्षण हैं। अंनत: वह यह सोचने लगता है कि इन सुधियों के बंधन से कैसे 'अपने को आज़ाद करूँ मैं ?'

क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !
अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
अगणित अवसादों के क्षण हैं,
रजनी की सूनी घड़ियों को
किन-किन से आबाद करूँ मैं !
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !

याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से
अपने दिन बर्बाद करूँ मैं !
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दोनों करके पछताता हूँ,
सोच नहीं, पर मैं पाता हूँ,
सुधियों के बंधन से कैसे
अपने को आज़ाद करूँ मैं !
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !

शब्दार्थ-टिप्पण

उन्माद अत्यधिक अनुराग, पागलपन, सनक **अवसाद** उदासी, सुस्ती, शिथिलता **रजनी** रात्रि **घड़ी** पल, क्षण **आबाद** बसा हुआ, बस्तीवाला, सम्पन्न, खुशहाल, फलता-फूलता **सुधि** याद।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

(1) कवि की आँखों में आँसू कब आते हैं ?

(2) कवि का दिल भारी क्यों हो जाता है ?

(3) कवि को रात्रि-क्षण कैसे लगते हैं ?

(4) कवि किसके बंधन से आजाद होना चाहता है ?

2. प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) कवि के अगणित क्षण कैसे-कैसे हैं ?

(2) कवि के पछतावे के क्या कारण हैं ?

(3) सुख-दुख के विषय में कवि ने क्या कहा है ?

3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :

(1) रात्रि के एकांत पलों के बारे में कवि के विचार को अपने शब्दों में लिखिए।

4. काव्य पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

''याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से
अपने दिन बर्बाद करूँ मैं !
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं !''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

(1) रजनी की .... घड़ियों को।

(A) दूनी (B) सूनी (C) जूनी (D) लूनी

(2) अपने को .... करूँ मैं !

(A) बर्बाद (B) आज़ाद (C) आबाद (D) विवाद

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

रजनी, घड़ी, दिन, उन्माद।

7. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

सुख, आबाद, सुधि, बंधन।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- कंठस्थ करके कक्षा में इस काव्य का सस्वर गान करें।
- अपने छोटे भाई के नाम एक पत्र लिखें और अपने प्रवास के अनुभव का वर्णन करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक विद्यार्थियों से प्रेम-गीतों का संकलन करवाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

12 एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

बचेन्द्रीपाल

(जन्म : सन् 1954 ई.)

इनका जन्म उत्तराखंड में हुआ। माउंट एवरेस्ट पर चढ़नेवाली ये प्रथम भारतीय महिला तथा विश्व की पाँचवीं महिला हैं। तमाम आर्थिक अभावों का सामना करते हुए इन्होंने जिस तरह पर्वतारोहण में साहस का परिचय दिया, वह महिलाओं के साहस का जीवंत प्रतीक बन गया। इन्हें 1984 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1986 में भारत सरकार ने अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया। इनके अलावा भी इन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए।

बचेन्द्री को पहाड़ों पर चढ़ने का चाव बचपन से ही था। लड़कियों को जब इस तरह के साहसिक अभियान के योग्य नहीं माना जाता था, तब उन्हें बहुत बुरा लगता था। उनकी 'शिखर यात्रा' ने साबित कर दिया कि लड़कों और लड़कियों के बीच भेद करना उचित नहीं है।

इस अभियान में उन्हें जो तकलीफ़ें उठानी पड़ीं, उनका बहुत ही मार्मिक चित्रण उन्होंने किया है। उनका सबसे बड़ा साहस यह है कि उन्होंने अपने भय को भी साहस के साथ स्वीकार किया है। कर्नल खुल्लर ने जब उनसे पूछा, 'क्या तुम भयभीत थीं ?' उन्होंने स्वीकार किया, 'जी हाँ !' और जब उनसे पूछा गया, 'क्या तुम वापस जाना चाहोगी ?' उन्होंने बिना हिचकिचाहट के जवाब दिया, 'नहीं।' और इस 'नहीं' की हिम्मत ने उन्हें एवरेस्ट पर विजय पानेवाली पहली भारतीय पर्वतारोहिणी होने का गौरव दिला दिया।

एवरेस्ट अभियान दल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से चल दिया। एक मज़बूत अग्रिम दल बहुत पहले ही चला गया था जिससे कि वह हमारे 'बेस कैंप' पहुँचने से पहले दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ़ कर सके।

नमचे बाज़ार, शेरपा लैंड का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। अधिकांश शेरपा इसी स्थान तथा यहीं के आसपास के गाँवों के होते हैं। यह नमचे बाज़ार ही था, जहाँ से मैंने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जो नेपालियों में 'सागरमाथा' के नाम से प्रसिद्ध है। मुझे यह नाम अच्छा लगा।

एवरेस्ट की तरफ़ गौर से देखते हुए, मैंने एक भारी बर्फ़ का बड़ा फूल (प्लूम) देखा, जो पर्वत-शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था। मुझे बताया गया कि यह दृश्य शिखर की ऊपरी सतह के आसपास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलने के कारण बनता था, क्योंकि तेज़ हवा से सूखा बर्फ़ पर्वत पर उड़ता रहता था। बर्फ़ का यह ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी लंबा हो सकता था। शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफ़ानों को झेलना पड़ता था, विशेषकर खराब मौसम में। यह मुझे डराने के लिए काफ़ी था, फिर भी मैं एवरेस्ट के प्रति विचित्र रूप से आकर्षित थी और इसकी कठिनतम चुनौतियों का सामना करना चाहती थी।

जब हम 26 मार्च को पैरिच पहुँचे, हमें हिम-स्खलन के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दु:खद समाचार मिला। खुंभु हिमपात पर जानेवाले अभियान-दल के रास्ते के बाईं तरफ़ सीधी पहाड़ी के धसकने से, ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी बर्फ़ की चट्टान नीचे खिसक आई थी। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस समाचार के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाए अवसाद को देखकर हमारे नेता कर्नल खुल्लर ने स्पष्ट किया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए ।

उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैंप-एक (6000 मी.), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ़ की नदी है और बर्फ़ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

'बेस कैंप' में पहुँचने से पहले हमें एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु अनुकूल न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से हम आशाजनक स्थिति में नहीं चल रहे थे।

एवरेस्ट शिखर को मैंने पहले दो बार देखा था, लेकिन एक दूरी से। बेस कैंप पहुँचने पर दूसरे दिन मैंने एवरेस्ट पर्वत तथा उसकी अन्य श्रेणियों को देखा। मैं भौंचक्की होकर खड़ी रह गई और एवरेस्ट, ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी, बर्फ़ीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

हिमपात अपने आपमें एक तरह से बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही था। हमें बताया गया कि ग्लेशियर के बहने से अकसर बर्फ़ में हलचल हो जाती थी, जिससे बड़ी-बड़ी बर्फ़ की चट्टानें तत्काल गिर जाया करती थीं और अन्य कारणों से भी अचानक प्रायः खतरनाक स्थिति धारण कर लेती थीं। सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विवर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज़्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रवास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

दूसरे दिन नए आनेवाले अपने अधिकांश सामान को हम हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ. मीनू मेहता ने हमें एल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लट्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और हमारे अग्रिम दल के अभियांत्रिकी कार्यों के बारे में हमें विस्तृत जानकारी दी।

तीसरा दिन हिमपात से कैंप-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए निश्चित था। रीता गोंबू तथा मैं साथ-साथ चढ़ रहे थे। हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था, जिससे हम अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब हमने उन्हें पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैंप-एक पर पहुँचनेवाली केवल हम दो ही महिलाएँ थीं।

अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिस्सा अंततः साउथ कोल पहुँच गए और 29 अप्रैल को 7900 मीटर पर उन्होंने कैंप-चार लगाया। यह संतोषजनक प्रगति थी।

जब अप्रैल में मैं बेस कैंप में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ हमारे पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। जब मेरी बारी आई, मैंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि मैं बिलकुल ही नौसिखिया हूँ और एवरेस्ट मेरा पहला अभियान है । तेनजिंग हँसे और मुझसे कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ मेरे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।"

15-16 मई, 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन मैं ल्होत्से की बर्फ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैंप-तीन में थी। कैंप में 10 और व्यक्ति थे। लोपसांग, तशारिंग मेरे तंबू में थे, एन.डी. शेरपा तथा और आठ अन्य शरीर से मज़बूत और ऊँचाइयों में रहनेवाले शेरपा दूसरे तंबुओं में थे। मैं गहरी नींद में सोई हुई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग मेरे सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सख्त चीज़ के टकराने से मेरी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ। तभी मुझे महसूस हुआ कि एक ठंडी, बहुत भारी कोई चीज़ मेरे शरीर पर से मुझे कुचलती हुई चल रही है। मुझे साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी।

यह क्या हो गया था ? एक लंबा बर्फ़ का पिंड हमारे कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका विशाल हिमपुंज बन गया था। हिमखंडों, बर्फ़ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ़ के इस विशालकाय पुंज ने, एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज़ गति और भीषण गर्जना के साथ, सीधी ढलान से नीचे आते हुए हमारे कैंप को तहस-नहस कर दिया। वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी थी। यह एक आश्चर्य था कि किसी की मृत्यु नहीं हुई थी।

लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से हमारे तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे और तुरंत ही अत्यंत तेज़ी से मुझे बचाने की कोशिश में लग गए। थोड़ी-सी भी देर का सीधा अर्थ था मृत्यु। बड़े-बड़े हिमपिंडों को मुश्किल से हटाते हुए उन्होंने मेरे चारों तरफ़ की कड़े जमे बर्फ़ की खुदाई की और मुझे उस बर्फ़ की कब्र से निकाल बाहर खींच लाने में सफल हो गए।

सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक हम प्रायः सभी कैंप-दो पर पहुँच गए थे। जिस शेरपा की टाँग की हड्डी टूट गई थी, उसे एक खुद के बनाए स्ट्रेचर पर लिटाकर नीचे लाए। हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में, "यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक ज़बरदस्त साहसिक कार्य था।"

सभी नौ पुरुष सदस्यों को चोटों अथवा टूटी हड्डियों आदि के कारण बेस कैंप में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर मेरी तरफ़ मुड़कर कहने लगे, "क्या तुम भयभीत थीं ?"

"जी हाँ।"

"क्या तुम वापिस जाना चाहोगी ?"

"नहीं", मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।

जैसे ही मैं साउथ कोल कैंप पहुँची, मैंने अगले दिन की अपनी महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। मैंने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए। जब दोपहर डेढ़ बजे बिस्सा आया, उसने मुझे चाय के लिए पानी गरम करते देखा। की, जय और मीनू अभी बहुत पीछे थे। मैं चिंतित थी क्योंकि मुझे अगले दिन उनके साथ ही चढ़ाई करनी थी। वे धीरे-धीरे आ रहे थे क्योंकि वे भारी बोझ लेकर और बिना ऑक्सीजन के चल रहे थे ।

दोपहर बाद मैंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। मैंने बर्फ़ीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। जैसे ही मैं कैंप क्षेत्र से बाहर आ रही थी मेरी मुलाकात मीनू से हुई। की और जय अभी कुछ पीछे थे। मुझे जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने कृतज्ञतापूर्वक चाय वगैरह पी लेकिन मुझे और आगे जाने

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

से रोकने की कोशिश की। मगर मुझे की से भी मिलना था। थोड़ा-सा और आगे नीचे उतरने पर मैंने की को देखा। वह मुझे देखकर हक्का-बक्का रह गया।

"तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेन्द्री ?"

मैंने उसे दृढ़तापूर्वक कहा, "मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ, इसीलिए इस दल में आई हूँ। शारीरिक रूप से मैं ठीक हूँ। इसलिए मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद क्यों नहीं करनी चाहिए।" की हँसा और उसने पेय पदार्थ से प्यास बुझाई, लेकिन उसने मुझे अपना किट ले जाने नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद साउथ कोल कैंप से ल्हाटू और बिस्सा हमें मिलने नीचे उतर आए। और हम सब साउथ कोल पर जैसी भी सुरक्षा और आराम की जगह उपलब्ध थी, उस पर लौट आए। साउथ कोल 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर' जगह के नाम से प्रसिद्ध है।

अगले दिन मैं सुबह चार बजे उठ गई। बर्फ़ पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चॉकलेट का हलका नाश्ता करने के बाद मैं लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। अंगदोरजी बाहर खड़ा था और कोई आसपास नहीं था।

अंगदोरजी बिना ऑक्सीजन के ही चढ़ाई करनेवाला था। लेकिन इसके कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। इसलिए वह ऊँचाई पर लंबे समय तक खुले में और रात्रि में शिखर कैंप पर नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसे या तो उसी दिन चोटी तक चढ़कर साउथ कोल पर वापस आ जाना था अथवा अपने प्रयास को छोड़ देना था।

वह तुरंत ही चढ़ाई शुरू करना चाहता था... और उसने मुझसे पूछा, क्या मैं उसके साथ जाना चाहूँगी ? एक ही दिन में साउथ कोल से चोटी तक जाना और वापस आना बहुत कठिन और श्रमसाध्य होगा। इसके अलावा यदि अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ गए तो उसके लौटकर आने का भी जोखिम था। मुझे फिर भी अंगदोरजी पर विश्वास था और साथ-साथ मैं आरोहण की क्षमता और कर्मठता के बारे में आश्वस्त थी। अन्य कोई भी व्यक्ति इस समय साथ चलने के लिए तैयार नहीं था।

सुबह 6.20 पर जब अंगदोरजी और मैं साउथ कोल से बाहर आ निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकी-हलकी हवा चल रही थी, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। मैं अपने आरोही उपस्कर में काफ़ी सुरक्षित और गरम थी। हमने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और मुझे भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

जमे हुए बर्फ़ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, मानो शीशे की चादरें बिछी हों। हमें बर्फ़ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और मुझे इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ़ की धरती को फावड़े के दाँते काट सकें। मैंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोच-समझकर उठाया ।

दो घंटे से कम समय में ही हम शिखर कैंप पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और मुझसे कहा कि क्या मैं थक गई हूँ। मैंने जवाब दिया, "नहीं।" जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और आनंदित हुए । उन्होंने कहा कि पहलेवाले दल ने शिखर कैंप पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि हम इसी गति से चलते रहे तो हम शिखर पर दोपहर एक बजे तक पहुँच जाएँगे।

ल्हाटू हमारे पीछे-पीछे आ रहा था और जब हम दक्षिणी शिखर के नीचे आराम कर रहे थे, वह हमारे पास पहुँच गया। थोड़ी-थोड़ी चाय पीने के बाद हमने फिर चढ़ाई शुरू की। ल्हाटू एक नायलॉन की रस्सी लाया था।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इसलिए अंगदोरजी और मैं रस्सी के सहारे चढ़े, जबकि ल्हाटू एक हाथ से रस्सी पकड़े हुए बीच में चला। उसने रस्सी अपनी सुरक्षा की बजाय हमारे संतुलन के लिए पकड़ी हुई थी। ल्हाटू ने ध्यान दिया कि मैं इन ऊँचाइयों के लिए सामान्यत: आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मिनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। मेरे रेगुलेटर पर जैसे ही उसने ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, मुझे महसूस हुआ कि सपाट और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी।

दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ़ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी। अनेक बार देखा कि केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है।

मेरी साँस मानो रुक गई थी। मुझे विचार कौंधा कि सफलता बहुत नज़दीक है। 23 मई, 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर मैं एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचनेवाली मैं प्रथम भारतीय महिला थी।

एवरेस्ट शंकु की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हज़ारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए हमारे सामने प्रश्न सुरक्षा का था। हमने पहले बर्फ़ के फावड़े से बर्फ़ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से स्थिर किया। इसके बाद, मैं अपने घुटनों के बल बैठी, बर्फ़ पर अपने माथे को लगाकर मैंने 'सागरमाथे' के ताज का चुंबन लिया। बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला । मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता-पिता का ध्यान आया।

जैसे मैं उठी, मैंने अपने हाथ जोड़े और मैं अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया और मुझे लक्ष्य तक पहुँचाया। मैंने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने मुझे गले से लगाया और मेरे कानों में फुसफुसाया, "दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। मैं बहुत प्रसन्न हूँ !"

कुछ देर बाद सोनम पुलजर पहुँचे और उन्होंने फोटो लेने शुरू कर दिए।

इस समय तक ल्हाटू ने हमारे नेता को एवरेस्ट पर हम चारों के होने की सूचना दे दी थी। तब मेरे हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर हमारी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। मुझे बधाई देते हुए उन्होंने कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा !" वे बोले कि देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा !

शब्दार्थ-टिप्पण

दुर्गम कठिन **अवसाद** दु:ख, खेद, विषाद **जोखिम** खतरा **अनूठी** विशिष्ट, अनोखी **आरोहण** चढ़ाई **कर्मठ** उद्यमी **धसकना** धंस जाना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) लेखिका को सागरमाथा नाम क्यों अच्छा लगा ?

(2) सागरमाथा अर्थात् क्या ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) पर्वतारोहण में अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था ?
(4) लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी ?
(5) मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा ?
(6) रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई ?
(7) कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) लेखिका को एवरेस्ट नजदीक से कैसा लगा ?
(2) हिमपात और हिमस्खलन में क्या अंतर है ?
(3) लोपसांग ने तंबू का रास्ता कैसे साफ किया ?
(4) उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया ?
(5) लेखिका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया ?
(6) ग्लेशियर किसे कहते हैं ?
(7) लेखिका के तंबू में गिरे बर्फ पिंड का वर्णन किस प्रकार किया गया है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के आठ-दस वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) डॉ. मीनू मेहता ने किसको क्या जानकारियाँ दीं ?
(2) तेनजिंग ने बचेन्द्रीपाल की तारीफ में क्या कहा ?
(3) हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं ?
(4) लेखिका के सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।
(2) बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए, लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ में दबा दिया।

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए :

वॉकी-टॉकी, गहरे-चौड़े, टेढ़ी-मेढ़ी, इधर-उधर, लंबे-चौड़े, आस-पास, हक्का-बक्का।

6. निम्नलिकित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

दुर्गम, अवसाद, व्यर्थ, खतरनाक, मुश्किल, कृतज्ञता, अनूठी।

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

नियमित, विख्यात, आरोही, निश्चित, सुंदर, दुर्गम।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

पर्वतारोही, देवालय, कक्षानुसार, परमानंद।

9. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करके समास-भेद लिखिए :

पूजा-अर्चना, आड़ी-तिरछी, विशालकाय, हिमपिंड, देवालय।

10. निम्नलिखित शब्दों में इक, इत या इय प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाइए :

सुरक्षा, नियम, आनंद, प्रोत्साहन, नगर, आकर्षण, पर्वत, चिंता, शरीर।

11. सही विकल्प चुनकर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) बचेन्द्री को बचाने में थोड़ी-सी भी देर का सीधा अर्थ था ....।

(A) जीवन (B) मृत्यु (C) सागर (D) संयोग

(2) 'क्या तुम वापस जाना चाहोगी ?' कौन किससे कहता है ?

(A) मीनू जय से (B) बिस्सा बचेन्द्री से

(C) बचेन्द्री शेरपा से (D) कर्नल खुल्लर बचेन्द्री से

(3) एक लंबा .... हमारे कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था।

(A) बर्फ का पिंड (B) लकड़ी का टुकड़ा (C) पत्थर (D) ऑक्सीजन सिलिण्डर

(4) हमें हिम-स्खलन के कारण हुई एक .... की मृत्यु दु:खद समाचार मिला।

(A) शेरपा कुली (B) यात्री (C) महिला साथी (D) पर्वतवासी

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- वर्ग में अपने प्रवास के अनुभव की चर्चा कीजिए।
- पर्वतीय सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'पावागढ़' के प्रवास का आयोजन कीजिए।
- प्रवास से पूर्ण पर्वतीय-स्थल में रखी जाने वाली सावधानियों से अवगत कराइए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13 मैं तुम लोगों से दूर हूँ

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

(जन्म : सन् 1917 ई.; निधन : 1964 ई.)

आधुनिक हिन्दी के इस अद्वितीय साहित्यकार का जन्म मध्य प्रदेश के श्योपुर में हुआ था । पिता का नाम माधवराव और माता का नाम पार्वतीबाई था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उज्जैन में हुई। 1938 में बी.ए. पास करने के बाद मॉर्डन स्कूल में अध्यापक हो गए। एम.ए. करने के बाद कॉलेज में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए। बड़े ही लाड-प्यार से पले-बढ़े मुक्तिबोध का शेष जीवन अभाव, संघर्ष और विपन्नता में कटा। मुक्तिबोध अत्यन्त अध्ययनशील थे। आर्थिक संकट कभी भी इनकी अध्ययनशीलता में बाधा नहीं बन पाया। राजनाद गाँव इनका अध्यापन क्षेत्र ही नहीं बल्कि अध्ययन-क्षेत्र भी था। यहाँ रहते हुए इन्होंने अंग्रेजी, फ्रेंच तथा रूसी उपन्यासों के साथ, जासूसी उपन्यासों, वैज्ञानिक उपन्यासों, विभिन्न देशों के इतिहास तथा विज्ञान-विषयक साहित्य का गहन अध्ययन किया। इस अध्ययन के फलस्वरूप सन् 1962 में इनकी अन्तिम रचना 'भारत : इतिहास और संस्कृति' प्रकाशित हुई। इन्होंने कहानी, कविता, निबंध, आलोचना तथा इतिहास विधाओं में सृजन किया है। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' इनका प्रसिद्ध एवं बहुचर्चित काव्य संग्रह है। 'काठ का सपना', 'विपात्र' तथा 'सतह से उठता आदमी' इनके कहानी संग्रह हैं। मरणोपरान्त प्रकाशित 'मुक्तिबोध रचनावली' (छः भाग) में इनका संपूर्ण साहित्य संकलित है।

प्रस्तुत कविता में एक ग़रीब आम आदमी और एक संपन्न ख़ास आदमी के बीच अंतर ही नहीं दिखाया गया है, बल्कि आम आदमी को अपनी मेहनत पर और ढेरों मेहनत करनेवाले लोगों पर गर्व करते हुए भी दिखाया गया है। अपनी सारी बुरी हालत के बावजूद ग़रीब मज़दूर अपने ख़ून को पसीना बनाकर बहाता रहता है, इसीलिए वह शोषण करनेवाले संपन्न आदमी को गर्व के साथ संबोधित करते हुए कह सकता है, 'मैं तुम लोगों से दूर हूँ।'

मैं तुम लोगों से इतना दूर हूँ
तुम्हारी प्रेरणाओं से मेरी प्रेरणा इतनी भिन्न हैं
कि जो तुम्हारे लिए विष है, मेरे लिए अन्न है।

मेरी असंग स्थिति में चलता-फिरता साथ है,
अकेले में साहचर्य का हाथ है,
उनका जो तुम्हारे द्वारा गर्हित हैं,
किन्तु वे मेरी व्याकुल आत्मा में बिम्बित हैं, पुरस्कृत हैं
इसीलिए, तुम्हारा मुझ पर सतत आघात है !!
सबके सामने और अकेले में।
(मेरे रक्तभरे महाकाव्यों के पन्ने उड़ते हैं
तुम्हारे-हमारे इस सारे झमेले में)

असफलता का धूल-कचरा ओढ़े हूँ
इसलिए कि वह चक्करदार जीनों पर मिलती है
छल-छद्म धन के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

किन्तु मैं सीधी-सादी पटरी-पटरी दौड़ा हूँ
जीवन की।
फिर भी, मैं अपनी सार्थकता में खिन्न हूँ
निज से अप्रसन्न हूँ
इसलिए कि जो है उससे बेहतर चाहिए
पूरी दुनिया साफ करने के लिए मेहतर चाहिए
वह मेहतर मैं हो नहीं पाता
पर, रोज कोई भीतर चिल्लाता है
कि कोई काम बुरा नहीं
बशर्ते कि आदमी खरा हो
फिर भी मैं उस ओर अपने को ढो नहीं पाता।

रेफ्रीजरेटरों, विटैमिनों, रेडियोग्रैमों के बाहर की
गतियों की दुनिया में
मेरी वह भूखी बच्ची मुनिया है शून्यों में
पेटों की आँतों में न्यूनों की पीड़ा है
छाती के कोषों में रहितों की व्रीड़ा है!
शून्यों से घिरी हुई पीड़ा ही सत्य है
शेष सब अवास्तव अयथार्थ मिथ्या है भ्रम है
सत्य केवल एक जो कि
दु:खों का क्रम है।
मैं कनफटा हूँ हेठा हूँ
शेव्रलेट-डॉज के नीचे मैं लेटा हूँ
तेलिया लिबास में पुरजे सुधारता हूँ
तुम्हारी आज्ञाएँ ढोता हूँ।

शब्दार्थ-टिप्पण

साहचर्य साथ रहना, संगति **गर्हित** निंदित, बुरा, दूषित **बिम्बित** प्रतिबिम्बित **आघात** चोट **व्रीड़ा** लज्जा, संकोच **मिथ्या** झूठ **कनफटा** गोरखपंथी साधु जिनके कान फटे हों **हेठा** नीच, हीन **लिबास** पोशाक **न्यून** हीन, कम।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कवि किसका धूल-कचरा ओढ़े है ?
(2) पूरी दुनिया साफ करने के लिए कवि क्या बनना चाहता है ?
(3) कवि ने किसे 'सत्य' कहा है ?
(4) पेट की आँतों में किसकी पीड़ा है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) सत्य और मिथ्या के बारे में 'मुक्तिबोध' क्या कहते हैं ?

(2) तेलिया लिबास में आम आदमी क्या-क्या करता है ?

(3) 'मैं' और 'तुम' किन-किन वर्गों के प्रतीक हैं ?

3. प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) कवि अपनी सार्थकता से क्यों खिन्न है ?

(2) इस कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

4. काव्य-पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

"शून्यों से घिरी हुई पीड़ा ही सत्य है
शेष सब अवास्तव अयथार्थ मिथ्या है भ्रम है
सत्य केवल एक जो कि
दु:खों का क्रम है।"

5. काव्य के आधार पर सही विकल्प चुनकर खाली जगह दिए :

(1) अकेले में साहचर्य का .... है।

(A) साथ (B) हाथ (C) माथ (D) नाथ

(2) कि जो तुम्हारे लिए विष है, मेरे लिए .... है।

(A) अन्न (B) भिन्न (C) सन्न (D) दन्न

(3) शून्यों से घिरी हुई पीड़ा ही .... है।

(A) असत्य (B) सत्य (C) गत्य (D) मत्य

(4) पर, रोज कोई भीतर .... है।

(A) गरजता (B) चिल्लाता (C) काँपता (D) रोता

6. (i) **समानार्थी शब्द लिखिए :**

लिबास, सतत, व्याकुल, दुनिया, पीड़ा।

(ii) **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :**

सत्य, संग, विष, निज, वास्तव, मिथ्या।

(iii) **भाववाचक संज्ञा बनाइए :**

घन, बुरा, भिन्न, व्याकुल।

(iv) **वर्तनी शुद्ध कीजिए :**

प्रेरणा, व्याकूल, मीथ्या, तेलीया।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- छात्र कक्षा में काव्य का पठन करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'मुक्तिबोध' की कुछ अन्य कविताएँ विद्यार्थियों से संकलित करवाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

14 डायरी का एक पन्ना

मोहन राकेश

(जन्म : सन् 1925 ई.; निधन : 1972 ई.)

इनका जन्म पंजाब के अमृतसर ज़िले में हुआ। इनका मूल नाम मदन मोहन गुगलानी था। 'नयी कहानी आंदोलन' के प्रमुख नायकों में से एक रहे। कहानी की पत्रिका 'सारिका' का संपादन किया। भारत-विभाजन की पीड़ा की अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'मलबे का मालिक' जैसी कहानी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इनका उपन्यास 'अँधेरे बंद कमरे' मध्यवर्गीय जीवन का महाकाव्य कहा जा सकता है। 'आषाढ़ का एक दिन' केवल इनके ही नहीं हिंदी के भी श्रेष्ठ नाटकों में से एक गिना जाता है। 1968 में इन्हें 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

मोहन राकेश की 'डायरी का एक पन्ना' ऐसा हिस्सा है, जिसमें उन्होंने बड़े खुलेपन के साथ स्वीकार किया है, 'मैंने अपने आज तक के जीवन में जिस सबसे महान व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त किया है, वह मेरी माँ है।' उनकी माँ बहुत कर्मठ थीं, लेकिन अपनी कर्मण्यता का उन्हें ज़रा भी अहंकार नहीं था। उनमें इतना भोलापन था कि मोहन राकेश या उनके पिता उन्हें 'अन्नपूर्णा' क्यों कहते थे, यह भी उनकी समझ में नहीं आता था।

जालंधर : 2-9-58

वृक्ष हवा में सिर मारते हैं तो क्या वह हवा का दबाव मात्र ही होता है या उसमें वृक्ष की अपनी भी कुछ प्रतिक्रिया होती है-उसके अपने रोमांच की अभिव्यक्ति ? विश्वास नहीं होता कि यह केवल हवा का गणित ही है जो वृक्ष की पत्ती-पत्ती को उस उन्मादी स्थिति में ला देता है।

मैंने अपने आज तक के जीवन में जिस सबसे महान व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त किया है, वह मेरी माँ है।

यह भावुकता नहीं है। मैंने बहुत बार तटस्थ रूप में इस नारी को समझने का प्रयत्न किया है और हर बार मेरे छोटेपन ने मुझे लज्जित कर दिया है।

बड़े से बड़े दुःख में मैंने उसे अविचल धैर्य में स्थिर रहते देखा है। जीवन की किसी भी परिस्थिति ने उसे कर्तव्य निष्ठा से नहीं हटाया। परन्तु अपनी कर्मण्यता के लिए रत्ती भर अहंभाव तो उसमें नहीं है। वह कर्म करती है, जैसे कर्म उसका अस्तित्व है, जीवन है, स्वभाव है। वह जो नहीं कर पाती उसका उसे खेद अवश्य होता है, पर जो कर लेती है, उसका गर्व नहीं। और घर में उसका अस्तित्व वैसे ही है जैसे विश्व में वायु का-वह प्राण देती है, परन्तु अदृश्य रहकर। घर में सब कुछ संभला-सिमटा रहता है-हर चीज व्यवस्थित रहती है-परन्तु माँ कुछ भी करने के लिए वही समय चुनती है जब 'वह करना' किसी को दिखाई न दे। कल रात ही साढ़े ग्यारह बजे मेरी मेज़ झाड़ने और ठीक करने लगी थी। मैं उस पर खीझ उठा, और वह मेरे खीझने से भी दुःखी नहीं हुई और वत्सल हो उठी।

''तू तो मुझे कोई काम करने ही नहीं देता। सुबह तेरी मेज़ पर चीजें इधर-उधर बिखरी होंगी तो तेरा बैठकर काम करने को जी नहीं करेगा।''

मैं झल्लाता रहा और वह मेरे सिर पर हाथ फेरती रही।

''माँ की मूर्खता पर गुस्से नहीं होते। तुझे तो पता है कि तेरी माँ दिल से कुछ बुरा करना नहीं चाहती। इसलिए कुछ गलत हो जाय तो दुःखी मत हुआ कर। ला तेरे सिर में तेल डाल दूँ। दिन भर काम करता है इसलिए थक जाता है।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समझ में नहीं आता कि यह नारी अपने शरीर में जीती है या अपने में बाहर ही जीती है। अपना शारीरिक दु:ख, श्रान्ति, रोग सब कुछ उसे महत्त्वहीन प्रतीत होता है।

बहुत बार तंगी आई है। पिताजी की मृत्यु के बाद तो बहुत ही बुरे दिन देखे थे। फिर बीच में मैंने दो-तीन बार बेकारी काटी। फिर भी माँ थोड़े से साधनों से भी वही रोटी मेरी थाली में मुझे देती रही। कटौतियाँ बहुत होती थीं-मगर पहले अपने शरीर और पेट पर, फिर बहन के कपड़े और खाने पर, फिर छोटे भाई पर-लेकिन मुझ पर नहीं ।

''इसका कारण आर्थिक है। क्योंकि तुम बड़े बेटे हो और वह तुम पर निर्भर करती है।'' ऐसा भी सुना है । पर क्या कारण आर्थिक है ? क्या वह मुझ पर निर्भर करती है ? क्या उसकी रात-दिन की तपस्या आर्थिक निर्भरता है ?

''माँ, तू अन्नपूर्णा है।'' एक बार मैंने कहा था।

उसकी, आँखें भर आई। बड़े भोलेपन से उसने पूछा, ''किस बात पर तू ऐसा कहता है ?.... तेरे बाबूजी भी एक बार यही कहते थे।.... किस बात पर ?...''

मेरे विवाहित जीवन में तुमने दोहरा torture सहा है। उधर उसके पास रहकर एक नौकरानी का-सा व्यवहार सहते हुए और मेरे पास आकर मेरे कराहने और छटपटाने को देखते हुए। फिर भी अपनी ओर से यह कभी उसकी शिकायत मुँह पर नहीं लाई। और अब अन्तिम दिनों में अपने से हुए व्यवहार की बात कही भी तो मुझसे नहीं कही-कौशल्या भाभी से कही।

''मैं कहती थी मेरा बेटा पहले ही दु:खी है, मैं उसे दु:खी क्यों करूँ ?''

और शीला इस नारी के सम्बन्ध में कहती थी, ''उसे बहुत जबर्दस्त inferiority complex है। हम में यही बुराई है कि हम तुम्हारी माँ की तरह inferiority complex के शिकार नहीं हैं।''

और वह inferiority complex की शिकार नारी इस समय भी अपने कमरे में बत्ती जलाकर लेटी है, सोई नहीं-हालांकि आज दिनभर काम करती रही है-क्षण भर के लिए भी विश्राम नहीं कर सकी। कारण जानता हूँ। मैंने अभी ईसबगोल का छिलका नहीं खाया।

इस साढ़े चार फुट की काया में भावना के अतिरिक्त और भी कुछ है।

दिन भर मेह बरसता रहा। पिंजरे में बन्द शेर की तरह कमरे में टहलता रहा – 'मिस पाल' शीर्षक कहानी दोबारा टाइप करता रहा। दिन में सोया भी नहीं, काम भी करता रहा, फिर भी नींद क्यों नहीं आई।

शब्दार्थ-टिप्पण

उन्मादी पागलपन की स्थिति **रत्तीभर** थोड़ा, बहुत कम **श्रांति** थकान **द्वेष** शत्रुता **स्पर्धा** प्रतियोगिता **तंगी** कमी **चंद** थोड़ी - सी, कुछ **गर्व** घमंड, अभिमान

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) हवा का वृक्षों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(2) लेखक के लिए सबसे महान व्यक्तित्व कौन है ?

(3) घर में माँ का अस्तित्व किसके जैसा है ?

(4) लेखक के बुरे दिनों की शुरुआत कब हुई ?

(5) माँ देर रात तक भी क्यों नहीं सोई थी ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) माँ लेखक की मेज कब साफ करती हैं ? क्यों ?

(2) लेखक के झल्लाने पर माँ ने क्या कहा ?

(3) लेखक ने माँ को अन्नपूर्णा क्यों कहा है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए :

(1) वायु के झोंके से हिलते वृक्ष को देखकर लेखक क्या सोचता है ?

(2) माँ काम करने का जो समय चुनती है, उसके बारे में लेखक का क्या विचार है ?

(3) तंगी के दिनों में माँ के व्यवहार के बारे में लेखक ने क्या निरीक्षण किया है ?

(4) लेखक के दुखद वैवाहिक जीवन के निजी कटु अनुभवों की बात माँ कौशल्या भाभी से क्यों कहती हैं ? लेखक से क्यों नहीं ?

4. भाववाचक संज्ञा बनाइए :

नारी, मूर्ख, बुरा, छोटा, भावुक।

5. विशेषण बनाइए :

शरीर, कटुता, गणित, लज्जा।

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

वृक्ष, हवा, माँ, नारी, आँख, शरीर, तंगी।

7. विरोधी शब्द लिखिए :

दुख, श्रांति, निर्भरता, जीवन, बुराई, बिखरना, अस्तित्व।

8. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) माँ, तू अन्नपूर्णा है।

(2) मैं झल्लाता रहा और वह मेरे सिर पर हाथ फेरती रही।

9. मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :

सिर पर हाथ फेरना

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी दैनंदिनी (डायरी) लिखने की आदत डालें।
- माँ की ममता पर दस वाक्य लिखें

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक वर्गखण्ड में दैनंदिनी का महत्त्व समझाएँ।
- शिक्षक माँ की महिमा पर कक्षा में चर्चा करें।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

15 विश्वशांति

उमाशंकर जोशी

(जन्म : सन् 1911 ई.; निधन : 1988 ई.)

गुजराती के मूर्धन्य साहित्यकार उमाशंकर जोशी का जन्म साबरकांठा जिले में ईडर के पास बामणा में हुआ था । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बामणा तथा ईडर में हुई। एम.ए. की शिक्षा इन्होंने मुम्बई विश्वविद्यालय से प्राप्त की। कॉलेज के दौरान सन् 1930 में पढ़ाई छोड़कर ये स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ गये। कई बार जेल भी जाना पड़ा। इसी दौरान इनकी भेंट काकासाहेब कालेलकर से हुई। इन्होंने गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति तथा विश्वभारती, शांतिनिकेतन के आचार्य के पद पर भी अपनी सेवाएँ दी।

गुजराती साहित्य को अपनी लेखनी, अपनी कला से समृद्ध और सम्पन्न करनेवाले इस सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न कवि ने कविता, कहानी, नाटक, समीक्षा, निबंध आदि विधाओं में साधिकार लेखनी चलाई है। 'विश्वशांति', 'गंगोत्री', 'वसंत वर्षा', 'प्राचीना', 'सप्तपदी' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्यकृतियाँ हैं। 'श्रावणी मेलो', 'विसामो' इनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं। 'निशीथ' काव्य-संग्रह पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'सापना भारा' एकांकी-संग्रह 'पारका जण्यां' उपन्यास के अतिरिक्त अनेक आलोचना-ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। राष्ट्रीय साहित्य अकादेमी, दिल्ली के अध्यक्ष रह चुके हैं।

प्रस्तुत काव्यांश में कवि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मंत्र की सार्थकता को सिद्ध करते हैं। यह धरा सभी के लिए है। सुख, शांति तभी स्थापित हो पाएगी जब सभी एक दूसरे के अस्तित्व के महत्व को समझते हुए उसे स्वीकार करेंगे, चाहे मनुष्य हो या अन्य जीव यह गुजराती कविता का हिन्दी अनुवाद है।

विशाल जग विस्तार में नहीं है केवल मनुष्य ही;
पशु हैं, पंखी हैं, हैं पुष्प और वनों की वनस्पति।
बेधे जाते हैं पुष्प अनेक बाग के।
नोचे जाते हैं पंख सुरम्य पंखी के।
काटी जाती है मूक जीवों की काया।
आहत होते हैं कानन के कलेवर।
रोती है प्रकृति माता, टपकते हैं दिल के दु:ख;

अमृत पीकर जो नहीं अघाते, कपूत बहाते रहते रक्त !
पत्र और पुष्प की पंखुड़ियाँ तो हैं
प्रभु की प्रेमपराग-सेज।
कल्लोल करते पंछी की आँखों में
चमकते हैं प्रभु के अनूठे गीत !
प्रकृति में खेलते रहते प्रभु के हृदय को
पहुँचेगी यदि तनिक भी चोट,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मिलेगी क्या मनुष्य को कभी
शान्ति की स्वप्नछाया भी ?
चलिए, बहाएँ आज सब जीव उर से
कारुण्य की मंगल प्रेमधारा।
वसुंधरा के सब बाल मिलकर
बजाएँ हृदय का एकतारा।
प्रेमगान से हृदय-हृदय को जगाकर
गूँथकर हाथ में हाथ सभी प्रजाएँ,
भिड़ाकर कंधे से कंधा ऐक्य से,
जग की देहरी पर खड़े-खड़े
पुकारें हम बुलन्दी से :
''मनुष्य, प्रकृति, सभी के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्'।''
अनन्त को वेध कर पहुँच जाएगा यह शब्द
जहाँ झूम रही हैं कोटि-कोटि सूर्यमालाएँ
जहाँ शान्ति के रास जमे हैं रसभरे,
'यत्रैव विश्वं भवत्येकुनीड़म्।'

शब्दार्थ-टिप्पण

वेधे जाना छेदे जाना, काटे जाना **सुरम्य** सुन्दर **काया** शरीर **आहत** घायल **कानन** जंगल **कलेवर** शरीर **अघाना** छकना, तृप्त होना **कल्लोल** आनंदपूर्ण शब्द **अनूठे** अनोखे **वसुन्धरा** पृथ्वी।

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) 'प्रभु की प्रेम-पराग सेज' कहाँ हैं ?

(2) कल्लोल करते पक्षी की आँखों में क्या चमकता है ?

(3) कवि ने किन्हें कपूत कहा है ?

(4) सभी जीवों के हृदय में कवि क्या बहाने का आह्वान कर रहा है ?

2. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) जग में मानव के अलावा अन्य कौन-कौन हैं ?

(2) जग की देहरी पर खड़े होकर हमें क्या पुकारना चाहिए ?

(3) प्रकृति माता कब रोती है ?

(4) शान्ति के रास कहाँ जमे हैं और कैसे ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-सात वाक्यों में लिखिए :

(1) प्रकृति माता कब-कब दिल का दु:ख व्यक्त करती हैं – विस्तार से समझाइए।

(2) प्रकृति में ईश्वर की क्रीड़ा कहाँ-कहाँ और किन रूपों में दिखाई देती है, विस्तार से लिखिए।

(3) 'विश्वशांति' काव्य का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

4. काव्य पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

(1) " वसुंधरा के सब बाल मिलकर
बजाएँ हृदय का एकतारा।"

(2) भिड़ाकर कंधे से कंधा ऐक्य से,
जग की देहरी पर खड़े-खड़े
पुकारें हम बुलन्दी से :
"मनुष्य, प्रकृति, सभी के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्'।"

5. मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) आहत होना

(2) दिल का दुख बहाना

(3) हाथों में हाथ गूँथना

(4) कंधे से कंधा मिलाना

(5) बुलंदी से पुकारना

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पक्षी, पुष्प, वन, सूर्य।

7. तत्सम शब्द लिखिए :

पंखी, सेज, कपूत।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

● "वसुधैव कुटुम्बकम्" विषय पर दो-तीन अनुच्छेद लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

● 'यह पृथ्वी केवल मनुष्य के लिए नहीं, अपितु सभी जीवों के लिए है' इसके बारे में वर्ग में चर्चा कीजिए ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

16 विवेक वाणी

स्वामी विवेकानंद

(जन्म : सन् 1862 ई.; निधन : 1902 ई.)

स्वामी विवेकानंद का मूल नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। इनका जन्म कोलकाता में हुआ था। वे साहित्य, दर्शन और इतिहास के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने देश-विदेश के लोगों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया था। इन्होंने रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा प्राप्त की थी। जनसेवा को ही इन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। इन्होंने वेलूर में रामकृष्ण मठ की स्थापना की। अमेरिका में दिये गये इनके व्याख्यान अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुए। इनकी रचनाओं तथा व्याख्यानों का संकलन 'विवेकानंद साहित्य' के नाम से दस भागों में किया गया है।

यहाँ उनके दो व्याख्यान संकलित किये गये हैं। पहले व्याख्यान में उन्होंने सभी धर्मों के बीच सहिष्णुता पर बल देते हुए कहा था, 'हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं।' दूसरे व्याख्यान में उन्होंने धार्मिक संकीर्णता को उजागर करने के लिए 'कुएँ के मेंढक' वाली कथा का प्रतीकात्मक प्रयोग किया है।

---

[1]

धर्म-महासभा : स्वागत का उत्तर

(विश्व-धर्म-महासभा, शिकागो, 11 सितम्बर, 1893 ई.)

अमेरिकावासी बहनो तथा भाइयो,

आपने जिस सौहार्द और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया है, उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा है। संसार में संन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ; धर्मों की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ; और सभी सम्प्रदायों एवं मतों के कोटि-कोटि हिन्दुओं की ओर से भी धन्यवाद देता हूँ।

मैं इस मंच पर से बोलनेवाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने प्राची के प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के ये लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रसारित करने के गौरव का दावा कर सकते हैं। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति, दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट अंश को स्थान दिया था, जिन्होंने दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी, जिस वर्ष उनका पवित्र मंदिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मैं गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने महान् जरथुष्ट्र जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है। भाइयों, मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियाँ सुनाता हूँ, जिसकी आवृत्ति मैं अपने बचपन से करता रहा हूँ और जिसकी आवृत्ति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते हैं :

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न-भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार हे प्रभो ! भिन्न-भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जानेवाले लोग अन्त में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं ।'

यह सभा, जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक है, स्वत: ही गीता के इस अद्भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत् के प्रति उसकी घोषणा है :

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

– 'जो कोई मेरी ओर आता है-चाहे किसी प्रकार से हो-मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न-भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अंत में मेरी ही ओर आते हैं।'

साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी बीभत्स वंशधर धर्मान्धता इस सुन्दर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी है। वे पृथ्वी को हिंसा से भरती रही हैं, उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही हैं, सभ्यताओं को विध्वंस करती और पूरे-पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही हैं। यदि ये बीभत्स दानवी न होतीं, तो मानव-समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर अब उनका समय आ गया है, और मैं आंतरिक रूप से आशा करता हूँ कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घंटा-ध्वनि हुई है, वह समस्त धर्मान्धता का, तलवार या लेखनी के द्वारा होनेवाले सभी उत्पीड़नों का, तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होनेवाले मानवों की पारस्परिक कटुताओं का मृत्यु-निनाद सिद्ध हो।

[2]

हमारे मतभेद का कारण

(15 सितम्बर, 1893 ई.)

मैं आप लोगों को एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ। अभी जिन वाग्मी वक्ता महोदय ने व्याख्यान समाप्त किया है, उनके इस वचन को आप लोगों ने सुना है कि 'आओ, हम लोग एक दूसरे को बुरा कहना बंद कर दें', और उन्हें इस बात का बड़ा खेद है कि लोगों में सदा इतना मतभेद क्यों रहता है।

परन्तु मैं समझता हूँ कि जो कहानी मैं सुनानेवाला हूँ, उससे आप लोगों को इस मतभेद का कारण स्पष्ट हो जायेगा । एक कुएँ में बहुत समय से एक मेंढक रहता था। वह वहीं पैदा हुआ था और वहीं उसका पालन-पोषण हुआ, पर फिर भी वह मेंढक छोटा ही था। हाँ, आज के क्रमविकासवादी (evolutionists) उस समय वहाँ नहीं थे, जो हमें यह बतला सकते कि उस मेंढक की आँखें थीं अथवा नहीं, पर यहाँ कहानी के लिए यह मान लेना चाहिए कि उसकी आँखें थीं, और वह प्रतिदिन ऐसे पुरुषार्थ के साथ जल को सारे कीड़ों और कीटाणुओं से रहित पूर्ण स्वच्छ कर देता था कि उतना पुरुषार्थ हमारे आधुनिक कीटाणुवादियों (bacteriologists) को यशस्वी बना दें। इस प्रकार धीरे-धीरे यह मेंढक उसी कुएँ में रहते-रहते मोटा और चिकना हो गया। अब एक दिन एक दूसरा मेंढक, जो समुद्र में रहता था, वहाँ आया और कुएँ में गिर पड़ा।

"तुम कहाँ से आये हो ?"

"मैं समुद्र से आया हूँ।"

"समुद्र। भला, कितना बड़ा है वह ? क्या वह भी इतना ही बड़ा है, जितना मेरा यह कुआँ ?" और यह कहते हुए उसने कुएँ में एक किनारे से दूसरे किनारे तक छलाँग मारी।

समुद्रवाले मेंढक ने कहा, "मेरे मित्र। भला, समुद्र की तुलना इस छोटे से कुएँ से किस प्रकार कर सकते हो ?"

तब उस कुएँवाले मेंढक ने एक दूसरी छलाँग मारी और पूछा, "तो क्या तुम्हारा समुद्र इतना बड़ा है ?"

समुद्रवाले मेंढक ने कहा, "तुम कैसी बेवकूफ़ी की बात कर रहे हो। क्या समुद्र की तुलना तुम्हारे कुएँ से हो सकती है ?"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अब तो कुएँवाले मेंढक ने कहा, ''जा, जा। मेरे कुएँ से बढ़कर और कुछ हो ही नहीं सकता। संसार में इससे बड़ा और कुछ नहीं है। झूठा कहीं का। अरे, इसे बाहर निकाल दो।''

यही कठिनाई सदैव रही है।

मैं हिन्दू हूँ। मैं अपने क्षुद्र कुएँ में बैठा यही समझता हूँ कि मेरा कुआँ ही संपूर्ण संसार है। ईसाई भी अपने क्षुद्र कुएँ में बैठे हुए यही समझता है कि सारा संसार उसी के कुएँ में है और मुसलमान भी अपने क्षुद्र कुएँ में बैठा हुआ उसी को सारा ब्रह्माण्ड मानता है। मैं आप अमेरिकावालों को धन्य कहता हूँ, क्योंकि आप हम लोगों के इन छोटे-छोटे संसारों की क्षुद्र सीमाओं को तोड़ने का महान् प्रयत्न कर रहे हैं, और मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में परमात्मा आपके इस उद्योग में सहायता देकर आपका मनोरथ पूर्ण करेंगे।

---

1. 15 सितम्बर, शुक्रवार के अपराह्न में धर्म-महासभा के पंचम दिवस के अधिवेशन के समय भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बी अपने-अपने धर्म की प्रधानता का प्रतिपादन करने के लिए वितण्डावाद में जुट गये थे। अन्त में स्वामी विवेकानन्द ने यह कहानी सुनाकर सबको शान्त कर दिया। स.
2. सब बीमारियाँ कीड़ों से उत्पन्न होती है, अतएव कीड़ों को नष्ट करना चाहिए-यह इन लोगों का मत है। स.

शब्दार्थ-टिप्पण

सौहार्द मित्रता का भाव **प्राची** पूर्व दिशा **सुदूर** बहुत दूर **अवशिष्ट** शेष, बचा हुआ **स्रोत** उद्‌गम, मूल स्थान, साधन **विध्वंस** विनाश **उत्पीड़न** सताना, दबाना **आवृत्ति** बार-बार, पुनरावर्तन **बीभत्स** घृणास्पद, **एकटक** टकटकी लगाकर **वाग्मी** बातूनी **निनाद** आवाज, नाद **वितण्डा** व्यर्थ दलील

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) स्वामी विवेकानंद अमेरिका क्यों गए थे ?
(2) विश्व धर्म-महासभा का आयोजन कब और कहाँ हुआ था ?
(3) स्वामीजी किस बात के लिए गर्व का अनुभव करते हैं ?
(4) यहूदियों ने भारत में कहाँ आकर शरण ली थी ?
(5) कुएँ के मेंढक ने क्या कहते हुए एक किनारे से दूसरे किनारे तक छलाँग लगाई ?
(6) नदी एवं समुद्र के माध्यम से श्लोक में क्या कहा गया है ?
(7) अंत में स्वामीजी अमेरिकावासियों के किस प्रयास की सफलता की कामना करते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कीटाणुवादियों के प्रति क्या व्यंग्य किया गया है ?
(2) दूसरे व्याख्यान का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
(3) वाग्मी वक्ता महोदय ने अपने व्याख्यान में क्या कहा था ?
(4) स्वामीजी द्वारा उल्लिखित गीता के उपदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) स्वामीजी ने अपने भाषण के प्रारंभ में अमेरिकावासियों का आभार किस प्रकार व्यक्त किया ?
(2) प्रथम भाषण का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
(3) कुएँ के मेंढक की कहानी से विवेकानंदजी क्या कहना चाहते थे ? समझाइए।
(4) स्वामीजी के अनुसार किस कारण मानव-समाज अधिक उन्नत नहीं हो पाया ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् सब धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं।

(2) यदि ये बीभत्स दानवी न होतीं तो मानव-समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता।

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

आभार, अवर्णनीय, कतिपय, स्वीकृति, अवशिष्ट, स्रोत, क्षुद्र।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

पवित्र, सांप्रदायिक, आंतरिक, मतभेद।

7. निम्नलखिति शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

उन्नति, धर्मांध, सज्जन, अत्याचार, सदैव, मनोरथ।

8. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह करके भेद बताइए :

मतभेद, प्रतिदिन, टेढ़े-मेढ़े, सर्वश्रेष्ठ, घंटा-ध्वनि, मृत्यु-निनाद।

9. सही विकल्प चुनकर रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) सितम्बर 1893 में अमेरिका के .... शहर में विश्व-धर्म-महासभा का आयोजन हुआ था।

(A) न्यूयोर्क (B) शिकागो (C) वाशिंगटन (D) बोस्टन

(2) स्वामी विवेकानंद के जीवन पर .... का अत्यधिक प्रभाव था।

(A) श्रीकृष्ण (B) विनोबा भावे (C) रामकृष्ण परमहंस (D) महर्षि अरविंद

(3) कुएँ के मेंढक की कहानी .... का संकेत करती है।

(A) संकीर्णता (B) विशालता (C) उदारता (D) प्राचीनता

(4) संसार में .... की सबसे प्राचीन परंपरा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

(A) अध्यापकों (B) संन्यासियों (C) गृहस्थों (D) विद्यार्थियों

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- स्वामी विवेकानंद के आदर्श वाक्यों का संकलन करें।
- स्वामीजी के जीवन-प्रसंगों पर आधारित वक्तृत्व-स्पर्धा का आयोजन करें।
- पाठ में आए दोनों श्लोकों का सुलेखन करके भावार्थ लिखें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- स्वामी विवेकानंद के जीवन पर स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रभाव की जानकारी दें।
- पाठ के आधार पर धार्मिक संकीर्णता का आशय स्पष्ट करें।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17 शबरी

नरेश मेहता

(जन्म : सन् 1922 ई.; निधन : 2000 ई.)

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रयोगशील रचनाकार नरेश मेहता का जन्म शाजापुर (मध्यप्रदेश) में एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिन्दी में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। आकाशवाणी और पत्रकारिता से लम्बे समय तक सम्बद्ध रहने के बाद स्वतंत्र लेखन करते रहे। वे आधुनिकता के मुहावरे को दुहराने के बजाय अपना नया मुहावरा गढ़ते नजर आते हैं।

नरेश मेहता की भाषा, कथ्य और शिल्प सबमें एक नवीन प्रयोगशीलता दिखाई देती है। अपनी परिष्कृत भाषा, सृजनात्मक विपुलता एवं विशाल फलक के कारण समकालीन साहित्यकारों में इनका विशिष्ट स्थान है। पौराणिक घटनाओं - पात्रों में एक नया संदर्भ और नया अर्थ तलाशने की उनकी अपनी अलग शैली है। 'अरण्या', 'वनपाखी सुनो', 'मेरा समर्पित एकान्त', 'तुम मेरा मौन हो', 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान', 'प्रवाद पर्व', 'उत्सवा', 'देखना एक दिन' आदि इनके मुख्य काव्य-संग्रह हैं। इनके आठ से अधिक उपन्यास, अनेक नाटक, कहानी संग्रह तथा चिन्तनात्मक निबंध भी प्रकाशित हो चुके हैं। इनके उपन्यासों में नारी-जीवन के संघर्षों और निम्न मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों के जीवन-संघर्षों को अभिव्यक्ति मिली है। इन्हें भारत-भारती सम्मान, साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

खंड-काव्य 'शबरी' के इस अंश में मतंग ऋषि के पम्पासर आश्रम में शबरी पहुँचती है और ऋषि से निवेदन करती है कि वे उसे भी आश्रम में रहकर प्रभु की भक्ति, सेवा करने का अवसर दें। मतंग ऋषि लोकापवाद के भय के कारण संकोच दिखाते हैं, तब शबरी उन्हें तर्कपूर्ण उत्तर देती है। जिसे सुनकर वे प्रसन्न हो जाते हैं, और अंत में उसे आश्रम में रहने की सहर्ष अनुमति देते हैं।

'सौभाग्यवती तुम लगती हो
परिवार और पुरजन होंगे',
'परिवार और पुरजन कैसे ?'
'कुछ सांसारिक बन्धन होंगे !'

'मैं सब को तृणवत् त्याग
चली आयी प्रभु के श्रीचरणों में'
अन्त्यज सीमा ज्ञात मुझे
पर पड़ी रहूँ श्रीचरणों में।'

'आश्रम की भी सामाजिकता
कैसे अछूत रह सकता है ?
उस पर स्त्री, घर से भागी
कुछ भी प्रवाद हो सकता है।'

'स्थान यहाँ देना तुमको
इसका निर्णय, सब पर निर्भर,
यदि उच्चवर्ण की होतीं तुम
तो प्रश्न नहीं था कुछ दूभर।'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'मैं समझी प्रभु हैं अग्निरूप
सब सांसारिकता से ऊपर
अन्त्यज भी हो जाते पावन
जिनकी पवित्रता को छूकर।

'क्या आत्मा की उन्नति केवल
है उच्च वर्ग तक ही सीमित ?
प्रभु तो हैं सबके पिता, भला
उनका आराधन क्यों सीमित ?'

चौके मतंग, वह समझ गये
कीचड़ में कमल खिला है यह।
होगी अछूत, पर जाने किन
जन्मों का पुण्य खिला है यह।

शब्दार्थ-टिप्पण

सौभाग्यवती सुहागिन **पुरजन** नगरवासी **तृणवत्** तिनके के समान **अन्त्यज** शूद्र **पावन** पवित्र **प्रवाद** विवाद **दूभर** कठिन **आराधन** पूजा।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) शबरी ने अपने परिवारजनों को किसके समान त्याग दिया ?

(2) शबरी किसके चरणों में पड़ी रहना चाहती थी ?

(3) शबरी को आश्रम में रखने का निर्णय किस पर निर्भर था ?

(4) आश्रम में शबरी का रहना कब आसान हो जाता ?

(5) शबरी के मतानुसार अन्त्यज कैसे पवित्र हो जाते हैं ?

2. प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) शबरी को देखकर मतंग ऋषि ने क्या कहा ?

(2) मतंग ऋषि शबरी को अपने आश्रम में रखने से क्यों हिचकिचाते थे ?

(3) शबरी को आश्रम में रखने को लेकर मतंग ऋषि के मन में क्या दुविधा थी ?

3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :

(1) शबरी की आध्यात्मिकता को देखकर मतंग ऋषि क्या सोचते हैं ?

(2) आत्मोन्नति के संबंध में मतंग ऋषि और शबरी के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(i) चौंके मतंग, वह समझ गये
कीचड़ में कमल खिला है यह।

(ii) मैं समझी प्रभु हैं अग्निरूप
सब सांसारिकता से ऊपर।

5. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) मैं सबको तृणवत् त्याग चली आई .... के चरणों में।

(A) प्रभु (B) देव (C) ईश्वर (D) भगवान

(2) मैं समझी प्रभु हैं ....।

(A) प्रेम रूप (B) अदृश्य रूप (C) मूर्ति रूप (D) अग्नि रूप

(3) क्या आत्मा की उन्नति केवल है .... तक ही सीमित।

(A) निम्न वर्ग (B) उच्च वर्ग (C) मध्यम वर्ग (D) अछूत वर्ग

(4) उस पर स्त्री घर से भागी कुछ भी .... हो सकता है।

(A) अपवाद (B) विवाद (C) प्रवाद (D) प्रमाद

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

तृण, घर, उन्नति, आग, स्त्री।

7. विलोम शब्द लिखिए :

सीमित, उच्च, प्रश्न, पवित्र, ज्ञात, दूभर, भला, पुण्य।

8. वर्तनी शुद्ध करके लिखिए :

सिमीत, सांसारीक, सोभाग्यवति, परीवार, सामाजीकता, पवीत्रता।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'शबरी और मतंग ऋषि' के संवादों को वर्ग में प्रस्तुत कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- गुजरात के आदिवासी जीवन के विषय में प्रोजेक्ट तैयार करवाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

18 गिरगिट

अंतोन चेखव

(जन्म : सन् 1860 ई.; निधन : 1904 ई.)

इनका जन्म रूस के तगानरोग कस्बे में हुआ था। इन्होंने मास्को के मेडिकल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की और डॉक्टरी भी की। इनका विवाह विनेप्पर नाम की अभिनेत्री से हुआ था। दुनिया के महत्वपूर्ण कथाकारों की सूची इनके नाम के बिना पूरी नहीं गिनी जाती। अक्तूबर की क्रांति से पहले के रूसी समाज की परिस्थितियों में जन्म लेनेवाले सबसे महत्वपूर्ण लेखकों में से ये एक गिने जाते हैं। इनकी सौ से अधिक कहानियाँ न सिर्फ़ प्रकाशित ही हुई हैं बल्कि विश्व की अधिकांश भाषाओं में अनूदित भी हुई हैं। ये जितने महत्वपूर्ण कथाकार थे, उतने ही महत्वपूर्ण नाटककार भी थे। इनके नाटक चेरी आर्चड, सीगल, थ्री सिस्टर्स, अंकल वान्या विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाओं पर कई फिल्में भी बनी हैं।

'गिरगिट' पुलिस इंस्पेक्टर ओचुमेलोव के पल-पल रंग बदलनेवाले व्यक्तित्व पर तीखा व्यंग्य करनेवाली कहानी है । ख्यूक्रिन जब शिकायत करता है कि उसे कुत्ते ने काट लिया है, तो वह कुत्ते के मालिक को सबक़ सिखाने की बात करता है। जब उसे पता चलता है कि वह कुत्ता जनरल झिगालॉव का है, तो वह कुत्ते के काटने में ख्यूक्रिन की ग़लती निकालता है। जब सिपाही कहता है कि 'यह जनरल साहब का कुत्ता नहीं है।' तब वह रंग बदलकर फिर ख्यूक्रिन के पक्ष में हो जाता है। इस तरह उसका बार-बार अपना रंग बदलना गिरगिट की याद दिलाता है।

हाथ में बंडल थामे, पुलिस इंसपेक्टर ओचुमेलॉव नया ओवरकोट पहने हुए, बाज़ार के चौराहे से गुज़रा। उसके पीछे, अपने हाथों में, ज़ब्त की गई झरबेरियों की टोकरी उठाए, लाल बालोंवाला एक सिपाही चला आ रहा था। चारों ओर खामोशी थी... चौराहे पर किसी आदमी का निशान तक नहीं था। दुकानों के खुले दरवाज़े, भूखे जबड़ों की तरह, भगवान की इस सृष्टि को उदास निगाहों से ताक रहे थे। कोई भिखारी तक उनके आस-पास नहीं दिख रहा था।

सहसा ओचुमेलॉव के कानों में एक आवाज़ गूँजी-"तो तू काटेगा ? तू ? शैतान कहीं का ! ओ छोकरो ! इसे मत जाने दो। इन दिनों काट खाना मना है। पकड़ लो इस कुत्ते को। आह..... !"

तब किसी कुत्ते के किकियाने की आवाज़ सुनाई दी। ओचुमेलॉव ने उस आवाज़ की दिशा में घूमकर घूरा और पाया कि एक व्यापारी पिचूगिन के काठगोदाम में से एक कुत्ता तीन टाँगों के बल पर रेंगता चला आ रहा है। छींट की कलफ़ लगी कमीज़ और बिना बटन की वास्केट पहने हुए, एक व्यक्ति कुत्ते के पीछे दौड़ रहा था। गिरते पड़ते उसने कुत्ते को पिछली टाँग से पकड़ लिया। फिर कुत्ते का किकियाना और एक चीख-"मत जाने दो"-दोबारा सुनाई दी। दुकानों में ऊँघते हुए चेहरे बाहर झाँके और देखते ही देखते, जैसे ज़मीन फाड़कर निकल आई एक भीड़, काठगोदाम को घेरकर खड़ी हो गई।

"हुज़ूर ! यह तो जनशांति भंग हो जाने जैसा कुछ दीख रहा है", सिपाही ने कहा।

ओचुमेलॉव मुड़ा और भीड़ की तरफ़ चल दिया। उसने काठगोदाम के पास बटन विहीन वास्केट धारण किए हुए उस आदमी को देखा, जो अपना दायाँ हाथ उठाए वहाँ मौजूद था तथा उपस्थिति लोगों को अपनी लहूलुहान

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उँगली दिखा रहा था। उसके नशीले-से हो आए चेहरे पर साफ़ लिखा दिख रहा था-''शैतान की औलाद ! मैं तुझे छोड़ने वाला नहीं ! और उसकी उँगली भी जीत के झंडे की तरह गड़ी दिखाई दे रही थी। ओचुमेलॉव ने इस व्यक्ति को पहचान लिया। वह ख्यूक्रिन नामक सुनार था और इस भीड़ के बीचोंबीच, अपनी अगली टाँग पसारे, नुकीले मुँह और पीठ पर फैले पीले दागवाला, अपराधी-सा नज़र आता, सफ़ेद वारज़ोई पिल्ला, ऊपर से नीचे तक काँपता पसरा पड़ा था। उसकी आँसुओं से सनी आँखों में संकट और आतंक की गहरी छाप थी।''

''यह सब क्या हो रहा है ?'' भीड़ को चीरते हुए ओचुमेलॉव ने सवाल किया-''तुम सब लोग इधर क्या कर रहे हो ? तुमने अपनी यह उँगली ऊपर क्यों उठा रखी है ? चिल्ला कौन रहा था ?''

''हुजूर ! मैं तो चुपचाप चला जा रहा था'', मुँह पर हाथ रखकर खाँसते हुए ख्यूक्रिन ने कहा-''मुझे मित्री मित्रिच से लकड़ी लेकर कुछ काम निपटाना था, तब अचानक इस कम्बख्त ने अकारण मेरी उँगली काट खाई। माफ़ करें। आप तो जानते हैं मैं ठहरा एक कामकाजी आदमी... मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है। मुझे लग रहा है एक हफ़्ते तक मेरी यह उँगली अब काम करने लायक नहीं हो पाएगी। तो हुजूर ! मेरी गुज़ारिश है कि इसके मालिकों से मुझे हरज़ाना तो दिलवाया जाए। यह तो किसी कानून में नहीं लिखा है हुजूर कि आदमखोर जानवर हमें काट खाएँ और हम उन्हें बरदाश्त करते रहें। अगर हर कोई इसी तरह काट खाना शुरू कर दे तो यह जिंदगी तो नर्क हो जाए...''

''हूँ... ठीक है, ठीक है'', ओचुमेलॉव ने अपना गला खँखारते और अपनी त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा - ''ठीक है यह तो बताओ कि यह कुत्ता किसका है। मैं इस मामले को छोड़ने वाला नहीं हूँ। कुत्तों को इस तरह आवारा छोड़ देने का मज़ा मैं इनके मालिकों को चखाकर रहूँगा जो कानून का पालन नहीं करते, अब उन लोगों से निपटने का वक्त आ गया है। उस बदमाश आदमी को मैं इतना जुर्माना ठोकूँगा ताकि उसे इल्म हो जाए कि कुत्तों और जानवरों को इस तरह आवारा छोड़ देने का क्या नतीजा होता है ? मैं उसे ठीक करके रहूँगा'', तब सिपाही की तरफ़ मुड़कर उसने अपनी बात जारी रखी - ''येल्दीरीन ! पता लगाओ यह पिल्ला किसका है और इसकी पूरी रिपोर्ट तैयार करो। इस कुत्ते को बिना देरी किए खत्म कर दिया जाए। शायद यह पागल हो... मैं पूछ रहा हूँ आखिर यह किसका कुत्ता है ?''

''मेरे खयाल से यह जनरल झिगालॉव का है'', भीड़ से एक आवाज़ उभरकर आई।

''जनरल झिगालॉव ! हूँ येल्दीरीन, मेरा कोट उतरवाने में मेरी मदद करो... आज कितनी गरमी है। लग रहा है बारिश होकर रहेगी'', वह ख्यूक्रिन की तरफ़ मुड़ा - ''एक बात मेरी समझ में नही आती - आखिर इसने तुम्हें कैसे काट खाया ? यह तुम्हारी उँगली तक पहुँचा कैसे ? तू इतना लंबा तगड़ा आदमी और यह रत्ती भर का जानवर ! जरूर ही तेरी ऊँगली पर कोई कील वगैरह गड़ गई होगी और तत्काल तूने सोचा होगा कि इसे कुत्ते के मत्थे मढ़कर कुछ हरज़ाना वगैरह ऐंठकर फ़ायदा उठा लिया जाए। मैं तेरे जैसे शैतान लोगों को अच्छी तरह समझता हूँ।''

''इसने अपनी जलती सिगरेट से इस कुत्ते की नाक यूँ ही जला डाली होगी, हुज़ूर ! वरना यह कुत्ता बेवकूफ़ है क्या जो इसे काट खाता !'' येल्दीरीन ने कहा - ''हुज़ूर ! मैं जानता हूँ यह ख्यूक्रिन हमेशा कोई न कोई शरारत करता रहता है।''

''अबे ओ शैतान की औलाद ! तूने मुझे ऐसा करते जब देखा ही नहीं तो झूठ-मूठ में सब क्यों बके जा रहा है ? हुज़ूर तो खुद बुद्धिमान आदमी है और बखूबी जानते हैं कि, कौन सच बोल रहा है और कौन झूठ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यदि मैं झूठ बोलता पाया जाऊँ तो मुझ पर अदालत में मुकदमा ठोक दो। कानून सम्मत तो यही है... कि सब लोग अब बराबर हैं। मैं यदि आप चाहें तो यह भी बता दूँ कि मेरा एक भाई भी पुलिस में हैं...''

''बकवास बंद करो !''

''नहीं ! यह जनरल साहब का कुत्ता नहीं है'' सिपाही ने गंभीरतापूर्वक टिप्पणी की। जनरल साहब के पास ऐसा कोई कुत्ता नहीं है। उनके तो सभी कुत्ते पोंटर हैं।''

''तुम विश्वास से कह रहे हो ?''

''एकदम हुज़ूर !''

''तुम सही कहते हो। जनरल साहब के सभी कुत्ते मँहगे और अच्छी नस्ल के हैं, और यह–ज़रा इस पर नज़र तो दौड़ाओ। कितना भद्दा और मरियल–सा पिल्ला है। कोई सभ्य आदमी ऐसा कुत्ता काहे को पालेगा ? तुम लोगों का दिमाग खराब तो नहीं हो गया है। यदि इस तरह का कुत्ता मॉस्को या पीटसवर्ग में दिख जाता, तो मालूम हो उसका क्या हाल होता ? तब कानून की परवाह किए बगैर इसकी छुट्टी कर दी जाती। तुझे इसने काट खाया है, तो प्यारे एक बात गाँठ बाँध ले, इसे ऐसे मत छोड़ देना। इसे हर हालत में मज़ा चखवाया जाना ज़रूरी है। ऐसे वक्त में...''

''शायद यह जनरल साहब का ही कुत्ता है।'' गंभीरता से सोचते हुए सिपाही ने कहा – ''इसे देख लेने भर से तो नहीं कहा जा सकता कि यह उनका नहीं है। कल ही मैंने बिलकुल इसी की तरह का एक कुत्ता उनके आँगन में देखा था।''

''हाँ ! यह जनरल साहब का ही तो है'', भीड़ में से एक आवाज़ उभर आई।

''हूँ ! येल्दीरीन, मेरा कोट पहन लेने में ज़रा मेरी मदद करो। मुझे इस हवा से ठंड लगने लगी है। इस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाओ और पता लगाओ कि क्या यह उन्हीं का तो नहीं है ? उनसे कहना कि यह मुझे मिला और मैंने इसे वापस उनके पास भेज़ा है। और उनसे यह भी विनती करना कि ये इसे गली में चले आने से रोकें। लगता है कि यह काफ़ी मँहगा प्राणी है, और यदि हाँ, हर गुंडा बदमाश इसके नाक में जलती सिगरेट घुसेड़ने लगे, तो यह तबाह ही हो जाएगा। तुम्हें मालूम है कुत्ता कितना नाजुक प्राणी है। और तू अपना हाथ नीचे कर बे ! गधा कहीं का। अपनी इस भद्दी उँगली को दिखाना बंद कर। यह सब तेरी अपनी गलती है...''

''उधर देखो, जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है। ज़रा उससे पता लगाते हैं... ओ प्रोखोर ! इधर आना भाई । इस कुत्ते को तो पहचानो... क्या यह तुम्हारे यहाँ का है ?''

''एक बार फिर से तो कहो ! इस तरह का पिल्ला तो हमने कई ज़िंदगियों में नहीं देखा होगा।''

''अब अधिक जाँचने की ज़रूरत नहीं है।'' ओचुमेलॉव ने कहा – ''यह आवारा कुत्ता है। इसके बारे में इधर खड़े होकर चर्चा करने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ कि यह आवारा है, तो है। इसे मार डालो और सारा किस्सा खत्म !''

''यह हमारा नहीं है'', प्रोखोर ने आगे कहा ''यह तो जनरल साहब के भाई का है, जो थोड़ी देर पहले इधर पधारे हैं। अपने जनरल साहब को 'बारजोयस' नस्ल के कुत्तों में कोई दिलचस्पी नहीं है पर उनके भाई को यही नस्ल पसंद है।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"क्या ? क्या जनरल साहब के भाई साहब पधार चुके हैं ? वाल्दीमीर इवानिच ?" आह्लाद से सन आप अपने चेहरे को समेटते हुए, ओचुमेलॉव ने हैरानी के भाव प्रदर्शन के साथ कहा – "कितना अदभुत संयोग रहा। और मुझे मालूम तक नहीं। अभी कुछ दिन रुकेंगे ?"

"हाँ ! यह सही है।"

"तनिक सोचो ! वे अपने भाई साहब से मिलने पधारे हैं और मैं इतना भी नहीं जानता। तो यह उनका कुत्ता है। बहुत खुशी हुई... इसे ले जाइए... यह तो एक अति सुंदर 'डॉगी' है। यह इसकी उँगली पर झपट पड़ा था ? हा-हा-हा ! बस-बस ! अब काँपना बंद कर भाई ! गर्र-गर्र... नन्हा-सा शैतान गुस्से में है... बहुत खूबसूरत पिल्ला है ।"

प्रोखोर कुत्ते को सँभालकर काठगोदाम से बाहर चला गया। भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँस दी।

"मैं तुझे अभी ठीक करता हूँ !" ओचुमेलॉव ने उसे धमकाया और अपने लंबे चोगे को शरीर पर डालता हुआ, बाज़ार के उस चौराहे को काटकर अपने रास्ते पर चला गया।

शब्दार्थ-टिप्पण

पेचीदा जटिल, कठिन **जुर्माना** आर्थिक दण्ड **पिल्ला** कुत्ते का बच्चा **रिपोर्ट** विवरण **हरजाना** अर्थ-दण्ड **बकवास** व्यर्थ की बातें **बेवकूफ** मूर्ख **बरदाश्त** सहन **औलाद** संतान **आह्लाद** आनंद, प्रसन्नता **बावर्ची** रसोइया

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) ओचुमेलॉव कौन था ?

(2) कुत्ते ने किसकी उँगली में काट लिया था ?

(3) भीड़ कहाँ इकट्ठी हो गई थी ?

(4) ख्यूक्रिन कौन था ?

(5) जनरल साहब के बावर्ची का क्या नाम था ?

(6) कुत्ता किस नस्ल का था ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) काठगोदाम के पास भीड़ क्यों इकट्ठी हो गई थी ?

(2) उंगली ठीक न होने की स्थिति में ख्यूक्रिन का नुकसान क्यों होता ?

(3) कुत्ता कहाँ और क्यों किकिया रहा था ?

(4) बाजार के चौराहे पर खामोशी क्यों थी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए :

(1) येल्दीरीन ने ख्यूक्रिन को दोषी ठहराते हुए क्या कहा ?

(2) ख्यूक्रिन ने ओचुमेलॉव को उंगली ऊपर उठाने का क्या कारण बताया ?

(3) भीड़ ख्यूक्रिन पर क्यों हँसने लगी है ?

(4) ओचुमेलॉव के चरित्र की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. सविग्रह समास का नाम लिखिए :

चौराहा, दु:खदग्ध, प्रतिवर्ष।

5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :

(1) सोना-चाँदी के आभूषण बनाने वाला –

(2) आदमियों को खा जाने वाला जानवर –

(3) सात दिनों का समूह –

(4) कुतिया का छोटा बच्चा –

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

जमीन, कुत्ता, नतीजा, उदास।

7. विरोधी शब्द लिखिए :

झूठ, गरमी, सम्मत, मालिक, संयोग, विश्वास, जिंदगी, आवारा।

8. संधि-विच्छेद कीजिए :

संयोग, दुष्ट, सज्जन।

9. सही जोड़े मिलाइए :

अ	ब
(1) ओचुमेलॉव	सुनार
(2) ख्यूक्रिन	जनरल साहब का बावर्ची
(3) येल्दीरीन	जनरल साहब के भाईसाहब
(4) प्रोखोर	पुलिस इन्सपेक्टर
(5) वाल्दीमीर इवानिच	सिपाही

10. निम्नलिखित वाक्य कौन कहता है ? लिखिए :

(1) ''हुजूर ! यह तो जनशांति भंग हो जाने जैसा कुछ दीख रहा है।''

(2) ''यह आवारा कुत्ता है।''

(3) ''मैं तुझे अभी ठीक करता हूँ।''

(4) ''येल्दीरीन, मेरा कोट उतरवाने में मेरी मदद करो।''

(5) ''मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है।''

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

● विद्यार्थी जारशाही शासन की कमियों की चर्चा कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

● जारशाही शासन के संदर्भ में ''समरथ को नहिं दोष गुसाईं'' का अर्थ समझाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

19 डेली पैसेंजर

अरुण कमल

(जन्म : सन् 1954 ई.)

हिन्दी साहित्य के इस यशस्वी कवि का जन्म बिहार में रोहतास जिले के नासरीगंज में हुआ था। इन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया और पटना विश्वविद्यालय में अध्यापक के पद पर अपनी सेवाएँ देते रहे। जिन कवियों ने अपने पूर्ववर्ती कवियों की रूढ़ियों को तोड़ते हुए समकालीन कविता की नई भूमि निर्मित की, उनमें अरुण कमल प्रमुख हैं। अपने आसपास के परिवेश को पूरी ईमानदारी से प्रतिबिंबित करने वाले इस कवि की कविता में जीवन के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के दर्शन होते हैं। इनकी भाषा में जन-जीवन के रंग है और एक आडंबरमुक्त बिम्बधर्मिता है तथा इनकी भाषा शब्दाडम्बर से मुक्त खड़ी बोली है।

जीवन और जगत में जो कुछ भी विशिष्ट है, उभरता हुआ है, उठता हुआ है, उन सबके प्रति मन में ललक है। अरुण कमल के पास सही राजनीतिक परिप्रेक्ष्य है। इनकी गणना अब प्रतिष्ठित, प्रगतिशील, कवियों में की जाती है। 'अपनी केवल धार', 'सबूत', 'इस नए इलाके में' इनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं। 'इस नए इलाके में' के लिए इन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त इन्हें भारतभूषण अग्रवाल, सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार एवं शमशेर सम्मान भी प्राप्त हो चुका है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने कामगार औरत का बड़ा ही सटीक चित्र प्रस्तुत किया है। इस कविता में एक मार्मिक दृश्य है, लेकिन इस छोटे-से दृश्य में बड़ी गहरी कहानी है। एक औरत जो अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए नौकरी करने को विवश है। वह पूरे दिन काम करने के बाद शाम को अपने घर लौटते समय इतनी थकी हुई है कि ट्रेन में बैठते ही सो जाती है। कवि ने इस दृश्य को बड़ी गहरी सहानुभूति के साथ प्रस्तुत किया है।

मैंने उसे कुछ भी तो नहीं दिया
इसे प्यार भी तो नहीं कहेंगे
एक धुँधले-से-स्टेशन पर वह हमारे डब्बे में
चढ़ी
और भीड़ में खड़ी रही कुछ देर सीकड़ पकड़े
पाँव बदलती
फिर मेरी ओर देखा

और मैंने पाँव सीट से नीचे कर लिये
और नीचे उतार दिया झोला
उसने कुछ कहा तो नहीं था

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वह आ गयी
और मेरी बगल में बैठ गयी
धीरे से पीठ तख्ते से टिकायी
और लम्बी साँस ली
ट्रेन बहुत तेज चल रही थी
आवाज से लगता था
ट्रेन बहुत तेज चल रही थी
झोंक रही थी हवा को खिड़कियों की राह
बेलचे में भर-भर
चेहरे पर
बाँहों पर
खुल रहा था रन्ध्र-रन्ध्र
कि सहसा मेरे कन्धे से
लग गया
उस युवती का माथा
लगता है बहुत थकी थी
वह कामगार औरत
काम से वापस घर लौट रही थी
एक डेली पैसेंजर।

शब्दार्थ-टिप्पण

धुंधला अस्पष्ट, हलका अँधेरा **झोला** थैली **रन्ध्र** छिद्र **बेलचा** मिट्टी-रेत, कोयला आदि उठाने का साधन **कामगार** काम करनेवाला, मजदूर।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कामगार औरत कहाँ से घर लौट रही थी ?
(2) मजदूर औरत ट्रेन के डिब्बे में क्या पकड़कर खड़ी रही ?
(3) कामगार औरत को जगह देने के लिए कवि ने क्या किया ?
(4) ट्रेन की गति का अहसास किस बात से हो रहा था ?
(5) अचानक कवि को अपने कंधे पर किसकी अनुभूति हुई ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) मजदूर औरत को देखकर कवि के मन में किस प्रकार के भाव जाग्रत हुए ?
(2) तेज चलती हुई ट्रेन हवा को किस प्रकार झोंक रही थी ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) कवि ने अपने पैर सीट से नीचे क्यों कर लिए ?

(4) मजदूर औरत कहाँ से वापस आ रही थी ? किस हालत में ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :

(1) कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

(2) कामगार औरत की स्थिति को अपने शब्दों में लिखिए।

4. निम्नलिखित के समानार्थी शब्द लिखिए :

प्यार, धुँधला, लम्बी, सहसा, माथा।

5. निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखिए :

प्रेम, भीड़, तेज, बहुत।

6. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) और मैंने .... सीट से नीचे कर लिये।

(A) पाँव (B) हाथ (C) नाव (D) कान

(2) वह आ गयी और मेरी .... में बैठ गई।

(A) तरफ (B) बगल (C) महल (D) सरल

(3) लगता है बहुत .... थी।

(A) रुकी (B) थकी (C) जगी (D) पकी

(4) काम से वापस .... लौट रही थी।

(A) घर (B) दर (C) पर (D) सर

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'परिश्रम का महत्व' विषय पर दस-बारह पंक्तियाँ लिखिए।
- 'श्रम और थकान' पर अपने अनुभव व्यक्त कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- निरालाजी की 'तोड़ती पत्थर' कविता विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए दीजिए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

20 हानूश

भीष्म साहनी

(जन्म : सन् 1915 ई.; निधन : 2003 ई.)

इनका जन्म रावलपिंडी में हुआ था, जो आजकल पाकिस्तान में है। इन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया और पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। अंबाला, अमृतसर और दिल्ली में अध्यापन किया। 'विदेशी भाषा प्रकाशन गृह' मास्को में अनुवादक के रूप में काम किया। इनके कई कहानी-संग्रह और उपन्यास प्रकाशित हैं। 'तमस' उपन्यास पर इन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था। इसी नाम से इस पर एक सीरियल भी बना है। नाटककार के रूप में भी इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इनके नाटक 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बज़ार में' के बिना हिंदी नाटक की सम्यक चर्चा संभव नहीं है।

यहाँ 'हानूश' के तीसरे अंक का दूसरा दृश्य दिया जा रहा है। इसमें हानूश नाम के एक ग़रीब कुफ़्लसाज़ यानी ताला बनानेवाले ने एक 'नायाब घड़ी' का आविष्कार किया, जिसका पुरस्कार उस देश के बादशाह ने ये दिया, '.... हानूश कुफ़्लसाज़ को उसकी आँखों से महरूम कर दिया जाय। उसकी दोनों आँखें निकाल ली जायें। उसकी आँखें नहीं होंगी, तो और घड़ियाँ नहीं बना सकेगा।'

तीसरे अंक के इस आख़िरी दृश्य में जब घड़ी बिगड़ जाती है, तो अंधा होते हुए भी दूसरों की मदद से उसे ठीक कर देता है। उसका शिष्य जेकब चला गया, ताकि घड़ी का भेद जिंदा रह सके, और यही सबसे बड़ी बात है।

अंक-3 : दृश्य - 2

[घड़ी की मीनार। दाएँ-बाएँ की खिड़कियों में से हलका-सा प्रकाश। मीनार के अन्दर अँधेरा है। अन्दर की तरफ़ से घड़ी की मशीन की झलक मिलती है। सीढ़ियों पर कदमों की आवाज़। मशालों की रोशनी मीनार के अन्दर पहुँचती है जिससे घड़ी के कुछेक पुर्ज़े नज़र आते हैं। एक अधिकारी और एक सरकारी कारिन्दे की निगरानी में हानूश को अन्दर लाया जाता है। अधिकारी और कारिन्दे के बीभत्स साए। उनके बीच एक कोने में खड़ा दुबला-पतला अन्धा हानूश।]

अधिकारी : घड़ी तुम्हारे सामने है हानूश ! इसे तुम्हें ठीक करना होगा।

हानूश : तुम सचमुच समझते हो कि मैं इसे ठीक कर सकता हूँ ?

अधिकारी 1 : बादशाह सलामत बहुत नाराज़ हैं, हानूश ! घड़ी के कारण शहर में यात्रियों का ताँता लगा रहता है। घड़ी बन्द हो जाए तो रियासत को बहुत नुकसान है। तुम्हें यह काम करना ही पड़ेगा जिसके लिए सरकार ने तुम्हें तलब किया है।

[सिपाही का प्रस्थान]

हानूश : क्या तुम सचमुच समझते हो कि मैं आँखों के बिना घड़ी को ठीक कर सकता हूँ ?

अधिकारी 1 : इसकी मरम्मत तो तुम्हें करनी ही है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हानूश : मुझे घड़ी के सामने ले चलो। घड़ी की बड़ी कमानी कहाँ पर है ?

अधिकारी 1 : मैं क्या जानूँ, कमानी क्या होती है ! कौन-सी कमानी ?

हानूश : तुम मुझे घड़ी की मशीन के ऐन सामने ले चलो। बस, इतना ही, यही बहुत बड़ी मदद होगी ?

अधिकारी 1 : आओ, मेरे साथ आओ।

[सीढ़ियों पर कदमों की आवाज़। एक और सरकारी अधिकारी का प्रवेश।]

अधिकारी 2 : जेकब का कहीं पता नहीं चल रहा। उसे ढूँढ़ने के लिए आदमी भेजे गए हैं।

अधिकारी 1 : *(हानूश से)* क्या तुम्हें भी मालूम नहीं कि जेकब कहाँ पर है ?

हानूश : सुबह के वक़्त जेकब मेरे साथ था। बाद में वह कहीं बाहर गया होगा। मुझे बताकर नहीं गया। *(हँसकर)* अन्धा आदमी क्या जाने-आँखोंवाले कहाँ रहते हैं, क्या करते हैं !

अधिकारी 1 : तुम ज़रूर जानते हो, जेकब कहाँ पर है। तुम बताना नहीं चाहते, क्योंकि तुम घड़ी की मरम्मत करना नहीं चाहते। इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। *(अधिकारी 2 से)* तुम बूढ़े लोहार को ले आओ। मुझे पता चला है कि वह इसके लिए घड़ी के कल-पुर्ज़े बनाता रहा है। उसे पकड़ लाओ। *(हानूश से)* जेकब अगर लापता हो गया है तो उसकी जगह तुम जिसे चाहो बुला सकते हो। हम उसे तुम्हारी मदद के लिए पकड़ लाएँगे। लेकिन घड़ी की मरम्मत तो तुम्हें करनी ही होगी। *(अधिकारी 2 से)* शहर में मुनादी करा दो कि हानूश का शागिर्द जेकब, जहाँ भी हो, घड़ी की मीनार में पहुँच जाए।

[अधिकारी 2 का प्रस्थान]

हानूश : आप मुझे हाँकते हुए यहाँ तक ले आए हैं और यहाँ मैं घड़ी को देख तक नहीं सकता।

अधिकारी 1 : कोई भी आदमी तुम्हारी मदद कर सकता है। कोई लोहार, कोई मज़दूर, जिसे तुम चाहो, बुला सकते हैं।

हानूश : आप ही मेरी मदद कीजिए।

अधिकारी 1 : बोलो, क्या चाहते हो ?

हानूश : एक काम कीजिए।

अधिकारी 1 : क्या है ?

हानूश : इधर मीनार के अन्दर कहीं पर, शायद दाएँ कोने में, औज़ारों का बक्सा रखा है। वह मिल जाए तो इधर उठा लाइए।

अधिकारी 1 : *(बक्से को ढूँढ़ता है। औजार मिल जाते हैं।)* हाँ, है। यह रहा।

[उठाकर हानूश के सामने ले आता है।]

यह रहा तुम्हारा औज़ारों का बक्सा !

हानूश : ठीक है, शुक्रिया। अब आप बेशक तशरीफ़ ले जाइए। आप बेशक किसी भी आदमी को मेरी मदद करने के लिए भिजवा दें।

[हानूश चुपचाप खड़ा रहता है। अधिकारी चला जाता है। हानूश मीनार में अकेला रह जाता है। एक ओर घड़ी के कलपुर्ज़े मशालों की अस्थिर रोशनी में चमक रहे हैं, दूसरी ओर हानूश, निपट अकेला उनके सामने खड़ा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कुछ देर खड़ा रहने के बाद हानूश झुककर, टटोलते हाथों से उसमें से बड़ी-सी हथौड़ी निकाल लाता है। अपनी अन्धी आँखों से कुछ भी न देख पाते हुए वह, अनुमान लगाता हुआ, दो-एक क़दम घड़ी की ओर आगे बढ़ जाता है।]

हानूश : हथौड़े से कुछ तो टूटेगा। कोई पुर्ज़ा तो टूटेगा। किसी एक नाज़ुक पुर्ज़े पर भी इसका वार पड़ जाए तो घड़ी का काम-तमाम हो जाएगा। अगर लीवर पर कहीं जा लगे तो इसकी मरम्मत फिर कभी नहीं हो सकेगी। यह ठीक है। पेंडुलम कहाँ पर होगा ? पेंडुलम मिल जाए तो उसके लीवर को तो खींचकर भी अलग किया जा सकता है।

[टटोलता हुआ घड़ी को छू लेता है।]

यह क्या है ?

[घड़ी को छूते ही जैसे उसके तन-बदन को बिजली छू जाती है। वह घड़ी के पुर्ज़े को पकड़े रहता है। साथ वाले दो-तीन पुर्ज़ों को छूकर।]

यह कौन-सा हिस्सा है ? हाँ, यह घड़ी ही है...यही मेरी घड़ी है।

[सहलाते हुए-सा उसे पहचानने की कोशिश करता है।]

इधर...इधर बड़ा चक्कर होना चाहिए। क्या यही चक्कर है ?

(हाथ फेरता है) यह रहा ! कैसा बेजान पड़ा है। ज़रा भी हरकत नहीं है।...धुरा मिल गया, यही है...अब पेंडुलम कहाँ हो सकता है...जेकब मेरे साथ होता तो झट से बता देता कि कौन-सा पुर्ज़ा कहाँ पर है। उसे सब मालूम है।...अच्छा है, वह यहाँ पर नहीं है, वरना मेरी हिम्मत बिलकुल जवाब दे जाती !...यह क्या है ? मैं घड़ी के पास कहाँ पहुँच गया हूँ ? यहाँ लीवर है क्या ? यही लीवर है क्या ?...लीवर...यही लीवर...अरे, लीवर टूटा हुआ है।...मैंने उस वक़्त कहा भी था कि लीवर कमज़ोर है, इसमें पीतल की मात्रा ज्यादा नहीं डालनी चाहिए थी। उसी वजह से यह जल्दी टूट गया है, यही लीवर है क्या?...हाँ, हाँ, यही लीवर है। यही...मुझे और कुछ नहीं चाहिए। लीवर मिल गया है। इसी को खींचकर तोड़ दूँ। यहीं पर घड़ी का भेद छिपा हुआ है। इसे तोड़ दूँ तो जैसे घड़ी का गला घोंट दिया। वह सदा के लिए मर जाएगी।...यह लीवर क्यों टूटा है ?...अगर दो साल में लीवर टूट सकता है तो इस घड़ी को बनाने से क्या लाभ ? मैंने क्या बनाया है ? कोई नौसिखुआ भी घड़ी बनाएगा तो ऐसी बेवक़ूफ़ी नहीं करेगा...शायद यहाँ से टूटा है।...जेकब होता तो झट से बता देता, कहाँ से टूटा है, कैसे टूटा है। लीवर को मैं अपने जेब में रख लूँगा, एक निशानी के तौर पर। किसी को बताऊँगा नहीं कि लीवर टूटने पर घड़ी बन्द हुई है...मैं इसे अपने पास रखकर क्या करूँगा ? मुझे लीवर से क्या लेना-देना ! किसलिए अपने पास रखूँ ?...

[सीढ़ियों पर कदमों की आवाज़]

आदमी : हम क्या मदद करेंगे, हम जानते ही क्या हैं ! हाँ, हानूश अन्धा है न, शायद इसीलिए। ठीक है, ठीक है। समझा।

[अन्दर आता है। इधर-उधर देखने के बाद]

इधर तो बहुत कल-पुर्ज़े हैं। क्या यही घड़ी है ? वाह-वाह, यह तो बहुत बड़ी मशीन है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

[हानूश को देखने के बाद उसकी ओर बढ़ता है। हानूश का हाथ पकड़कर।]

हानूश भाई, मुझे तुम्हारी मदद करने के लिए भेजा गया है। घड़ी बन्द हो गई। बहुत बुरा हुआ। इतनी मेहनत से तुमने बनाई थी...अरे भाई, तुम अन्धे हो गए, यह भी बहुत बुरा हुआ । तुम्हारे साथ बहुत जुल्म हुआ। जब हमें पता चला कि तुम अन्धे हो गए तो सच मानो, हमें बहुत दुःख हुआ। हम कहें, हानूश अपनी घड़ी को अब देख भी नहीं सकेगा। घड़ी बन्द हो गई क्या ? तुम्हें तो भगवान ने बहुत बड़ा हुनर दिया है। आँखें होतीं तो तुम उसे झट से ठीक भी कर लेते। हमसे जो कहो, हम करने को हाज़िर हैं। जब तुम्हें अन्धा किया गया तो मेरा छोटा भाई कहे – हाय-हाय, मेरी आँखें हानूश को मिल जाएँ। मेरी आँखें किस काम की। हानूश ने तो इतना बड़ा काम किया है। उसे तो आँखों की ज़रूरत है। हानूश भैया, तुम्हें नहीं मालूम, हम कितनी बार तुम्हारे हाथों में फूलों के गुच्छे दे गए हैं। सुबह तुम इधर आते हो न ? हम उस वक़्त काम पर जाते हैं। हम और लोगों के हाथ तुम्हारे हाथों में फूल रख जाते थे। आज घड़ी के सामने तुमसे मुलाकात हो गई।...तुम चुप क्यों हो ? दिल से दुःखी हो न, इसीलिए।...तुम्हें इस घड़ी पर भी गुस्सा आता होगा। जिससे मोह होता है, उसी पर सबसे ज़्यादा गुस्सा आता है। बताओ, हम तुम्हारी क्या मदद करें ?

हानूश : तुम कौन हो ?

आदमी : तुम मुझे नहीं जानते हानूश ! हम इधर ही रहते हैं, दस्तकार हैं। लोहारी का काम करते हैं ।...तुम तो इन पुर्ज़ों को हाथ लगाते ही समझ जाओगे। यह तो तुम्हारे हाथ की बनाई चीज़ है। इसे तो तुमने जन्म दिया है, इसके तो अंग-अंग से तुम वाकिफ़ हो।

[हानूश घड़ी के पास जाकर उसे पकड़ता है। पहले तो पहिए को पकड़े रहता है, फिर उसे सहलाता है, उस पर हाथ फेरता है।]

आदमी : जिस रोज़ घड़ी लगी थी, हम दिन-भर यहाँ मीनार के नीचे खड़े रहे। हर बार जब घड़ी बजती तो हमें जैसे बिजली छू जाती। मैं कहूँ, कैसी करामात है ! अपने-आप चलती है, अपने-आप बजती है।...

[हानूश इस बीच चक्करों को हौले-हौले हिलाने-चलाने लगा है। धीरे-धीरे घड़ी के प्रति उसका मोह जागने लगा है।]

हानूश : *(अपने से बात करते हुए)* यह छड़ कौन-सी है ?...और, इसी से वज़न बँधा है। समझा !...मैं छोटे चक्कर के पास खड़ा हूँ।

आदमी : कुछ चाहिए ? हम मदद करें ? हानूश भाई, तुम रोज़ इधर बाग़ में आते हो न। हम रोज़ तुम्हें देखते हैं। हमने अपनी घरवाली से कहा-तुम देखना, हानूश कुफ़्लसाज़ ने ऐसी चीज़ बनाई है जो सदियों तक चलती रहेगी। हम-तुम यहाँ नहीं रहेंगे, हानूश भी नहीं होगा मगर हानूश की घड़ी हमेशा बजती रहेगी।

[हानूश थोड़ा-थोड़ा अपने-आप इधर-उधर चलने लगा है। कयास से पुर्ज़ों पर हाथ रखता है। किसी पुर्ज़े को पकड़कर हिलाता है। टिक्-टिक् की आवाज़ आने लगती है। उसे छोड़ देता है, टिक्-टिक् की आवाज़ बन्द हो जाती है।]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हानूश : सुनो जी, कौन हो तुम ?

आदमी : कहो हानूश भैया, क्या है ?

हानूश : इधर नीचे की ओर तो देखो।

आदमी : यह कुछ रखा है, कोई घड़ी का हिस्सा है क्या ?

हानूश : उठाओ तो...*(हाथ में लेकर)* पेंडुलम है। लीवर टूटने पर पेंडुलम नीचे आ गिरा है। छड़ को ज़ंग लगा हुआ है। मैंने पहले ही कहा था, यहाँ सीलन बहुत है, पुर्ज़ों को ज़ंग लग गया है। न जाने और क्या टूट गया है !

[नीचे झुककर पुर्ज़ों को टटोलता रहता है। फिर उठ खड़ा होता है और अपना दरबारी कोट उतारकर फेंक देता है और आस्तीनें चढ़ा लेता है।]

तुम्हारे पास कोई कपड़ा है ? कोई चिथड़ा हो, ज़रा लाना तो...इधर औज़ारों का बक्सा रखा है, उसमें मिल जाएगा।...जिन पुर्ज़ों पर मैं हाथ रखूँ, उन्हें ज़रा पोंछते जाना। देखो, उन पर ज़ंग तो नहीं चढ़ा है...धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, घड़ी के पुर्ज़े बहुत नाज़ुक होते हैं।...

[काम में खो जाता है।]

इधर, दीवार के पास तेल का एक बर्तन रखा है। उसमें चिथड़ा भिगोकर तो मुझे देना, जल्दी...

[धीरे-धीरे रोशनी मद्धिम पड़ती जाती है। खिड़की के बाहर हलका-हलका उजाला नज़र आने लगा है। हानूश काम में खोता जा रहा है।

फेड आउट।

फेड ऑन होने पर दिन चढ़ आया है। अन्दर भी रोशनी ज़्यादा है। रोशनी के दायरे में कात्या हानूश के पास खड़ी है। हानूश आस्तीनें चढ़ाए मशीन पर झुका हुआ है, फिर माथे का पसीना पोंछकर उठ खड़ा होता है।]

हानूश : पहले तो मैंने समझा, कात्या, कि इसे किसी ने जानबूझकर तोड़ा है। मुझे शक था कि शायद गिरजेवालों ने शरारत की है। लीवर टूटा हुआ है। मुझे यक़ीन है, इसे ज़रूर किसी ने तोड़ा है। घड़ी को तोड़ना क्या मुश्किल काम है ? पर क्या मालूम, यह लीवर ही कमज़ोर निकला हो !...लगता है, हमें नया लीवर डालना पड़ेगा।

कात्या : *(अपनी डबडबाई आँखों को पोंछती है)* तुम फिर पहले की तरह बातें करने लगे हो, हानूश, मुझे अच्छा लग रहा है।

[हँसकर आँसू पोंछती है।]

हानूश : कात्या, तुम्हें एक बात बताऊँ...मैं तो यहाँ घड़ी को तोड़ने आया था। मैंने हथौड़ा उठाया भी मगर उसे चला नहीं पाया। कात्या, जब मैंने कामानी पर हाथ रखा तो तुम्हें क्या बताऊँ, मेरे सारे शरीर में झुरझुरी दौड़ गई। मुझे लगा, जैसे मेरा हाथ घड़ी के दिल पर जा पड़ा है-इसके बाद मुझसे घड़ी को तोड़ा ही नहीं गया...मेरा हाथ उठता ही नहीं था।...कात्या, यहाँ पर एक आदमी आया था। कहाँ गया ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कात्या : कौन था ?

हानूश : मैं नहीं जानता, कौन था। कोई भोला-भाला-सा आदमी था। अधिकारी मेरी मदद के लिए उसे कहीं से पकड़ लाए थे। कोई लोहार था। मुझसे कहने लगा : 'तुम घड़ी के साथ कैसे रूठ सकते हो हानूश, तुम्हीं ने तो उसे बनाया है। बनानेवाला भी कभी अपनी चीज़ को तोड़ता है !' उसकी बातें सुनकर मुझे शर्म-सी महसूस होने लगी, कात्या ! मैं अपने को बहुत छोटा महसूस करने लगा। और फिर, मैंने अपने लिए तो घड़ी नहीं बनाई थी न, कात्या, यह तो सबकी चीज़ थी। एक बार बन गई तो सबकी हो गई, मेरी कहाँ रह गई ! मैं कहूँ, लोग तो मुझे घड़ी के लिए आशीर्वाद दे रहे हैं, मेरे हाथों में फूलों के गुच्छे रख जाते हैं और मैं उसे तोड़ने जा रहा हूँ ? यह कितनी ओछी बात है ! मेरा दिल भर-भर आया कात्या, तुम्हें क्या बताऊँ !...

कात्या : वह आदमी नहीं आता तो भी तुम वही कुछ करते जो तुमने किया।

हानूश : और कात्या, मुझे लगने लगा, जैसे मैं घड़ी के एक-एक पुर्ज़े को देख सकता हूँ। वह अपने सभी कल-पुर्ज़ों के साथ मेरी आँखों के सामने फिर से आ गई है, जैसे पहले हुआ करती थी । और मुझे लगा, जैसे मेरे हाथ बढ़ाने भर की देर है और मैं जिस पुर्ज़े को छूना चाहूँ, छू सकूँगा । मुझे लगा, जैसे मैं अन्धा नहीं हूँ।...मैं भी कैसा हूँ, अपनी ही लगाए जा रहा हूँ। यान्का बिटिया कैसी है ? जेकब लौटा या नहीं ?...क्या सचमुच...*(धीमी आवाज़ में)* क्या सचमुच वह शहर में से निकल गया है ? वह घड़ी का सब काम जानता है, सब समझता है। मेरे पास होता तो उसकी बड़ी मदद होती। लेकिन उसके बिना भी घड़ी ठीक कर लूँगा। वह शहर में से निकल गया, अच्छा ही हुआ।

कात्या : तुम कुछ खा लो। मैं तुम्हारे लिए खाना अभी लाई हूँ। बैठो-बैठो, थोड़ा खा लो।

[हानूश खाने पर बैठता है। कात्या उसके हाथ में लुक्मा तोड़-तोड़कर देती है। धीरे-धीरे रोशनी बुझ जाती है... ।

फेड आउट।

फेड इन। मीनार के बाहर फिर अँधेरा है। अन्दर दो मशालों की रोशनी। रोशनी के वृत्त में बूढ़ा लोहार हानूश के पास खड़ा है। हानूश घड़ी पर काम कर रहा है।]

हानूश : घड़ी बनाने में बहुत-सी भूलें हुई बड़े मियाँ ! हमने कई बातों में जल्दबाजी की, वरना दो साल में घड़ी बन्द क्यों हो जाए ? तुम एक काम करो !

बूढ़ा लोहार : कहो हानूश, क्या है ?

हानूश : तुम एक बार उस बुजुर्ग हिसाबदान के पास जाओ। उनसे कहो, अगर आ सकें तो एक बार आ जाएँ, मैं उनसे मशविरा करना चाहता हूँ। अब घड़ी में एक-दो तबदीलियाँ लाना ज़रूरी हो गया है।

बूढ़ा लोहार : मुझे उम्मीद नहीं है कि वह आएँ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हानूश : क्यों ? आएँगे क्यों नहीं ?

बूढ़ा लोहार : जब से तुम्हारी आँखें निकलवाई गई हैं, रियासत-भर में दहशत फैल गई है। सभी दस्तकार लोग घड़ी से दूर रहना चाहते हैं।

हानूश : आप भी बड़े मियाँ ?

[सोच में पड़ जाता है।]

बूढ़ा लोहार : यह सवाल तुम मुझसे पूछोगे हानूश ? न मैं घड़ी से दूर हो सकता हूँ, न तुमसे।

हानूश : *(ठंडी साँस भरकर)* नया लीवर बना लाए हो ? मुझे दो। देखूँ तो ! इसमें तो पीतल की मात्रा अधिक नहीं है न ? आपने देख-परख लिया है न ? आप नहीं आते तो मैं फिर मँझधार में खड़ा था, बड़े मियाँ...!

[मशीन पर झुक जाता है।

देर तक प्रकाश-वृत्त में हानूश की झुकी पीठ नज़र आती रहती है। दो-एक बार वह पसीना पोंछता है, फिर काम में खो जाता है। उसके पास खड़ा बूढ़ा लोहार उसे किसी-किसी वक़्त औज़ार देता रहता है।

फेड आउट।

फेड ऑन होने पर फिर से रोशनी हानूश की पीठ पर पड़ रही है।

थोड़ी देर तक हानूश घड़ी पर झुका रहता है, अब सहसा घड़ी की टिक्-टिक् सुनाई देने लगती है।]

हानूश : *(उठ खड़ा होता है। मशीन पर अभी भी काम करते हुए)* लगता है, मुझे सारी-की-सारी घड़ी नज़र आने लगी है। आँखों के सामने एक-एक पुर्ज़ा जैसे चमक रहा है। जेकब पास में होता तो उससे कहता-कहो जेकब, किस पुर्ज़े पर हाथ रखूँ ? और सीधा हाथ उसी पुर्ज़े पर जाता । यह रही नई कमानी ! ठीक है, ठीक काम कर रही है।

[घड़ी पर फिर झुक जाता है। बाहर पौ फट रही है। रोशनी घड़ी के हिस्सों पर भी पड़ने लगी है। फिर हानूश उठकर पेंडुलम के पास जाकर कोई पुर्ज़ा हिलाता है, जिससे सारी घड़ी हरकत में आने लगी है। टिक्-टिक् तेज़ हो जाती है। हानूश कपड़े से हाथ पोंछता है। सन्तोष का भाव उसके चहेरे पर आ गया है।

कात्या और यान्का भागती हुई अन्दर आती हैं।]

हानूश : कौन, कात्या ?

कात्या : हानूश ! मुझे अभी पता चला तो मैं और यान्का भागती हुई आई हैं।

हानूश : तुम आ गई कात्या ! यान्का बिटिया !

[घड़ी की टिक्-टिक् साफ़ सुनाई देती है। कमरे में रोशनी बढ़ रही है। वृत्त के पार पुलिस अधिकारी खड़ा है। पुलिस के दो अधिकारी सीढ़ियों के पास खड़े हैं। दाईं दीवार के साथ पाँच-छह सिपाही खड़े हैं।]

कोई आया है, कौन हो सकता है ? अन्धे आदमी को वक़्त का अन्दाज़ भी नहीं रहता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लोगों को वक़्त बताता है और ख़ुद इतना भी नहीं जानता कि दिन है या रात !

[सीढ़ियों पर कदमों की आहट]

कोई आया है। कौन हो भाई ? लीवर टूटा पड़ा था और छोटे चक्कर के दो दाँते टूट गए थे, अब घड़ी ठीक चल रही है। मशीन है न आख़िर !

[घड़ी बराबर टिक्-टिक् कर रही है।]

अधिकारी : *(आगे बढ़कर)* जेकब का कहीं पता नहीं चल रहा है। कहाँ है जेकब ? तुम्हें ज़रूर मालूम होगा।

हानूश : कौन है ? क्या कह रहे हो, भाई ? किससे कहते हो ?

अधिकारी : हानूश कुफ़्लसाज़ ! तुम्हें ज़रूर मालूम होगा कि जेकब कहाँ पर है। उस शाम जब घड़ी बन्द हुई थी, जेकब यहूदियों की सराय में देखा गया था। कहाँ है वह ? तुम्हें सब मालूम है।

हानूश : मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि वह कहाँ पर है। मगर मुझे अब उसकी ज़रूरत नहीं रह गई है। घड़ी चलने लगी है। वह होता तो सचमुच मुझे बहुत मदद मिलती, मगर कोई मज़ायका नहीं, घड़ी को मैं जैसे-तैसे ठीक कर लूँगा।...

अधिकारी : हानूश कुफ़्लसाज़, तुम्हारी साज़िश पकड़ी गई है। तुम यहाँ से भाग जाने की साज़िश कर रहे थे। इस रियासत को छोड़कर दूसरी किसी रियासत में घड़ी बनाने जा रहे थे, सरकार की मनाही के बावजूद। बादशाह सलामत के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर रहे थे। बादशाह सलामत ने तुम्हें तलब किया है।

हानूश : *(ठिठक जाता है, फिर बड़ी आश्वस्त आवाज़ में)* महाराज का हुक्म सिर-आँखों पर। मैं हाज़िर हूँ।...घड़ी बन सकती है, घड़ी बन्द भी हो सकती है। घड़ी बनानेवाला अन्धा भी हो सकता है, मर भी सकता है, लेकिन यह बहुत बड़ी बात नहीं है। जेकब चला गया ताकि घड़ी का भेद ज़िन्दा रह सके, और यही सबसे बड़ी बात है।

अधिकारी : तुम्हें अपनी सफ़ाई देनी हो तो बादशाह सलामत के सामने देना।

हानूश : मैं अपनी सफ़ाई नहीं दे रहा हूँ। मुझे अपनी सफ़ाई में कुछ भी नहीं कहना है। *(आश्वस्त भाव से)* इस लम्बे सफ़र का एक और पड़ाव ख़त्म हुआ, कात्या। न जाने अभी कितने पड़ाव बाक़ी हैं। पर तुम चिन्ता नहीं करो कात्या। घड़ी चलने लगी है।

मुझे कोई अफ़सोस नहीं, किसी बात की भी चिन्ता नहीं। अब मुझे विश्वास है, घड़ी बन्द नहीं होगी । कभी भी बन्द नहीं होगी। *(अधिकारी से)* मैं तैयार हूँ। जहाँ मन आए, ले चलो।

[सिपाही हानूश को पकड़कर सीढ़ियों की ओर ले चलते हैं। घड़ी बजने लगती है। हानूश रुक जाता है, मुड़कर घड़ी की टन-टन सुनता है। उसकी आँखों में आँसू चमकता है, वह मुस्कुरा देता है और घड़ी की टिक्-टिक् के बीच मुड़कर सीढ़ियों की ओर चल देता है।]

[पर्दा गिरता है।]

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

तलब बुलावा, इच्छा **मुनादी** ढिंढोरा **मीनार** गोलाकार ऊँची इमारत **शुक्रिया** धन्यवाद **नौसिखुआ** नया-नया सीखा हुआ **यकीन** विश्वास **मद्धिम** धीमा **दहशत** भय **मज़ायका** अड़चन, आपत्ति **खिलाफ़वर्ज़ी** विरोध करना **ऐन** - ठीक, एकदम **कारिंदा** कर्मचारी **तबदीली** परिवर्तन **मशविरा** राय, बातचीत **लुक्मा** ग्रास, कौर **कयास** अनुमान **मुनादी** घोषणा

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) सरकार ने हानूश को तलब होने के लिए क्यों कहा है ?

(2) घड़ी का लीवर किस कारण जल्दी टूट गया था ?

(3) हानूश के साथ क्या जुल्म हुआ ?

(4) घड़ी के पुर्जों को जंग कैसे लग गया ?

(5) 'तुम कुछ खा लो' कौन, किससे कहता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) घड़ी टूट जाने के बारे में हानूश को क्या शक हुआ ?

(2) रियासत-भर में दहशत क्यों फैल गई ?

(3) कात्या और यान्का भागती हुई अंदर क्यों आती हैं ?

(4) अधिकारी ने शहर में किस बात की मुनादी कराने के लिए कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के आठ-दस वाक्यों मे उत्तर लिखिए :

(1) हानूश का दिल क्यों भर आया ?

(2) हानूश के मन में घड़ी को तोड़ डालने का विचार क्यों आया ?

(3) कलाकार के मन के द्वन्द्व को अपने शब्दों में लिखिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) अंधे आदमी को वक्त का अंदाज भी नहीं रहता।

(2) तुम घड़ी के साथ कैसे रूठ सकते हो हानूश, तुम्हीं ने तो उसे बनाया है। बनानेवाला भी कभी अपनी चीज को तोड़ता है !

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

यकीन, मद्धिम, दहशत, दुबला।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

आशीर्वाद, अस्थिर, साधारण, नियमित।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द दीजिए :

(1) नया-नया सीखा हुआ -

(2) ताला बनाने वाला -

(3) घड़ी बनाने वाला, उसे ठीक करने वाला -

(4) जिसे आँखों से न दिखता हो -

8. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

प्रत्येक, सदैव, नरेश, संतोष।

9. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करके समास-भेद लिखिए :

दुबला-पतला, दाएँ-बाएँ, कल-पुर्जे, क्षीणकाय, सद्‌बुद्धि।

10. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :

दिल भर जाना, बिजली छू जाना।

11. विभाग 'अ' के नाम के साथ विभाग 'ब' में दिए कथन के उचित जोड़े मिलाइए :

'अ'		'ब'
(1) अधिकारी - 1	-	आप ही मेरी मदद कीजिए।
(2) अधिकारी - 2	-	यह कुछ रखा है, कोई घड़ी का हिस्सा है क्या ?
(3) हानूश	-	इसकी मरम्मत तो तुम्हें करनी ही है।
(4) आदमी	-	जेकब का कहीं पता नहीं चल रहा।
(5) कात्या	-	सभी दस्तकार लोग घड़ी से दूर रहना चाहते हैं।
(6) बूढ़ा लुहार	-	तुम फिर पहले की तरह बातें करने लगे हो।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- घड़ीसाज की मुलाकात लें।
- 'कलाकार का स्वाभिमान' विषय पर चर्चा करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- एक कलाकार का समाज-सेवी रूप स्पष्ट करें।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

21 किस्सा जनतंत्र

सुदामा पांडेय 'धूमिल'
(जन्म : सन् 1936 ई.; निधन : 1975 ई.)

साठोत्तरी कविता के सशक्त हस्ताक्षर सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' का जन्म उत्तर प्रदेश में वाराणसी जिले के निकट खेवली गाँव में हुआ था। गीतों से अपनी काव्य-यात्रा शुरू करनेवाले 'धूमिल' शीघ्र ही अकविता से जुड़ गये । इन्होंने बड़ी निर्ममता और निर्भयता से भारतीय जनतंत्र की असलियत को उजागर किया। अपने आक्रोश और व्यंग्य की अभिव्यक्ति के लिए इन्होंने धुँआधार अनगढ़ भाषाशैली का प्रयोग कर काव्यभाषा को एक नया मुहावरा दिया। ब्रेन ट्यूमर के कारण कम उम्र में ही इनका अकाल निधन हो गया।

'संसद से सड़क तक', 'कल सुनना मुझे' और 'सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र' धूमिल की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं । 'कल सुनना मुझे' के लिए इन्हें साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रस्तुत कविता में धूमिल की सरल, सहज लेकिन आक्रोशपूर्ण चोटदार भाषाशैली और सटीक प्रस्तुतीकरण के दर्शन होते हैं। इस कविता में कवि ने जनतंत्र में भी मँहगाई और भुखमरी से जूझ रहे परिवार का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। परिवार के लोगों के अभाव से भरे जीवन के दु:ख को रसोई के साधनों करछुल, बटलोही, चिमटा, चूल्हा, पोटली, कठवत आदि के माध्यम से संकेतित किया गया है जिससे कविता प्रभावशाली बन गयी है। इसमें इस ओर भी संकेत किया गया है कि अभाव न सिर्फ़ कोमल भावनाओं को ही ख़त्म कर देते हैं, बल्कि जीवन को मशीन की तरह बेजान भी बना देते हैं।

करछुल-
बटलोही से बतियाती है और चिमटा
तवे से मचलता है
चूल्हा कुछ नहीं बोलता
चुपचाप जलता है और जलता रहता है

औरत-
गवें-गवें उठती है-गगरी में
हाथ डालती है
फिर एक पोटली खोलती है।
उसे कठवत में झाड़ती है
लेकिन कठवत का पेट भरता ही नहीं
पतरमुही (पैंथन तक नहीं छोड़ती)
सरर फरर बोलती है और बोलती रहती है

बच्चे आँगन में -
आँगड़-बाँगड़ खेलते हैं
घोड़ा-हाथी खेलते हैं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चोर-साव खेलते हैं
राजा-रानी खेलते हैं और खेलते रहते हैं
चौके में खोई हुयी औरत के हाथ
कुछ भी नहीं देखते
वे केवल रोटी बेलते हैं और बेलते रहते हैं
एक छोटा-सा जोड़-भाग
गश खाती हुयी आग के साथ-साथ
चलता है और चलता रहता है

बड़कू को एक
छोटकू को आधा
पारबती-बालकिशुन आधे में आधा
कुल रोटी छै,
और तभी मुँह दुब्बर
दरबे में आता है - 'खाना तैयार है ?'
उसके आगे थाली आती है
कुल रोटी तीन
खाने से पहले मुँह दुब्बर
पेटभर
पानी पीता है और लजाता है
कुल रोटी तीन
पहले उसे थाली खाती है
फिर वह रोटी खाता है

और अब-
पौने दस बजे हैं-
कमरे की हर चीज
एक रटी हुई रोजमर्रा धुन
दुहराने लगती है
वक्त घड़ी से निकलकर
अंगुली पर आ जाता है और जूता
पैरों में, एक दंत टूटी कंघी
बालों में गाने लगती है

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो आँखें दरवाजा खोलती हैं
दो बच्चे टाटा कहते हैं
एक फटेहाल कलफ कालर –
टाँगों में अकड़ भरता है
और खटर पटर एक ढढ्ढा साइकिल
लगभग भागते हुए चेहरे के साथ
दफ्तर जाने लगती है
सहसा चौरस्ते पर जली लाल बत्ती जब
एक दर्द हौले से हिरदै को हूल गया
'ऐसी क्या हड़बड़ी कि जल्दी में पत्नी को
चूमना–
देखो, फिर भूल गया !'

शब्दार्थ-टिप्पण

बटलोही बटुई, बटलोई **गवें-गवें** धीरे-धीरे **कठवत** लकड़ी का बना पात्र जिसमें आँटा गूँथते हैं **पतरमुंही** जिसके बोलने पर लगाम न हो **पैथन** 'परथन' यानी रोटी बनाने के लिए लोई पर जो सूखा आँटा लगाकर बेलते हैं **हड़बड़ी** जल्दी **दरबा** दड़बा, छोटी बंद कोठरी जिसमें खिड़की नहीं होती **दुब्बर** कमजोर, दूबर, दुर्बल **मुह दुब्बर** विरोध में बोल न सकने वाला **कलफ** मांड़ी (पतली लेई जिसे कपडों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिए लगाते हैं ।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

(1) चिमटा और तवा किस कार्य के साधन हैं ?
(2) आँटा कहाँ रखा गया है ?
(3) 'कठवत का पेट भरता ही नहीं' का क्या तात्पर्य है ?
(4) 'किस्सा जनतंत्र' काव्य के रचयिता कौन हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) बच्चे आँगन में कौन-कौन से खेल खेल रहे हैं ?
(2) रोटी बनाते समय औरत क्या सोच रही है ?
(3) चौराहे पर लालबत्ती हो जाने पर कथानायक को क्या याद आता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-सात वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'एक रटी हुई रोजमर्रा धुन' से क्या तात्पर्य है ?
(2) कथानायक के दफ्तर जाते समय के क्रियाकलापों का वर्णन कीजिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) चूल्हा कुछ नहीं बोलता
चुपचााप जलता है
और जलता रहता है।

(2) पहले उसे थाली खाती है
फिर वह रोटी खाता है

(3) वक्त घड़ी से निकलकर
अंगुली पर आ जाता है।

5. नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) करछुल बटलोही से .... है।

(A) चलता (B) बतियाती (C) मचलता (D) जलता

(2) चिमटा तवे से .... है।

(A) चलता (B) बतियाती (C) मचलता (D) जलता

(3) चूल्हा कुछ नहीं बोलता चुपचाप .... है।

(A) चलता (B) बतियाती (C) मचलता (D) जलता

(4) एक छोटा-सा जोड़-भाग गश खाती हुई आग के साथ-साथ .... है।

(A) चलता (B) टलता (C) मचलता (D) जलता

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पत्नी, बालक, पैर, औरत।

7. विलोम शब्द लिखिए :

वक्त, दर्द, छोटा, गुणा, अब।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- गणतंत्र दिवस समारोह का प्रतिवेदन तैयार कीजिए।
- 'भारतीय जनतंत्र' विषय पर वक्तव्य तैयार करके उसे वर्गखंड में प्रस्तुत कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी-समूह के समक्ष प्राचीन भारतीय गणराज्य विषय पर व्याख्यान का आयोजन करवाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

22 द

प्रतापनारायण मिश्र

(जन्म : सन् 1856 ई.; निधन : 1894 ई.)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले में हुआ था। इन्हें आधुनिक हिंदी के निर्माताओं में से एक माना जाता है। कवि, लेखक और पत्रकार के रूप में प्रसिद्धि पायी। भारतेंदु हरिश्चंद्र से इतने प्रभावित हुए कि 'प्रतिभारतेंदु' या 'द्वितीयचंद्र'आदि कहे जाने लगे थे। कई मित्रों के सहयोग से 'ब्राह्मण' नाम का मासिक पत्र निकाला। इनका कई भाषाओं पर अधिकार था। इनके निबंधों में विषयों की पर्याप्त विविधता थी।

वे धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक आदि सभी विषयों पर निबंध लिखा करते थे, यहाँ तक कि उन्होंने अक्षरों पर भी बहुत ही रोचक निबंध लिखे हैं। उनमें से 'द' नाम का एक व्यंग्यात्मक निबंध यहाँ संकलित किया गया है। इस 'द' की विशेषता बताते हुए प्रतापनारायण मिश्र बताते हैं, '.... हिंदी, फ़ारसी दोनों में इस अक्षर का आकार हँसिया का-सा होता है, और बालक भी जानता है कि उससे सिवा काटने-चीरने के और काम नहीं निकलता।' 'अंग्रेज बहादुरों' की शोषण-वृत्ति पर व्यंग्य करने के लिए उन्होंने अंग्रेज़ी में 'द' के न होने का ये कारण बताया था, "वहाँ के चतुर लोगों ने बड़ी दूरदर्शिता करके इस अक्षर के ठौर पर 'डकार' अर्थात् 'डी' रक्खी है, जिसका अर्थ ही डकार जाना, अर्थात् यावत् संसार की लक्ष्मी, जैसे बने वैसे, हज़म कर लेना !"

हमारी और फारस वालों की वर्णमाला भर में इससे अधिक अप्रिय, कर्णकटु और अस्निग्ध अक्षर, हम तो जानते हैं, और न होगा। हमारे नीति विदांबर अंग्रेज बहादुरों ने अपनी वर्णमाला में बहुत अच्छा किया जो नहीं रक्खा ! नहीं उस देश के लोग भी देना सीख जाते तो हमारी तरह निष्कंचन हो बैठते। वहाँ के चतुर लोगों ने बड़ी दूरदर्शिता करके इस अक्षर के ठौर पर 'डकार' अर्थात् 'डी' रक्खी है, जिसका अर्थ ही डकार जाना, अर्थात् यावत् संसार की लक्ष्मी, जैसे बनै वैसे, हजम कर लेना।

जिस भारत लक्ष्मी को मुसलमान सात सौ वर्ष में अनेक उत्पात करके भी न ले सके उसे उन्होंने सौ वर्ष में धीरे-धीरे ऐसे मजे के साथ उड़ा लिया कि हँसते-खेलते विलायत जा पहुँची ! इधर हमारे यहाँ दकार का प्रचार देखिए तो नाम के लिये देओ, यश के लिये देओ, देवताओं के निमित्त देओ, पितरों के निमित्त देओ, राजा के हेतु देओ, कन्या के हेतु देओ, मजे के वास्ते देओ, अदालत के खातिर देओ, कहाँ तक कहिए, हमारे बनबासी ऋषियों ने दया और दान को धर्म का अंग ही लिख मारा है। सब बातों में देव, और उसके बदले में लेव क्या ?

झूठी नामवरी, कोरी वाह वाह, मरणांतर स्वर्ग, पुरोहित जी का आशीर्वाद, रूजगार करने की आज्ञा वा खिताब, क्षणिक सुख इत्यादि। भला देश क्यों न दरिद्री हो जाय ? जहाँ देना तो सात समुद्र पार वालों तथा सात स्वर्ग वालों तक को तन, मन, धन, और लेना मनमोदक मात्र ! बलिहारी इस दकार के अक्षर की ! जितने शब्द इसमें पाइएगा, सभी या तो प्रत्यक्ष ही विषवत, या परंपरा द्वारा कुछ न कुछ नाश कर देने वाले। दुष्ट, दुःख, दुर्दशा, दास्य, दौर्बल्य, दंड, दंभ, दर्प, द्वेष, दानव, दर्द, दाग, दगा, देव (फारसी में राक्षस), दोजख, दम का आरज, दरिंदा (हिंसक जीव), दुश्मन, दा (शूली), दिक्कत इत्यादि सैकड़ों शब्द आपको ऐसे मिलेंगे जिनका स्मरण करते ही रोंगटे खड़े होते हैं। क्यों नहीं, हिंदी, फारसी दोनों में इस अक्षर का आकार हँसिया का सा होता है, और बालक भी जानता है कि उससे सिवा काटने चीरने के और काम नहीं निकलता। सर्वदा बंधन रहित होने पर भी भगवान् का नाम दामोदर क्यों पड़ा, कि आप भी रस्सी से बँधे और समस्त वृजभक्तों को दइया 2 करनी पड़ी ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वर्ग बिहारी देवताओं सब सामर्थ्य होने पर भी पुराणों के अनुसार सदा दनुज कुल से क्यों भागना पड़ा ? आज भी नए मत वालों के मारे अस्तित्व तक में संदेह है ! ईसाइयों की नित्य गाली खाते हैं। इसका क्या कारण है ? पंचपांडव समान वीर शिरोमणि तथा भगवान् कृष्णचंद्र सरीखे रक्षक होते हुए द्रुपदतनया को केशाकर्षण एवं वनवास आदि का दुःख सहना पड़ा। इसका क्या हेतु ? देशहितैषिता ऐसे उत्तम गुण का भारतवासी मात्र नाम तक नहीं लेते ? यदि थोड़े से लोग उसके चाहने वाले हैं भी तो निर्बल, निर्धन, बदनाम ! यह क्यों ? दंपति अर्थात् स्त्री-पुरुष, वेद, शास्त्र, पुराण, बायबिल, कुरान सब में लिखा है कि एक हैं, परस्पर सुखकारक हैं। पर हम रिषिवशीय कान्यकुब्ज़ों में एक दूसरे के बैरी होते हैं। ऐसा क्यों है ?

दूध, दही, कैसे उत्तम, स्वादिष्ट बलकारक पदार्थ है कि अमृत कहने योग्य, पर वर्तमान राजा उसकी जड़ ही काटे डालते हैं, हम प्रजागण कुछ उपाय ही नहीं करते, इसका क्या हेतु है ? इन सब बातों का यही कारण है कि इन सब नामों के आदि में यह दुरूह 'दकार' है। हमारे श्रेष्ठ सहयोगी 'हिंदी-प्रदीप' सिद्ध कर चुके हैं कि 'लकार' बड़ी ललित और रसीली होती है। हमारी समझ में उसी का साथ पाने से दीनदयाल, दिलासा, दिलदार, दालभात इत्यादि दस-पाँच शब्द कुछ पसंदी हो गए हैं, नहीं तो देवताओं में दुर्गा जी, रिषियों में दुर्बासा, राजाओं में दुर्योधन महान होने पर भी कैसे भयानक हैं। यह दद्दा ही का प्रभाव है।

कनवजियों के हक में दमाद और दहेज, खरीदारों के हक में दुकानदार और दलाल, चिड़ियों के हक में दाम (जाल) दाना आदिक कैसे दुखदायी हैं। दमड़ी कैसी तुच्छ संज्ञा है। दाद कैसा बुरा रोग है, दरिद्र कैसी कुदशा है, दारू कैसी कड़वाहट, बदबू, बदनामी, और बदफैली की जननी है, दोगला कैसी खराब गाली है, दंगा बखेड़ा कैसी बुरी आदत है, दंश (मच्छड़ या डास) कैसे हैरान करने वाले जंतु हैं, दमामा कैसा कान फोड़ने वाला बाजा है, देशी लोग कैसे घृणित हो रहे हैं, दलीप सिंह कैसे दीवानापन में फँस रहे हैं। कहाँ तक गिनावें, दुनिया भर की दंतकटाकट 'दकार' में भरी है। इससे हम अपने प्रिय पाठकों का दिमाग चाटना नहीं पसंद करते, और इस दुस्सह अक्षर की दास्तान को दूर करते हैं।

शब्दार्थ-टिप्पण

निष्कंचन दरिद्र, गरीब **देव** देना **देओ** दो **दनुज** राक्षस **ललित** सुंदर **बखेड़ा** झगड़ा **अस्निग्ध** रुक्ष **द्रुपदतनया** द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी **बैरी** शत्रु, दुश्मन **निर्बल** कमजोर **निर्धन** गरीब **संदेह** शंका **दिलासा** भरोसा, आश्वासन **संज्ञा** नाम

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) लेखक के मतानुसार वर्णमाला का सबसे अप्रिय वर्ण कौन-सा है ?

(2) ऋषियों ने धर्म का अंग किसे कहा है ?

(3) द्रौपदी को कौन-कौन से दुख सहने पड़े ?

(4) स्वादिष्ट और शक्तिदायक पदार्थ कौन-कौन से हैं ?

(5) दारू में कौन-कौन से दुर्गुण हैं ?

(6) हँसिये का क्या उपयोग किया जाता है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) अंग्रेजों ने अपनी वर्णमाला में किस वर्ण को नहीं रखा है ? क्यों ?

(2) किन शब्दों के स्मरण मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं ?

(3) दामोदर शब्द का उपयोग किसके लिए किया गया है ? उसमें क्या विरोधाभास है ?

(4) अंग्रेजों ने दकार के बदले अपनी वर्णमाला में कौन सा वर्ण रखा है ? क्यों ?

(5) लेखक ने 'दकार' के कौन-कौन से दृष्टांत देकर उसे दुस्सह बताया है ?

3. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

(1) हमारे देश में दकार का प्रचार किस प्रकार हुआ है ?

(2) लकार की विशेषता लिखिए।

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) "दुनिया भर की दंतकटाकट दकार से भरी है।"

5. मुहावरों का अर्थ लिखिकर वाक्यप्रयोग कीजिए :

(1) डकार जाना, (2) रोंगटे खड़े हो जाना, (3) दिमाग चाटना।

6. विलोम शब्द लिखिए :

प्रत्यक्ष, बंधन, निर्धन, बदनाम, स्वर्ग, रक्षक, गुण, देव, स्मरण।

7. सविग्रह समास बताइए :

वनवास, दीनदयाल, दालभात, द्रुपदतनया।

8. संधि-विग्रह कीजिए :

निर्बल, दुस्सह, निर्धन, दुष्ट, दुर्दशा।

9. भाववाचक संज्ञा लिखिए :

दरिद्र, पुरुष।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी पाठ में आए सभी दकार एवं लकार शब्दों की सूची बनाएँ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- विद्यार्थियों को हिन्दी एवं अंग्रेजी वर्णमाला में अंतर की जानकारी दें।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

23 चक्रवात

ओमप्रकाश वाल्मीकि

(जन्म : सन् 1950 ई.; निधन : 2013 ई.)

दलित साहित्य के इस मूर्धन्य साहित्यकार का जन्म उत्तर प्रदेश में जिला मुजफ्फरनगर के ग्राम बरला में हुआ था । इनका बचपन सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइयों में बीता। इन्होंने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। अध्ययन के दौरान इन्हें अनेक आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कष्ट व उत्पीड़न झेलने पड़े। वाल्मीकि जी कुछ समय तक महाराष्ट्र में रहे जिससे वहाँ के दलित लेखकों के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से डॉ. भीमराव आंबेडकर की रचनाओं का अध्ययन किया इससे इनकी रचना-दृष्टि में बुनियादी परिवर्तन आया।

इन्होंने देहरादून में आर्डिनेंस फैक्टरी में अधिकारी के पद पर अपनी सेवाएँ दीं। हिन्दी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मीकि की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इन्होंने अपने लेखन में जातीय अपमान और उत्पीड़न का जीवंत वर्णन किया है और भारतीय समाज के कई अनछुए पहलुओं को पाठक के समक्ष उजागर किया है। इन्होंने सर्जनात्मक साहित्य के साथ-साथ आलोचनात्मक लेखन भी किया है। इनकी भाषा सहज, आवेगमयी है जिसमें व्यंग्य का गहरा पुट भी दिखता है। अपनी आत्मकथा 'जूठन' के कारण इन्हें हिन्दी साहित्य में विशेष पहचान और प्रतिष्ठा मिली। 1993 में डॉ. आंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार और 1995 में परिवेश सम्मान तथा साहित्य भूषण पुरस्कार से इन्हें अलंकृत किया गया। 'सदियों का सन्ताप', 'बस बहुत हो चुका' इनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह और 'सलाम' कहानी-संग्रह है।

प्रस्तुत कविता में ओमप्रकाश वाल्मीकि की यथार्थवादी एवं आवेगमयी भाषा के दर्शन होते हैं। दलितों पर हुए अन्याय और अत्याचार को याद कराते हुए वे आज की नई पीढ़ी के लोगों को सावधान कर रहे हैं। अपने आत्मसम्मान को जगाने के लिए आह्वान कर रहे हैं। तभी हम स्वयं को पुन: अन्याय और अत्याचार से बचा पाएँगे।

जहाँ खड़े हो
वहीं खड़े रहो
सीधे तन कर
या जिस काम में लगे हो
उसे पूरा कर लेने के बाद
बचा कर रखो
कुछ पल
तन कर सीधा खड़े रहने के लिए

खींचो एक लम्बी साँस
और फिर छोड़ो उतनी ही
करो महसूस
वर्तमान की तमाम तल्खियों को
और अतीत के उन दिनों को
जो बाप-दादों के अनुभवों में
आज भी ज़िन्दा हैं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सिसकियाँ और घुटन बन कर
जिन्हें महसूस करने से भी
तुम कतराते हो

एक बेचैनी है
तुम्हारी साँसों में
जिसे चाह कर भी
तुम छिपा नहीं पाते हो

तुम्हारे पीछे दौड़ रहा है
अतीत का भयानक चक्रवात
जो कभी भी मिटा देगा
वर्तमान के उजाले को
एक धर्मान्ध आक्रमणकारी की तरह

जिसके पास खतरनाक विस्फोटक हैं
साथ ही कुछ आकर्षक शब्द भी
जो और भी ज्यादा मारक हैं
तुम घिर चुके हो
पूरी तरह
इस चक्रवात में

क्रूर हमलावर ताक में है
तुम्हें पालतू बनाकर
दरवाज़े पर बाँधने के लिए

इसीलिए,
सीधे तन कर खड़े हो जाओ
और चीखो एक लम्बी साँस
पहचानो विषैली गन्ध को–
जिसने कभी जीने नहीं दिया
तुम्हारे पुरखों को
एक इंसान की तरह
जो तुम्हें फिर से
खींच रही है
अपनी ओर
बर्बरता के साथ !

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

पल क्षण **तल्खी** कटुता **कतराना** बचना **घुटन** घबराहट **बेचैनी** अकुलाहट **चक्रवात** बवंडर **धर्मांध** स्वधर्म में अंधश्रद्धा रखने वाला **विस्फोटक** विस्फोट करने वाला **आकर्षक** लुभावना **मारक** मारनेवाला **विषैली** जहरीली **पुरखे** पूर्वज **बर्बरता** असभ्यता, जंगलीपन।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) 'तुम' संबोधन किस वर्ग के लिए है ?

(2) कवि सीधे तनकर खड़े रहने के लिए क्यों कहते हैं ?

(3) कवि दलितों को क्या बचाकर रखने के लिए कहते हैं ?

(4) दलित किसे महसूस करने से कतरा रहा है ?

(5) अतीत की तमाम तल्खियाँ आज भी कहाँ जिंदा हैं ?

(6) क्रूर हमलावर क्या करना चाहते हैं ?

(7) दलित की बेचैनी क्यों नहीं छिप रही है ?

(8) कवि किसे पहचानने की बात कह रहे हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार दलित कैसे पूरी तरह घिर चुका है ?

(2) दलित के पुरखों को किसने जीने नहीं दिया ?

(3) अतीत का भयानक चक्रवात किसे मिटा देगा ?

(4) बाप-दादों के अतीत का अनुभव किस रूप में व्यक्त हुआ है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :

(1) कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

(2) अतीत का भयानक चक्रवात किसके समान दौड़ रहा है ? उसका क्या परिणाम होगा ?

4. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) बचाकर रखो
कुछ पल
तनकर सीधा खड़े रहने के लिए।

(2) साथ ही कुछ आकर्षक शब्द भी
जो और भी ज्यादा मारक हैं।

(3) पहचानो विषैली गंध को
जिसने कभी जीने नहीं दिया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

पुरखे, अतीत, पल, तल्खी।

6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

बर्बरता, बेचैन, छिपाना, आकर्षक, वर्तमान।

7. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) वहीं खड़े रहो सीधे ....।

(A) सटकर (B) तनकर (C) बनकर (D) अड़कर

(2) खींचो एक लंबी साँस और फिर .... उतनी ही।

(A) छोड़ो (B) जोड़ो (C) तोड़ो (D) मोड़ो

(3) तुम .... चुके हो पूरी तरह।

(A) पिट (B) घिर (C) मर (D) गिर

(4) जो तुम्हें फिर से खींच रही है अपनी ओर .... के साथ।

(A) नश्वरता (B) जर्जरता (C) उर्वरता (D) बर्बरता

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- किन्हीं दो दलित कवियों की रचनाएँ प्राप्त करके पढ़िए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' का सार विद्यार्थियों को सुनाइए।
- 'आकर्षक' किंतु 'मारक' का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

24 जहाँ आकाश नहीं दिखाई देता

विष्णु प्रभाकर

(जन्म : सन् 1912 ई.; निधन : 2009 ई.)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर में हुआ था। इनका आरंभिक नाम विष्णु दयाल था। इन्होंने गद्य की लगभग सभी विधाओं में उल्लेखनीय काम किया है। उनके द्वारा लिखी गयी बाँग्ला साहित्यकार शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय की 'आवारा मसीहा' नाम की जीवनी उनकी पहचान का पर्याय कही जाती है। इनके उपन्यास 'अर्धनारीश्वर' पर इन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया गया था। इन्हें पद्मभूषण सम्मान भी प्राप्त हुआ था।

जिस कोलकाता को पहले कलकत्ता कहा जाता था, उससे जुड़ा एक मार्मिक रिपोर्ताज़ है 'जहाँ आकाश नहीं दिखाई देता'। उसके बारे में विष्णु प्रभाकर बताते हैं कि 'असल में वह सब कुछ का मिश्रण है। निख़ालिस तो इस युग में विष भी नहीं है।' इस महानगर में अगर अकाल के दौर में भूख से तड़पकर लाखों लोगों ने प्राण दिये हैं, तो यहाँ अनेक आंदोलन भी पैदा हुए हैं। संगीत और संगीन दोनों में महारत रखनेवाले लोग यहाँ मिल जाते है। विष्णु प्रभाकर की पैनी दृष्टि सामाजिक विषमता को देखे बिना नहीं रहती, जिसमें एक तरफ़ वह जन्नत है, जिसमें 'राजसी ऐश्वर्य और विलासिता है', तो दूसरी तरफ़ वह जहन्नुम है, जिसमें लोगों को 'भूख है कि खाये जा रही है।'

मैं आकाश की ओर देखता हूँ। आश्चर्य, जो आज तक नहीं देख सका था वह इस क्षण दिखाई देता है। कलकत्ते के आकाश पर ऐसा कुछ छाया रहता है जिसे न कुहरा कह सकते हैं, न धुंध, न धुआँ और न शोर। असल में वह सब कुछ का मिश्रण है। निखालिस तो इस युग में विष भी नहीं है। सब मिश्रण, मिश्रण और मिश्रण।...

सहसा एक धक्का लगता है। एक रेला मेरे अकेलेपन को कुचलता हुआ चारों ओर फैल जाता है और फिर मेरे लिए पैर टिकाना कठिन हो जाता है। सचमुच यह कलकत्ता है जहाँ न आकाश दिखाई देता है और न धरती पर पैर पड़ते हैं। यह हावड़ा का विश्वविख्यात लौह पुल है और सन्ध्या घिर आई है। नीचे गंगा है शिथिल, बदरंग, किसी बिफरी धनी प्रौढ़ा-सी और ऊपर मानव की खरस्रोता भीड़ है, जो क्षुधा के विराट रूप की तरह सब कुछ को ग्रसने के लिए लपकी जा रही है और मैं तूफान में तिनके की तरह विवश, विभ्रांत उड़ा जा रहा हूँ।...

आदमी, आदमी और आदमी। सब अकेले जीविका की मृगतृष्णा के पीछे भागे जा रहे हैं जो, फैक्ट्रियों, दफ्तरों और दूकानों के बाबुओं और मज़दूरों से लेकर फुटपाथों, बाइलेनों के जेबकतरों और चोरबागान के साहूकारों से लेकर रामबागान की वेश्याओं तक के दलालों को परेशान किए हुए है। बसों पर बसें चली जा रही हैं। ट्रामें घड़घड़ाती; अग्निस्फुलिंग आकाश में उड़ाती निरन्तर दौड़ रही हैं। यहाँ सब कुछ दौड़ता है, बेतहाशा दौड़ता है। ताड़ाताड़ी आश्वी रे, ताड़ाताड़ी जा रे। मनुष्य की उतावली पदचाप, ट्राम की घड़घड़ाहट, बस के इंजन की फूत्कार, सबका यही अर्थ है – ताड़ाताड़ी, ताड़ाताड़ी, चरैवेति चरैवेति।...

यह कलकत्ता है। वही कलकत्ता जिसकी सड़कों पर भूख से तड़पकर लाखों व्यक्तियों ने प्राण दिये हैं, जिसके आकाश में कला और साहित्य के मानदण्ड स्थापित हुए हैं, जिसने प्रत्येक नये आन्दोलन को जन्म दिया है। यह आन्दोलनों का नगर है। युगों से प्रतिक्षण यहाँ एक न एक नया आन्दोलन उमड़ता आया है। समाज-सुधार का आन्दोलन,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कला और संगीत का आन्दोलन, साहित्य और स्वाधीनता का आन्दोलन। भूख और भाषा का आन्दोलन और आन्दोलन के लिए आन्दोलन । 'भैंगे दाओ', 'जेते ही होवे'[1], 'हिन्दी साम्राज्य ध्वंस होवे।...'

यहाँ के भावुक लोग संगीन और संगीत की विद्या में एकसमान दक्ष हैं। जितनी सहजता से सितार के तारों से मादक संगीत पैदा कर सकते हैं, उतनी ही कुशलता से 303 की गोली को भी किसी के वक्ष से पार कर सकते हैं ।...

दक्षिण कलकत्ता से ट्राम में बैठकर ठेठ उत्तर की ओर जा रहा हूँ। टन टनन टन घण्टी बजती है, स्टेशन आता है, गाड़ी रुकती है। सवारियाँ उतरती हैं और जोर-जोर से बोलती हैं और सड़क पर शाश्वत भीड़ उमड़ती है। सहसा पाता हूँ कि कहीं हलचल है। कुछ उत्तेजक शब्द गूँजते हैं। लाठियाँ उठती हैं। (जिन पर झण्डे लगे हैं उन्हीं डण्डों का वे लाठियों के रूप में प्रयोग करते हैं) एक दूसरे को लोग चीख-चीखकर कोसते हैं। लाठियाँ टकराती हैं। एक व्यक्ति तेजी से भागता हुआ आता है और दूसरे के पैर को किसी धारदार वस्तु से चीर देता है। दोनों गुत्थमगुत्था होने की कोशिश करते हैं। तभी न जाने किस शून्य में से पुलिस वाले प्रकट हो जाते हैं। लाठियाँ ही लाठियाँ पड़ी रह जाती हैं। पुलिस बटोरकर उन्हें एक ओर रख देती है। ट्राम शोर मचाती बराबर आगे बढ़ती है।...

फिर सहसा उस शोर में हलचल मचती है। फिर कुछ लोग एक-दूसरे पर आक्रमण करते हैं। एक व्यक्ति बड़े-से पत्थर से दूसरे व्यक्ति के अँगूठे को कुचल देता है। लगता है तूफान उमड़ उठेगा। लेकिन फिर वही खेल खेला जाता है। चुपचाप खड़े हुए पुलिस के जवान फिर लाठियाँ छीनने आ जाते हैं। 'भैंगे दाओ', 'भैंगे दाओ' के स्वर उठते हैं और मैं पाता हूँ कि उनमें से कुछ लोग मेरी ट्राम में चढ़ आये हैं। एक का पैर चिरा हुआ है, दूसरे का अँगूठा कुचला हुआ है। लेकिन वे उसकी चिंता नहीं करते। हँसते हैं, नारे लगाते हैं। सहसा उनमें से एक मेरी ओर देखता है। मेरे कपड़े खद्दर के हैं। सिर पर गाँधी टोपी है। वह पूछता है, "तुम कांग्रेसी हो ?"

"जी नहीं।"

"प्रजा-समाजवादी ?"

"जी नहीं।"

"कम्युनिस्ट ?"

"जी नहीं।"

वह झुँझलाकर चीखता है, "यह कैसे हो सकता है ? तुम कांग्रेसी या कम्युनिस्ट या प्रजा-समाजवादी या हिन्दूसभाई, तुम कुछ न कुछ हुए बिना कैसे रह सकते हो ?"

मैं बड़ी नम्रता से कहता हूँ, "मैं लेखक हूँ, मैं इन्सान हूँ।"

वह कहता है, "तो उससे क्या होता है ? तुमको कुछ होना ही होगा। तुम झूठ बोल रहे हो ?"

मैं घबराता हूँ। लेकिन तभी ट्राम रुक जाती है और वे लोग चीखते-तैरते, बाहर की भीड़ में समा जाते हैं। यह हंगामा, यह तर्क, मेरे मस्तिष्क में जैसे कलकत्ता का आकाश घुस आया है। मेरे सामने बैठे एक अधेड़ सज्जन मुस्करा रहे हैं। कहते हैं, "डरो नहीं। आज विद्यार्थी बामपंथियों का साथ नहीं देंगे ?"

मैं सप्रश्न उनकी ओर देखता हूँ। वे उसी विश्वास से कहते हैं, "चीन ने कम्युनिस्टों की रीढ़ तोड़ दी है। अब कलकत्ता में ट्राम और बसें नहीं जलेंगी।"

वे हँसते हैं। मैं उसी तरह उनकी ओर देखता रहता हूँ और ट्राम चलती रहती है। टन टनन टन। एस्प्लेनेड का मैदान जन समूह से भरा हुआ है। मेट्रो के आसपास गजब की भीड़ है और उन सबके बीच में मैं एक अजनबी हूँ। इस विशाल नगर के असंख्य अजनबियों के बीच में अपने को अत्यन्त असहाय पाता हूँ। लेकिन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यह असहाय अकेलापन, वक्ष में धुक्धुकी पैदा करके भी अच्छा लगता है। मैं उतरकर भीड़ में घुस जाता हूँ। और फिर एकाएक कन्धे पर किसी के हाथ का दबाव पाकर चौंक पड़ता हूँ। कहीं कोई रास्ता बताने वाला तो नहीं है। कलकत्ते के लोग रास्ता बताने के लिए इतने उत्सुक रहते हैं कि अक्सर गलत रास्ता बता देते हैं। परन्तु उसी क्षण मुड़कर पाता हूँ कि वह तो अजनबी नहीं है। बहुत पुराना मित्र है। मुस्कुराकर कहता है, ''तुम यहाँ कहाँ फँस गये ? आओ, आओ।''

और उस भीड़ में से खींचता हुआ मुझे ग्राण्ड होटल के भीतर ले जाता है, ''मैं यहाँ रिसेप्शनिस्ट हूँ। आओ, ऊपर बैठेंगे।''

जैसे अब तक जहन्नुम में था, अब जन्नत में आ पहुँचा हूँ। सब कुछ राजसी, ऐश्वर्य और विलासिता का प्रतीक । सब कुछ मूल्यवान, फर्नीचर, कालीन, लिफ्ट, बैरे और मोहक सुन्दरियाँ और इन सबको भोगने वाले देशी-विदेशी यात्री। मैं ऊपर चढ़ता चला जाता हूँ और सबसे ऊपर की मंजिल में एक सजे हुए कमरे की बालकनी से नीचे के जहन्नुम की ओर देखता हूँ। गति, गति और गति।...मनुष्य, मनुष्य और मनुष्य। बस के पहियों की कीलों पर भी कई-कई मनुष्य । झटका लगता है। कोई गिरता है और तैश में आकर मोटी-सी कोई गाली 'शाला', 'हरामजादा' बोलता हुआ भागा चला जाता है। केवल 'आना और जाना।' और इसी आने-जाने के बीच से प्रेम प्रदर्शन से लेकर जेबकतराई तक, नेताओं के भाषणों से लेकर छुरेबाजी तक सभी कुछ होता है। 'आमार शोनार बांगला देश।' सोने का देश है यह बंगाल। कलकत्ता में सोना ही सोना है। इसीलिए भूख है, ईंधन है, धुआँ है, आन्दोलन है। वहीं एक ओर जीवन के मानदण्ड पनपते हैं। कला शान्ति का स्वर घोष करता है। दूसरी ओर सड़कों पर लाशें कुचली जाती हैं, जीवित लाशें, सुन्दरियों की लाशें।....

फुटपाथ पर दौड़ते हुए, सहसा कोई परिचित टकरा जाता है। ''कमोन आछो।''

''भालोइ तो, आपनि...।'' ...मैं दौड़कर बस में चढ़ना चाहता हूँ। 'नमिते दिन' की चिन्ता नहीं करता। पर इस तूफानी प्रवाह में मेरे पैर नहीं टिक पाते। लड़खड़ाता हूँ, टकराता हूँ और मेरे चारों ओर कोरस में आवाज़ें उठती हैं। 'देखछिस न केनो' 'घायल क्यों किए दे रहे हैं आप ?' मैं उनकी ओर देखता हूँ। उनकी आँखों में अग्नि है। मैं डर जाता हूँ; और बस छोड़कर फुटपाथों पर दौड़ने लगता हूँ। दस-दस मील तक मनुष्यों के सैलाब में से गुजर जाता हूँ। कैसे अजीबोगरीब हैं कलकत्ता के ये फुटपाथ ! न जाने किस अनन्त काल से असंख्य व्यक्ति इन फुटपाथों पर घर बनाकर रह रहे हैं। वहीं उकड़ूँ बैठकर खाना बनाते हैं, फिर टाँग पसारकर सो जाते हैं। व्यापार और विग्रह, प्रेम और प्रसव, सब यहीं होता है। उनमें वे रिफ्यूजी हैं जो पूर्वी बंगाल से परेशान होकर आए हैं, और वे भी हैं जो जन्म से मृत्यु तक शाश्वत रिफ्यूजी रहते हैं। गाँव से सोने की तलाश में आने वाले हट्टे-कट्टे बिहारी, नाटे, सांवले उड़िया, मूँछों पर ताव देते भैये। एक अद्भुत मिश्रण है यह बस्ती। मिश्रण नहीं, घोल है। अफीम का घोल। शरत् बाबू के इस नगर में अफीम बड़ी कारगर होती है।...

शब्दार्थ-टिप्पण

आश्चर्य अचंभा, विस्मय **क्षण** पल, समय का एक छोटा सा भाग **निखालिस** शुद्ध, मिलावटरहित **कोशिश** प्रयत्न **अग्निस्फुलिंग** आग की चिनगारी **प्रतिक्षण** हर क्षण, हर पल **दक्ष** कुशल, प्रवीण **वक्ष** छाती **सवारी** यात्री, मुसाफिर **शाश्वत** स्थायी **धारदार** तेज, पैनी **रेला** भीड़ **अजनबी** अनजान, अपरिचित **जहन्नुम** नरक, नर्क **क्षुधा** भूख **जन्नत** स्वर्ग **तैश** गुस्सा, क्रोध **हलक** गला **रिफ्यूजी** शरणार्थी **हलचल** चहल-पहल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' पाठ में किस शहर का वर्णन किया गया है ?

(2) कोलकाता के पास से कौन-सी नदी बहती है ?

(3) कोलकाता के लोग कौन-कौन-सी विद्याओं में एकसमान दक्ष हैं ?

(4) लेखक के कन्धे पर किसने हाथ रखा ?

(5) मित्र लेखक को कहाँ ले गया ?

(6) लेखक होटल में क्या काम करता था ?

(7) कोलकाता में रिफ्यूजी कहाँ से आकर बस गए ?

(8) लेखक की वेशभूषा कैसी थी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) कोलकाता के लोगों में संगीत और संगीन का समन्वय हुआ है। कैसे ?

(2) पुलिसवालों का भीड़ पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(3) गाँव से सोने की तलाश में आने वाले लोग कैसे हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए :

(1) कोलकाता को आन्दोलनों का नगर क्यों कहा जाता है ?

(2) होटल में पहुँचकर लेखक ने कैसा अनुभव किया ?

(3) कोलकाता की फुटपाथों पर रहने वाले लोग अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करते हैं ?

(4) दक्षिण कोलकाता से ट्राम में बैठने पर लेखक ने क्या देखा ?

4. पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) चरैवेति चरैवेति।

(2) निखालिस तो यहाँ विष भी नहीं है।

5. सही विकल्प चुनकर खाली जगह पूर्ण कीजिए :

(1) हावड़ा का विश्वविख्यात लौह-पुल .... नदी पर बना है।

(A) यमुना (B) गंगा (C) नर्मदा (D) तापी

(2) .... आन्दोलनों का नगर है।

(A) दिल्ली (B) मुंबई (C) कोलकाता (D) मद्रास

(3) लेखक ने .... के कपड़े पहने हैं।

(A) टेरीकाट (B) पोलिस्टर (C) खादी (D) पोपलीन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) .... को सोने का देश कहा गया है।

(A) बंगाल (B) बिहार (C) उड़ीसा (D) गुजरात

6. संधि-विच्छेद लिखिए :

सज्जन, विद्यार्थी।

7. विरोधी शब्द लिखिए :

सज्जन, संध्या, भीड़, जहन्नुम, परिचित, जन्म, स्त्री, मित्र, उत्साह।

8. शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :

(1) जिसका कोई अन्त न हो –

(2) सद्‌कर्म करके मृत्यु के बाद व्यक्ति जहाँ जाता है –

9. विशेषण बनाकर लिखिए :

हँसना, दुख, नम्रता, वीरता।

11. भाववाचक संज्ञा बनाकर लिखिए :

मुस्कराना, विलास, झुंझलाना, सज्जन, विवश, घबराना।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी भारत के मानचित्र में पश्चिम बंगाल तथा कोलकाता शहर का स्थान खोजिए।
- विद्यार्थी महानगरों के दैनिक जीवन में भागदौड़ के कारणों की चर्चा वर्गखंड में करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक कोलकाता के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों के बारे में वर्गखण्ड में चर्चा करें।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

25 उजले दिन जरूर

वीरेन डंगवाल

(जन्म : सन् 1947 ई.; निधन : 2015 ई.)

इनका जन्म उत्तराखण्ड के टेहरी गढ़वाल के कीर्तिनगर में हुआ। इन्होंने मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, कानपुर, बरेली, नैनीताल और अन्त में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. और तत्पश्चात डी.फिल. की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। इन्होंने बरेली कॉलेज में हिन्दी अध्यापक के पद पर कार्य किया, साथ ही शौकिया तौर पर पत्रकारिता भी करते रहे। इन्होंने विश्व-कविता से पाब्लो नेरूदा, बर्टोल्ट ब्रेख्त, मीरोस्लाव होलुब, तदेऊश रोजेविच और नाजिम हिकमत की रचनाओं का अपनी विशिष्ट शैली में कुछ दुर्लभ अनुवाद भी किए हैं। 'इसी दुनिया में', 'दुष्चक्र में स्रष्टा', 'कवि ने कहा' तथा 'स्याही ताल' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इनकी कविताओं के बंगला, मराठी, पंजाबी, अंग्रेजी, मलयालम और उड़िया जैसी भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं। इन्हें रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार, श्रीकान्त वर्मा स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। सन् 2004 में आपको साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

प्रस्तुत कविता तमाम समस्याओं और परेशानियों के बीच रहकर भी इस अखंड विश्वास को खोने के लिए तैयार नहीं है कि 'आयेंगे, उजले दिन ज़रूर आयेंगे।' कवि यह तसल्ली झूठ-मूठ की नहीं देता, बल्कि उस ऐतिहासिक सत्य को उजागर करता है, जिसके अंतर्गत अपने संघर्ष से समाज बुरी-से-बुरी परिस्थिति को बदल देता है।

आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।
आतंक सरीखी बिछी हुई हर ओर बर्फ
है हवा कठिन हड्डी-हड्डी को ठिठुराती
आकाश उगलता अंधकार फिर एक बार
संशय-विदीर्ण आत्मा राम की अकुलाती
होगा वह समर, अभी होगा कुछ और बार
तब कहीं मेघ ये छिन्न-भिन्न हो पायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

तहखानों से निकले मोटे-मोटे चूहे
जो लाशों की बदबू फैलाते घूम रहे
हैं कुतर रहे पुरखों की सारी तस्वीरें
चीं-चीं-चिक्-चिक् की धूम मचाते घूम रहे
पर डरो नहीं, चूहे आखिर चूहे ही हैं
जीवन की महिमा नष्ट नहीं कर पायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

यह रक्तपात यह मार-काट जो मची हुई
लोगों के दिल भरमा देने का जरिया है
जो अड़ा हुआ है हमें डराता रस्ते में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लपटें लेता घनघोर आग का दरिया है
सूखे चेहरे बच्चों के, उनकी तरह हंसी
हम याद रखेंगे, पार उसे कर जायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

मैं नहीं तसल्ली झूठ-मूठ की देता हूँ
हर सपने के पीछे सच्चाई होती है
हर दौर, कभी तो खत्म हुआ ही करता है
हर कठिनाई, कुछ राह दिखा ही देती है
आये हैं जब हम चलकर इतने लाख वर्ष
इसके आगे भी तब चलकर ही जायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

शब्दार्थ-टिप्पण

उजले साफ, स्वच्छ, अच्छे **आतंक** भय **संशय विदीर्ण** शंका से छिन्न भिन्न होना **अकुलाना** बेचैन होना **समर** युद्ध **मेघ** बादल **रक्तपात** मारकाट **दरिया** सागर **तसल्ली** आश्वासन।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कवि को कैसे दिन आने का विश्वास है ?
(2) चारों ओर बर्फ किसके समान बिछी हुई है ?
(3) लोगों को भरमाने का कौन-सा जरिया है ?
(4) हर सपने के पीछे क्या छिपा होता है ?
(5) जीवन में कठिनाई क्यों जरूरी है ?

2. प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) आतंकी चूहे क्या-क्या कर रहे हैं ?
(2) कवि को क्या अमर विश्वास है और क्यों ?
(3) 'समर होगा' ऐसा कवि ने क्यों कहा है ?
(4) जीवन की महिमा कौन नष्ट नहीं कर सकता ?

3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :

(1) लोगों के आतंकी जीवन का वर्णन लिखिए।
(2) काव्य का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
(3) अंत में कवि लोगों को क्या तसल्ली देते हैं, समझाइए।

4. काव्य पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :

(1) "यह रक्तपात यह मार-काट जो मची हुई
लोगों के दिल भरमा देने का जरिया है
जो अड़ा हुआ है हमें डराता रस्ते में
लपटें लेता घनघोर आग का दरिया है

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) सूखे चेहरे बच्चों के, उनकी तरह हँसी
हम याद रखेंगे, पार उसे कर जायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।''

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

बर्बरता, बेचैन, तल्खी, छिपाना, आकर्षक, वर्तमान।

6. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) तहखानों से निकले मोटे-मोटे ....।

(A) आतंकी (B) कीड़े (C) चूहे (D) मानव

(2) हर सपने के पीछे .... होती है।

(A) अच्छाई (B) सच्चाई (C) कठिनाई (D) झुठाई

(3) हर कठिनाई कुछ .... दिखा ही देती है।

(A) चाह (B) माह (C) राह (D) दाह

7. समानार्थी शब्द लिखिए :

आतंक, समर, मेघ, राह, दरिया।

8. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

उजला, मोटे, बदबू, जीवन, कठिन।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी वीरेन डंगवाल की अन्य कविताएँ ढूँढकर पढ़ें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- ''आतंक जीवन की महिमा को नष्ट नहीं कर सकता'' विस्तारपूर्वक समझाइए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

26 ततांरा-वामीरो

लीलाधर मंडलोई
(जन्म : सन् 1953 ई.)

इनका जन्म मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा ज़िले में हुआ। समकालीन कवियों में ये काफ़ी महत्वपूर्ण गिने जाते हैं। इनके कई कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'घर-घर घूमा' कविता-संग्रह पर इन्हें मध्य प्रदेश साहित्य परिषद के रामविलास शर्मा सम्मान से पुरस्कृत किया गया। 'रात-बिरात' कविता-संग्रह पर मध्य प्रदेश साहित्य सम्मेलन के वागीश्वरी पुरस्कार तथा मध्य प्रदेश कला परिषद के रज़ा सम्मान से सम्मानित किया गया। इन्होंने चेखव की कथा पर फिल्म एवं कथाकार ज्ञानरंजन पर वृत्तचित्र का निर्देशन भी किया है। इनकी पुस्तक 'अंदमान-निकोबार की लोककथाएँ' भी बहुत चर्चित हैं ।

इसमें सुंदर और शक्तिशाली युवक ततांरा और मधुर गीत गानेवाली सुंदरी वामीरो की मौन और गहन प्रेम-कथा कही गयी है। ततांरा पासा गाँव का और वामीरो लपाती गाँव की रहनेवाली थी। वहाँ की प्रथा के अनुसार 'दोनों का संबंध संभव न था।' पासा गाँव के 'पशु-पर्व' पर वामीरो जब ततांरा को देखते ही फूट-फूटकर रोने लगी, तो उसकी माँ ने ततांरा को बहुत अपमानित किया। ततांरा ने मारे क्रोध के अपनी 'रहस्यमयी तलवार' ज़मीन में गाड़ दी, जिससे द्वीप दो भागों में बँट गया और उसकी ओर का हिस्सा समुद्र में धँसने लगा। समुद्र में वह कहाँ पहुँचा किसी को पता नहीं। वामीरो ने खाना-पीना छोड़ दिया और घर से अलग हो गयी। उनके इस दुखद प्रेम का सुखद परिणाम ये आया कि 'निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे।'

अंदमान द्वीपसमूह का अंतिम दक्षिणी द्वीप है लिटिल अंदमान। यह पोर्ट ब्लेयर से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित है। इसके बाद निकोबार द्वीपसमूह की शृंखला आरंभ होती है जो निकोबारी जनजाति की आदिम संस्कृति के केंद्र हैं । निकोबार द्वीपसमूह का पहला प्रमुख द्वीप है कार-निकोबार जो लिटिल अंदमान से 96 किमी दूर है। निकोबारियों का विश्वास है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे। इनके विभक्त होने की एक लोककथा है जो आज भी दोहराई जाती है।

सदियों पूर्व, जब लिटिल अंदमान और कार-निकोबार आपस में जुड़े हुए थे तब वहाँ एक सुंदर-सा गाँव था-पासा । पासा में एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। उसका नाम था ततांरा। निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे । ततांरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता। अपने गाँववालों को ही नहीं, अपितु समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। उसके इस त्याग की वजह से वह चर्चित था। सभी उसका आदर करते। वक्त मुसीबत में उसे स्मरण करते और वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता। दूसरे गाँवों में भी पर्व-त्योहारों के समय उसे विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता। उसका व्यक्तित्व तो आकर्षक था ही, साथ ही आत्मीय स्वभाव की वजह से लोग उसके करीब रहना चाहते। पारंपरिक पोशाक के साथ वह अपनी कमर में सदैव एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता। लोगों का मत था, बावजूद लकड़ी की होने पर, उस तलवार में अद्‌भुत दैवीय शक्ति थी। ततांरा अपनी तलवार को कभी अलग न होने देता। उसका दूसरों के सामने उपयोग भी न करता। किंतु उसके चर्चित साहसिक कारनामों के कारण लोग-बाग तलवार में अद्‌भुत शक्ति का होना मानते थे। ततांरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक शाम तताँरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था। समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं। पक्षियों की सायंकालीन चहचहाटें शनैः शनैः क्षीण होने को थीं। उसका मन शांत था। विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा। तभी कहीं पास से उसे मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया। गीत मानो बहता हुआ उसकी तरफ़ आ रहा हो। बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई देता। गायन इतना प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा। लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की। चैतन्य होते ही वह उधर बढ़ने को विवश हो उठा जिधर से अब भी गीत के स्वर बह रहे थे। वह विकल सा उस तरफ़ बढ़ता गया। अंततः उसकी नज़र एक युवती पर पड़ी जो ढलती हुई शाम के सौंदर्य में बेसुध, एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगों को निहारते हुए गा रही थी ? यह एक शृंगार गीत था।

उसे ज्ञात ही न हो सका कि कोई अजनबी युवक उसे निःशब्द ताके जा रहा है। एकाएक एक ऊँची लहर उठी और उसे भिगो गई। वह हड़बड़ाहट में गाना भूल गई। इसके पहले कि वह सामान्य हो पाती, उसने अपने कानों में गूँजती गंभीर आकर्षक आवाज़ सुनी।

"तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया ?" तताँरा ने विनम्रतापूर्वक कहा।

अपने सामने एक सुंदर युवक को देखकर वह विस्मित हुई। उसके भीतर किसी कोमल भावना का संचार हुआ। किंतु अपने को संयतकर उसने बेरुखी के साथ जवाब दिया।

"पहले बताओ ! तुम कौन हो, इस तरह मुझे घूरने और इस असंगत प्रश्न का कारण ? अपने गाँव के अलावा किसी और गाँव के युवक के प्रश्नों का उत्तर देने को मैं बाध्य नहीं। यह तुम भी जानते हो।"

तताँरा मानो सुध-बुध खोए हुए था। जवाब देने के स्थान पर उसने पुनः अपना प्रश्न दोहराया। "तुमने गाना क्यों रोक दिया ? गाओ, गीत पूरा करो। सचमुच तुमने बहुत सुरीला कंठ पाया है।"

"यह तो मेरे प्रश्न का उत्तर न हुआ ?" युवती ने कहा।

"सच बताओ तुम कौन हो ? लपाती गाँव में तुम्हें कभी देखा नहीं।"

तताँरा मानो सम्मोहित था। उसके कानों में युवती की आवाज़ ठीक से पहुँच न सकी। उसने पुनः विनय की, "तुमने गाना क्यों रोक दिया ? गाओ न ?"

युवती झुँझला उठी। वह कुछ और सोचने लगी। अंततः उसने निश्चयपूर्वक एक बार पुनः लगभग विरोध करते हुए कड़े स्वर में कहा।

"ढीठता की हद है। मैं कब से परिचय पूछ रही हूँ और तुम बस एक ही राग अलाप रहे हो। गीत गाओ-गीत गाओ, आखिर क्यों ? क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम ?" इतना बोलकर वह जाने के लिए तेज़ी से मुड़ी। तताँरा को मानो कुछ होश आया। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। वह उसके सामने रास्ता रोककर, मानो गिड़गिड़ाने लगा।

"मुझे माफ़ कर दो। जीवन में पहली बार मैं इस तरह विचलित हुआ हूँ। तुम्हें देखकर मेरी चेतना लुप्त हो गई थी। मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा। बस अपना नाम बता दो।" तताँरा ने विवशता में आग्रह किया। उसकी आँखें युवती के चेहरे पर केंद्रित थीं। उसके चेहरे पर सच्ची विनय थी।

"वा... मी... रो..." एक रस घोलती आवाज़ उसके कानों में पहुँची।

"वामीरो... वा... मी... रो... वाह कितना सुंदर नाम है। कल भी आओगी न यहाँ ?" तताँरा ने याचना भरे स्वर में कहा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

''नहीं... शायद... कभी नहीं।'' वामीरो ने अन्यमनस्कतापूर्वक कहा और झटके से लपाती की तरफ़ बेसुध-सी दौड़ पड़ी। पीछे तताँरा के वाक्य गूँज रहे थे।

''वामीरो... मेरा नाम तताँरा है। कल मैं इसी चट्टान पर प्रतीक्षा करूँगा... तुम्हारी बाट जोहूँगा... ज़रूर आना...''

वामीरो रुकी नहीं, भागती ही गई। तताँरा उसे जाते हुए निहारता रहा।

वामीरो घर पहुँचकर भीतर ही भीतर कुछ बेचैनी महसूस करने लगी। उसके भीतर तताँरा से मुक्त होने की एक झूठी छटपटाहट थी। एक झल्लाहट में उसने दरवाज़ा बंद किया और मन को किसी और दिशा में ले जाने का प्रयास किया। बार-बार तताँरा का याचना भरा चेहरा उसकी आँखों में तैर जाता। उसने तताँरा के बारे में कई कहानियाँ सुन रखी थीं। उसकी कल्पना में वह एक अद्‌भुत साहसी युवक था। किंतु वही तताँरा उसके सम्मुख एक अलग रूप में आया। सुंदर, बलिष्ठ किंतु बेहद शांत, सभ्य और भोला। उसका व्यक्तित्व कदाचित वैसा ही था जैसा वह अपने जीवन-साथी के बारे में सोचती रहती थी। किंतु एक दूसरे गाँव के युवक के साथ यह संबंध परंपरा के विरुद्ध था। अतएव उसने उसे भूल जाना ही श्रेयस्कर समझा। किंतु यह असंभव जान पड़ा। तताँरा बार-बार उसकी आँखों के सामने था । निर्निमेष याचक की तरह प्रतीक्षा में डूबा हुआ।

किसी तरह रात बीती। दोनों के हृदय व्यथित थे। किसी तरह आँचरहित एक ठंडा और ऊबाऊ दिन गुज़रने लगा । शाम की प्रतीक्षा थी। तताँरा के लिए मानो पूरे जीवन की अकेली प्रतीक्षा थी। उसके गंभीर और शांत जीवन में ऐसा पहली बार हुआ था। वह अचंभित था, साथ ही रोमांचित भी। दिन ढलने के काफ़ी पहले वह लपाती की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया। वामीरो की प्रतीक्षा में एक-एक पल पहाड़ की तरह भारी था। उसके भीतर एक आशंका भी दौड़ रही थी। अगर वामीरो न आई तो ? वह कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था। सिर्फ़ प्रतीक्षारत था। बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी। वह बार-बार लपाती के रास्ते पर नज़रें दौड़ाता। सहसा नारियल के झुरमटों में उसे एक आकृति कुछ साफ़ हुई... कुछ और... कुछ और। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। सचमुच वह वामीरो थी। लगा जैसे वह घबराहट में थी। वह अपने को छुपाते हुए बढ़ रही थी। बीच-बीच में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाना न भूलती। फिर तेज़ कदमों से चलती हुई तताँरा के सामने आकर ठिठक गई। दोनों शब्दहीन थे। कुछ था जो दोनों के भीतर बह रहा था। एकटक निहारते हुए वे जाने कब तक खड़े रहे। सूरज समुद्र की लहरों में कहीं खो गया था। अँधेरा बढ़ रहा था। अचानक वामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ़ दौड़ पड़ी। तताँरा अब भी वहीं खड़ा था... निश्चल... शब्दहीन...।

दोनों रोज़ उसी जगह पहुँचते और मूर्तिवत एक-दूसरे को निर्निमेष ताकते रहते। बस भीतर समर्पण था जो अनवरत गहरा रहा था। लपाती के कुछ युवकों ने इस मूक प्रेम को भाँप लिया और खबर हवा की तरह बह उठी। वामीरो लपाती ग्राम की थी और तताँरा पासा का। दोनों का संबंध संभव न था। रीति अनुसार दोनों को एक ही गाँव का होना आवश्यक था। वामीरो और तताँरा को समझाने-बुझाने के कई प्रयास हुए किंतु दोनों अडिग रहे। वे नियमत: लपाती के उसी समुद्री किनारे पर मिलते रहे। अफ़वाहें फैलती रहीं।

कुछ समय बाद पासा गाँव में 'पशु-पर्व' का आयोजन हुआ। पशु-पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं के प्रदर्शन के अतिरिक्त पशुओं से युवकों की शक्ति परीक्षा प्रतियोगिता भी होती है। वर्ष में एक बार सभी गाँव के लोग हिस्सा लेते हैं। बाद में नृत्य-संगीत और भोजन का भी आयोजन होता है। शाम से सभी लोग पासा में एकत्रित होने लगे। धीरे-धीरे विभिन्न कार्यक्रम शुरू हुए। तताँरा का मन इन कार्यक्रमों में तनिक न था। उसकी व्याकुल आँखें वामीरो को ढूँढ़ने में व्यस्त थीं। नारियल के झुंड के एक पेड़ के पीछे से उसे जैसे कोई झाँकता दिखा। उसने थोड़ा और करीब जाकर पहचानने की चेष्टा की। वह वामीरो थी जो भयवश सामने आने में झिझक रही थी। उसकी आँखें तरल थीं। होंठ काँप रहे थे। तताँरा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

को देखते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी। तताँरा विह्वल हुआ। उससे कुछ बोलते ही नहीं बन रहा था। रोने की आवाज़ लगातार ऊँची होती जा रही थी। तताँरा किंकर्तव्यविमूढ़ था। वामीरो के रुदन स्वरों को सुनकर उसकी माँ वहाँ पहुँची और दोनों को देखकर आग बबूला हो उठी। सारे गाँववालों की उपस्थिति में यह दृश्य उसे अपमानजनक लगा। इस बीच गाँव के कुछ लोग भी वहाँ पहुँच गए। वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। उसने तताँरा को तरह-तरह से अपमानित किया। गाँव के लोग भी तताँरा के विरोध में आवाज़ें उठाने लगे। यह तताँरा के लिए असहनीय था। वामीरो अब भी रोए जा रही थी। तताँरा भी गुस्से से भर उठा। उसे जहाँ विवाह की निषेध परंपरा पर क्षोभ था वहीं अपनी असहायता पर खीझ। वामीरो का दु:ख उसे और गहरा कर रहा था। उसे मालूम न था कि क्या कदम उठाना चाहिए ? अनायास उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा टिका। क्रोध में उसने तलवार निकाली और कुछ विचार करता रहा। क्रोध लगातार अग्नि की तरह बढ़ रहा था। लोग सहम उठे। एक सन्नाटा-सा खिंच गया। जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा। वह पसीने से नहा उठा। सब घबराए हुए थे। वह तलवार को अपनी तरफ़ खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया । वह हाँफ रहा था। अचनाक जहाँ तक लकीर खिंच गई थी, वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ों में बँटने लगी हो। एक गड़गड़ाहट-सी गूँजने लगी और लकीर की सीध में धरती फटती ही जा रही थी। द्वीप के अंतिम सिरे तक तताँरा धरती को मानो क्रोध में काटता जा रहा था। सभी भयाकुल हो उठे। लोगों ने ऐसे दृश्य की कल्पना न की थी, वे सिहर उठे। उधर वामीरो फटती हुई धरती के किनारे चीखती हुई दौड़ रही थी-तताँरा... तताँरा... तताँरा... उसकी करुण चीख मानो गड़गड़ाहट में डूब गई। तताँरा दुर्भाग्यवश दूसरी तरफ़ था। द्वीप के अंतिम सिरे तक धरती को चाकता वह जैसे ही अंतिम छोर पर पहुँचा, द्वीप दो टुकड़ों में विभक्त हो चुका था। एक तरफ़ तताँरा था दूसरी तरफ़ वामीरो। तताँरा को जैसे ही होश आया, उसने देखा उसकी तरफ़ का द्वीप समुद्र में धँसने लगा है। वह छटपटाने लगा। उसने छलाँग लगाकर दूसरा सिरा थामना चाहा किंतु पकड़ ढीली पड़ गई। वह नीचे की तरफ़ फिसलने लगा । वह लगातार समुद्र की सतह की तरफ़ फिसल रहा था। उसके मुँह से सिर्फ़ एक ही चीख उभरकर डूब रही थी, "वामीरो... वामीरो... वामीरो... वामीरो..." उधर वामीरो भी "तताँरा... तताँरा... ता. ताँ... रा" पुकार रही थी।

तताँरा लहूलुहान हो चुका था... वह अचेत होने लगा और कुछ देर बाद उसे कोई होश नहीं रहा। वह कटे हुए द्वीप के अंतिम भूखंड पर पड़ा हुआ था जो कि दूसरे हिस्से से संयोगवश जुड़ा था। बहता हुआ तताँरा कहाँ पहुँचा, बाद में उसका क्या हुआ कोई नहीं जानता। इधर वामीरो पागल हो उठी। वह हर समय तताँरा को खोजती हुई उसी जगह पहुँचती और घंटों बैठी रहती। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। परिवार से वह एक तरह विलग हो गई। लोगों ने उसे ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की किंतु कोई सुराग न मिल सका।

आज न तताँरा है न वामीरो, किंतु उनकी यह प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है। निकोबारियों का मत है कि ततांरा की तलवार से कार-निकोबार के जो टुकड़े हुए, उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है जो कार-निकोबार से आज 96 कि.मी. दूर स्थित है। निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे। ततांरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।

शब्दार्थ-टिप्पण

तत्पर तैयार, उद्यत **बयार** हवा, पवन **बालू** रेती **स्मरण** याद **वक्त** समय, अवसर, मौका **निहारना** देखना **तंद्रा** आलस **चैतन्य** बाहोश, जाग्रत **विकल** व्याकुल **नि:शब्द** चुपचाप, बिना बोले **विस्मित** आश्चर्यचकित **कंठ** गला **श्रेयस्कर** श्रेष्ठ, अधिक अच्छा **याचक** मांगनेवाला, भिखारी **निर्निमेष** टकटकी लगाकर, पलक झपकाए बिना **झुरमुट** झाड़ियों का समूह **किंकर्तव्यविमूढ़** क्या करें, क्या न करें, मन की ऐसी स्थिति; कुछ समझ में न आना, असमंजस में पड़ जाना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) तताँरा किस गाँव का रहनेवाला था ?

(2) तताँरा शाम को घूमने के लिए कहाँ गया ?

(3) युवती (वामीरो) गाना क्यों भूल गई ?

(4) ततााँरा ने युवती से बार-बार क्या प्रश्न किया ?

(5) ततााँरा युवती के सामने क्यों गिड़गिड़ाने लगा ?

(6) निकोबारी घटना का गाँववालों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(7) वामीरो के गीत को सुनकर ततााँरा के मन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) लोग ततााँरा का आदर क्यों करते थे ?

(2) अंत में युवती ने कठोरतापूर्वक युवक से क्या कहा ?

(3) गिड़गिड़ाते हुए ततााँरा ने युवती से क्या कहा ?

(4) पासा गाँव में पशु-पर्व का आयोजन किस प्रकार किया गया ?

(5) वामीरो किस गाँव में रहती थी ? उसका ततााँरा के साथ विवाह क्यों नहीं हो सका ?

(6) वामीरो ने ततााँरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया ?

3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए :

(1) ततााँरा को देखकर वामीरो की जो मन:स्थिति हुई, उसका अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

(2) ततााँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था ?

(3) ततााँरा का अंत कैसे हुआ ?

(4) ततााँरा और वामीरो की प्रेमकथा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(5) ततााँरा का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में लिखिए।

4. दिए गए विकल्पों में से सही शब्द चुनकर खाली जगह पूर्ण कीजिए :

(1) ततााँरा की तलवार .... से बनी हुई थी।

(A) लोहा (B) लकड़ी (C) ताँबा (D) पीतल

(2) कार-निकोबार से लिटिल अंदमान की दूरी .... किमी है।

(A) 196 (B) 296 (C) 100 (D) 96

(3) ततााँरा ने अपनी तलवार .... में घोंप दी।

(A) पानी (B) धरती (C) शरीर (D) लकड़ी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) पासा गाँव में .... पर्व का आयोजन हुआ था।

(A) पशु (B) पक्षी (C) होली (D) दीपावली

5. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यप्रयोग कीजिए :

(1) सुध-बुध खोना

(2) आग बबूला होना

(3) खुशी का ठिकाना न रहना

6. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द लिखिए :

रुदन, अनायास, सुरीला, आकर्षक, स्मरण।

7. सविग्रह समास का नाम लिखिए :

भयाकुल, प्रतीक्षारत, विचारमग्न।

8. विशेषण लिखिए :

क्षिति, विश्वास, परंपरा, साहस, क्रोध, अंत, विचार।

9. भाववाचक संज्ञा बनाइए :

दैवीय, विलक्षण, सुंदर, तरल।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- विद्यार्थी मानचित्र में अंदमान-निकोबार का स्थान ज्ञात करें।
- राजस्थानी लोककथाएँ प्राप्त करके पढ़िए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक वर्गखण्ड में अंदमान-निकोबार द्वीप समूह के बारे में जानकारी दें।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

27 याद करेगी धरती

निर्मला गर्ग

(जन्म : सन् 1955 ई.)

प्रगतिशील विचारधारा की इस कवयित्री का जन्म दरभंगा (बिहार) में एक मारवाड़ी परिवार में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा दरभंगा में हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से इन्होंने वाणिज्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने रूसी भाषा में डिप्लोमा भी किया। पहले आप प्रगतिशील लेखक संघ और फिर जनवादी लेखक संघ से लम्बे समय तक जुड़ी रहीं। इनकी कुछ कविताओं का बंगला, मराठी, अंग्रेजी और जर्मन भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है।

'यह हरा गलीचा', 'कबाड़ी का तराजू' और 'सफर के लिए रसद' इनके काव्य संग्रह हैं। 'कबाड़ी का तराजू' पर इन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली के कृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने अतीत को याद करते हुए यह बताने की सफल चेष्टा की है कि मानवता और प्रेम की हत्या बार-बार होती है। लेकिन कवयित्री आशावान है कि ये वो अमर भावनाएँ हैं जिनका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं हो सकता है। कवयित्री ने यह दिखाया है कि कभी-कभी ऐसा भी मौसम आ जाता है, जब लगता है कि कहीं कुछ नहीं हो रहा है। ऐसे में भी भीतर-ही-भीतर हलचलें सक्रिय रहती हैं। धरती आँसुओं, खून के धब्बों, अनेक वारदातों, धूल और बवंडर से भरे मुसीबत के दिनों को याद रखती है। कवयित्री दुनिया को लेकर निराश नहीं, बल्कि आशावान है।

जब कहीं कुछ नहीं होता,
एक शान्त नीली झील में
सुस्ताती हैं सारी हलचलें
वक्त बस झिरता है
धीमे झरने-सा

धरती खोलती है
पुराना अल्बम

जगह जगह आँसुओं
और खून के धब्बे हैं उस पर
अनगिनत वारदातें घोड़ों की टापें
धूल और बवंडर के बीच
याद करती है धरती
वे तारीखें साफ किया है जिन्होंने
उसकी देह पर का कीचड़
धोया है मुँह बहते पसीने से

याद करेगी धरती कई चीजें अभी और
और कई चेहरे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

सुस्ताना थकावट दूर करना, आराम करना **वारदात** बुरी घटना, आपराधिक घटना **बवंडर** चक्रवात **खून के धब्बे** बुरी घटनाओं का संकेत।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) वक्त कैसे बीतता है ?

(2) हलचलें कहाँ सुस्ताती हैं ?

(3) हमारे अतीत पर किन चीजों पर धब्बे हैं ?

(4) अनगिनत वारदातों से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(5) अपनी मेहनत से पृथ्वी की कालिमा को किसने दूर किया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) पृथ्वी के अलबम में कौन-कौन-सी घटनाएँ छिपी हुई हैं ?

(2) धरतीरूपी अल्बम पर किस-किस के धब्बे हैं और वे क्या दर्शाते हैं ?

(3) धरती के पुराने अल्बम को खोलने से कवि का क्या तात्पर्य है ? समझाइए।

3. प्रत्येक प्रश्न का पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) 'याद करेगी धरती' काव्य का केन्द्रीय भाव दर्शाइए।

(2) पृथ्वी किन-किन बातों को याद रखेगी ? और क्यों ?

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

याद करेगी धरती कई चीजें अभी और
और कई चेहरे।

5. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :

(1) वक्त बस झिरता है, धीमे .... सा।

(A) तूफान (B) झरने (C) भूकंप (D) चक्रवात

(2) धरती खोलती है पुराना ....।

(A) इतिहास (B) राग (C) अल्बम (D) रहस्य

(3) जगह-जगह आँसुओं और खून के .... हैं।

(A) निशान (B) चित्र (C) धब्बे (D) स्मारक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) उसकी देह पर का .... धोया है मुँह बहते पसीने से।

(A) मैल (B) पसीना (C) कीचड़ (D) रक्त

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

घोड़ा, धूल, देह, समय, मुँह।

7. विलोम शब्द लिखिए :

शांत, धीमे, नया, अनगिनत।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'युद्ध की विभीषिका' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक देशप्रेमी महापुरुषों के चित्रों का अल्बम तैयार कराएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

28 दान की बात

रघुवीर चौधरी

(जन्म : सन् 1938 ई.)

सर्जक, चिंतक, कर्मशील रघुवीर चौधरी का जन्म बापूपुरा (जिला गांधीनगर) उत्तर गुजरात में हुआ। स्कूली शिक्षा माणसा तथा उच्च शिक्षा अहमदाबाद सेंट जेवियर्स कॉलेज से। हिन्दी का अध्यापन भाषा-साहित्य भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर पद से निवृत्त। नई तालीम की संस्थाओं के सूत्रधार।

रघुवीरभाई ने गुजराती भाषा में लगभग सभी विधाओं पर साधिकार लेखन किया है। कथा साहित्य, नाटक, कविता, रेखाचित्र आदि में उल्लेखनीय योगदान दिया है। अमृता, उपरवास, कथात्रयी, वेणु-वत्सला, सोमतीर्थ, रुद्रमहालय आदि उपन्यास उनकी कीर्ति के स्तंभ हैं। गोकुल-मथुरा-द्वारका, अमृता तथा उपरवास कथात्रयी के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं । ग्रामीण जीवन के निकट संपर्क, शहरी अनुभवों की अभिव्यक्ति के साथ ही ऐतिहासिकता उनकी रचनाओं के प्रमुख आयाम है। मूल्यनिष्ठा, मूल्यप्रतिष्ठा उनकी रचनाओं के प्रमुख स्वर हैं। उनकी लम्बी कविता 'बचावनामु' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। रघुवीरभाई को ऊपरवास कथात्रयी के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला है। वे गुजराती के सभी प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं, इनमें रणजितराम सुवर्ण चंद्रक, क. मा. मुनशी स्वर्ण चंद्रक, गोवर्धनराम त्रिपाठी पुरस्कार आदि मुख्य हैं। इन्हें साहित्य अकादेमी की मानद् फेलोशिप प्राप्त है। भारत का प्रतिष्ठित साहित्यिक सम्मान (2015) ज्ञानपीठ पुरस्कार से आपको सम्मानित किया गया है।

यहाँ संकलित 'दान की बात' गुजराती तथा हिन्दी दो भाषाओं में लिखे गए उनके जीवनीपरक उपन्यास का अंश है, कथानायक बालक गिरधारी के जीवन में संस्कारों का सिंचन किस तरह से हुआ, यह उसका एक उत्तम उदाहरण है।

गुरुपूर्णिमा का दिन था। गंगास्नान करके गिरधारी घर वापस आया। पिताजी की सलाह याद रखकर वह ज़रूरत से ज्यादा नियमित हो गया था। इस तरह नियमित हो बुजुर्गों द्वारा बखान सुनने में भी मजा आता था।

'बहुत जल्दी आ गया रे ! नहाने में जल्दबाजी तो नहीं की न !'

'गंगा में सात डुबकी लगाई थीं' — कहते हुए गिरधारी ने बुआ की चरणरज ली। सोकर उठने के साथ वंदन करना बाकी रह गया हो तो गिरधारी रामघाट से लौटकर इस प्रकार विशेष आशिष प्राप्त करता है।

प्रात:काल की पूजा पूरी करके गणेशीकौर ने प्रभु को प्रसाद चढ़ाया था। वह देते हुए बोली : 'बेटा नास्ता कर ले । तेरे फूफा प्रयागराज गए हैं। तुझे मुनीमजी को लेकर गुरुजी के यहाँ जाना है, दक्षिणा पहुँचाने। पता है न आज कौन-सी तिथि है ? गुरुपूर्णिमा !'

गिरधारी ने आचार्य विभूति मिश्र का घर देखा है। जब देखा हर बार पहले की अपेक्षा ज्यादा अच्छा लगा है। सीधे सादे तीन कमरे। स्वच्छ अहाता। एक झूला, एक तुलसीचौरा। गिनेचुने छात्र ही आचार्य के यहाँ आते हैं। इन दिनों एक गौरवर्ण युवक प्रात:काल पीताम्बर पहनकर आता है। कहते हैं कि वह अपने बंगले से तांगे में बैठकर निकलता है। गली के मोड़ के पास तांगा खड़ा करता है। उतरकर वहाँ से पैदल चलकर गुरुदेव के यहाँ आता है। यह रास्ता दूसरी अंधेरी गलियों जितना सँकरा नहीं है। तांगा यहाँ तक आ सकता है। किन्तु इसमें अशिष्टता दिखाई देगी। चलते समय भी उसके मुख पर नम्रता होती है। कहते हैं बहुत बड़ा अफसर है। आचार्य को साष्टांग प्रणाम करता है। फिर सादे आसन पर बैठता है। आचार्य विभूति मिश्र मौखिक परंपरा से शिक्षा देते हैं। पढ़ाते समय

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हाथ में पुस्तक नहीं रखते। दर्शन, व्याकरण और ज्योषिशास्त्र उन्हें कंठस्थ हैं। मामा श्री वल्लभराम की सलाह से किशोरीलाल और 'शिवालय' में रहते परिवार ने समादर के साथ दान देना शुरू किया है। यह शुभ अवसर वर्ष में एक ही बार आता है; गुरुपूर्णिमा के दिन। इसके सिवा किसी भी अन्य दिन आचार्य दक्षिणा नहीं स्वीकार करते।

गिरधारी नास्ता करके गुरुजी के यहाँ जाने के लिए तैयार हुआ तब तक मुनीमजी आए न थे। उन्होंने गिरधारी के नदी से लौटने का समय उसकी पुरानी आदत के मुताबिक अनुमान कर रखा था। वे जल्दी पहुँचेंगे तो गिरधारी को बुलाने बुआजी उन्हें रामघाट भेजेंगी। वे स्वयं रामघाट पहुँचेंगे तब तक गिरधारी का नहाना पूरा नहीं हुआ होगा और वह दूर से ही चिल्लाएगा, आप भी नहाने आइए।

गिरधारी मुनीमजी की बाट जोहकर ऊब गया। झूले पर बैठकर श्लोक गाने लगा। तभी कृष्णाराम का आगमन हुआ । बुआजी ने भइये को नास्ते के लिए पूछा। कृष्णाराम को उससे कुछ एतराज न था पर गृहकार्य से फुरसत पाकर नास्ता करें तो उसके स्वाद का बराबर लुत्फ उठा सकते हैं ऐसी उसकी मान्यता थी। गिरधारी को बाहर जाने के लिए उस तरह तैयार बैठा देखकर उसने गणित और संस्कृत के दाँवपेंच पहले जानकर बाद में पूछा : आचार्य के यहाँ क्यों जाना है। मेरी ज़रूरत साथ में रहने की है ? गिरधारी ने सहज रूप से आचार्य के यहाँ दान देने जाने का उल्लेख किया । बुआजी ने टोकते हुए कहा : 'बेटा दान की बात किसी से नहीं कही जाती। यह कहना चाहिए कि गुरुपूर्णिमा का प्रणाम करने जाना है।'

भइया सोच में पड़ गया। काशी में भिखमंगों की कमी नहीं है। खुले आम दान दिया जाता है, मुँह खोलकर माँगकर लिया जाता है। इसलिए बुआजी की बात पर उसे अचरज हुआ। उसने गिरधारी की ओर देखा। उसके पास भी इसका उत्तर न था। आचार्य विभूति मिश्र अयाचक व्रत का पालन करते हैं, यह सच है। हम अपनी मर्जी से दान देने के लिए जाते हैं। उन्होंने बुलाया नहीं है कि आना। हम सत्कार्य कर रहे हैं फिर छुपाने की क्या ज़रूरत ? पूछा । गणेशी बुआ बोलीं : 'दान तीन प्रकार का होता है : सात्त्विक, राजसिक और तामसिक। यह भेद भावना की दृष्टि से किया गया है। वस्तु की दृष्टि से भी दान के तीन प्रकार हैं — अभयदान, विद्यादान और अर्थदान। तुम दोनों जब बड़े हो जाओगे तब समझ में आएगा कि हमसे बड़े दाता तो हैं गुरुजी। क्योंकि उनसे हमें अभयदान मिलता है। संसार के महाभय से मुक्त होने का उपदेश ही अभयदान है। विद्यादान तो आप अनेक गुरुओं के पास से प्राप्त कर रहे हैं । ईश्वर की कृपा से हम थोड़ा अर्थदान करने की शक्ति रखते हैं। परन्तु यह दान सात्त्विक कैसे रहे ? हम अपना कर्तव्य समझकर योग्य व्यक्ति को गुप्तदान करें तभी वह सात्त्विक होगा। देश, काल और सुपात्र का विचार करके, बदले में कुछ पाने की आशा रखे बिना किया गया दान ही सात्त्विक है। भगवद्‌गीता में कहा गया है :

दातव्यम् इति यद् दानं दीयते अनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद् दानं सात्त्विकं स्मृतम्।'

दोनों किशोर विस्मयविमूढ़ होकर ताकते रह गए। बुआ से पूछें कि आप कितनी पढ़ी हैं तो कहेंगी : मैं तो कुछ भी पढ़ीलिखी नहीं हूँ। फिर भी उन्हें कितने सुभाषित याद हैं ! वे समझाती हैं तो लगता है कि भोजन का कोई व्यंजन परोस रही हैं !

मुनीमजी आ पहुँचे। देरी के लिए माफी माँगने लगे। पाँच मिनट देर से आयें तो भी इसे लेट माननेवाले मुनीमजी बनारस में पहले व्यक्ति होंगे ऐसा कहकर भइया ने उनकी कद्र की। बुआजी ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया। गुरुजी के पास पहुँचाने के लिए सामग्री तैयार रखी थी। द्रव्य, वस्त्र आदि मुनीमजी ने संभालकर रखे। बुआजी ने गिरधारी से कहा :

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'पहले आचार्यदेव को साष्टांग प्रणाम करना, फिर प्रार्थना करना ''—कृपया ये वस्तुएँ ग्रहण कीजिए और हमें आभारी कीजिए।'' फिर उनके चरणों में सब धर देना।'

मुनीमजी भी ध्यान से सुन रहे थे। गणेशीबुआ ने कहा : गिरधारी के फूफा का प्रणाम कहना भूलियेगा नहीं। इलाहाबाद से लौटते ही वे आचार्य देव से मिलेंगे। भाई साहब तो कुछ दिन पहले ही मिल चुके हैं।

'साथ जाने की इच्छा पर काबू रखकर भइया पान लगाने का डिब्बा लेकर झूले पर बैठा। देर मत करना। गुरुजी से कुछ पूछना मत। उनका उत्तर लम्बा होता है।' बुआजी ने भइये का कान पकड़कर प्रेमपूर्वक मौन रहना सिखाया। गिरधारी के कदम बढ़े। आचार्यदेव इस बालक के हाथ से दान स्वीकार करेंगे !

आचार्य विभूति मिश्र एक अतिथि को विदा करने अहाते के फाटक तक आए हुए थे। जाते-जाते अतिथि कहते गए: सुबंधु आये तब मुझे बतलाइएगा। मुझे उसे उलाहना देना है। देशसेवा के लिए घर छोड़ने की क्या ज़रूरत थी भई ! — उत्तर में आचार्यश्री केवल मुस्कुराए। नए अतिथियों का स्वागत कर रहे थे कि तभी गिरधारी ने साष्टांग दंडवत् प्रणाम किया। उसकी हथेलियों पर धूल लग गई थी।

'धूल ने तुझे शुभाशिष दे दिया वत्स !' आचार्य ने सस्नेह कहा। स्वागत किया। दोनों भीतर गए। सामान उतार कर मुनीमजी ने अपने गमछे से गिरधारी की हथेलियाँ साफ कीं। सामग्री हाथ में लेने को कहा। बुआ का कहा हुआ सब याद था। प्रार्थना की। आचार्यदेव प्रसन्न हुए। इसका अर्थ है — यह लड़का बड़ों जैसा व्यवहार कर रहा है ! दान स्वीकार किया। गिरधारी के माथे पर हाथ रखा। आशीर्वाद दिया : 'स्वकर्म से यशस्वी बनो। राष्ट्र और संस्कृति की सेवा के एक से बढ़कर एक अवसर प्राप्त करते रहो।'

गिरधारी और मुनीमजी निकलने के लिए तैयार ही थे कि तभी एक अंग्रेज अधिकारी आया। कभी वह भी भारतीय दर्शन समझने के लिए यहाँ आता था। आजकल वह दिल्ली में था। सन् 1905 में उत्तर भारत में भयंकर भूकंप हुआ था और प्लेग की महामारी में सत्तावन हज़ार लोग मारे गए। उस दौरान इस अधिकारी ने बहुत हिम्मतपूर्वक काम किया था। आचार्यश्री ने उससे परिचय करवाया। वह परस्पर बढ़े ऐसी शुभेच्छा व्यक्त की। अधिकारी ने इस परिवार की व्यापारी पेढ़ी के उच्च मानदण्डों के बारे में सुन रखा था।

रास्ते में गिरधारी ने मुनीमजी से पूछा : 'आचार्यदेव अंग्रेजी जानते हैं ?'

'हाँ। जिस तरह वह संस्कृत लिखते और बोलते हैं वैसे ही अंग्रेजी भी। अंग्रेज अधिकारियों और यूरोप के दूसरे जिज्ञासुओं को प्राच्य विद्या सिखाते-सिखाते वे स्वयं भी अंग्रेजी के ज्ञाता हो गये। वे अक्सर कहते हैं कि अंग्रेज मेरे शिष्य हैं और गुरु भी। बंग-भंग के विरोध में आंदोलन चल रहा था उन दिनों कलकत्ते में ब्रिटिश माल का बहिष्कार करने के लिए एक विशाल सभा आयोजित की गई थी। आचार्यदेव ने उसमें भाग लिया था। कलकत्ते में आपकी हवेली में ही रुके थे। आपकी सुशीला भाभी उन्हें कहीं और उतरने भी न दें। सभा में साथ गई थीं। अखबार में आचार्य विभूति मिश्र का भाषण छपा था। उसके दो वाक्य मुझे अभी याद हैं : 'मैं अंग्रेजों का तिरस्कार नहीं करता क्योंकि मैं हिन्दू हूँ। मैं शोषण और पराधीनता का विरोध करता हूँ क्योंकि मैं अमृतपुत्र हूँ।'

'मैं बड़ा होने पर आचार्यदेव का शिष्य बनूँगा।'

'आप उनके शिष्य हैं ही। आपका पूरा परिवार अपने को उनका शिष्य मानता है। आपके पिताजी जब कभी आते हैं, मिश्रजी का दर्शन किए बिना वापस नहीं जाते। आपकी जन्मकुंडली उन्होंने कृपा करके बना दी है। सामान्य तौर पर वे ऐसा काम नहीं करते हैं, किन्तु आपके पिताजी की विद्वत्ता और भलमनसाहत के लिए पक्षपात है, इसीलिए।'

गिरधारीलाल को पता न था कि उसके भविष्य के प्रति गुरुजन चिंतित हैं। भाँग के नशे में तीसरी मंजिल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

से गिरने की घटना के बाद उसके दुस्साहसी मित्रों का साथ छुड़ाने के उपाय खोजे जा रहे हैं। पर किन मित्रों को दुस्साहसी कहा जाय ? नागर लड़कों को या मारवाड़ियों को ? इसके अलावा, पिछली बार आकर किशोरीलाल जो सलाह-सीख दे गए उसका पालन हो तो कोई चिंता की बात नहीं।

उसे कलकत्ते भेजने का उपाय बुआजी को स्वीकार न था। बिना गिरधारी के वे हवेली की कल्पना भी नहीं कर सकती थीं। उनके मानने के मुताबिक गिरधारी और उसके मित्रों में कोई ऐब नहीं है। विजया का नशा तो शैवों का आभूषण माना जाता है। बनारस में ऐसे तो कितने ही ब्रह्मदेव हैं जो भाँग पीकर गंगा पार करके अपनी पाचनशक्ति बढ़ाते हैं।

15 फरवरी, 1915 के दिन गोपालकृष्ण गोखले का अवसान हुआ। आचार्यदेव की अध्यक्षता में शोकसभा का आयोजन हुआ। मुनीमजी व्यवस्था में लगे हुए थे। हवेली में होनेवाली चर्चाओं के आधार पर बुआजी ने गिरधारी को समझाया कि गोखले और तिलक के विचारों में क्या अंतर है। लोकमान्य तिलक की उदात्त विचारधारा गोखले को क्यों स्वीकार नहीं थी । गांधीजी दक्षिण आफ्रीका से स्वदेश लौटे। गोखले ने उन्हें सलाह दी : देश के कोने-कोने में घूम डालो । यहाँ की जनता के दु:ख-दर्द समझो। तब तक बोलना बंद ! जिन्हें गांधीजी ने इतना आदर दिया उन गोखले की महानता स्वयं स्पष्ट थी । कालिदास के प्रथम नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' के आरंभ में महाकवि ने जिस विवेक की — आत्मप्रतीति की बात की है, उसे मिश्रजी ने स्मरण किया। उसी आत्मप्रतीति ने गोखलेजी को राष्ट्रीय नेता बनाया। उस समय देश में नए-पुराने के बीच भारी खींचतान थी। महाकवि कालिदास के समय में भी ऐसा ही कुछ रहा होगा। जो कुछ पुराना या परंपरागत है वह श्रेष्ठ है ऐसा मानना ही नहीं चाहिए। जो कुछ नया है उसकी उपेक्षा भी उचित नहीं। सत्पुरुषजन स्वविवेक से परख कर ही स्वीकार या अस्वीकार करते हैं जब कि मूढ़ लोग दूसरों की बुद्धि से चलते हैं। गोखलेजी ने परप्रत्यय के बदले आत्मप्रत्यय पर बल दिया। परंपरा को समझकर उसका पालन करने में भी कम साहस की बात नहीं है।

सभा में से लौटकर मुनीमजी अपने घर गए। गिरधारी झूले पर बैठा बुआजी से शोकसभा के बारे में बातें कर रहा था। तभी उसे हवेली का पुस्तकालय देखने का मन हुआ। उसमें रखी हुई पुस्तकों के बारे में बुआजी कुछ बता सकें ऐसा न था। बहुत-सी पुस्तकें शौक से रखी गई थीं तो कुछ बेचने आनेवालों को प्रोत्साहित करने के लिए खरीदी गई थीं। हवेली में सभी आराम कर रहे थे। किसी को क्यों कष्ट दिया जाय ? बुआजी पुस्तकों की आलमारियों की चाबियाँ ले आईं। पहली आलमारी में से ही गिरधारी को 'मालविकाग्निमित्रम्' की प्रति मिल गई। निकाला, श्लोक खोज लिया ।

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
संत: परीक्ष्यान्यतरत् भजन्ते
मूढ: पर प्रत्ययनेन बुद्धि: ॥

दूसरे दिन दो बार श्लोक पढ़ा। पुस्तक आलमारी में रखी। चाबी लौटाते हुए बुआ के सामने प्रसन्न मुद्रा में खड़े श्लोक बोल गया। बुआ की खुशी बढ़ गई। वह शिवमंदिर का चबूतरा धोने जा रही थीं। ऐसा काम गणेशीबुआ नौकरों से नहीं करवातीं। कोई पूछे तो तर्क देती हैं : हम प्रार्थना स्वयं करते हैं या दूसरों से करवाते हैं ? और यह सफाई तो पूजा का ही अंग है।

गिरधारी पानी ला देता था, बुआ मंदिर का चबूतरा धो रही थीं तभी कुछ गिरने की आवाज़ सुनाई पड़ी, दो बार । यह आवाज़ परिचित थी। अवश्य, किसी की गेंद उछलकर हवेली के प्रांगण में पड़ी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पानी भरी बाल्टी बुआ को देकर गिरधारी ने जाकर देखा। अंदाज सही निकला। गेंद उछलकर अहाते के अंदर आई और फिर उछलकर कुएँ में गई। अहाते के बाहर एक बालक लाचार खड़ा है।

अब करना क्या ? बुआ से कहूँगा तो शायद वे उस बच्चे को धमकाएँगी। एक तो उसने गेंद खोई, ऊपर से डाँट । नौकर दिखलाई न पड़ा।

गेंद खोकर बच्चा बैसे ही खड़ा है, चुपचाप, लाचार।

क्या मैं कुएँ में से गेंद बाहर नहीं निकाल सकता ?

मंदिर के चारों ओर की सफाई का काम पूरा करके बुआ गईं तब तक गिरधारी ने हो सके उतने विकल्प सोचे । अंत में एक योजना पर अमल करना आरंभ किया। पानी काढ़नेवाली बाल्टी की रस्सी मजबूत थी। उसका एक सिरा छुही में मजबूती से बाँधकर कुएँ में उतरूँ। धीरजपूर्वक इस योजना पर कार्यारंभ किया ही था कि गणेशीबुआ ने उसके नाम की पुकार की। उनकी आवाज़ में चिंता थी। रस्सी छुई से बाँध रखी थी, खींचकर गांठ पक्की की थी। बोला : यहीं हूँ, अभी आता हूँ ! गिरधारी ने ठंडे कलेजे से उत्तर दिया था किन्तु गणेशीबुआ को चैन आया। आ रहा हूँ यह कहने के बजाय वह रोज की तरह दौड़कर क्यों नहीं आया ? पास आकर देखा। पूछा ? गिरधारी ने गेंद निकालने की योजना समझाई।

'रस्सी हाथ में से सरक जाय और तू कुएँ में गिर जाए तो ?'

नहीं गिरूँगा। रस्सी अच्छी तरह पकड़ूँगा।'

'यह भी हो सकता है कि ऊपर की गाँठ खुल जाए और तू —'

'तो कुएँ के पानी में डुबकी लगाकर ऊपर आऊँगा। तैरूँगा। यदि गंगा के प्रवाह में तैर कर सभी साथियों से आगे निकल जाता हूँ तो घर के कुएँ में नहीं तैर सकूँगा ? इसका पानी तो स्थिर है।'

अरे पगला ! स्थिर पानी गहरा भी होता है। इतना भी नहीं सोचा कि कुएँ में गिरने पर चोट भी लग सकती है। अधिक लगे और बेहोश हो जाओ तो ? एक तुच्छ गेंद के लिए तू इतना खतरा मोल ले रहा है !

गणेशीकौर को गिरधारी की यह दलील छू गई। उसका परमार्थी स्वभाव पसंद आया। पलभर सोचने के बाद गिरधारी ने बाँधी हुई रस्सी का छोर बुआ ने छोड़ दिया, फिर कुछ उलझन के साथ बाल्टी कुएँ में ढील दी। खाली बाल्टी के साथ गेंद खेलने लगी। बाल्टी भर गई, गेंद एक ओर से अंदर आकर दूसरी ओर निकलने लगी। एक क्षण में सूई में एक ओर डोरा डालनेवाली बुआ की धारणा-शक्ति यहाँ सफल नहीं हो रही थी। गिरधारी देखता रहा, फिर आस-पास देखकर पूजा के फूलों की टोकरी ले आया। बाल्टी की जगह टोकरी का उपयोग करने की गिरधारी को सूझी युक्ति द्वारा बुआजी ने गेंद बाहर निकाली। अहाते के उस ओर खड़े बालक को कल्पना भी नहीं थी कि हवेली के कुएँ में गिरी गेंद उसे वापस मिलेगी। दूसरी ओर के ऊँचे मकानवाले तो ऊपर से गालियाँ देते थे। किन्तु यहाँ गिरधारी की आँखों का भाव वह पहचान गया था, इसीलिए लाचारी के नीचे आशा छिपाए खड़ा था। गिरधारी का इशारा समझकर वह दाहिनी ओर से घूमकर दरवाजे से अंदर आया। उसकी मुखमुद्रा देखकर बुआजी को दया आई। पूछा : 'भूखा है ?' लड़का बोला नहीं। बुआजी को लगा कि बालक यहाँ नास्ता करने नहीं बैठेगा। उन्होंने फल दिए। उसकी नन्हीं हथेलियों में फल और गेंद बड़ी मुश्किल से समाए। वह घर जाकर खाएगा, छोटी बहन के साथ। गिरधारी उसे अचरज और आदर से देखता रहा।

गणेशीकौर कुछ दिनों तक यह घटना सबसे छिपाती रहीं। गिरधारी को बाल्टी की जगह फूल की टोकरी काम में लाने का विचार आया, यह देखकर वह निहाल हो गई थीं। भगवान शंकर ने उसे कैसी कुशाग्र बुद्धि और

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

निर्भयता दी है ! उसे कलकत्ता भेजने का विचार उसके फूफा को सूझा तब बुआजी के एकांत आँसुओं ने उन्हें रोक दिया था, यदि कुएँ में उतरने के साहस के बारे में होठ खोलें तो ?

फिर भी कौन जाने किस तरह उस मौलिक दुस्साहस का पता बुजुर्गों को चल गया था और बुआजी भारी दुविधा में पड़ गई थीं।

इसी बीच भइया, जडावलाल और गिरधारी के एक संयुक्त साहस की चर्चा पूरे मुहल्ले में उठी। जिसके कारण कर्मकांडी ब्राह्मणों और नागर ब्राह्मणों के बीच दुश्मनी पैदा हो।

घाट पर पितृतर्पण के लिए आये एक दंपत्ति को दो चालाक पंडे ठग रहे थे। यह देखकर एक शिक्षित प्रवासी ने उनसे बातचीत शुरू की। पंडे उसका जवाब देना नहीं चाहते थे। उस दंपत्ति के पास अब घर लौटने के लिए भाड़ा भी नहीं बचा था। पंडों की नज़र युवती के गले में पड़े मंगलसूत्र पर थी। मंगलसूत्र गिरवी रखवाकर पैसा दिलाने के लिए पैरवी करने हेतु वे तैयार थे। वह प्रवासी ऐसा नहीं होने देना चाहता था।

'आप लोग धार्मिक व्यक्ति होकर भी इस बहन को मंगलसूत्रविहीन करने के लिए तैयार हैं। धिक्कार है आपके स्वार्थ को और धिक्कार है इस बहन के डरपोक पति को !'

जडावलाल यह विवाद पास से सुन रहा था। इसलिए गिरधारी और भइया भी उसमें शामिल हो गये। पंडे युवक को नास्तिक कहकर अपमानित कर रहे थे। उससे ज़रा भी विचलित हुए बिना युवक उस दंपति को और अधिक ठगाये बिना वहाँ से निकल जाने के लिए समझा रहा था। वे बिचारे हतप्रभ खड़े थे। उन्होंने माँ-बाप के मोक्ष के लिए जरूरी कर्मकांड करने हेतु काशी की यात्रा की थी। जो करने की उन्होंने मनौती रखी थी उसमें अंधश्रद्धा है ऐसा वे मानने के लिए तैयार न थे। इतना अधिक खर्च होगा यह अंदाजा उन्हें न था। हम जितना देंगे उतनी दक्षिणा लेकर ब्राह्मण कर्मकांड कर देंगे इस गिनती से वे इन दो पंडों में विश्वास रख बैठे थे। किन्तु ये पंडित तो विधि बढ़ाते गये और बीच-बीच में पैसे रखवाते गये। अब यदि विधि अधूरी रहे तो जो खर्च किया वह भी व्यर्थ ! लाख के साथ सवा लाख ! मंगलसूत्र जायेगा तो दूसरा करा लेंगे। किन्तु संकल्प पूरा न हुआ तो किसे पता फिर काशी आ सकेंगे या नहीं ।

पंडे निश्चिंत होकर मुस्कुरा रहे थे। युवक लाचार होकर वहाँ से चला। एक पंडे ने उसके पीछे थूकते हुए गाली दी। नरक में जायेगा यह नास्तिक तो !

'और आप दोनों स्वर्ग में जायेंगे ? आप तो काशी को नरक बना रहे हैं !' — युवक ने पीछे मुड़कर कहा।

सुनते ही पंडे ने अपनी लाठी हाथ में ले ली।

उसी समय जड़ावलाल को पैरों के पास पड़ा पत्थर दिखाई दिया। वह झुककर पत्थर का उपयोग निश्चित कर हाथ में उठाये उससे पहले तो भइये ने फुर्ती से पत्थर लेकर निशाना लगाया। पंडे की पीठ पर चोट लगी। युवक को छोड़कर वह भइये के पीछे पड़ा। गिरधारी बीच में आया तो दूसरे पंडे ने उसे धक्का दिया। गिरधारी नीचे गिरते-गिरते बचा । पंडा खड़े होकर मित्र को लात मारनेवाला है यह देख जडावलाल ने उसकी धोती पकड़ने की कोशिश की। धोती की खूँट हाथ में आते ही धोती छूट गई। यह देखकर वह दंपति भी हँस पड़े। आगे सरक गया भइया बोला : जानते हो हम कौन हैं ? इस जड़ावलाल के पिता बड़े अफसर हैं, इस गिरधारी के पिता देश के बड़े व्यापारी हैं। और मेरे पिता काशी के बड़े पहलवान हैं। उन्हें यहाँ के गुंडे भी सम्मान देते हैं। उन्हें बुला लाऊँ या इस यजमान की विधि जल्दी पूरी कर देते हो ?

पंडों ने पहले मिली हुई दक्षिणा में ही विधि पूरी कर दी। किन्तु बाद में आय का बँटवारा कर तुरंत इन तीनों बालकों के विषय में उनके अभिभावकों से शिकायत करने के लिए रवाना हुए। ये लड़के तो उस 'नास्तिक'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

युवक से भी अधिक भयजनक साबित हुए।

पंडे 'शिवालय' और जड़ावलाल के यहाँ अपेक्षित प्रभाव डाल सके। भइया के पिता घर पर न थे इसलिए पंडों ने अड़ोसी-पड़ोसी को अपनी फरियाद सुनानी शुरू की। ब्राह्मणों को मान देने का आदती किसन अहीर थोड़ी देर मौन रहा किन्तु बाद में एक पंडे को पहचान गया। मालिक के घर की बदनामी करने के लिए आये व्यक्तियों को जबड़ातोड़ जवाब देने के लिए वह सामने आया।

'ब्राह्मण देवता, हम कल मिले थे।'

'मिले होंगे। तो क्या है ?'

'पूछिये कहाँ मिले थे ?'

पंडे के चेहरे का नूर उड़ गया। उसने मुँह लटकाये कहा :

'और कहाँ, घाट पर !'

'दिन में घाट पर, रात को ? मैनाबाई के यहाँ।'

'अरे हट; बदनामी करता है ब्राह्मण की ?'

'तो कहो जनेऊ की सौगंध खाकर कि वहाँ नहीं आये थे।'

'हाँ, भई हाँ, आया था, दक्षिणा लेने।'

'लेने या देने ?'

वार्तालाप यहाँ तक पहुँचा ही था कि कृष्णाराम का आगमन हुआ। एक क्षण में वह सब कुछ समझ गया, बोला :

'किसन तुम्हारे भाई का वह साँड़ गली के बच्चों को खेलने नहीं देता। जा, जाकर यहाँ ले आ न। इन भूदेवों को भेंट दें।' भूदेव समझ गये। उन मरकहे साँड़ों की कीर्ति उन्होंने सुन रखी थी। वे लगभग शाप की भाषा बोलते हुए भइये के दरवाजे के बाहर निकल गये।

किसन को अब ख्याल आया कि उन भूदेवों को उसने मैनाबाई के यहाँ देखा था यह घोषित करके कितनी गंभीर गलती की है ! मालिक हाजिर होते तो वे इन पंडों के साथ ही मुझे भी विदा कर देते।

शब्दार्थ-टिप्पण

वंदन नमन **मुताबिक** अनुसार **लाचारी** विवशता **विवेक** सद्बुद्धि, भले-बुरे का ज्ञान **अहाता** चारों ओर से घिरा हुआ स्थान, चार दीवारी के भीतर की खुली जगह **दुविधा** असमंजस **सौगंध** शपथ **भूदेव** ब्राह्मण **कीर्ति** यश **विस्मयविमूढ़** आश्चर्य से हतप्रभ हो जाना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) गिरधारी बुआजी का विशेष आशिष किस प्रकार से प्राप्त करता है ?

(2) गिरधारी को गुरुजी के यहाँ क्यों जाना था ?

(3) बुआ ने दान के कितने प्रकार बताए ? कौन-कौन से ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) आचार्य के यहाँ अंग्रेज अधिकारी क्यों आता था ?
(5) अंग्रेज अधिकारी ने गिरधारी के परिवार के बारे में क्या सुन रखा था ?
(6) बुआ अपने नौकर से शिवमंदिर का चबूतरा क्यों नहीं धुलवाती थीं ?
(7) पहली आलमारी में से गिरधारी को कौन-सी पुस्तक मिली ?
(8) आचार्य विभूति मिश्र किस तिथि को दक्षिणा स्वीकार करते थे ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) आचार्य विभूति मिश्र का घर कैसा था ?
(2) मौखिक परंपरा से शिक्षा देने का क्या अभिप्राय है ?
(3) वस्तु की दृष्टि से दान के कितने और कौन-कौन से प्रकार हैं ?
(4) सात्विक दान किसे कहा गया है ?
(5) आचार्य के पास जाने से पहले बुआ ने गिरधारी को क्या हिदायत दी ?
(6) आचार्य ने ऐसा क्यों कहा कि लड़का बड़ों जैसा व्यवहार कर रहा है ?
(7) आशीर्वाद देते समय आचार्य ने गिरधारी से क्या कहा ?
(8) मुनीमजी को आचार्य के भाषण के कौन-से वाक्य आज भी याद हैं ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तार से उत्तर लिखिए :

(1) पितृतर्पण के लिए आया दंपति पंडों के चंगुल में किस प्रकार फँस गया ?
(2) पंडों द्वारा बालकों के अभिभावकों को शिकायत करने का क्या परिणाम आया ?
(3) कुएँ में से गेंद निकालने के लिए गिरधारी ने क्या योजना बनाई ?
(4) अंततः कुएँ में से गेंद किस प्रकार बाहर निकाली गई ?

4. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) बेटा, दान की बात किसी से नहीं कही जाती।
(2) संसार के महाभय से मुक्त होने का उपदेश ही अभयदान है।
(3) स्वकर्म से यशस्वी बनो ! राष्ट्र और संस्कृति की सेवा के एक से बढ़कर एक अवसर प्राप्त करते रहो।

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

अशिष्ट, उत्साही, कीर्ति, पक्ष, सभ्य।

6. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बनाइए :

नम्रता, अशिष्टता, कोमलता, अध्यक्षता, विवशता।

7. निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द दीजिए :

(1) जानने की इच्छा रखनेवाला
(2) धर्म का उपदेश देनेवाला
(3) कुश के समान तेज बुद्धिवाला

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :

समादर, संयुक्त, संसार, शिवालय, उल्लेख, शुभेच्छा, पुस्तकालय।

9. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करके समास-भेद बताइए :

चरणरज, साष्टांग, शिवालय, गृहकार्य, गिरधारी, सस्नेह, मुखमुद्रा, पीताम्बर।

10. उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) पंडे के चेहरे का .... उड़ गया।

(A) नूर (B) होश (C) रंग (D) भाव

(2) जो कुछ नया है उसकी .... भी उचित नहीं।

(A) अपेक्षा (B) उपेक्षा (C) प्रशंसा (D) व्याख्या

(3) मंगलसूत्र .... पैसा दिलाने के लिए पैरवी करने हेतु वे तैयार थे।

(A) तुड़वाकर (B) गिरवी रखवाकर (C) बिकवाकर (D) खरीदकर

(4) हम अपना कर्त्तव्य समझकर योग्य व्यक्ति को गुप्तदान करें तभी ....।

(A) वह सार्थक होगा (B) वह सात्विक होगा (C) वह सफल होगा (D) वह सच्चा होगा

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- अपने परिवार में 'गुरुपूर्णिमा' पर्व की परंपरा एवं विशेषता की चर्चा कीजिए।
- 'अपने आदर्श गुरु' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- वर्ग में 'गुरुपूर्णिमा' का महत्त्व समझाएँ।
- 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े .... गोविंद दियो बताय' दोहे का भाव समझाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

29 ग़ज़ल

ज्ञानप्रकाश विवेक

(जन्म : सन् 1949 ई.)

इनका जन्म हरियाणा के बहादुरगढ़ में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बहादुरगढ़ में सम्पन्न हुई। ओरिएंटल इंशोरेंस कम्पन्नी से स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति के बाद आप स्वतंत्र लेखन से जुड़ गये। 'पिताजी चुप रहते हैं', 'शिकारगाह', 'मुसाफिरखाना' और 'सेवानगर कहाँ है' इनके विशेष रूप से चर्चित कहानी संग्रह है। 'गली नम्बर तेरह', 'अस्तित्व', 'दिल्ली दरवाजा' तथा 'आखेट' इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'प्यास की खुशबू', 'धूप के हस्ताक्षर', 'आँखों में आसमान', 'इस मुश्किल वक्त में' तथा 'गुफ्तगू अवाम से' इनके ग़ज़ल संग्रह हैं।

ग़ज़ल बिम्ब और प्रतीकों की भाषा है। किसी भी बात को सीधे कह देना ग़ज़ल का मिजाज नहीं है। प्रस्तुत ग़ज़ल में पत्थर के माध्यम से अलग-अलग दृश्य प्रस्तुत किये गये हैं। स्वार्थी, लालची और मतलब-परस्त लोगों के बीच रहने का यह अर्थ नहीं है कि हम भी उन्हीं की तरह हो जाएँ। सन्नाटे की अपेक्षा संवाद अच्छा होता है, क्योंकि संवाद से ही मन की परत खुलती है, समस्याओं के समाधान मिलते हैं।

अब तो हर हाथ में पत्थर है, संभालो पत्थर
मैंने पहले भी कहा था न उछालो पत्थर

हमने माना कि पत्थर का शहर है लेकिन
ये जरूरी तो नहीं, खुद को बना लो पत्थर

देखना, आपसे संवाद करेगा पानी
आप गुमसुम पड़े तालाब में डालो पत्थर

गिर पड़े हैं यहाँ पहले भी परिन्दे कितने
इतने ऊँचे न हवाओं में उछालो पत्थर

क्या पता शाप से पीड़ित हो अहिल्या कोई
रास्ते में जो पड़ा है, वो उठा लो पत्थर

न मिली आग तो पत्थर ही रगड़ने होंगे
इसलिए आप से कहता हूँ बचा लो पत्थर।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ-टिप्पण

खुद स्वयं **संवाद** वार्तालाप **गुमसुम** चुपचाप **परिन्दे** पक्षी **पीड़ित** दु:खी **अहिल्या** गौतम ऋषि की पत्नी।

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) पत्थर किनके हाथों में है ?

(2) पत्थर के शहर में रहनेवाले लोगों के विषय में शायर को क्या भय है ?

(3) पत्थर युग में आग कैसे पैदा हुई ?

(4) अहिल्या किसके अभिशाप से पीड़ित थी ?

2. प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) कवि पत्थर ऊँचे उछालने से क्यों मना कर रहा है ?

(2) शायर के अनुसार पानी आपसे कब संवाद करेगा ?

(3) कवि पत्थरों को बचाकर रखने के लिए क्यों कहता है ?

3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-सात वाक्यों में लिखिए :

(1) 'रास्ते में पड़े पत्थर उठाने के पीछे' कवि का आशय स्पष्ट कीजिए।

(2) मानव पत्थरों का क्या-क्या उपयोग करता है, समझाइए।

4. काव्य-पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

''क्या पता शाप से पीड़ित हो अहिल्या कोई।
रास्ते में जो पड़ा है वो उठा ले पत्थर।''

5. सही विकल्प चुनकर काव्य-पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए :

(1) देखना आपसे संवाद करेगा ....।

(A) पानी (B) ज्ञानी (C) दानी (D) ध्यानी

(2) मैंने पहले भी कहा था न उछालो ....।

(A) पत्थर (B) कंकर (C) कीचड (D) धूल

(3) हमने माना कि ये पत्थर का .... है लेकिन।

(A) शहर (B) नगर (C) डगर (D) मगर

(4) गिर पड़े हैं यहाँ पहले भी .... कितने।

(A) परिन्दे (B) दरिन्दे (C) चरिन्दे (D) कारन्दे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. समानार्थी शब्द लिखिए :

हाथ, पत्थर, परिन्दे, तालाब, हवा, रास्ता।

7. वर्तनी सुधारकर लिखिए :

लेकीन, जरुरि, पिडित, अहील्या, गूमसूम।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- ग़ज़ल का कक्षा में सस्वर पाठ करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- छात्रों से अन्य ग़ज़लों का संकलन करवायें।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

30 नदी बहती रहे

भगवतीशरण सिंह

(जन्म : सन् 1919 ई.; निधन : 1988 ई.)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी ज़िले में हुआ था। इनकी उच्च शिक्षा वाराणसी और इलाहाबाद में हुई। इन्होंने उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और भारत सरकार की केंद्रीय सेवा में अनेक उच्च पदों पर काम किया। तमाम पदों पर काम करते हुए इन्होंने अपनेआपको साहित्य से जोड़े रखा। इन्होंने सन् 1938 ई. से कहानी और निबंधों से अपने लेखन का आरंभ किया। वे हमेशा हिंदी साहित्य की नवीनतम प्रवृत्तियों से जुड़े रहे। इनकी लगभग बीस पुस्तकें प्रकाश में आ चुकी हैं। 'अपराजिता', 'जंगल और जानवर' जैसे कहानी-संग्रह, 'मानव के मूल में साहित्य : पहचान और पहुँच' जैसा निबंध-संग्रह और 'हिमनील' और 'वन पाहुन' जैसी पर्यावरण से संबंधित पुस्तकें विशेष उल्लेखनीय हैं।

'नदी बहती रहे'निबंध उनकी 'वन पाहुन' शीर्षक पुस्तक से लिया गया है। इस निबंध में उन्होंने यह चिंता प्रकट की है कि आज का आदमी 'वनस्पतियों और पानी के रिश्तों को भूलकर अपने को भी अकेला बना रहा है और उनके आपसी संबंधों का भी विच्छेद करता जा रहा है। गंगा, यमुना, नर्मदा और कावेरी आज भी भारत में बह रही हैं, पर अब वे मोक्षदायिनी नहीं रह गयी हैं।' 'जल-प्रदूषण' को लेकर भी लेखक की चिंता प्रकट हुई है। वे जंगल को बचाने पर इसलिए भी ज़ोर देते हैं कि वो 'भूमिगत जल' को बचाकर नदियों को उथली होने से बचाते हैं।

भारत नदियों का देश रहा है। इसलिए नहीं कि इस देश में नदियों की ही अधिकता है बल्कि इसलिए कि इस देश में नदियों का विशेषरूप से सम्मान हुआ है। वे हमारे जीवन में बहुत महत्त्व रखती रही हैं। उनसे हमारा आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन समृद्ध हुआ है। आज वे अपना प्राचीन महत्त्व खोती जा रही हैं। प्राचीन ग्रंथों में विशेषकर वेदों, ब्राह्मण ग्रंथों और पुराणों में हमारे वनों, पर्वतों और नदियों के बारे में प्रचुर सामग्री मिलती है।

नदियों को देवियों का स्वरूप प्रदान किया गया। हर संकल्प में जिस 'जंबूद्वीपे भरत-खंडे' का उच्चारण प्रत्येक भारतीय सुनता रहता है, वह नदियों का यह आवाहन भी सुनता रहता है-

'गंगे यमुने चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे-सिंधु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।'

इन नामों को सुनने वाला भारतीय न केवल सात प्रमुख नदियों का नाम जानता रहता है, वरन उसे भारत की एकता का भी ज्ञान होता रहता है।

जिस प्रकार वनों का वृक्षों से, नदियों का जल से संबंध है, उसी प्रकार नदियों का वनों से भी संबंध मानना चाहिए । वनों के रहते नदियाँ स्वत: फूट पड़ती हैं, प्रवाहित होती रहती हैं। वन नहीं रहेंगे तो नदियाँ नहीं रहेंगी। नदियों के न रहने पर हमारी संस्कृति विच्छिन्न हो जाएगी। हमारा जीवन-स्रोत ही सूख जाएगा। अत: वनों की आवश्यकता और महत्ता को अस्वीकार करके न तो हम आर्थिक उन्नति के सोपान गढ़ सकते हैं और न स्वास्थ्य और सुख की कल्पना ही कर सकते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आदमी की ज़िंदगी अपने-आप में बहुत ही अकेली और नीरस होती है। आदमी-आदमी के रिश्ते-नाते उसका बहुत दूर तक साथ नहीं देते। पर जब वह इनसे आगे बढ़कर एक व्यापक संबंध कायम करने की कोशिश करता है, तो उसके साथ वन, पर्वत, नदी आदि सब चल पड़ते हैं। तब वह अकेला नहीं रह जाता। आज वह वनस्पतियों और पानी के रिश्ते को भूलकर अपने को भी अकेला बना रहा है और उनके आपसी संबंधों का भी विच्छेद करता जा रहा है। गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा और कावेरी आज भी भारत में बह रही हैं पर अब वे मोक्षदायिनी नहीं रह गई हैं ।

गंगा की उन्नीस प्रमुख सहायक नदियाँ बताई गई हैं। गंगा के ऊपरी प्रवाह में अलकनंदा, मंदाकिनी के जल से आपूरित होकर इसमें मिलती है तत्पश्चात रामगंगा, गोमती, धूतपापा, तमसा, सरयू (घाघरा), गंडकी, कमला, कौशिकी (कोसी), शोण आदि नदियाँ अपने जल में नागर क्षेत्रों का मल एकत्र करती हुई, बड़े-बड़े कल-कारखानों का उच्छिष्ट बटोरती हल्दिया के पास सागर संगम करती हैं। भागीरथी और पद्मा के अतिरिक्त उसमें कई अन्य नदियों का भी जल मिलता है। फिर भी पानी के बहाव की कमी के कारण वहाँ इसमें बड़े-बड़े सिकतामेरु बन जाते हैं जो जहाज़ों को आने से रोकते रहते हैं। जब इस पुण्यतोया नदी का यह हाल हो रहा है तो औरों का क्या कहा जाए।

गंगा के डेल्टा के समुद्रांत छोर ने वनाच्छादित एक विस्तृत दलदली क्षेत्र को घेर रखा है जिसे सुंदरवन कहा जाता है। इस सुंदरवन की दर्दनाक दशा की खबरें आए दिन अखबारों में छपती रहती हैं। अब सुंदरवन भी सुंदर नहीं रह गया। गंगा का केवल पौराणिक महत्त्व ही नहीं है। उसे आज के संदर्भ में भी देखना होगा।

यही हाल यमुना का भी है। यह गंगा की पहली तथा बड़ी पश्चिमी सहायक नदी है। यह हिमालय पर्वतमाला में कामेत पर्वत के आगे से निकलती है।

ज़रा-सा भी ध्यान दिया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सारा भारत आज भी प्रमुख नदियों के समूह में बँटा हुआ है। मध्य देश में गंगा-यमुना समूह, पूर्व में ब्रह्मपुत्र-मेघना समूह, पश्चिम में नर्मदा-ताप्ती समूह, दक्षिण-पूर्व (उड़ीसा) में महानदी समूह हैं। दक्षिण भारत में कृष्णा नदी-समूह और कावेरी नदी-समूह। सिंधु नदी-समूह की बात अब नहीं की जा सकती। इसी प्रकार ब्रह्मपुत्र-मेघना समूह से सिंचित अधिकांश क्षेत्र अब बंगलादेश ही है। पर सरस्वती-दृषद्वती समूह से अनुप्राणित भू-भाग अभी भी भारत में ही हैं। कुछ नदियों के विस्तृत विवरण के सहारे प्राचीन भारत के इतिहास पर विशेषकर उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है। इन नदियों के किनारे बसे नगर या तो विशाल एवं शक्तिशाली राज्यों की राजधानियाँ थे अथवा शिक्षा और व्यवसाय के केंद्र। मंदिरों की भी स्थापना इनके किनारे हुई। इस कारण ये हमारी स्थापत्यकला की भी स्मृतियाँ जगाती रहती हैं। इन मंदिरों का प्रश्रय पाकर जिस प्रकार संगीत, नृत्य और नाट्य-कला की सृष्टि और संवर्धन हुआ उसमें भी इन नदियों का महत्त्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

भारतीय-भू-भौगोलिक स्थिति को ठीक-ठीक समझने के लिए यहाँ के पर्वत-समूहों और नदी-समूहों का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है। इन पर्वत और नदी-समूहों के परिप्रेक्ष्य में भी भारत का पूरा चित्र बनता ही नहीं, जब तक उसकी वनराजि को सम्मिलित न किया जाए। कालिदास के समय तक भी इस देश का अधिकांश भाग जंगलों से आवृत्त था। प्राप्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि छठी शताब्दी ईसापूर्व तक इस देश में 'स्वयंजात वन' की स्थिति बनी रही । इसके उदाहरणस्वरूप कुरुप्रदेश के कुरुजंगल वन्य क्षेत्र को उपस्थित किया जा सकता है। साकेत में अंजनवन तथा वैशाली और कपिलवस्तु में महावन प्राकृतिक (स्वयंजात) वन थे। वैशाली नगर के बाहर महावन निरंतर हिमालय तक फैला हुआ था। कपिलवस्तु के महावन की भी यही दशा थी। कौशांबी से कुछ दूर और श्रावस्ती के तट में पारिलेण्यकवन था, जिसमें हाथी रहते थे। रोहिणी नदी के तट पर स्थित लुंबिनी वन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

भी एक प्राकृतिक जंगल था। इस प्रकार यह देश नदियों, पर्वतों और वनों से भरा-पूरा संसार के देशों में अतुलनीय था। पर मानव आबादी कम थी।

आज स्थिति कुछ दूसरी ही है। भारत की विशाल और बढ़ रही आबादी के लिए पानी की माँग, घरेलू उपयोग, कृषि-उद्योग, मछली-पालन उद्योग, नौवहन, विद्युत उत्पादन के लिए पूरी की जानी है। इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि सारे देश में जल-प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस संबंध में दूषित पानी से उत्पन्न होनेवाली छूत की बीमारियों, जैसे - हैज़ा, पीलिया, टाइफ़ाइड तथा मछलियों और कृषि उपज को हो रही हानि का उल्लेख किया जा सकता है। उत्तर में डल झील से लेकर दक्षिण में पेरियार और यालियार नदियों तक, पूरब में दामोदर और हुगली से लेकर पश्चिम में थाणा की सँकरी खाड़ियों तक, सब जगह जल-प्रदूषण की स्थिति चिंता का विषय बनी हुई है। यहाँ तक कि गंगा जैसी बारह-मासी नदियाँ भी जल-प्रदूषण से बहुत अधिक ग्रस्त हैं। मानव बस्तियों और उद्योगों का गंदा पानी सीधे जल-प्रवाह में मिल जाता है जो अधिकांश रूप से उपयोग करने लायक नहीं रह जाता। रोज़ाना जिस प्रकार गंदा पानी छोड़ा जा रहा है उससे प्राकृतिक जल, जैसे - नदियों, खाड़ियों और समुद्र तटवर्ती पानी को खतरा पैदा हो गया है। अत: ऐसी स्थिति में न कश्मीर ही स्वर्ग रह गया और न काशी ही तीन लोक से न्यारी रह गई। जब गंगा गंगा न रही, तब काशी की क्या स्थिति रहेगी ?

इस देश की नदियाँ ही इसकी श्री रही हैं। जिस देश की 80 प्रतिशत जनसंख्या नदियों के घाटी-क्षेत्र में निवास कर रही हो, उसे जब पुराणों में असंख्य नदियों का देश कहा गया तो अतिशयोक्ति नहीं थी। जब यह तथ्य सामने आ गया है तो आवश्यकता इस बात की है कि प्रदेशों के कृषि-विभाग और वन-विभाग तथा सिंचाई आदि विभागों की अलग-अलग अमलदारी समाप्त कर दी जाए। हर प्रदेश में जलागम-क्षेत्र अधिकरणों की स्थापना करके विकास की योजनाएँ एक ही अधिकरण के अधीन इस प्रकार समन्वित करके चलाई जाएँ कि देश के स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि की समग्रता सदा आँख के सामने बनी रहे और ऐसा न होने पाए कि एक ही शरीर का एक हाथ दूसरे हाथ को काटता रहे और शरीर भी नष्ट होता रहे। ज़ाहिर है कि वनों और नदियों का बड़ा घनिष्ठ संबंध है और वन नदियों को न केवल उथली होने से बचाते हैं वरन भूमिगत जल को सुरक्षित रखकर नदी के पानी की कमी को भी पूरा करते रहते हैं। भारत में वनों से आच्छादित भूमि का अभाव दिनों-दिन तेज़ी से बढ़ता जा रहा है।

भारत में वन्य पशुओं और पक्षियों, वनस्पतियों और जलाशयों की विविधता और बहुलता को सभी मानते रहे हैं। इस संबंध में योजना आयोग का उद्धरण आवश्यक जान पड़ता है - "भारत पशु तथा प्राणी-संपदा से भरपूर होने के कारण प्राकृतिक जीवित संसाधनों की विपुल विविधता से संपन्न देश है,. जिस पर लाखों व्यक्ति अपने निर्वाह के लिए आश्रित हैं तथा जलभूमि के उचित प्रबंध द्वारा जहाँ देश की मूलभूत जैविक उत्पादकता का संरक्षण पारिस्थितिकीय दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, वहाँ इसकी आनुवंशिक विविधता की रक्षा तथा उसकी प्रजातियों और परिस्थितिकीय व्यवस्था का संरक्षण केवल उन्हें लगातार उपयोग में लाने की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि हमारे लोगों के भावी अस्तित्व तथा विकास के लिए भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। निरंतर तेज़ी से बढ़ती जा रही जनसंख्या के दबाव के कारण लुप्त होती जा रही प्रजातियों तथा पारिस्थितिकीय व्यवस्थाओं के फलस्वरूप तथा प्राकृतिक पर्यावरण के योजनाविहीन विकास के कारण हमारी प्रजातियों के प्राकृतिक आवास शीघ्रता से समाप्त अथवा कुछ बदलते जा रहे हैं।"

चौड़ी पत्ती वाले वृक्षों के स्वयंजात वन नष्ट हो गए हैं, जहाँ-जहाँ भी दुर्लभ जाति के पशु-पक्षी और वनस्पतियाँ मिलती हैं वे सब प्राय: पहाड़ी क्षेत्र हैं और बढ़ती हुई आबादी के कारण चूँकि इनका नाश रोकना संभव नहीं है अत: इनकी किस्मों की रक्षा अब राष्ट्रीय उद्यानों में ही संभव है। साथ ही इस बात की आवश्यकता है कि वन विभाग स्वयंजात वनों में उगनेवाली वनस्पतियों को वनीकरण की नीति में विशेष स्थान दे, खासकर ऐसी दशा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

में जबकि यह स्वीकार कर लिया गया है कि वनों का मुख्य उद्देश्य राजस्व में वृद्धि करना नहीं है। वन जिस समृद्धि की रक्षा करते रहे हैं और जो वह कर सकते हैं, उसके बारे में योजना आयोग का मत स्पष्ट है : ''वे हमारे लोगों के भावी अस्तित्व तथा विकास के लिए भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।''

ऊपर के उद्धरणों से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि वनों, पर्वतों और नदियों का बहुत नज़दीकी रिश्ता है। ये तीनों ही एक साथ रहते हैं और एक साथ वन और नदियाँ मैदानों में उतरती हैं। लेकिन जिस प्रकार की वन-व्यवस्था आज है उसमें न तो वनस्पतियों, न वन्य पशुओं और न ही नदियों की रक्षा संभव है। वनों का उपयोग उद्योग और व्यापार में होगा। इससे विरत नहीं हुआ जा सकता। वनों की उपयोगिता मानव की समग्र समृद्धि के लिए है। समृद्धि की इस समग्रता में उसकी आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक समृद्धियाँ शामिल हैं।

देशी पौधों की बात करना और उनकी पहचान में घूमना अब पागलपन में गिना जाने लगा है। पढ़े-लिखे और तथाकथित शिक्षित लोग ऐसी बातों को उपवासास्पद मानते हैं और उन पर बात करना समय का अपव्यय मानते हैं। अब साहित्य में भी उनकी चर्चा नहीं आती। शाल, वेणु, धव, अश्वत्थ, तिंदुक, इंगुद, पलाश, अर्जुन, अरिष्ट, तिनिश, लोध, पद्मक, प्रियाल, ताल, पुन्नाग, पृक्ष आदि नाम और उनकी पहचान सब जगह से खो गई। वनस्पतिशास्त्र की किताबों में भी अगर ये वृक्ष हैं तो अपने वैज्ञानिक नामों से ही जाने जा सकते हैं। इनके देशज अथवा संस्कृत नाम तो समाप्त हो गए। स्वयंजात वनों के न रहने पर वनस्पतियों का वह भंडार समाप्त हो गया।

आज इसकी पहले से कहीं अधिक ज़रूरत है कि हम अपनी ज़मीन को पहचानें, उस पर वनस्पतियों की रक्षा करें और नदियों से स्वच्छ जल प्रवाहित होने दें।

शब्दार्थ-टिप्पण

प्रचुर अधिक मात्रा में **सिकतामेरु** रेत का टीला **उच्छिष्ट** परित्यक्त, जूठन **प्रश्रय** आश्रयस्थान, सहारा, आधार **संवर्धन** वृद्धि **वनराजि** वन की श्रेणी, वन के बीच की पगडंडी **आवृत्त** घिरा हुआ, ढँका हुआ **राजस्व** राज्य की आय **विच्छिन्न** नष्ट, छिन्न-भिन्न **श्री** शोभा, लक्ष्मी।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) भारत नदियों का देश क्यों कहा जाता है ?

(2) भारत की प्रमुख सात नदियाँ कौन-कौन-सी हैं ?

(3) मानव का जीवन-स्रोत किसे माना जाता है ?

(4) नदियों में रेत के टीले क्यों बन जाते हैं ?

(5) सुंदरवन किसे कहाँ पर स्थित है ?

(6) गंगा की सबसे बड़ी सहायक नदी कौन-सी है ?

(7) यमुना नदी कहाँ से निकलती है ?

(8) लुंबिनी वन कहाँ पर स्थित है ?

(9) जल-प्रदूषण से कौन-कौन सी बीमारियाँ फैलती हैं ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) भारत में नदियों का आवाहन किन शब्दों में किया जाता है ?

(2) गंगा का जल पीने योग्य क्यों नहीं रहा ?

(3) जंगलों से नदियों को क्या-क्या लाभ होते हैं ?

(4) नदियों के पानी का उपयोग किन कार्यों में किया जाता है ?

(5) किस वन में हाथी रहते थे ? वह कहाँ पर स्थित है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए :

(1) भारत किन-किन प्रमुख नदी-समूहों में बँटा हुआ है ?

(2) ई.पू. छठी शताब्दी के प्राकृतिक वनों का वर्णन कीजिए।

(3) प्राकृतिक संसाधनों के बारे में योजना-आयोग का उदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(4) नदियों और वनों के विकास के लिए सरकार को क्या प्रयत्न करने चाहिए ?

4. विरोधी शब्द लिखिए :

माँग, उथली, एकता, प्राकृतिक, सम्पन्न।

5. संधि-विच्छेद करके लिखिए :

उल्लेख, अतिशयोक्ति, वनाच्छादित, अध्ययन, अत्यधिक।

6. सविग्रह समास का नाम लिखिए :

महावन, भूमिगत, मोक्षदायिनी।

7. विशेषण शब्द बनाकर लिखिए :

उत्पादकता, विविधता, प्रकृति, भूगोल।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- "नदी की उपयोगिता" विषय पर एक निबंध लिखिए।
- "वृक्षारोपण कार्यक्रम" का आयोजन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- शिक्षक "वनीकरण का महत्त्व" की चर्चा करें।
- "जल ही जीवन है" - इस सूत्र को समझाएँ।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

31 प्रेमपत्र

बद्री नारायण
(जन्म : सन् 1965 ई.)

इनका जन्म बिहार के भोजपुर ज़िला में हुआ था। ये समकालीन हिंदी कविता के एक महत्वपूर्ण कवि गिने जाते हैं। 'सच सुने हुए कई दिन हुए', 'शब्दपदीयम' और 'ख़ुदाई में हिंसा' इनके चर्चित काव्य-संग्रह हैं। कविता को लेकर इन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें से 'भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार', 'शमशेर सम्मान' और 'केदार सम्मान' काफ़ी महत्वपूर्ण हैं।

इनकी कविताओं में 'प्रेमपत्र' नाम की कविता सर्वाधिक चर्चित कही जा सकती है। कविता के अतिरिक्त सामाजिक इतिहास के क्षेत्र में भी इन्होंने व्यापक स्तर पर काम किया है। इस संदर्भ में इनकी संपादित कृतियाँ 'दलित वैचारिकी की दिशाएँ', 'प्रयाग : अतीत, वर्तमान और भविष्य' तथा 'साहित्य और सामाजिक परिवर्तन' काफ़ी उल्लेखनीय हैं।

यहाँ संकलित इस कविता में कवि हर हाल में प्रेम को बचाए रखने का संकल्प व्यक्त कर रहा है। कवि ने कविता में प्रेत, गिद्ध, चोर, जुआरी, ऋषि, बंदिशें, बारिश, आग साँप, झींगुर, कीड़े, मदीना, रोग आदि प्रतीकों के माध्यम से प्रेम पर आनेवाले संकटों का मार्मिक वर्णन किया है। अंत में कवि निपट अकेला होकर भी प्रेम को बचाये रखने की इच्छा व्यक्त करता है।

प्रेत आयेगा
किताब से निकाल ले जायेगा प्रेमपत्र
गिद्ध उसे पहाड़ पर नोच-नोच खायेगा

चोर आयेगा तो प्रेमपत्र चुरायेगा
जुआरी प्रेमपत्र पर दाँव लगायेगा
ऋषि आयेंगे तो दान में माँगेंगे प्रेमपत्र

बारिश आयेगी तो
प्रेमपत्र ही गलायेगी
आग आयेगी तो जलायेगी प्रेमपत्र
बंदिशें प्रेमपत्र पर ही लगायी जायेंगी

साँप आयेगा तो डँसेगा प्रेमपत्र
झींगुर आयेंगे तो चाटेंगे प्रेमपत्र
कीड़े प्रेमपत्र ही काटेंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रलय के दिनों में
सप्तर्षि, मछली और मनु
सब वेद बचायेंगे
कोई नहीं बचायेगा प्रेमपत्र

कोई रोम बचायेगा
कोई मदीना
कोई चाँदी बचायेगा, कोई सोना

मै निपट अकेला
कैसे बचाऊँगा तुम्हारा प्रेमपत्र !

शब्दार्थ-टिप्पण

प्रेत भूत **जुआरी** जुआ खेलने वाला **बंदिश** पाबंदी **निपट** बिलकुल, केवल **सप्तर्षि** सात ऋषियों का समूह **झींगुर** एक बरसाती छोटा कीड़ा जो झीं-झीं की आवाज करता है **रोम** इटली की राजधानी, यह नगरी अपनी प्राचीन सभ्यता एवं रोमन संस्कृति के लिए प्रसिद्ध रही है।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) किताब से निकालकर प्रेमपत्र को कौन ले जाएगा ?

(2) गिद्ध प्रेमपत्र का क्या करेगा ?

(3) प्रेमपत्र पर दाँव कौन लगायेगा ?

(4) प्रेमपत्र पर बारिस का क्या प्रभाव पड़ेगा ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) प्रेम को लेकर कवि चिंतित क्यों है ?

(2) प्रलय में वेद को बचाने के संबंध में भारतीय मान्यता क्या है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-सात वाक्यों में लिखिए :

(1) प्रेम पर बंदिशें क्यों लगाई जाएँगी ?

(2) भारत में विभिन्न धर्मों के लोग प्रेमपत्र को बचाने में क्यों असमर्थ हैं ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) कोई रोम बचायेगा,
कोई मदीना
कोई चाँदी बचायेगा,
कोई सोना

(2) सब वेद बचायेंगे
कोई नहीं बचायेगा प्रेमपत्र

5. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पहाड़, साँप, बारिश, प्रेम।

6. विलोम शब्द लिखिए :

प्रेम, दिन, जलाना, आस्तिक।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- भारत में विभिन्न धर्मों के लोग निवास करते हैं, उनके धार्मिक स्थल और तीर्थ स्थानों की सूची बनाइए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- मनुष्य की उत्पत्ति और विकास की भारतीय मान्यता को विद्यार्थियों के समक्ष स्पष्ट करें।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1 भाषा–विश्लेषण (व्याकरण)

(1) संधि

नौवीं कक्षा में हमने संधि, स्वर संधि तथा उसके भेदों का अध्ययन किया है। इस कक्षा में हम व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

व्यंजन संधि :

किसी व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन के आने से होनेवाले परिवर्तन को व्यंजन संधि कहते हैं।

व्यंजन संधि के नियम :

1. यदि प्रथम शब्द के अंत में अघोष व्यंजन (वर्ग के प्रथम दो वर्ण) हो और दूसरे शब्द के आरंभ में सघोष व्यंजन (वर्ग के अंतिम तीन वर्ण) हो, तो पहले शब्द के अंत में आए अघोष व्यंजन के स्थान पर उसी वर्ग का सघोष व्यंजन हो जाता है; अर्थात् 'क्' का 'ग्', 'ट्' का 'ड्', 'त्' का 'द्' और 'प्' का 'ब' हो जाता है।

   उदाहरण :

   दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग् + ग = ग्ग)

   दिक् + अंबर = दिगंबर (क् + अ = ग)

   सत् + गति = सद्गति (त् + ग = द् + ग)

   षट् + आनन = षडानन (ट् + आ = डा)

   सत् + आचार = सदाचार (त् + आ = दा)

2. वर्गों के प्रथम वर्ण के बाद 'न्' या 'म्' वर्ण आने पर उनके स्थान पर क्रमशः उसी वर्ण का पंचमाक्षर आता है । जैसे –

   वाक् + मय = वाङ्मय　　सत् + मार्ग = सन्मार्ग

   जगत् + नाथ = जगन्नाथ　　उत् + नत = उन्नत

3. 'त्' या 'द्' के बाद यदि 'ज्' हो, तो त्/द् 'ज' में बदल जाता है; जैसे –

   सत् + जन = सज्जन

   उत् + ज्वल = उज्ज्वल

4. 'त्' के बाद यदि 'च' हो तो 'त्' का 'च्' हो जाता है; जैसे –

   उत् + चारण = उच्चारण

   सत् + चरित्र = सच्चरित्र

   सत् + चित् + आनंद = सच्चिदानंद

5. 'त्' या 'द्' के बाद 'श्' हो तो 'त'/'द' का 'च्' और 'श' का 'छ्' हो जाता है; जैसे –

   उत् + श्वास = उच्छ्वास

   उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. 'त्' के बाद 'ल्' हो तो 'त्' ध्वनि 'ल्' में बदल जाती है; जैसे –

तत् + लीन = तल्लीन   उत् + लास = उल्लास

उत् + लेख = उल्लेख

विसर्ग संधि :

पहले शब्द के अंत में आए विसर्ग के बाद कोई स्वर या व्यंजन आने के कारण जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

विसर्ग संधि के नियम :

1. विसर्ग के पूर्व यदि 'अ' हो और बाद में कोई घोष व्यंजन (वर्ग के अंतिम तीन वर्ण) या य, र, ल, व हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर 'ओ' हो जाता है; जैसे –

तप: + वन = तपोवन   मन: + भाव = मनोभाव

मन: + रथ = मनोरथ   मन: + हर = मनोहर

तम: + गुण = तमोगुण   वय: + वृद्ध = वयोवृद्ध

अध: + गति = अधोगति

अपवाद : मन: + कामना = मनोकामना (विसर्ग के बाद 'क' है जो अघोष है।)

2. विसर्ग के बाद क्-ख् या प्-फ् हो तो विसर्ग ज्यों का त्यों रहता है; जैसे –

अध: + पतन = अध:पतन

प्रात: + काल = प्रात:काल

अंत: + करण = अंत:करण

अंत: + पुर = अंत:पुर

3. विसर्ग के बाद यदि 'श' या 'स' हो तो या तो विसर्ग यथावत् रहता है अथवा विसर्ग की जगह क्रमश: श्, स् हो जाता है; जैसे –

दु: + शासन = दु:शासन **या** दुश्शासन

नि: + संदेह = नि:संदेह **या** निस्संदेह

नि: + शंक = नि:शंक **या** निश्शंक

4. यदि विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर या सघोष व्यंजन (तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण – प्रत्येक वर्ग का) तो विसर्ग का 'र्' हो जाता है; जैसे –

दु: + उपयोग = दुरुपयोग   दु: + दशा = दुर्दशा

नि: + उपाय = निरुपाय   अंत: + मन = अंतर्मन

नि: + मल = निर्मल   नि: + आकार = निराकार

नि: + धन = निर्धन   अंत: + मुख = अंतर्मुख

अंत: + गोल = अंतर्गोल   दु: + जन = दुर्जन

बहि: + गोल = बहिर्गोल   पुन: + जन्म = पुनर्जन्म

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. यदि विसर्ग के बाद 'च' या 'छ्' अघोष ध्वनि हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है; जैसे –

नि: + चल = निश्चल हरि: + चंद्र = हरिश्चंद्र

नि: + छल = निश्छल प्राय: + चित = प्रायश्चित

6. यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' हो और बाद में क, प या फ हो, तो विसर्ग का ष् हो जाता है; जैसे –

नि: + कपट = निष्कपट धनु: + टंकार = धनुष्टंकार

दु: + प्रचार = दुष्प्रचार चतु: + कोण = चतुष्कोण

नि: + फल = निष्फल

7. यदि विसर्ग के बाद 'त्' अघोष ध्वनि हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है; जैसे –

नि: + तेज = निस्तेज

नम: + ते = नमस्ते

8. यदि 'अ' के बाद विसर्ग हो और बाद में कोई स्वर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे –

अत: + एव = अतएव

9. यदि विसर्ग के बाद 'र' हो तो विसर्ग का 'र्' हो कर उसका लोप हो जाता है और विसर्ग के पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है; जैसे –

नि: + रोग = नीरोग

नि: + रव = नीरव

- विसर्ग संधि हिन्दी के लिए अप्रस्तुत है, किंतु शब्दार्थ के लिए इसका महत्त्व है, अत: इसे जानना चाहिए।

विशेष: स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि के नियम हिन्दी तत्सम शब्दों (संस्कृत शब्दों) पर ही लागू होते हैं। हिन्दी में जब दो भिन्न शब्द एक ही शब्द के रूप में अथवा सामासिक पद के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे –

राम + अभिलाषा = राम-अभिलाषा ही रहता है, रामाभिलाषा नहीं बनता।

(2) समास

9वीं कक्षा में आपने सीखा कि दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से भी नए शब्द बनते हैं। शब्द निर्माण की इस विधि को समास कहते हैं। हिन्दी में समास के छ: मुख्य प्रकार माने गए हैं – द्वंद्व, अव्ययीभाव, बहुव्रीहि, द्विगु, कर्मधारय तथा तत्पुरुष। इनमें से पहले तीनों की चर्चा नौवीं कक्षा में हो चुकी है। शेष तीन समासों की चर्चा यहाँ की जा रही है।

(4) **द्विगु समास :** जिन सामासिक पदों का पूर्वपद संख्यावाची शब्द हो, वहाँ द्विगु समास होता है। अर्थ की दृष्टि से यह समास प्राय: समूहवाचक होता है; जैसे –

त्रिभुज – तीन भुजाओं से बनी बंद आकृति

चौराहा – जहाँ चार रास्ते मिलते हैं (चार राहों का समूह)

शताब्दी – शत (सौ) अब्द (वर्षों) का समूह

पंचवटी – पंच (पाँच) वटी (वृक्षों) का समूह आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(5) **कर्मधारय समास :** जहाँ समस्त पद के दोनों खंडों में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय संबंध हो, वहाँ कर्मधारय समास होता है। यानी कर्मधारय समास का पूर्वपद विशेषण या उपमावाचक होता है; जैसे –

नीलाकाश (नीला + आकाश) = नीले रंग का आकाश

महाराजा = महान् राजा

कमलनयन = कमल रूपी नयन

चरणकमल = कमल रूपी चरण आदि।

(6) **तत्पुरुष :** जहाँ सामासिक उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद गौण। इस समास की रचना में दो पदों के बीच में आने वाले कारक चिह्नों (परसर्गों) का लोप हो जाता है। (कर्ता, संबोधन के परसर्गों को छोड़कर) जैसे –

विद्यालय (विद्या + आलय) = विद्या के लिए आलय

हस्तलिखित = हस्त (हाथ से लिखित

रसोईंघर = रसोई के लिए घर

राजकुमार = राजा का कुँवर (कुमार)

पदच्युत = पद से च्युत

पद प्राप्त = पद को प्राप्त

ध्यानमग्न = ध्यान में मग्न आदि।

विशेष : आगे की कक्षाओं में आपको इन समासों के उपभेदों की भी जानकारी दी जाएगी।

● हिन्दी के अपने शब्दों के मेल से बने शब्दों में शब्द निर्माण की प्रक्रिया में लोप या ह्रस्वीकरण दिखाई देता है; जैसे –

पानी + घट = पनघट

घोड़ा + दौड़ = घुड़दौड़

हाथ + कड़ी = हथकड़ी

मीठा + बोल = मिठबोल

लड़का + पन = लड़कपन

काठ + पुतली = कठपुतली

आम + चूर = अमचुर

कान + फटा = कनफटा

(3) अलंकार

'अलंकरोति इत अलंकारः' अर्थात् वह वस्तु जिसके धारण करने पर सुन्दरता में वृद्धि होती हो उसे अलंकार कहते हैं। अलंकार का शाब्दिक अर्थ गहना या आभूषण होता है। जिस प्रकार आभूषणों से किसी स्त्री की सुन्दरता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

में वृद्धि होती है, उसी प्रकार शब्दगत और अर्थगत चमत्कार के द्वारा काव्य की शोभा में वृद्धि होती है। जिस प्रकार हाथ, पैर, कान, नाक आदि अंगों से शरीर की रचना हुई है उसी प्रकार शब्दार्थ (शब्द और अर्थ के योग) से काव्य का शरीर बना है। जैसे शरीर के हर अंग के लिए अलग-अलग अलंकार हैं, उसी प्रकार काव्य शरीर (शब्द और अर्थ) के अलग-अलग अलंकार हैं। जब अलंकार काव्य के शब्द विशेष में स्थित होता है तब उसे 'शब्दालंकार' और जब अलंकार अर्थ में स्थित होता है तब उसे 'अर्थालंकार' कहते हैं। इसलिए अलंकार के निम्नलिखित मुख्य दो प्रकार हैं :

(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

शब्दालंकार के प्रमुख चार प्रकार हैं - (1) अनुप्रास (2) यमक अलंकार (3) श्लेष अलंकार और (4) वक्रोक्ति ।

पिछली कक्षा में हम शब्दालंकारों के विषय में जान चुके हैं। इसलिए अब हम अर्थालंकारों के विषय में जानेंगे ।

अर्थालंकार :

जहाँ अर्थ के कारण काव्य में चमत्कार पैदा हो, वहाँ अर्थालंकार होता है। अर्थालंकार के कुछ प्रमुख प्रकार इस प्रकार हैं -

(1) **उपमा अलंकार :** उपमा का अर्थ है - तुलना। जहाँ समान गुण, धर्म प्रभाव के आधार पर उपमेय से उपमान की या प्रस्तुत से अप्रस्तुत की तुलना की जाए वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के चार तत्त्व हैं - उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द।

उपमेय : जो वस्तु उपमा या तुलना के योग्य हो वह उपमेय है। कवि के लिए उपमेय का वर्णन सबसे पहले अपेक्षित होता है। इसलिए इसे प्रस्तुत भी कहा जाता है। जैसे - 'पीपर पान सरिस मन डोला।' इसमें 'मन' उपमेय है।

उपमान : जिस वस्तु के साथ उपमेय की तुलना की जाए, उसे उपमान कहते हैं। कवि के लिए उपमान उपमेय के बाद अपेक्षित होता है, इसीलिए उसे अप्रस्तुत कहा जाता है। उपर्युक्त उदाहरण में 'पीपर पान' उपमान है, क्योंकि मन (उपमेय) से उसकी तुलना की गई है।

साधारण धर्म : उपमेय और उपमान में स्थित समान गुणधर्म को 'साधारण धर्म' कहा जाता है। यहाँ डोलना (चंचलता) साधारण धर्म है।

वाचक शब्द : जिस विशेष शब्द से उपमेय और उपमान में स्थित समान गुण-धर्म को प्रकट किया जाता है उसे वाचक शब्द कहते हैं। यहाँ सरिस (जैसा) वाचक शब्द है। विशेषः तुल्य, सम, सा, से, सी, जैसा, ज्यों ये उपमा के वाचक शब्द हैं।

जब उपमा में ये चारों तत्त्व स्थित होते हैं तब **'पूर्णोपमा' अलंकार** और जब उनमें से एक या एकाधिक कम होता है तब वह **'लुप्तोपमा' अलंकार** कहा जाता है। प्राचीन और आधुनिक सभी कवियों का यह बहुत प्रिय अलंकार है। जैसे, 'पानी केरा बुदबुदा अस मानस की जात।' इसमें साधारण धर्म (नश्वरता) का लोप होने से लुप्तोपमा है।

(2) **रूपक अलंकार :** रूपक का अर्थ है - आरोपित करना। जहाँ उपमेय और उपमान भिन्न हों, पर समान गुणधर्म के कारण उनके बीच किसी प्रकार का भेद न किया जाए अर्थात् जहाँ उपमेय पर उपमान को बिना किसी भेदभाव के आरोपित किया जाए वहाँ 'रूपक' अलंकार होता है।

उदाहरण - मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(3) **उत्प्रेक्षा अलंकार :** जहाँ समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना कर ली जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। मनु, मानहु, मानो, जनु, जानहु, जानो ऐसे, जैसे आदि इस अलंकार के वाचक शब्द हैं।

उदाहरण – उदित कुमुदिनीनाथ हुए प्राची में ऐसे।
सुधा कलश रत्नाकर से उठता हो जैसे ॥

यहाँ कुमुदिनीनाथ (चन्द्रमा) प्रस्तुत की अप्रस्तुत (सुधा-कलश) में उत्प्रेक्षा की गई है।

(4) **विभावना अलंकार :** जहाँ कारण के बिना ही कार्य होने का वर्णन होता है, वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण – निन्दक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबण बिना, निर्मल करे सुभाय ॥

यहाँ पानी और साबुन के बिना ही कार्य सम्पन्न हो रहा है।

(5) **असंगति अलंकार :** कारण और कार्य में संगति न होने पर असंगति अलंकार होता है।

उदाहरण – हृदय घाव मेरे वीर रघुवीरै।

(6) **अतिशयोक्ति :** जहाँ किसी बात को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाए वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण – हनूमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग ॥

यहाँ हनुमान की पूँछ में आग लगने से पूर्व ही लंका का जल जाना बताया गया है, इसलिए यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

(7) **अन्योक्ति :** जब काव्य में किसी अप्रस्तुत (अन्य) के बहाने दूसरे को कुछ कहा जाए, जिससे चमत्कार या सौंदर्य उत्पन्न हो, वहाँ अन्योक्ति नामक अलंकार होता है; जैसे –

माली आवत देखकर, कलयिन करी पुकारि।
फूली-फूली चुन लिए, काल्हि हमारी बारि ॥

यहाँ माली, कलियों और फूल के बहाने काल, युवा पुरुषों और वृद्धों के बारे में कहा गया है।

(8) **मानवीकरण :** जब प्रकृति पर मानवीय क्रिया कलापों का आरोपण किया जाता है, तब वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे –

सिंधु सेज पर धरा वधू अब, तनिक सकुचती बैठी-सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किए-सी ऐंठी-सी।
(जयशंकर प्रसाद – कामायनी)

महा प्रलय के बाद पृथ्वी का समुद्र की सतह से ऊपर आने को सेज पर बैठी मानिनी बहू बतलाया गया है। भारतीय काव्यशास्त्र में इसका समावेश रूपक में था।

यह अंग्रेजी के अलंकार Personification का हिन्दी रूप है।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 रचनात्मक लेखन

(1) निबंधलेखन

'निबंध' शब्द का अर्थ है भलीभाँति बँधा हुआ, अर्थात् जिस गद्य रचना में भाव और विचार अच्छी तरह बँधे हों, गुँथे हों, वह निबंध है। हिन्दी के प्रसिद्ध समीक्षक निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्लजी निबंध को गद्य की कसौटी मानते हैं। अच्छे निबंध के तीन मुख्य गुण हैं - (1) विषयानुकूलता, (2) कसावट तथा (3) प्रभावशाली भाषा। विषय का सम्यक प्रतिपादन, भाषा का प्रांजल रूप तथा लेखकीय व्यक्तित्व की छाप अच्छे निबंध की विशेषताएँ है।

निबंध के लिए विषय की कोई सीमा नहीं है। आपकी पाठ्यपुस्तक में 'द' (प्रतापनारायण मिश्र) तथा 'उत्साह' (रामचंद्र शुक्ल) निबंध संकलित हैं। विषय के दृष्टि से निबंध के अनेक प्रकार किये जा सकते हैं; जैसे - साहित्यिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक तथा काल्पनिक निबंध आदि।

प्रस्तुतीकरण या वर्णनशैली की दृष्टि से इन निबंधों को मुख्य चार भागों में बाँट सकते हैं -

(1) **वर्णनात्मक (विवरणात्मक सहित) जैसे** - मेरी पाठशाला, ताजमहल, मेरी पहली रेलयात्रा, देखे गए क्रिकेट मैच का वर्णन, मेले या त्योहार का वर्णन आदि।

(2) **भावात्मक एवं कल्पनात्मक - जैसे** - मेरे सपनों का भारत, यदि मैं पक्षी होता, आषाढ़ का पहला दिन आदि ।

(3) **विचारात्मक तथा चिंतनात्मक** - इन निबंधों में बुद्धितत्व, तर्क, की प्रधानता रहती है। इनके विषय अमूर्त भी हो सकते हैं; जैसे - श्रम का महत्व, उत्साह, साहित्य का उद्देश्य इत्यादि।

(4) **आत्मकथानात्मक** - वैसे तो इस तरह के निबंध भी कल्पनात्मक होते हैं, किन्तु अभिव्यक्ति रीति अलग होने से इनका अलग वर्ग बनाया जाता है; जैसे - चुनाव में हारे हुए नेता की आत्मकथा, रूपए की आत्मकथा, फटे जूते की आत्मकथा इत्यादि।

विशेष : कुल मिलाकर ये सारे प्रकार दो वर्गों में समाहित होते हैं - (1) विषयप्रधान और (2) विषयी प्रधान।

निबंध के अंग :

निबंध चाहे किसी विषय पर हो, किसी प्रकार का हो रचना की दृष्टि से सामान्यतया उसके तीन अंग होते हैं :

(1) प्रस्तावना या भूमिका

(2) विषय का प्रतिपादन (विवेचन, सुव्यवस्थित संयोजन)

(3) उपसंहार।

(1) **प्रस्तावना :** प्रस्तावना आकर्षक, रोचक तथा विषयवस्तु को स्पष्ट करने वाली होनी चाहिए ताकि आगे पढ़ने की उत्सुकता बनी रहे। संक्षिप्तता इसका गुण है। निबंध का आरंभ निम्नलिखित ढंग से किया जा सकता है -

- किसी सूक्ति या उद्धरण से
- विषय की परिभाषा देकर
- किसी घटना या कहानी के संक्षिप्त उल्लेख से
- विषय का महत्त्व बताकर
- सीधे विषय पर आकर।

(2) **विषय का प्रतिपादन :** यह निबंध का मुख्य कलेवर है। इसमें तथ्यों, भावों तथा विचारों को तर्कसंगत ढंग से संयोजित किया जाना चाहिए। क्रमबद्धता तथा सुसंबद्धता इसका प्रधान गुण है। यह अनुच्छेद में विभक्त होता है। यह जरूरी है कि एक अनुच्छेद में एक ही बात या विचार रखा जाए। जहाँ आवश्यक हो वहाँ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गद्य या पद्य में उद्धरण दे सकते हैं। भाषा शुद्ध, प्रांजल तथा विषयानुकूल होनी चाहिए। भाषिक शिथिलता निबंध को कमजोर बनाती है । विषय का विवेचन क्रमबद्ध, स्पष्ट होना चाहिए। विषय के अनुरूप इसका विस्तार दो-तीन से लेकर छः-सात अनुच्छेदों तक का हो सकता है।

(3) **उपसंहार :** प्रभावकता उपसंहार का प्रमुख गुण है। विषय वस्तु के विवेचन के आधार पर यहाँ निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है। लेखक अपना विचार या प्रतिक्रिया व्यक्त करता है या फिर प्रतिपादित विषय का सार दे देता है। निबंध का अंत इस प्रकार लिखा जाना चाहिए कि पाठक पर उसका स्थायी प्रभाव पड़े। इसका विस्तार एक लघु अनुच्छेद जितना होना चाहिए।

निबंध-लेखन, पूर्व तैयारी :

- निबंध-लेखन से पूर्व विषय के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार करना जरूरी है। इसके लिए अपने साथियों अथवा शिक्षक के साथ चर्चा करके निबंध की रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
- रूपरेखा निर्माण के बाद विषय से संबंधित सामग्री का विभिन्न स्रोतों से संचय करना उपयोगी होता है। उद्धरणों, विषय के अनुरूप सूक्तियों, उदाहरणों का संकलन कर लेना चाहिए।
- विषय के अनुरूप सामग्री का चयन करके उसका क्रम निर्धारित कर लेना चाहिए।
- एक विचार को एक ही अनुच्छेद में समाहित करना चाहिए।
- विचार को अपनी भाषा में तर्कसंगत ढंग विकसित करना चाहिए।
- वाक्य छोटे-छोटे और सुसंगठित होने चाहिए।
- भाषा सरल, सुबोध, स्पष्ट, शुद्ध एवं प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।
- उद्धरणों, मुहावरों, लोकोक्तियों और उदाहरणों का उपयोग सुसंगत होना चाहिए।
- विषयवस्तु के संदर्भ में अपने विचार तथा अनुभव व्यक्त होने चाहिए।

कुछ निबंधों की रूपरेखा :

(1) **गणतंत्र दिवस :**

26 जनवरी का ऐतिहासिक संदर्भ, महत्त्व; संविधान का निर्माण और गणतंत्र का आरंभ; गणतंत्र दिवस समारोह के कार्यक्रम; दिल्ली में गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम का विशेष आकर्षण; गणतंत्र की रक्षा, उसे सुदृढ़ बनाने के प्रति हमारा कर्तव्य, उपसंहार।

(2) **ताजमहल :**

ऐतिहासिक इमारतों का महत्व; ताजमहल के निर्माण का इतिहास, ताजमहल की स्थापत्यकला, ताजमहल की विशिष्टता, अनुपम रूप-सौंदर्य, ताजमहल और पर्यटक, चाँदनी रात में ताज, उपसंहार।

(3) **प्राकृतिक आपदा :**

प्रकृति के दो रूप-निर्माण, विध्वंस; वर्तमान आपदा के कारण; आपदा के बीभत्स और करुण दृश्य; राहत एवं बचाव कार्य, सामाजिक, सरकारी संस्थाओं का बचाव में योगदान; पीड़ितों का उपचार, सहायता कार्य एवं पुनर्वास; उपसंहार ।

(4) **यदि मैं पक्षी होता :**

उड़ने की स्वाभाविक इच्छा; परियों की कल्पनाएँ; मनुष्य द्वारा विमान-निर्माण की कल्पनाएँ : उड़कर इच्छित जगह पर पहुँचने का स्वप्न; प्रकृति के विभिन्न दृश्यों का बिना किसी व्यवधान के अवलोकन करने का आनंद उठाना; पक्षी जैसे पंख के कारण अलौकिकता की अनुभूति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(5) **मेरा प्रिय खेल फुटबाल :**

खेल का महत्व; फुटबाल - एक सस्ता, सर्वप्रिय आधुनिक खेल; साधनसामग्री, मैदान की लंबाई-चौड़ाई, टीम में खिलाड़ियों की संख्या; फुटबाल के खिलाड़ियों का मुख्य ध्येय गोल करना; गोलकीपर का महत्व; फुटबाल में फाउल के नियम; फुटबाल खेलने से लाभ - सहयोग, संरक्षण तथा आक्रमण की भावना का विकास, खेलते समय रखी जाने वाली सावधानियाँ, उपसंहार।

(1) सूचना लेखन

व्यक्ति, सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थान अपने किसी निश्चय, निर्णय, निर्देश आदि से संबंधित जानकारी को संबंधित व्यक्तियों तथा आम जनता तक पहुचाने के लिए विभिन्न माध्यमों से सूचना प्रसारित-प्रचारित करते हैं। अखबारों में छपी कुछ सूचनाएँ इस प्रकार हैं -

(1) **नाम बदलना :**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं घेमरभाई बशराजभाई अढ़िया निवास A/9 कथन एवन्यू, नया चाँदखेड़ा, अहमदाबाद – 382424 अपना नाम बदलकर गिरीशभाई वशराजभाई अढ़िया कर रहा हूँ।

(2) **खोने-पाने संबंधी सूचना :**

सबको विदित हो कि कल दोपहर पाँच बजे के आसपास काले रंग का एक बैग, जिसमें जरूरी कागज थे वह मोटेरा और शाहीबाग के बीच कहीं गिर गया है। पाने वाले से निवेदन है कि वह इसकी सूचना स्थानीय पुलिस स्टेशन या सीधे मोबाइल नं. 9827465917 पर दें। उचित इनाम दिया जाएगा।

(3) **लापता व्यक्ति की तलाश :**

एक किशोर उम्र 13 वर्ष, रंग गेहुआँ, ऊँचाई 5 फीट मध्यम शरीर दिनांक 25 मई 2016 को गंज बाजार, डीसा उत्तर-गुजरात से लापता है। वह गुजराती तथा राजस्थानी भाषा बोलता है। इसके बारे में सूचना देने वाले को उचित पुरस्कार दिया जाएगा। कृपया संपर्क करें -

मो. 9427500212 या 9805076055.

(4) **प्रमाणपत्र खोने की सूचना :**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर का मेरा हाइस्कूल परीक्षा का सन् 2012 का प्रमाणपत्र वास्तव में खो गया है।

हस्तीमल चंदरमल टांक
निवासी - भरतपुर (राज.)

इस तरह की सूचनाएँ प्रायः वर्गीकृत विज्ञापनों के रूप में छपती हैं। व्यक्तिगत सूचनाओं के अलावा गैरसरकारी और सरकारी विभागों की ओर से विभिन्न प्रकार की विज्ञप्ति, अधिसूचना, सार्वजनिक निविदा (टेंडर) आदि विज्ञापन के स्वरूप में प्रकाशित होते रहते हैं। व्यावसायिक प्रतिष्ठान भी अपने से संबंधित सूचना को विज्ञापन के रूप में प्रकाशित करवाते हैं।

सामान्य रूप से व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक सूचना की भाषा सरल, सुबोध, स्पष्ट तथा एकार्थी होनी चाहिए। सूचना में आलंकारिक भाषा या कहावतों, मुहावरों का प्रयोग अच्छा नहीं माना जाता। सूचना का आकार हो सके, उतना संक्षिप्त होना चाहिए।

सूचना प्रसारण के लिए वर्तमान समय में प्रिंट (मुद्रित माध्यम के अलावा इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों का भी उपयोग किया जाता है। आकस्मिक आपदाओं के समय सूचनाएँ इन माध्यमों द्वारा सामान्य जनता तक तत्काल पहुँचायी जा सकती हैं। जिससे जन-धन की हानि को कम किया जा सकता है। टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के नीचे की पट्टी में इस तरह की सूचनाएँ प्रसारित होती रहती हैं।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) अनौपचारिक पत्र लेखन

नौवीं कक्षा में आपने औपचारिक पत्रों का अध्ययन किया, जिनमें सरकारी, अर्धसरकारी तथा गैरसरकारी स्तर पर भेजे जाने वाले पत्रों के बारे में चर्चा की गई थी। इस वर्ष 10वीं कक्षा में अनौपचारिक पत्र लेखन की चर्चा की जाएगी।

अनौपचारिक पत्रों में पत्र लिखनेवाले तथा पत्र पाने वाले के बीच निकट का संबंध होता है। यह संबंध पारिवारिक, मित्रता तथा निकट के सगे-संबंधियों का हो सकता है। इन पत्रों को 'व्यक्तिगत पत्र' भी कहते हैं।

इन पत्रों की विषयवस्तु निजी और घरेलू होती है। इनका स्वरूप संबंधों के आधार पर निश्चित होता है। ऐसे पत्रों की भाषाशैली प्रायः आत्मीय और अनौपचारिक होती है।

अनौपचारिक पत्र के अंगों के बारे में प्राथमिक कक्षाओं मे जानकारी दी जा चुकी है। आइए, यहाँ संक्षेप में उसका पुनरावर्तन कर लें।

अनौपचारिक पत्र के निम्नलिखित मुख्य अंग हैं -

(1) **भेजनेवाले का पता** - पत्र में सबसे ऊपर एक ओर (प्रायः दाईं ओर) प्रेषक (भेजनेवाले) का पता लिखते हैं। पूरा पता स्पष्ट (मकान नं, गली, मुहल्ला, शहर, पिन कोड सहित) लिखा जाना चाहिए ताकि पत्र पहुँचने में कठिनाई न हो।

(2) **पत्र लिखने की तारीख** - प्रेषक के पते के नीचे दिनांक, महीना तथा सन् लिखा जाता है।

(3) **संबोधन और अभिवादन** - इसे पत्र के ऊपरी भाग में बाईं ओर वाले की आयु और संबंध के अनुरूप संबोधन लिखा जाता है; जैसे -
पूज्य पिताजी, श्रद्धेय दादाजी, पूजनीया माताजी, आदरणीय भाईजी, (बड़े भाई को) प्रिय बंधु / भाई (छोटे भाई को) अथवा प्रिय मित्र आदि। अभिवादन के लिए पत्र पानेवाले व्यक्ति के संबंध, मर्यादा के अनुरूप शब्द; जैसे - सादर प्रणाम, नमस्कार, आशीर्वाद आदि लिखा जाता है।

(4) **पत्र की विषय सामग्री** - यह पत्र का मुख्य भाग है। अनौपचारिक पत्रों कुशल-क्षेम, पत्रप्राप्ति की सूचना तथा वांछित समाचारों से संबंधित बातें अलग-अलग अनुच्छेद में लिखी जाती हैं।

(5) **पत्र का अंत** - पत्र के अंत में पत्र लेखक अपने संबंध के अनुरूप शब्द लिखकर अपने हस्ताक्षर करता है। पत्र के अंत में लिखे जाने वाले ऐसे शब्द इस प्रकार हैं -
आपका आज्ञाकारी (पुत्र, भाई, छोटा भाई, शिष्य, छात्र आदि), स्त्रीलिंग में आपकी आज्ञाकारिणी (पुत्री, बहन, शिष्या, छात्रा आदि), प्रिय (मित्र, भाई, बहन, सखी आदि), तुम्हारा शुभचिंतक, हितैषी, भवदीप, शुभेच्छु (बड़ों द्वारा आदि।

(6) **पत्र पाने वाले का पता** - पत्र समाप्त करने के बाद पोस्ट कार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफाफे के ऊपर पाने वाले का नाम तथा पूरा स्पष्ट पता लिखा जाता है ताकि डाक द्वारा पत्र पहुँचने में कठिनाई न हो। पिन कोड, नाम तथा पता भी लिखा जाता है, ताकि पत्र पाने वाले को पत्र देखते ही पता चल जाय कि पत्र किसका है, कहाँ से है ।

लिफाफे पर पता -

टिकट

सेवा में
श्रीमती अरुणाबहन झा
312, माडल टाउन,
महात्मा गांधी मार्ग,
मिर्जापुर - 231001

प्रेषक -
राधाकिशन झा
C/20, ठठेरी बाजार,
वाराणसी - 221001

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनौपचारिक पत्र का नमूना

कमरा नं. 8, महेन्द्रवी लॉज,
लंका, वाराणसी – 221002
दिनांक : 10 अक्टूबर, 2016

पूज्य पिताजी,

सादर चरणस्पर्श।

आपका पत्र मिला। घर के समाचार मिले। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि भाई साहब दीपावली की छुट्टियों में घर आ रहे हैं।

मेरा विद्यालय भी दीपावली के समय 28 अक्टूबर से 31 अक्टूबर तक चार दिनों के लिए बंद रहेगा। मैं 27 अक्टूबर को शाम तक घर अवश्य पहुँच जाऊँगा।

मैं पूर्णरूप से स्वस्थ एवं प्रसन्न हूँ। छमाही परीक्षा का परिणाम मिल गया है। अपनी कक्षा में मुझे तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। आपके भेजे हुए रुपए मेरे खाते में जमा हो गए हैं।

आशा है, आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानंद होंगे। माँ तथा दादीजी को सादर प्रणाम, छोटी दीदी गुड़िया को बहुत-बहुत प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
रमण सोनी

सेवा में
श्री रामकुमार सोनी
ग्राम, पोस्ट – अहरौरा,
जिला – मिर्जापुर
पिन – 233001

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 प्रयोजनमूलक हिन्दी

(1) सारलेखन

किसी गद्यांश के मुख्य भावों या विचारों को छोड़े बिना उसे संक्षेप में लिखने की क्रिया सारलेखन कहलाती है। सारलेखन अपने में एक तकनीक है। इसकी प्रक्रिया इस प्रकार है :

(1) सर्वप्रथम दिए गए गद्यांश को दो-तीन बार ध्यान से पढ़िए ताकि उसका अर्थबोधन हो सके।

(2) गद्यांश के मुख्य भावों या विचारों को रेखांकित कीजिए। इस बात का ध्यान रहे कि कोई आवश्यक बात न छूट जाए। साथ ही किसी विचार या भाव का पुनरावर्तन भी न हो।

(3) मुख्य भावों या विचारों को अपनी भाषा में लिखिए। वर्णनात्मक वाक्यों को सूत्र रूप में अथवा सामासिक पदों के रूप में लिखने का प्रयास कीजिए।

(4) प्रत्यक्ष कथन को परोक्ष कथन के रूप में लिखिए। यह कथन अन्य पुरुष में होना चाहिए।

(5) सारलेखन के बाद उसे दो बार अवश्य पढ़ लीजिए ताकि उसमें कोई दोष हो तो उसे दूर कर सकें।

(6) सार, मूल गद्यांश का लगभग एक तृतीयांश (तिहाई) होना चाहिए। वह स्पष्ट, क्रमबद्ध तथा पूर्ण होना चाहिए।

क्या न करें :

(1) सारलेखन की भाषा अलंकृत न हो और न तो उसमें मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग हो।

(2) सारलेखन की भाषा अपनी हो लेकिन अपनी ओर से कुछ भी जोड़ना नहीं चाहिए।

(3) पुनरुक्ति न करें। कथन को कर्मवाच्य में न बदलें।

विशेष : सारलेखन को अंग्रेजी में 'प्रेसी राइटिंग' कहा जाता है। कुछ लोग इसे संक्षेपण भी कहते हैं। सारलेखन और संक्षेपण में शब्दों का प्रयोग प्राय: एक ही अर्थ में किया जाता है, किन्तु सारलेखन में जहाँ मूल पाठ को संक्षिप्त करके एक तिहाई रूप में सीमित किया जाता है, वहाँ संक्षेपण में इस तरह का कोई बंधन नहीं होता। मूल के अनावश्यक विस्तार को छोड़ते हुए सहज रूप से उसे छोटा करना होता है। सारलेखन की तरह – 'सारांश' में सभी मुख्य तथ्यों को प्रस्तुत करना जरूरी नहीं होता, इसमें केवल मूल तथ्य को ही संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। आकार-विस्तार की दृष्टि से सारांश सारलेखन की अपेक्षा कम शब्दों में होता है।

सार का शीर्षक :

उपयुक्त शीर्षक का चयन करना एक कला है, जो अभ्यास से आती है। गद्यांश के केन्द्रीय विचार बिंदु अथवा कविता का केन्द्रीय भाव ही शीर्षक का आधार हो सकता है। शीर्षक संक्षिप्त होना चाहिए। काव्यांश के शीर्षक के लिए दुहराई जाने वाली काव्यपंक्ति भी ली जा सकती है।

गद्यांश या पद्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर :

गद्यांश या पद्यांश पर जो प्रश्न पूछे गए हों, उनके उत्तर गद्यांश या पद्यांश के आधार पर ही देने चाहिए। हालांकि यदि किसी प्रश्न में परीक्षक ने अपने विचार पूछे हों, तो लिखने चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे, सरल तथा अपनी भाषा में होने चाहिए। गद्यांश के वाक्य को ज्यों का त्यों न लिखकर अपनी भाषा में लिखना चाहिए। व्यर्थ में उत्तर बढ़ाना नहीं चाहिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण :

जानवरों में गधा सबसे बुद्धिहीन समझा जाता है। हम सब किसी आदमी को पहले दर्जे का बेवकूफ कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है। गायें सींग मारती हैं और ब्यायी हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ जाता है, लेकिन गधे को क्रोध करते न कभी देखा, न सुना। जितना चाहो, उसे मारो, चाहे जैसी खराब सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। बैसाख में चाहे एक बार कुलेल कर लेता हो, पर हमने तो उसे खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दु:ख, लाभ-हानि किसी दशा में भी बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँचे हुए हैं। पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का उतना अनादर कहीं नहीं देखा।

(प्रेमचंद - दो बैलों की कथा)

शीर्षक : 'गधा : सद्गुणों की खान' या 'गधा' रखा जा सकता है।

सार :

'गधा' शब्द का प्रयोग आदमी बेवकूफ के लिए करता है जब कि वास्तव में तो गधा सीधा, सहिष्णु पशु है। वह हर हाल में एक-सा रहता है, सुख-दु:ख, लाभ-हानि से उदासीन। वास्तव में ये सभी गुण तो ऋषि-मुनि में होते हैं। मनुष्य गधे के सद्गुणों का अनादर करता है।

(2) संचार माध्यम

यहाँ 'संचार' शब्द अंग्रेजी 'कम्युनिकेशन' के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया गया है। 'कम्युनिकेशन' का अर्थ है - संप्रेषण।

इसी से निर्मित दूसरे शब्द 'मास कम्युनिकेशन' (mass communication) के लिए हिन्दी में 'जनसंचार' शब्द का प्रयोग हो रहा है।

संचार शब्द के साथ जुड़ा 'माध्यम' अंग्रेजी 'मीडिया' के समांतर शब्दप्रयोग है। संचार माध्यम द्वारा प्रेषक और श्रोता के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है। इसके अंतर्गत सूचना का संग्रह और प्रसार, सूचना का विश्लेषण, समाजिक मूल्य तथा ज्ञान का संचरण एवं मनोरंजन आते हैं।

वैसे तो 'संचार' मानवजाति के विकास जितना ही पुराना है। यह मनुष्य की वैयक्तिक एवं सामाजिक जरूरत है । मोटे तौर पर संचार का अभिप्राय अपने भाव, विचार या संदेश को आदान-प्रदान या संप्रेषित करना है। सभ्यता के विकास के सात संचार के क्षेत्र में भी नई-नई प्रविधियाँ आई हैं, जिन्हें हम आज जनसंचार माध्यम (mass media) कहते हैं।

संचार माध्यमों को सुविधा के लिए हम दो वर्गों में बाँट सकते हैं - (1) **परंपरागत संचार माध्यम :** जैसे - लोकगीत, लोकनाट्य, लोककला, और लोकनृत्य आदि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) **आधुनिक संचार माध्यम :** इस युग में वैज्ञानिक खोजों के परिणाम स्वरूप सूचना संचार के क्षेत्र में एक क्रांति आई है। मशीनों, कंप्यूटर के उपयोग से इसमें अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। संक्षेप में, हम आधुनिक संचार माध्यमों को दो भागों में बाँट सकते हैं –

(क) **मुद्रित माध्यम** – समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, पोस्टर, पर्चियाँ इत्यादि।

(ख) **श्रव्य-दृश्य माध्यम** – रेडियो (आकाशवाणी), टेलीफोन, मोबाइल फोन, टेलीविजन (दूरदर्शन), ई-मेल, फैक्स, वी.सी.डी. इत्यादि।

इनमें से हम यहाँ पर समाचार पत्र, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करेंगे।

समाचार पत्र :

यह मुद्रित माध्यम (Print media) के अंतर्गत आनेवाला तथा सूचना को शीघ्रता से दूर-दराज के स्थानों तक पहुँचाने वाला एक सशक्त माध्यम है। देश-विदेश में फैली समाचार एजेंसियों तथा अपने संवाददाताओं से प्राप्त समाचारों को संपादित करके प्रकाशित किया जाता है। इसके वितरण के लिए स्थानीय हॉकर्स के साथ ट्रेन, बस या हवाई मार्ग द्वारा भी दूसरे स्थानों एवं शहरों में समाचार पत्र भेजे जाते है। इस तरह **समाचार का एकत्रीकरण एवं संपादन, मुद्रण** तथा **वितरण** समाचार प्रबंधन के तीन प्रमुख स्तंभ है। विज्ञापन समाचार पत्रों की आय का प्रमुख साधन है।

प्रकाशन की अवधि के आधार पर दैनिक, साप्ताहिक पाक्षिक प्रकार के समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। समाचार पत्रों के जैसी ही व्यवस्था पत्र-पत्रिकाओं की भी होती है। पत्रिकाएँ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, अर्ध-वार्षिक या अनियतकालीन हो सकती हैं। पत्र-पत्रिकाओं में समाचारों के अतिरिक्त विभिन्न समाचारों का विश्लेषण तथा समसामयिक विषयों अथवा जीवनोपयोगी सामग्री भी छापी जाती है। भारत में अलग-अलग भाषाओं में समाचार पत्र छपते हैं। फैलाव के आधार पर उन्हें स्थानीय, प्रादेशिक या राष्ट्रीय समाचार पत्र का दर्जा दिया जाता है।

आकाशवाणी (रेडियो) :

समाचारों के प्रसारण का यह इलेक्ट्रानिक श्रव्य माध्यम है। आरंभ में भारत सरकार द्वारा स्थापित आकाशवाणी इस तरह का अकेला माध्यम था। अब तो बड़े-बड़े शहरों में एफ.एम. रेडियों शुरू हो चुके हैं। इनके द्वारा समाचार तथा मनोरंजन कार्यक्रम, गीत-संगीत के कार्यक्रम आदि प्रसारित किए जाते हैं। विभिन्न रेडियो के प्रसारण की फ्रीक्वेंसी अलग-अलग होती है। प्राकृतिक आपदा तथा युद्ध के समय 'हेम रेडियो' अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

रेडियो के द्वारा समाचार, सूचना या संदेश को ध्वनि स्वरूप में प्रसारित करने के कारण अशिक्षित तथा अनपढ़ लोग भी सुनकर इसका लाभ उठा सकते हैं। रेडियो से लोकोपयोगी अनेक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाते हैं। यह श्रोताओं को सूचना एवं शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ मनोरंजन भी करता है। ट्रांजिस्टर तथा इलेक्ट्रानिक्स में दूरसंचार की खोजों से रेडियो की उपलब्धता बढ़ी है।

दूरदर्शन :

यह शब्द 'टेलीविज़न' का हिन्दी पर्याय है। व्यवहार में यह टेलीविज़न के सरकारी चैनल डी.डी. के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। दूरदर्शन एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है। कंप्यूटर के आ जाने, मल्टीमिडिया के बढ़ते उपयोग से टेलीविज़न का विकास अत्यंत तेजी से हुआ है।

भारत में दूरदर्शन का प्रचलन 1965 में हुआ। गुजरात में इसका सर्वप्रथम प्रसारण आणंद जिले के पीज दूरदर्शन केन्द्र से हुआ। आज तो यह घर-घर तक पहुँच गया है। वर्तमान में उपग्रहों के माध्यम से दूरदर्शन के कार्यक्रम प्रसारित किया जाने लगा है। इसकी कार्यपद्धति भी काफी सीमा तक रेडियो की प्रणाली से मिलती-जुलती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दूरदर्शन मनोरंजन के साथ सामाजिक, वैज्ञानिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक जानकारी प्रदान करता है। राष्ट्रीय कार्यक्रमों का प्रसारण दूरदर्शन का प्रमुख अंग है।

आजकल भारत में अनेक देशी तथा विदेशी चैनलों के कार्यक्रम टेलीविज़न से प्रसारित होते हैं। ये चलचित्र, वृत्तचित्र या लघुचित्र, धारावाहिक रूपक तथा समाचार से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों; धार्मिक तथा व्यापार-वाणिज्य आदि की जानकारी लोगों तक पहुँचाते हैं। इंटरनेट के मेल से इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है।

(3) हिन्दी की विविध भूमिकाएँ

वास्तव में आज जिसे हम हिन्दी कहते हैं, वह कोई एक भाषा नहीं बल्कि 'भाषा समूह' है। ब्रज, अवधी, मैथिली, भोजपुरी जैसी बोलियाँ राजस्थानी जैसी उपभाषा कभी स्वतंत्र भाषा के रूप में प्रयोग की जाती थीं। हिन्दी का वर्तमान रूप उसकी एक बोली – 'खड़ी बोली' का मानकीकृत रूप है, जिसका प्रयोग हम अपने दैनिक व्यवहार, पढ़ाई-लिखाई, समाचार पत्र आदि में करते हैं।

जिन्हें हम हिन्दीभाषी क्षेत्र कहते हैं उसमें पाँच उपभाषाएँ – पूर्वी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी तथा बिहारी हैं। इनमें कुल 18 प्रमुख बोलियाँ हैं, जो हिन्दी क्षेत्र कह जाने वाले इन राज्यों में रहने वालों की मातृभाषा हैं । बोली भाषा का मौखिक स्वरूप है। इस अर्थ में हिन्दी किसी की मातृभाषा नहीं है; लोगों की मातृभाषाएँ उनकी बोलियाँ ही हैं। केवल पढ़ा-लिखा, शहरी वर्ग ही इनका उपयोग अपने दैनिक व्यवहार में मातृभाषा के रूप में करता है।

हिन्दी भाषा का 'मानक' रूप देश की 'राजभाषा' है, साथ ही वह हमारे दैनिक औपचारिक व्यवहार में प्रयुक्त होती है। मानक हिन्दी का मूलाधार खड़ी बोली इस समय साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयुक्त हो रही है। राजभाषा के साथ-साथ हिन्दी हमारे जनसंचार की भाषा भी है। हिन्दी में हम अपना कार्यालयी व्यवहार, प्रशासनिक कार्य करते हैं । स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी संपर्क भाषा तथा राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी। आज हमारे लिए वह माध्यम भाषा भी है। संक्षेप में हिन्दी के इन विविध रूपों को निम्नलिखित प्रकार से बाँट सकते हैं –

(1) बोलचाल की हिन्दी

(2) मानक भाषा

(3) व्यावहारिक तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी (राजभाषा)

(4) साहित्यिक हिन्दी

(5) संपर्क भाषा आदि।

राष्ट्रभाषा हिन्दी :

साहित्य की भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग तो 11वीं सदी में ही आरंभ हो चुका था। 12वीं सदी में वह भारत की संपर्क भाषा बन रही थी। अंग्रेजों के शासन में स्वतंत्रता की भावना पनपने लगी उस समय एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की जाने लगे जो भारत राष्ट्र की भाषा बन सके। राष्ट्रभाषा राष्ट्र की गतिशील चेतना का प्रतीक होती है। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में आंदोलनों की माध्यम भाषा के रूप में उसे प्रतिष्ठा मिली। महात्मा गाँधी ने हिन्दी के प्रश्न को स्वराज्य से भी बढ़कर मानते हुए 1918 ई. में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के मंच पर हिन्दी में भाषण दिया और कुछ लोगों के विरोध करने पर जो उत्तर उन्होंने दिया वह संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के महत्त्व को बतलाता है। 1928 में 5 जुलाई के यंग इंडिया के अंक में गाँधीजी लिखते हैं – ''यदि मैं तानाशाह होता तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा दिया जाना बंद कर देता। सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषाएँ अपनाने के लिए मजबूर कर देता।''

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इसके पूर्व लोकमान्य तिलक ने कहा था – "अभी कितनी ही भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं। उनमें हिन्दी ही सर्वत्र प्रचलित है। इसी हिन्दी को भारत की एकमात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाय।" नेताजी सुभाषचंद्र बोस का मत था – "यदि हम लोगों ने मन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नही, जब भारत स्वाधीन होगा और हिन्दी उसकी राष्ट्रभाषा होगी।"

राष्ट्रीय आंदोलनों की माध्यम भाषा, देश की संपर्क भाषा होने के बाद स्वाधीनता के पश्चात् हिन्दी को 'राजभाषा' घोषित किया गया, राष्ट्रभाषा नहीं। हमारे संविधान के मुताबिक हिन्दी भाषी प्रदेशों की मुख्य राजभाषा हिन्दी है। अहिन्दी भाषी प्रदेशों में वहाँ की अपनी प्रादेशिक भाषाएँ राजभाषा बनीं; जैसे – गुजरात में गुजराती, तामिलनाडु में तमिल, आंध्र, तेलंगाना में तेलुगु, कर्नाटक में कन्नड़, केरल में मलयालम, असम में असमिया, पश्चिम बंगाल में बांग्ला, ओडिशा में उड़िया, पंजाब में पंजाबी तथा जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी आदि। वास्तव में राष्ट्रभाषा का संबंध राष्ट्रीय चेतना से जुड़ा होता है। इस दृष्टि से तथा भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा सामासिक पहचान को अभिव्यक्ति प्रदान करनेवाली भाषा के रूप में अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में हिन्दी का एक विशेष स्थान बन जाता है।

राजभाषा हिन्दी :

किसी देश के कामकाज यानी शासन के लिए स्वीकृत भाषा 'राजभाषा' होती है। 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत संघ की 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार किया। संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार 'संघ की राजभाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी' होगी तथा पंद्रह वर्षों तक सहभाषा के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा । भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं कहा गया है। संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हो गया किन्तु हिन्दी राजभाषा के रूप में तत्काल लागू नहीं की गई। राजभाषा के रूप में अंग्रेजी 15 वर्षों तक चलती रही। इस कालावधि में राष्ट्रपति के आदेश, तत्पश्चात संसद विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा को ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग कर सकेगी जैसा कि ऐसी विधि में उल्लिखित है। (अनुच्छेद 343(3))। अनुच्छेद की अंतिम पंक्ति इस अवधि को शिथिल कर देती है ।

राजभाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति राजभाषा अधिनियम 1963 द्वारा बाधित हुआ। इस अधिनियम द्वारा अनुच्छेद 345 में वर्णित अवधि के होते हुए भी अंग्रेजी भाषा को अनिश्चित काल तक प्रयोग किए जाने के लिए उपबंध किया गया। राजभाषा संशोधन अधिनियम 1967 द्वारा राजभाषा की उन्नति को अन्य भारतीय भाषाओं के साथ जोड़कर देखा गया है। केन्द्रीय सेवाओं में हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा के ज्ञान को पर्याप्त मानने तथा अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में भारतीय भाषाओं को माध्यम के रूप में चयन करने की छूट पहली बार दी गई। इससे भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी के विकास का कुछ अवसर अवश्य मिला।

राजभाषा से संबंधित कुछ नियम 1976 में बनाए गए, जिसमें सम्पूर्ण देश को तीन भागों में बाँटा गया। (क) में हिन्दी भाषी राज्य – बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली। (ख) में पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, चंडीगढ़ एवं अंडमान हैं। शेष (ग) के अंतर्गत आते हैं। (क) क्षेत्र के लिए भर्ती परीक्षाओं आदि में हिन्दी को अनिवार्य कर दिया गया, किन्तु कुछ सरकारी दस्तावेजों; जैसे – सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, रिपोर्ट आदि को द्विभाषिक रूप में जारी करना आवश्यक है। (ख) तथा (ग) क्षेत्र के राज्यों में हिन्दी के उपयोग के विस्तार के लिए विभिन्न केन्द्रीय योजनाएँ चलाई गईं, किन्तु उनका वांछित परिणाम नहीं मिला है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान इस दिशा में कार्यरत हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संचार माध्यमों के तीव्र विकास ने हिन्दी को बल दिया है। ऐसी स्थिति में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए निम्नलिखित साफ्टवेयर उपलब्ध कराए हैं –

(1) लीला, (2) लिंगोटेक, (3) ऑन लाइन कोर्सेस, (4) अक्षर एनीमेशन, (5) रैपिडली लर्न हिंदी, (6) विज्युअल हिन्दी, (7) भारतवाणी, (8) हिन्दी टीचर, (9) आओ, हिन्दी पढ़ें तथा (10) हिन्दी गुरु।

'लीला' ध्वनि-उच्चारण मानकों के लिए, लिंगोटेक – सही उच्चारण के लिए है। हिन्दी की अनेक वेब साइट भी उपलब्ध हैं, इनमें से कुछ इस प्रकार हैं –

(1) w.w.w.gadnet.com - इस पर हिन्दी भाषा का इतिहास, कविताएँ, गीत आदि उपलब्ध हैं।

(2) w.w.w.hindibhash.com - इस पर हिन्दी भाषा संबंधी जानकारी उपलब्ध है।

(3) w.w.w.rosettastone.com - इस में हिन्दी सहित विश्व की सभी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने की सुविधा है।

संपर्क भाषा हिन्दी :

हिन्दी के आरंभिक विकास में नाथों, सिद्धों तथा संतों का बहुत योगदान रहा। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी को पूरे भारत में पहुँचाया। अहिन्दी क्षेत्रों में कण्हपा (कर्नाटक), नानक (पंजाब), नामदेव और तुकाराम (महाराष्ट्र), नरसिंह मेहता तथा प्राणनाथ (गुजरात) इत्यादि ने भी 'साहित्यिक' हिन्दी के विकास में विशेष योगदान दिया। इनकी रचनाओं में हिन्दी की विभिन्न बोलियों के अलावा फारसी, पंजाबी, गुजराती तथा मराठी भाषा का भी प्रभाव है। इसी समय हिन्दी तीर्थस्थानों, वाणिज्य व्यवहार के क्षेत्र में व्यवहृत हुई और एक 'संपर्क भाषा' के रूप में उसका विकास हुआ।

संपर्क भाषा उसे कहा जाता है जो किसी राष्ट्र या क्षेत्र में परस्पर वैचारिक आदान-प्रदान के माध्यम के रूप में कार्य करती हो। प्रत्येक स्वाधीन राष्ट्र में संपर्क भाषा ही राष्ट्रभाषा बनती है किन्तु यदि किसी देश में राष्ट्रभाषा न भी हो तो भी कोई न कोई भाषा संपर्क भाषा अवश्य रहती है। जिस भाषा में वहाँ के नागरिक बात कर या समझ सकते हैं । संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का विकास किसी प्रायोजित प्रयास का परिणाम नहीं है। आधुनिक काल के आरंभ में फारसी या अंग्रेजी के राजभाषा बनाये रखने के बावजूद हिन्दी ही संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती रही।

स्वतंत्रता के पश्चात् राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार किया गया, किन्तु उसके मार्ग में अनेक बाधाएँ भी आईं । पूरे भारत में समाचार माध्यमों, दूरदर्शन, फिल्मों, तीर्थयात्रा, धार्मिक संगठनों, राजनीतिक कार्यक्रमों के लिए उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम तक जिस भाषा का व्यवहार हो रहा है, वह हिन्दी है। संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को समझ कर ही विदेशी चैनल भी अपने सर्वाधिक कार्यक्रम हिन्दी में तैयार कर रहे हैं। हिन्दी विरोधी भी अपनी सार्वदेशिक छवि के लिए हिन्दी पर आश्रित हैं। हिन्दी के साथ भारत की जनता है, अतः वह देश की संपर्क भाषा है।

वर्तमान काल में संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। विश्व साहित्य, विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं को अखिल भारतीय स्तर तक पहुँचाने के लिए हिन्दी एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरी है। मुद्रण के क्षेत्र में हुई प्रगति, लोकतंत्र की ओर सामूहिक रुझान आदि ने संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने का काम किया है। ज्ञान-विज्ञान के विस्फोट के इस युग में भारत की अधिकांश आबादी तक पहुँचने के लिए मात्र हिन्दी ही सशक्त है, अतः संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति निर्विवाद है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) डायरी-लेखन

डायरी को 'दैनन्दिनी' कहते हैं। डायरी में व्यक्ति की प्रतिदिन की दिनचर्या लिखी जाती है। इसमें डायरी लिखने वाला अपने व्यक्तिगत जीवन में घटित घटना, उसका स्थान और संबंधित व्यक्तियों के विषय में अपने विचार भी लिखता है। विभिन्न प्रकार की घटनाओं के कारण जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की स्मृति के लिए अपनी डायरी लिख लेना ही डायरी-लेखन है।

यदि मन में कोई विचार आया तो उसे भी डायरी में लिख लिया जाता है।

डायरी के आरंभिक पृष्ठ पर अपना पूरा नाम, घर तथा कार्यालय का पता, दूरभाष, लाइसेंस (वाहन चालक प्रमाणपत्र) नंबर, बैंक खाता नंबर, पान (PAN) तथा आधार कार्ड नंबर, रक्त ग्रुप, वजन-ऊँचाई, पहचान चिह्न, मोबाइल नंबर, जीवन बीमा पॉलिसी नंबर, आकस्मिक स्थिति में किससे संपर्क किया जाए उसका नाम, फोन नंबर आदि का विवरण लिखना उपयोगी रहता है। ए टी एम कार्ड का PIN (पिन) नम्बर कभी भी डायरी में न लिखें।

दैनिक डायरी लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

(1) विवरण संक्षेप में लिखना चाहिए।

(2) नई जानकारी या सूचना आदि को ही लिखना चाहिए।

(3) डायरी के पन्ने के आरंभ में दाईं ओर या बीचोंबीच तारीख लिखनी चाहिए। छपी डायरी में तारीख, दिन का उल्लेख रहता ही है।

(4) महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ की बातचीत का सार, निष्कर्ष भी लिखना चाहिए।

(5) किसी व्यक्ति या घटना के प्रति अपनी टिप्पणी या प्रतिक्रिया भी डायरी में लिखी जा सकती है।

(6) डायरी सरल, स्पष्ट भाषा में लिखनी चाहिए। फिर भी कुछ बातें सांकेतिक या कोड रूप में लिखी जाती हैं।

विशेष : आपकी पाठ्यपुस्तक में 'डायरी का एक पन्ना' शीर्षक रचना सम्मिलित है, उसे ध्यान से पढ़िए।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पूरक वाचन

1 ऐ अजनबी

राही मासूम रज़ा

(जन्म : सन् 1927 ई.; निधन : 1992 ई.)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के ज़िले ग़ाज़ीपुर के गाँव गंगौली में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा ग़ाज़ीपुर में हुई। अलीगढ़ में उर्दू से एम.ए. और पीएच.डी. हुए। ये कुछ दिनों तक अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में उर्दू के प्राध्यापक रहे। अलीगढ़ में ही उन्होंने अपने भीतर साम्यवादी दृष्टिकोण का विकास किया। इनका धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण काफ़ी चर्चित रहा है। 1968 से वे मुंबई में रहने लगे। आजीविका के लिए वे फ़िल्मों के लिए लेखन करते रहे। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे 'आधा गाँव', 'हिम्मत जौनपुरी' और 'टोपी शुक्ला' जैसे महत्वपूर्ण उपन्यासों के लिए ज़्यादा जाने गये, लेकिन वे एक महत्वपूर्ण कवि भी थे। इनका 'अजनबी शह्र, अजनबी रास्ते' एक महत्वपूर्ण काव्य-संग्रह है, जिसका सुल्तान अहमद ने 'शीशे के मकाँवाले' शार्षक से उर्दू से हिंदी में लिप्यंतरण किया है। इन्होंने कई फ़िल्मों के संवाद लिखे। 'महाभारत' सीरियल के इनके संवाद सबसे ज़्यादा चर्चित हुए।

यह अंश 'ऐ अजनबी' कविता से लिया गया है। इसमें हिन्दोस्तान की उस पवित्र धरती का वर्णन किया गया है जिसमें गरीबी अवश्य है फिर भी उसमें कुतुबमीनार, ताजमहल, बनारस के मंदिर ही नहीं कालिदास, टैगोर, मीर, गालिब इत्यादि की कलाएँ भी देखी जा सकती हैं।

ये है हिंदोस्ताँ की मुक़द्दस ज़मीं
जैसे मेले में तन्हा कोई नाज़नीं
सिन्दः हा-ए-गुलामी से ज़ख़्मी जबीं
एक कुह्नः गिरीबाँ फटी आस्तीं

एक घर, जिसमें हंगामः आबाद है
इक नशेमन, जो सदियों से बर्बाद है

ये कुतुब, जैसे इक तान ऊपर उठे
ताज, जिस तर्ह रक़्क़ासः दम साध ले
ये बनारस के मन्दिर, जवाँ वलवले
जैसे मे'मार के ख़्वाब पूरे हुए

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ज़िन्दगी को उभरना सिखाना गया
पत्थरों को अजन्ता बनाया गया

कालिदास और टैगोर का ये चमन
मीर-ओ-ग़ालिब और इक़बाल का ये वतन
एशिया के हसीं जिस्म का पैरहन
रश्क-ए-सदमयकदा था ये दारुल मिहन

किसने इस शम्मा से लौ लगाई नहीं
कितने अश्कों से वाक़िफ़ है ये आस्तीं

शब्दार्थ-टिप्पण

मुकद्दस पवित्र **जबीं** माथा **कुहनः (कुहना)** पुराना **गिरीबाँ** गिरेबान (कालर) **आस्तीं** (आस्तीन) **नाज़नी** सुंदरी **हंगामः (हंगामा)** शोरगुल, हलचल **नशेमन** घोंसला **तर्ह** तरह **रक़्क़ासः** नर्तकी, रक़्क़ासा **वलवले** आवेग **मे'मार** निर्माता, इमारत बनानेवाले **चमन** बाग़ **पैरहन** वस्त्र, पहनावा **रश्क** स्पर्धा **सद** सैकड़ों **मयकदा** शराबखाना **दारुलमिहन** दुःख का स्थान, संसार शम्अ (शमा) चिराग **अश्क** आँसू वाक़िफ़ जानकार **सिज़्दा हा-ए-ग़ुलामी** ग़ुलामी के सिजदे **कुतुब** कुतुबमीनार

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2 काबुलीवाला

रवीन्द्रनाथ टैगोर

(जन्म : सन् 1861 ई.; निधन : 1941 ई.)

इनका जन्म कोलकाता में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा सेंट ज़ेवियर्स स्कूल में हुई। कुछ समय तक लंदन में कानून का अध्ययन किया, लेकिन 1880 में बिना डिग्री लिये वापस आ गये। इनके काव्य-संग्रह 'गीतांजलि' पर इन्हें नोबेल पुरस्कार मिला। भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' इन्हीं की रचना है। कवि होने के साथ-साथ ये कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार और नाटककार भी थे। इतना ही नहीं, चित्रकार और संगीतकार भी थे।

इनके उपन्यास 'गोरा', 'घरे बाहिरे', 'चोखेर बालि' और 'योगायोग' भी बहुत लोकप्रिय हैं।

'काबुलीवाला' रवीन्द्रनाथ टैगोर की श्रेष्ठतम कहानियों में से एक है, जिस पर एक हिंदी फ़िल्म का निर्माण भी हो चुका है।

इसमें ऐसे अबाध प्रेम का चित्रण है, जो किसी धर्म या देश के बंधन को स्वीकार नहीं करता। इसका चरित्र रहमत 'मिनी' से भी वैसे ही स्नेह करता है, जैसा अपनी बच्ची से करता है, जिसके हाथ का काग़ज़ पर बना निशान हमेशा अपने साथ लिये रहता है। मिनी के पिता को इस हक़ीक़त का जब पता चलता है, तो वह मिनी के विवाह के ख़र्च में कटौती कर रहमत को उसके अपने घर जाने का किराया देते हैं। इस कहानी की नाटकीय घटनाएँ भी हमारा ध्यान खींचती हैं।

---

[1]

मेरी पांच वर्ष की छोटी लड़की मिनी से घड़ी-भर भी बात बिना किए नहीं रहा जाता। संसार में जन्म लेने के बाद भाषा सीखने में उसने सिर्फ एक ही साल लगाया होगा। उसके बाद से, जितनी देर तक वह जागती रहती है, उस समय का एक क्षण भी वह मौन में नष्ट नहीं करती। उसकी माँ अक्सर डाँटकर उसका मुँह बंद कर देती हैं, पर मुझसे ऐसा नहीं होता। मिनी का चुप रहना मुझे ऐसा अस्वाभाविक लगता है कि मुझसे वह ज्यादा देर तक सहा नहीं जाता। यही वजह है कि मेरे साथ उसकी बातचीत कुछ ज्यादा उत्साह के साथ होती है।

सवेरे मैंने अपने उपन्यास के सत्रहवें परिच्छेद में हाथ लगाया ही था कि इतने में मिनी ने आकार कहना शुरू कर दिया—"बापूजी, रामदयाल दरबान, 'काक' को 'कौआ' कहता था, वो कुछ जानता नहीं न बापूजी ?"

दुनिया की भाषाओं की विभिन्नता के विषय में मेरे कुछ कहने से पहले ही उसने दूसरा प्रसंग छेड़ दिया—"देखो बापूजी, भोला कहता था, आकाश में हाथी सूँड से पानी फेंकता हैं, इसी से बरसा होती है ! अच्छा बापूजी, भोला झूठ-मूठ को बकता बहुत है न ! खाली बकबक किया करता है, रात-दिन करता है।" मैंने कहा—"मिनी तू जा, भोला के साथ खेल जाकर। मुझे अभी काम है, अच्छा !"

तब उसने मेरी टेबिल के बगल में पैरों के पास बैठकर अपने दोनों घुटनों और हाथों को हिला-हिलाकर बड़ी जल्दी-जल्दी मुँह चलाकर 'अटकन-बटकन दही चटाके' खेल शुरू कर दिया।

मेरा घर सड़क के किनारे पर था। सहसा मिनी 'अटकन-बटकन' खेल छोड़कर खिड़की के पास दौड़ी गई, और बड़ी जोर से चिल्लाने लगी, "काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला !"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैले-कुचैले ढीले कपड़े पहने, सिर पर साफ़ा बाँधे, कन्धे पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में दो-चार अंगूर की पिटारियाँ लिए एक लम्बा-सा काबुली धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था। उसे देखकर मेरी कन्या के मन में कैसा भावोदय हुआ, यह बताना कठिन है। उसने ज़ोरों से उसे पुकारना शुरू कर दिया। मैंने सोचा, अभी झोले कन्धें में डाले एक आफत आ खड़ी होगी और मेरा सत्रहवाँ परिच्छेद आज पूरा होने से रह जाएगा।

लेकिन मिनी के चिल्लाने पर ज्योंही काबुली ने हँसते हुए उसकी तरफ मुँह फेरा और मेरे मकान की तरफ आने लगा, त्योंही वह जान लेकर भीतर की ओर भाग गई। फिर उसका पता ही नहीं लगा कि कहां गायब हो गई। उसके मन में एक अन्धविश्वास-सा बैठ गया था कि उस झोली के अन्दर तलाश करने पर उस जैसी और भी दो-चार जीती-जागती लड़कियाँ निकल सकती हैं।

काबुली ने आकर मुस्कराते हुए मुझे सलाम किया और खड़ा हो गया। यद्यपि लेखन की व्यस्तता में उसका आना मुझे अच्छा नहीं लगा, फिर भी घर में बुलाकर इससे कुछ न खरीदना अच्छा न होगा, यह सोच उससे कुछ सौदा खरीदा गया। उसके बाद इससे इधर-उधर की बातें करने लगा। अब्दुर्रहमान, रूस, अंग्रेज, सीमान्त रक्षा इत्यादि विषयों में गप-शप होने लगी।

अन्त में, उठकर जाते समय उसने अपनी खिचड़ी भाषा में पूछा — "बाबू शाब, तुम्हारा लड़की कहाँ गई ?"

मैंने मिनी के मन से फजूल का डर दूर करने के इरादे से उसे भीतर से बुलवा लिया। वह मुझसे बिल्कुल सटकर काबुली के मुँह और झोली की तरफ संदिग्ध दृष्टि से देखती हुई खड़ी रही। काबुली ने झोली में से किशमिश और खुबानी निकालकर देना चाहा पर उसने कुछ भी न लिया; और दूने सन्देह के साथ मेरे घुटनों से चिपक गई। पहला परिचय इस तरह हुआ।

[2]

कुछ दिन बाद एक दिन सवेरे किसी जरूरी काम से मैं बाहर जा रहा था। देखा तो मेरी दुहिता दरवाजे के पास बैंच पर बैठी हुई काबुली से खूब बातें कर रही है; और काबुली उसके पैरों के पास बैठा-बैठा मुस्कराता हुआ सब ध्यान से सुन रहा है और बीच-बीच में प्रसंगानुसार अपना मतामत भी खिचड़ी भाषा में व्यक्त करता जाता है। मिनी को अपने पाँच साल के जीवन की जानकारी में 'बापूजी' के सिवा ऐसा धीरज वाला श्रोता शायद ही कभी मिला होगा। देखा तो उसका छोटा सा आंचल बादाम-किशमिश मे भरा हुआ है। मैंने काबुली से कहा— "उसे यह सब क्यों दे दिया ? अब मत देना।" कहकर जेब में से एक अठन्नी निकालकर उसे दे दी। उसने बिना किसी संकोच के अठन्नी लेकर अपनी झोली में डाल ली।

घर लौटकर देखता हूँ तो उस अठन्नी ने बड़ा भारी उपद्रव खड़ा कर दिया है।

मिनी की माँ एक सफेद चमकीला गोलाकार पदार्थ हाथ में लिये डपटकर मिनी से पूछ रही है—"तूने यह अठन्नी पायी कहाँ से ?"

मिनी ने कहा—"काबुलीवाले ने दी है।"

"काबुलीवाले से तैने अठन्नी ली कैसे, बता ?"

मिनी ने रोने की तैयारी करके कहा—"मैंने माँगी नहीं, उसने अपने-आप दी है।"

मैंने आकर मिनी की उस आसन्न विपत्ति से रक्षा की, और उसे बाहर ले आया।

मालूम हुआ कि इस बीच में काबुली रोज आया है और पिस्ता-बादाम की रिश्वत दे-देकर मिनी के छोटे-से हृदय पर उसने काफी अधिकार जमा लिया है।

देखा कि इन दोनों मित्रों में कुछ बंधी-बंधाई बातें और हँसी प्रचलित है। जैसे, रहमत को देखते ही मेरी लड़की हँसती हुई पूछेगी, "काबुलीवाला ! ओ काबुलीवाला ! तुम्हारी झोली के भीतर क्या है ?"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रहमत एक आवश्यक चन्द्रबिन्दु जोड़कर हँसता हुआ उत्तर देता—''हाथी !'' उसके परिहास का मर्म अत्यन्त सूक्ष्म हो, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, फिर भी इससे दोनों को जरा विशेष कौतुक मालूम होता, और शरद ऋतु के प्रभात में एक सयाने और एक बच्चे की सहज हँसी देखकर मुझे भी बड़ा अच्छा लगता।

उनमें और भी एक आध बात प्रचलित थी। रहमत मिनी से कहता—''लल्ली, तुम ससुराल कभी नहीं जाना, अच्छा !''

हमारे यहाँ लड़कियाँ जन्म से ही 'ससुराल' शब्द से परिचित रहती हैं, किन्तु हम लोग जरा कुछ नये जमाने के होने के कारण जरा-सी बच्ची को ससुराल के सम्बन्ध में विशेष ज्ञानी नहीं बना सके थे, इसलिए रहमत का अनुरोध वह साफ-साफ नहीं समझ पाती थी, किन्तु फिर भी किसी बात का जवाब बिना दिए चुप रहना उसके स्वभाव के विरुद्ध था । उल्टे वह रहमत से ही पूछती, ''तुम ससुराल जाओगे ?''

रहमत काल्पनिक ससुर के लिए अपना प्रकाण्ड मोटा घूँसा तानकर कहता—''हम ससुर को मारेगा।''

सुनकर मिनी 'ससुर' नामक किसी अपरिचित जीव की दुरवस्था की कल्पना करके खूब हँसती।

[3]

मिनी की माँ स्वभाव की बड़ी वहमी है। रास्ते में कोई शोर-गुल हुआ नहीं कि उसने समझ लिया कि दुनिया-भर के सारे मतवाले शराबी हमारे ही मकान की तरफ दौड़े आ रहे हैं। उसकी समझ में यह दुनिया इस छोर से लेकर उस छोर तक, चोरों, डकैतों, मतवाले शराबियों, साँपों, बाघों, मलेरिया, तिलचिट्टों और गोरों से भरी पड़ी है। इतने दिन से (बहुत ज्यादा दिन नहीं हुए) इस दुनिया में रहते हुए भी उसके मन की यह विभीषिका दूर नहीं हुई।

रहमत काबुली की तरफ से वह पूरी तरह निश्चित नहीं थी। उस पर विशेष दृष्टि रखने के लिए मुझसे वह बार-बार अनुरोध करती रहती। जब मैंने उसका सन्देह हँसी में उड़ा देना चाहा, तो वह मुझसे एक साथ कई सवाल कर बैठती—''क्या कभी किसी का लड़का चुराया नहीं गया ? क्या काबुल में गुलाम नहीं बेचे जाते ? एक लम्बे-तगड़े मोटे काबुली के लिए एक छोटे-से बच्चे को चुरा ले जाना क्या बिल्कुल असम्भव है ?''—इत्यादि इत्यादि।

मुझे मानना पड़ता है कि यह बात बिल्कुल असम्भव हो, सो बात नहीं; पर विश्वास योग्य नहीं। विश्वास करने की शक्ति सबमें समान नहीं होती, इसलिए मेरी स्त्री के मन में डर रह ही गया है; लेकिन सिर्फ इसलिए बिना किसी दोष के रहमत को अपने मकान में आने से मना न कर सका।

हर साल माघ महीने के लगभग रहमत देश चला जाता है। इस समय वह अपने ग्राहकों से रुपया वसूल करने के काम में बड़ा उद्विग्न रहता है। उसे घर-घर घूमना पड़ता है, मगर फिर भी वह मिनी से एक बार मिल ही जाता है। देखने में तो ठीक ऐसा लगता है कि दोनों में मानो कोई षड्यंत्र चल रहा है। जिस दिन वह सवेरे नहीं आ पाता, उस दिन देखूँ तो शाम को हाजिर है। अँधेरे में घर के कोने में उस ढीले-ढाले जामा-पायजामा पहने झोला-झोली वाले लम्बे-तगड़े आदमी को देखकर सचमुच ही मन में सहसा एक आशंका-सी पैदा हो जाती है।

परन्तु, जब देखता हूँ कि मिनी ''काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला !'' पुकारती हुई हँसती-हँसती दौड़ी आती है और दो जुदा-जुदा उमर के असमान मित्रों में वही पुराना सरल परिहास चलने लगता है, तब मेरा संपूर्ण हृदय प्रसन्न हो उठता है।

एक दिन सवेरे मैं अपने छोटे कमरे में बैठा हुआ अपनी नई पुस्तक का प्रूफ देख रहा था। जाड़ा विदा होने से पहले आज दो तीन रोज से खूब जोरों से पड़ रहा है। जहाँ देखो वहाँ जाड़े की ही चर्चा है। ऐसे जाड़े पाले में, खिड़की में से सवेरे की धूप टेबिल के नीचे मेरे पैरों पर आ पड़ी तो उसकी गरमी मुझे बड़ी अच्छी मालूम देने लगी । करीब आठ बजे होंगे। इसी समय सड़क पर एक बड़ा भारी हल्ला-सा सुनाई दिया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

देखूँ तो अपने रहमत को दो सिपाही बाँधे लिये जा रहे हैं। उसके पीछे बहुत-से कुतूहल लड़कों का झुण्ड चला आ रहा है। रहमत के कुर्ते पर खून के दाग हैं और एक सिपाही के हाथ में खून से सना हुआ छुरा ! मैंने दरवाजे से बाहर निकलकर सिपाही को रोक लिया, पूछा—''क्या बात है ?''

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत के मुँह से सुना कि हमारे पड़ोस में रहने वाले एक आदमी ने रहमत से एक रामपुरी चद्दर खरीदी थी। उसके कुछ रुपये उसकी तरफ बाकी थे, जिन्हें वह देने से नट गया। बस, इसी पर दोनों में बात बढ़ गई और रहमत ने निकालकर छुरा घोंप दिया।

रहमत उस झूठे, बेईमान आदमी के लिए तरह-तरह की अश्राव्य गालियाँ सुना रहा था। इतने में ''काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला !'' पुकारती हुई मिनी घर से निकल आई।

रहमत का चेहरा क्षण-भर में कौतुक-हास्य प्रफुल्ल हो उठा ! उसके कंधे पर आज झोली नहीं थी, इसीलिए झोली के बारे में दोनों मित्रों की अभ्यस्त आलोचना न चल सकी। मिनी ने आने के साथ ही उससे पूछा, ''तुम ससुराल जाओगे ?''

रहमत ने हँसकर कहा—''हाँ, वहीं तो जा रहा हूँ।''

रहमत ताड़ गया कि उसका यह उत्तर मिनी के चेहरे पर हँसी न ला सका, और तब उसने हाथ दिखाकर कहा—''ससुर को मारता, पर क्या करूँ, हाथ बंधे हुए हैं।''

छुरा चलाने के कसूर में रहमत को कई साल की सज़ा हो गई।

[4]

काबुली का ख्याल धीरे-धीरे मन से बिल्कुल उतर गया। हम लोग जब घर में बैठकर हमेशा के अभ्यास के अनुसार नित्य का काम-धन्धा करते हुए आराम से दिन बिता रहे थे, तब एक स्वाधीन पर्वतचारी पुरुष जेल की दीवारों के अन्दर कैसे साल पर साल बिता रहा होगा, यह बात हमारे मन में कभी उदित नहीं हुई।

और चंचल-हृदय मिनी का आचरण तो और भी लज्जाजनक था, यह बात उसके बाप को माननी ही पड़ेगी। उसने सहज ही अपने पुराने मित्र को भूलकर पहले तो नबी सईस के साथ मित्रता जोड़ी। फिर क्रमशः जैसे-जैसे उसकी उमर बढ़ने लगी, वैसे-वैसे सखा के बदले एक के बाद एक उसकी सखियाँ जुटने लगीं। और तो क्या, अब वह अपने बापूजी के लिखने के कमरे में भी नहीं दिखाई देती। मेरा तो एक तरह से उसके साथ सम्बन्ध ही टूट गया।

कितने ही साल बीत गए। सालों बाद आज फिर एक शरद-ऋतु आई है। मिनी का सगाई पक्की हो गई है । पूजा की छुट्टियों में ही उसका ब्याह हो जाएगा। कैलासवासिनी के साथ-साथ अबकी बार हमारे घर की आनन्दमयी मिनी भी माँ-बाप के घर में अँधेरा करके सास-ससुर के घर चली जाएगी।

प्रभात का सूर्य बड़ी सुन्दरता से उदय हुआ। वर्षा के बाद शरद-ऋतु की यह नई धुली हुई धूप मानो सुहागे में गले निर्मल सोने की तरह रंग दे रही है। कलकत्ता की गलियों के भीतर परस्पर सटे हुए पुराने ईंटझर गन्दे मकानों के ऊपर भी इस धूप की आभा ने एक तरह का अनुपम लावण्य फैला दिया है।

हमारे घर पर आज मुँह अँधेरे से ही शहनाई बज रही है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे वह मेरे कलेजे की पसलियों में से रो-रोकर बज रही हो। उसकी करुणा भैरवी रागिनी मानो मेरी आसन्न-विच्छेद व्यथा को शरद्-ऋतु की धूप के साथ सम्पूर्ण विश्व-जगत् में व्याप्त कर देती है। मेरी मिनी आज ब्याह है।

सवेरे से बड़ा भारी झमेला है। हर वक्त लोगों का आना-जाना जारी है। आंगन में बाँस बाँधकर मण्डप छाया जा रहा है। हर एक कमरे में और बरामदे में झाड़ लटकाए जा रहे हैं और उनकी टन-टन की आवाज मेरे कमरे में आ रही है। 'चल रे', 'जल्दी कर', 'इधर आ' की तो कोई शुमार ही नहीं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैं अपने लिखने-पढ़ने के कमरे में बैठा हुआ हिसाब लिख रहा था। इतने में रहमत आया और सलाम करके खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान ही न सका। उसके पास न तो झोली थी, न वैसे लम्बे-लम्बे बाल थे, और न चेहरे पर पहले जैसा तेज ही था। अन्त में उसकी मुस्कराहट देखकर पहचान सका कि वह रहमत है।

मैंने पूछा—"क्यों रहमत ! कब आए ?"

उसने कहा—"कल शाम को जेल से छूटा हूँ।"

सुनते ही उसके शब्द मेरे कानों मे खट-से बज उठे। किसी खूनी को मैंने कभी आंखों से नहीं देखा, उसे देखकर मेरा सारा मन एकाएक सिकुड़-सा गया। मेरी यही इच्छा होने लगी कि आज के इस शुभ दिन में यह आदमी यहाँ से चला जाए तो अच्छा हो।

मैंने उससे कहा—"आज हमारे घर में एक जरूरी काम है सो आज मैं उसमें लगा हुआ हूँ। आज तुम जाओ, फिर आना।"

मेरी बात सुनकर वह उसी समय जाने को तैयार हो गया। पर दरवाजे के पास जाकर कुछ इधर-उधर करके बोला—"बच्ची को जरा देख लेता..."

शायद उसे विश्वास था कि मिनी अभी तक वैसी ही बच्ची बनी है। उसने सोचा कि मिनी अब भी पहले की तरह 'काबुलीवाला, ओ काबुलीवाला !' चिल्लाती हुई दौड़ी चली आएगी। उन दोनों के उस पुराने कौतुक-जन्य हास्यालाप में किसी तरह की रुकावट न होगी। यहाँ तक कि पहले की मित्रता की याद करके एक पेटी अँगूर और कागज के ठोंगे में थोड़ी-सी किशमिश और बादाम, शायद अपने देश के किसी आदमी से, माँग-मूँगकर लाया था। उसकी वह पहले की अपनी झोली उसके पास नहीं थी।

मैंने कहा—"आज घर में बहुत काम है। आज किसी से मुलाकात न हो सकेगी।"

मेरा जवाब सुनकर वह कुछ उदास-सा हो गया। खामोशी के साथ उसने एक बार मेरे मुँह की ओर स्थिर दृष्टि से देखा; फिर "सलाम बाबू साहब" कहकर दरवाजे के बाहर निकल गया।

मेरे हृदय में न जाने कैसी एक वेदना-सी उठी। मैं सोच ही रहा था कि उसे बुलालूँ; इतने में देखा तो वह खुद ही आ रहा है।

पास आकर बोला—"ये अँगूर और किशमिश-बादाम बच्ची के लिए लाया था, उसको दे दीजिएगा।"

मैंने उसके हाथ से सामान लेकर उसे पैसे देने चाहे पर उसने मेरा हाथ थाम लिया, कहने लगा—"आपकी बहुत मेहरबानी है, बाबू साहब ! हमेशा याद रहेगी; पैसा रहने दीजिए।" जरा ठहरकर फिर बोला—"बाबू साब, आपकी जैसी मेरी भी देश में एक लड़की है। मैं उसकी याद करके आपकी बच्ची के लिए थोड़ी-सी मेवा हाथ में ले आया करता हूँ। मैं तो यहाँ सौदा बेचने नहीं आता।"

कहते हुए उसने अपने ढीले-ढाले कुरते के अन्दर हाथ डालकर छाती के पास से एक मैला-कुचैला कागज का टुकड़ा निकाला और बड़े जतन से उसकी तह खोलकर दोनों हाथों से उसे फैलाकर मेरी टेबिल पर रख दिया।

देखा कि कागज पर एक नन्हें-से हाथ की छोटी-सी छाप है। फोटोग्राफ नहीं, तैलचित्र नहीं, हाथ में थोड़ी-सी कालिख लगाकर कागज के ऊपर उसी का निशान ले लिया गया है। अपनी लड़की की इस याददाश्त को छाती से लगाकर रहमत हर साल कलकत्ता के गली-कूँचों में मेवा बेचने आता है और तब यह कालिख-चित्र, मानो उसकी बच्ची के हाथ का सुकोमल स्पर्श, उसके बिछुड़े हुए विशाल वक्ष:स्थल में सुधा उड़ेलता रहता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

देखकर मेरी आँखें भर आईं, और फिर इस बात को मैं बिल्कुल ही भूल गया कि वह एक काबुली मेवावाला है और मैं एक उच्च वंश का हूँ। तब मैं महसूस करने लगा कि जो वह है, वही मैं हूँ। वह भी बाप है, मैं भी बाप हूँ। उसकी पर्वतवासिनी छोटी-सी पार्वती के हाथ की निशानी ने मेरी ही मिनी की याद दिला दी। मैंने उसी वक्त मिनी को बाहर बुलवाया। हालांकि इस पर भीतर बहुत-कुछ आपत्ति की गई, पर मैंने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया । ब्याह की पूरी पोशाक और जेवर-गहने पहने हुए बेचारी वधू-वेशिनी मिनी मारे शर्म के सिकुड़ी हुई-सी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसे देखकर रहमत काबुली पहले तो सकपका गया; पहले जैसी बातचीत करते उससे न बना। बाद में हँसता हुआ बोला—''लल्ली, सास के घर जा रही है क्या ?''

मिनी अब सास के मायने समझने लगी है; लिहाजा अब उससे पहले की तरह जवाब देते न बना। रहमत की बात सुनकर मारे शर्म से उसका मुँह लाल सुर्ख हो उठा। उसने मुँह फेर लिया। मुझे उस दिन की बात याद आ गई जबकि काबुली के साथ मिनी का प्रथम परिचय हुआ था। मने में एक व्यथा-सी जाग उठी।

मिनी के चले जाने पर एक गहरी उसांस भरकर रहमत जमीन पर बैठ गया। शायद उसकी समझ में यह बात एकाएक स्पष्ट हो उठी कि उसकी लड़की भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी और उसके साथ भी उसे अब फिर नई पहचान करनी पड़ेगी, शायद उसे अब वह ठीक पहले की-सी वैसी-की वैसी न पाएगा। इन आठ बरसों में उसका क्या हुआ होगा, कौन जाने ?

सवेरे के वक्त शरद् की स्निग्ध-सूर्य-किरणों में शहनाई बजने लगी; और रहमत कलकत्ता की एक गली के भीतर बैठा हुआ अफगानिस्तान के एक मरु-पर्वत का दृश्य देखने लगा।

मैंने कुछ रुपये निकालकर उसके हाथ में दिए; और कहा—''रहमत ! तुम आज अपने देश चले जाओ, अपनी लड़की के पास। तुम दोनों के मिलन-सुख से मेरी मिनी सुख पाएगी।''

रहमत को रुपये देने के बाद ब्याह के हिसाब में से मुझे उत्सव-समारोह के दो-एक अंग छाँटकर निकाल देने पड़े । जैसी सोची थी वैसी रोशनी नहीं कर सका, अंग्रेजी बाजे भी नहीं आए, घर में औरतें बड़ी नाराजगी दिखाने लगीं, सब-कुछ हुआ, फिर भी मेरा ख्याल है कि आज एक अपूर्व मंगल-प्रकाश से हमारा वह शुभ उत्सव उज्ज्वल हो उठा।

शब्दार्थ

घड़ी-भर थोड़ी देर, क्षणभर **आफत** मुसीबत, संकट **खिचड़ी भाषा** मिश्रित भाषा **उपद्रव** हंगामा **तैने** तूने **परिहास** हास्य, मजाक **स्वभाव** आदत **वहम** शंका **षडयंत्र** जालसाजी **उद्विग्न** दुखी, बेचैन **विभीषिका** भयंकरता **अश्राव्य** जिसे सुना न जा सके, **लावण्य** सौंन्दर्य **सुधा** अमृत **प्रकाश** उजाला **आकाश** नभ, **दुहिता** पुत्री **अबाध** अपार

•

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3 मेरे हिमालय के पासबानो

गोपालदास 'नीरज'

(जन्म : सन् 1925 ई.)

हिन्दी के लोकप्रिय गीतकार गोपालदास 'नीरज' का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला इटावा के पास पुरावली गाँव में हुआ था। बचपन में ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण आपको अथक जीवन-संघर्ष करना पड़ा। अध्ययन के दौरान ही इन्हें नौकरी करनी पड़ी। इसके साथ ही अध्ययन जारी रखा और इन्होंने हिन्दी से एम.ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। तत्पश्चात मेरठ और अलीगढ़ के कॉलेजों तथा मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ में प्राध्यापक के पद पर कार्य किया । साथ ही मुंबई के फिल्मी संसार में भी गीतकार के रूप में कार्य किया। ये विद्यार्थीकाल से ही कविता लिखने लगे थे। ये मुख्यत: गीतकार हैं।

हिन्दी गीतकारों में जितनी प्रसिद्धि हरिवंशराय बच्चन ने प्राप्त की उनके बाद 'नीरज' ही ऐसे दूसरे हिन्दी कवि हैं, जिन्होंने गीतों के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त की है। इनकी कविता पर नेहरू और अरविंद दर्शन का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। ये मानवतावादी कवि हैं। ये मूलत: प्रेम, करुणा और वेदना के गायक हैं। इनके गीतों में कबीर के निर्गुनिया स्वर की गूँज सुनाई देती है। कवि-सम्मेलनों में इन्हें बहुत ख्याति मिली है। 'आशावरी', 'दर्द दिया है', 'प्राणगीत', 'नीरज की पाती', 'संघर्ष', 'विभावरी', 'बादर बरस गयो', 'दो गीत', 'लहर पुकारे' और 'गीत भी अगीत भी' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। राष्ट्र के विभिन्न अंचलों से कई पुरस्कार और सम्मानों से सम्मानित इस श्रेष्ठ कवि को सन् 1991 में पद्मश्री और सन् 2007 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया है।

प्रस्तुत गीत में कवि ने देश और समाज के नेताओं को, पथ-प्रदर्शकों को आह्वान किया है कि हम सब मिलकर गरीबी और उदासी के साम्राज्य को नष्ट करें, उसे दूर करें। मानवता और भाईचारे की मिसाल फिर क़ायम करें और द्वेष तथा नफ़रत की दीवारें मिटा दें।

मेरे हिमालय के पासबानो ! मेरे गुलिस्तां के बाग़बानो !
उठो कि सदियों की नींद तजकर तुम्हें वतन फिर पुकारता है !

लिखो बहारों के नाम ख़त वह
कि फूल बन जाएँ ख़ार सारे,
वे रोशनी की लगाओ क़लमें,
ज़मीं पै उगने लगें सितारे,
बदल दो पिछले हिसाब ऐसे, उलट दो ग़म के नक़ाब ऐसे,
कि जैसे सोई कली का घूँघट सुबह को भँवरा उघारता है !
मेरे हिमालय के पासबानो...

ग़रीबी जो बनके रोज़ ईंधन
उदास चूल्हों में जल रही है,
वह जो पसीने की बूँद गिरकर
ज़मीं का नक्शा बदल रही है

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुम उसके माथे मुकुट सजा दो, मुकुट सजाकर दुल्हन बना दो
जो आँसुओं को उबारता है वह ज़िन्दगी को सँवारता है !
मेरे हिमालय के पासबानो...

है ज़ोरो-जुल्मत का दौर ऐसा
मना है फूलों को मुस्कराना,
इधर है मज़हब का जेलखाना
उधर है तोपों का कारखाना
मिटा दो फ़िरकापरस्ती जग से, ढहा दो नफरत की हर हवेली
कि एक शोला धधक के सारे मकां की सूरत बिगाड़ता है।
मेरे हिमालय के पासबानो...

बहे न आदम का खून फिर से
न भूख दुनिया की उम्र खाए
करीब मन्दिर के आये मस्जिद,
न फिर कोई घर को बाँट पाये,
नहीं यह सोने का वक्त भाई ! नहीं झगड़ने की यह घड़ी है
वह देखो केसर की क्यारियों को गँवार पतझर उजाड़ता है।
मेरे हिमालय के पासबानो...

शब्दार्थ

पासबानो रखवालो, रक्षा करने वालो **गुलिस्ताँ** बगीचा, उद्यान **बागबान** माली **नकाब** पर्दा, घूँघट **जोरो-जुल्मत** अत्याचार **फ़िरकापरस्ती** जाति-सम्प्रदाय का भेद **खार** कंटक, कांटा।

●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4 राजर्षि का जीवन-दर्शन

माखनलाल चतुर्वेदी

(जन्म : सन् 1889 ई.; निधन : 1968 ई.)

'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ' जैसी पंक्तियों से समृद्ध उनकी 'पुष्प की अभिलाषा' जैसी राष्ट्रीय कविता से बहुतेरे लोग परिचित हैं। इनका जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले में हुआ था। ये 'प्रभा', 'कर्मवीर' और 'प्रताप' जैसी राष्ट्रीय आंदोलन की पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रहे। इनकी 'हिमतरंगिणी' के लिए 1954 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया गया। इन्हें 1963 में 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया। 'एक भारतीय आत्मा' इनका उपनाम था ।

'हिमकिरीटिनी', 'वेणु लो गूँजे धरा' और 'बीजुरी काजल आँज रही' आदि काव्य-संग्रह और 'साहित्य के देवता' और अमीर इरादे : ग़रीब इरादे' आदि उनकी प्रमुख गद्य कृतियाँ हैं।

'राजर्षि का जीवन-दर्शन' शीर्षक से माखनलाल चतुर्वेदी ने राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन का संस्मरण लिखा है। इसमें उन्होंने उनके राष्ट्रीय चरित्र का गुणगान किया है। वे हिंदी से बहुत प्रेम करते थे, लेकिन भारतीय स्वतंत्रता को उससे अधिक वरीयता देते थे। टंडन जी हिंदी के साथ उर्दू कविता के बड़े हिमायती थे। माखनलाल चतुर्वेदी का यह भी मत है कि 'लोग यह सुनकर अचंभा करेंगे कि महात्मा गाँधी मतभेद के समय भी टंडन जी को बहुत मानते थे।'

श्रद्धेय टण्डनजी जीवन के व्यवहार के महल में आदर्शों की वह खिड़की है जिसमें से हम युग-युगों के सन्तों के आचरण को झाँककर देख सकते हैं। साथ ही, वे देश का वह सत्य है जो उच्च जीवन भी है और उच्च जीवन का तत्त्व-चिन्तन भी। जो अन्त:करण की महान् विजय भी है, मानव-चरित्र का उच्चतर कानून भी और रीति-नीति की ईमानदारी भी।

लगभग पैंतीस वर्ष पहले की बात है, एक बार मैं लाहौर के लाजपतराय भवन में श्रद्धेय लाला लजपतरायजी से बातें कर रहा था। उन दिनों टण्डनजी लालाजी द्वारा संस्थापित राजनीतिक तिलक विद्यालय (तिलक स्कूल ऑव पॉलिटिक्स) के या तो अध्यक्ष चुने गये थे या चुने जाने को ही थे। लालाजी का कथन था कि टण्डनजी बहुत जिद्दी हैं और वे राजनीतिक तिलक विद्यालय के अध्यक्ष के रूप में की जाने वाली अपनी सेवाओं के लिए विशेष कुछ न लेकर वही वेतन लेना चाहते हैं जो अन्य सामान्य सदस्यों को मिलता है। उन दिनों तो इस विषय पर श्रद्धेय टण्डनजी से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हुई, किन्तु सन् 1943 में, जब मैं अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष हुआ और वे गोरखपुर जेल से छूटकर आये, तब मैंने उनसे लालाजी की वह वर्षों पुरानी शिकायत दोहरायी। टण्डनजी साश्रुनयन हो उठे। बोले, ''माखनलालजी, यह कैसे सम्भव था कि राजनीतिक तिलक विद्यालय का सभापति अन्यथा वरते। लालाजी महान् थे। उनके भारत और अमरीका में उठाये गये भारतीय स्वतन्त्रता के कष्टों के लिए मेरा सिर झुक जाता है। कहाँ मैं और कहाँ वे। किन्तु उन्होंने मुझे राजनीतिक तिलक विद्यालय का अध्यक्ष बनवाया और यह कैसे सम्भव हो सकता था कि मैं रुपये-पैसे को महत्त्व दूँ।''

एक बार नाभा-नरेश अपने प्रभु अंगरेजों से असन्तुष्ट हुए और उन्होंने श्रीयुत् पुरुषोत्तमदासजी टण्डन को अपने यहाँ का दीवान बनाया। कहते हैं, एक बार टण्डनजी ने प्रयाग आने के लिए उनसे छुट्टी माँगी। त्रिवेणी का तट और प्रयाग की भूमि उन्हें बहुत प्रिय हैं। स्वर्गीय नाभा-नरेश ने इनकार तो नहीं किया, किन्तु टण्डनजी की छुट्टी की माँग पर बोले कुछ नहीं। टण्डनजी ने तत्काल प्रयाग पहुँचकर अपना त्यागपत्र नाभा-नरेश को भिजवा दिया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस प्रसंग को पं. बनारसीदासजी चतुर्वेदी से प्राप्त संवाद के उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। कहते हैं, देश के किसी महामान्य धनिक सज्जन ने हिन्दी-जगत् के एक व्यक्ति को अपने एक सुप्रसिद्ध दैनिक में नियुक्त करने की बात कही। उन्होंने अपनी सब सुख-सुविधाएँ भी लिख दीं जो वे उन्हें देना उचित समझते थे। पण्डित बनारसीदासजी ने उक्त 'धनिक' सज्जन को लिख दिया कि मछली पकड़ोगे तो खुद खाओगे और मगर पकड़ने की कोशिश कीजिएगा तो वह आपको खा जायेगा।

टण्डनजी अत्यन्त नम्र हैं, किन्तु राष्ट्रीय तथा भारतीय भाषाओं के गौरव की रक्षा करने में वे कभी न झुकने वाले व्यक्तियों में से हैं। जब वे भाषण देने खड़े होते हैं तो अपने छोटे-छोटे उदाहरणों में विषय को इस तरह गूँथ देते हैं कि लोकजीवन उनका अनन्य सेवक हुए बिना नहीं रह सकता। अपने सिद्धान्तों के वे इतने पक्के हैं कि स्वराज्य मिलने के उपरान्त एक बार हिन्दी-सम्बन्धी प्रस्ताव पर मत देना पड़ा तो उन्होंने कांग्रेसी नीति के प्रतिकूल (प्रस्ताव को हिन्दी के हित में न मानने के कारण) उसके विरोध में संसद में अपना मत दिया और साथ ही कांग्रेस से त्यागपत्र भी दे दिया ।

मैंने तो सदा यह माना है कि टण्डनजी के द्वारा जो कुछ होकर आया वह इस देश की राष्ट्रीयता का उच्चतर चरित्र था। इसीलिए महामना मालवीयजी ने एक बार काशीधाम में (जब मैं खण्डवा के एक विद्यार्थी को हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश कराने के लिए गया था) प्रसंगवश कहा था कि 'पुरुषोत्तम वही होता है, जो उसका अन्त:करण उसे आज्ञा देता है। भारत की जातीयता बहुत बलवान् है कि उसके पास पुरुषोत्तमदास टण्डन जैसा व्यक्ति मौजूद है। ज्ञान जब काला पड़ने लगता है और उद्योग जब शिथिल होने लगता है, तब टण्डनजी की तरफ देखकर बल मिलता है।'

लोग अक्सर यह कहते सुने जाते हैं कि श्रद्धेय टण्डनजी केवल हिन्दी के बहुत बड़े भक्त हैं, किन्तु टण्डनजी ने एक बार मुझसे कहा था और इस आशय के उन्होंने जहाँ-तहाँ भाषण भी दिये थे कि यदि हिन्दी भारतीय स्वतन्त्रता के आड़े आयेगी तो मैं स्वयं उसका गला घोंट दूँगा। वे हिन्दी को देश की आजादी के पहले, आजादी के प्रापत करने का साधन मानते रहे हैं और मिलने के बाद आजादी को बचाये रखने का। बम्बई में भाई कन्हैयालालजी माणिकलालजी मुंशी के यहाँ टण्डनजी और मैं एक ही कमरे में ठहरे हुए थे। जब मैं मराठी, गुजराती और हिन्दी का गुणगान कर रहा था और तीनों के साम्य की बात कह रहा था तब टण्डनजी ने कहा था, "मैंने सुना है कि तमिल, तेलुगु और मलयालम में बहुत अच्छा साहित्य है। तमिल तो माखनलालजी, आप ही के देश में नहीं बोली जाती, लंका में एक बहुत बड़ा भाग तमिल बोलता है और सिंगापुर और मलाया का एक बहुत बड़ा भाग तमिल बोलता है। क्या बिना गुणों के इतनी जगह कोई भाषा बोली जा सकती है।"उस समय मैं सोचता रहा कि इस व्यक्ति को समस्त भारतवर्ष का कितना खयाल रहता है !

लोग यह सुनकर अचम्भा करेंगे कि महात्मा गांधी मतभेद के समय भी टण्डनजी को बहुत मानते थे। उन्होंने एक बार कहा भी था कि हिन्दी यदि इस देश की कीर्ति है तो इसीलिए कि पुरुषोत्तमदास टण्डन जैसे महान् व्यक्ति उसके संचालक हैं।

श्रद्धेय टण्डनजी उर्दू कविता के बड़े हिमायती हैं। वे स्वयं उर्दू शेर बड़े चाव से पढ़ते हैं और जब वे उत्तर प्रदेश विधानसभा के माननीय अध्यक्ष थे तब उन्होंने अपनी नीति स्पष्ट करते हुए मुसलमान मित्रों को अपना भाई बतलाया था । इसीलिए उनकी हिन्दी की रीति-नीति मुसलमान भाइयों की समझ में तो आ सकती थी, किसी अंगरेज की समझ में आना कठिन था। यों हिन्दी बोलने वालों पर यह उत्तरदायित्व है कि वे सारे जगत् का स्वागत करेंगे। इस विषय में रूस से सबक सीखना चाहिए। पिछले महायुद्ध में रूस समस्त संसार के कम्युनिस्टों और कम्युनिस्ट देशों का समर्थन करता रहा किन्तु उसने रूस की स्वतन्त्रता, दृढ़ता और आर्थिक व्यवस्था को खतरे में नहीं पड़ने

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दिया। इसीलिए उसके यहाँ के आविष्कार विश्व में चमत्कार दिखला रहे हैं और उसके यहाँ के धन से कितने ही लोगों को सहायता मिल रही है ।

हिन्दी के उन्नयन के क्षेत्र में प्रयाग पिछले चालीस-पचास वर्षों से ही आगे आया। उसके पहले काशी, आगरा, बाँकीपुर, यही स्थान हिन्दी के गढ़ थे। टण्डनजी और अनेक मित्रों ने अपने त्याग और तपस्या से प्रयाग को हिन्दी का गढ़ बनाया। यदि हम सन्तवर तुलसीदास की तरह हिन्दी का विस्तार चाहें तो हमें सन्तवर विनोबा जैसे उन लोगों की कदर करनी चाहिए जो हिन्दी में साँस लेते हैं और अपना चिन्तन इसी भाषा में विश्व को प्रदान कर देते हैं। इसी तरह हमें टण्डनजी के अस्तित्व और प्रयत्न को समझना चाहिए। हिन्दीवादी कहकर जिन लोगों में टण्डनजी का मजाक उड़ाया जाता है, वह पीढ़ी कहीं अस्तित्व में ही नहीं है। केवल भाषणकर्ताओं को अपनी गालियाँ देने के लिए सुलभ सीढ़ियाँ चाहिए इसीलिए हिन्दी शब्द का निर्माण किया गया है।

एक बार टण्डनजी ने मुसकराकर कहा था कि अब तो हिन्दी को सारे राष्ट्र की भाषा बनकर रहना पड़ेगा। उसकी विभक्ति, प्रत्ययों में ही नहीं, संज्ञा और सर्वनामों के रूप में परिवर्तन करना पड़ेगा। क्या आप उसके लिए प्रस्तुत हैं ? एक बार यह भी कहा था कि यदि हिन्दी का नाम भारती रहे तो कैसा रहेगा ? यह सन् '48 की बात है—सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन की।

मुझे यह सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ और हिन्दी-जगत् को यह सुनकर गर्व हुए बिना न रहेगा कि इस देश के एक प्रान्त की गवर्नरी टण्डनजी के सामने रखी गयी, तब उन्होंने अपनी साधु-सुलभ नम्रता के साथ इनकार कर दिया। इस विषय में उनका कथन बहुत आदरणीय था। उनके मत से यह काम छोटा नहीं है कि हमारे प्रदेशों में जहाँ-जहाँ गवर्नरियाँ कायम हुई हैं हम वहाँ के जनजीवन और गवर्नरों की सहायता करें। सन् 1924 में स्व. गणेशशंकरजी के फतेहपुर में चलने वाले राजद्रोह के मुकदमें में गणेशजी का वक्तव्य लिखने के लिए जब मैं टण्डनजी के पास कानपुर से प्रयाग गया, तब वे प्रयाग में रहकर वकालत करते थे और उन दिनों साधुवर श्री वियोगी हरि हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्यालय में टण्डनजी के साथ थे। उस समय टण्डनजी ने जो अंगरेजी में वक्तव्य लिखवाया था और जिसे गणेशजी ने कुछ नगण्य परिवर्तनों के साथ फतेहपुर की अदालत में पेश किया था, मैंने देखा कि उस वक्तव्य के लिखवाते समय कानून की या नीति-नियम की कोई भी झिझक टण्डनजी के चेहरे पर नहीं थी। मैं यह भी निवेदन कर दूँ कि कानपुर का 'प्रताप' उन दिनों इस देश की स्वाधीनता प्रवृत्तियों का गायक और नायक था तथा श्रद्धेय पुरुषोत्तमदासजी टण्डन उस पत्र के ट्रस्टियों में से एक थे।

हिन्दी कविता और हिन्दी गद्य के प्रति ही टण्डनजी का आकर्षण नहीं है, जब वे हिन्दी साहित्य सम्मेलनों में जाते थे, तब हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशकों की दूकानों पर जाकर कुछ-न-कुछ पुस्तकें अवश्य खरीदते थे। जिन दिनों वे लाहौर में पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर थे, उन दिनों वे अपने वेतन का भाग उस प्रदेश में चलायी जाने वाली हिन्दी पाठशालाओं के लिए खर्च कर देते थे। यह बात मुझसे सन् 1940 में स्व. गोस्वामी गणेशदत्तजी ने कही थी।

1920 में पटना हिन्दी साहित्य सम्मेलन के समय तथा 1924 में भी टण्डनजी कदाचित् दाढ़ी नहीं रखे हुए थे। वे सफेद रंग का फेंटा बाँधते थे। शरीर के बाह्य आवरण की ओर उनका कभी कोई ध्यान नहीं देखा गया। स्पष्ट दीखता है कि वे अपने शरीर के प्रति और अपने वस्त्रों के प्रति भी अत्यन्त उदासीन हैं। जाने कब से उन दिनों वे कच्चा भोजन करते थे। गेहूँ और चना ही नहीं, किसमिस भी भिगोकर भोजन में लेते थे। कभी-कभी जाड़ों में काली मटमैली ऊन की टोपी लगाते हैं। वह शुद्ध खादी की होती थी। जब से खादी प्रारम्भ हुई तभी से वे लगातार खादी ही पहनते हैं। आजकल वे शिरस्त्राण कुछ नहीं लेते।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

टण्डनजी की साहित्यिक प्रसिद्धि उनकी साहित्यिक सिद्धि है। यों तो उन्होंने 'बन्दर महाकाव्य' नाम का एक काव्य अवधी या बैसवाड़ी बोली में लिखा बताते हैं, किन्तु हिन्दी के उन्नयन में उन्होंने अपने को जीते-जी राष्ट्रभाषा भवन की नींव में गाड़ दिया-सा लगता है। इसी तरह उन्होंने पुस्तकों का ही नहीं, देश और हिन्दी की सेवा करनेवाले व्यक्तियों का निर्माण किया है। टण्डनजी के जीवन में ऐसा बहुत दिखाई देता है जो विरोधाभास-सा लगे। वे ऐसे जूते पहनते हैं जिससे चींटी भी न मरे। किन्तु जिन दिनों वे प्रयाग विश्वविद्यालय के विद्यार्थी थे, वे वहाँ की क्रिकेट टीम के कप्तान थे। वे अंगरेजी और उर्दू बहुत अच्छी बोलते और लिखते हैं। वे हिन्दी के इतने बड़े उन्नायक हैं कि उनके बिना हिन्दी की चर्चा त्रिवेणी के बिना प्रयाग की चर्चा के समान है।

देश के जो क्रान्तिकारी रहे हैं, उत्तर प्रदेश के अंचल में टण्डनजी उन तरुणों के प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। उनके काम करने की खूबी यह है कि किसी संस्था में यदि पचास सदस्य हों और उस संस्था में टण्डनजी की रुचि का एक भी सदस्य चुनकर न आने दिया जाये तब भी वे उस संस्था के साथ सहयोग करते रहेंगे। उनका-सा निर्वैर आदमी तथा उनके समान क्रियाशील सहनेवाला उद्‌भुत व्यक्तित्व मैंने पूज्यवर गांधीजी के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं देखा। मुझसे तो यह बात बुढ़ापे तक न सध सकी।

वे समय और काम में लगे मन को अकेले उतना अधिक नहीं चाहते, जितना इन दोनों को तथा अपनी गतिविधि को विचारकता से भर देना चाहते हैं। मैंने जब टण्डनजी को देखा, उन्हें सदैव किसी-न-किसी काम में उलझे हुए पाया । और उससे अधिक किसी-न-किसी विचार में डूबे हुए। लगता है, जीवन का कोई ऐसा कानून है जो इस व्यक्ति को और इसके आसपास के वातावरण को चैन से नहीं बैठने देता।

अपनी सन्तुलित शक्तियों को कभी बेकार न रहने देना, अपने सारे प्रयत्नों को केवल भारतीय स्वतन्त्रता और हिन्दी के उद्धार में लगाना, अपने ऊँचे चरित्र से निर्भीकतापूर्वक अपने विश्वासों को जनजीवन के बड़े से बड़े आदमी के सामने रखना, अपनी देवमूर्ति-जैसी निर्मलता, कोमलता और नम्रता को किसी भी मूल्य पर कभी न भूलना; जिस समय विनोद के क्षण हों, अपनी सिद्धान्तवादिता को याद रखना; शोध, व्यवसाय और साँस तीनों को अन्त:करण की उच्च दिशा में चलाना—ये एक ही पुरुषोत्तमदास के थोड़े से किन्तु अनेक स्वभाव हैं।

लगता है, कोई क्षण उनका शौक या दिखावा नहीं है। वे ऐसा क्षण कदाचित् जानते ही नहीं, जिस पर सिद्धान्तपूर्णता से उन्होंने अपने काम की मुहर न लगायी हो। दीर्घ यात्रा हो या अचानक का कहीं रहना, उनका जीवन तो एक समर्पित जीवन है जिसके साथ बड़ा और छोटा कोई भी खिलवाड़ नहीं कर सकता। उनके भोलेपन के कारण कितनी ही बार ऐसा लगता है, मानो किसी विषय पर उनका कोई मत नहीं है किन्तु परिणाम पर पहुँचने के लिए जब-जब टण्डनजी के सामने किसी ने प्रयत्न किया, उनका इमली के बीजों-जैसा नपा-तुला मत देखने तथा सुनने को मिला। टण्डनजी जिद्द नहीं करते, वे आग्रह करते हैं और उसकी सच्चाई में इतना अधिक विश्वास करते हैं कि रबड़ की तरह क्षण-क्षण लचकने वाला मनुष्य उनकी फौलाद जैसी दृढ़ता से घबड़ा जाता है।

गलतियों को स्वीकारने में उनकी कोमलता विलम्ब तो नहीं करती किन्तु वे प्रश्न की सब बाजुओं से बहस करते हैं और यदि उनकी दृढ़ता से प्रश्नकर्ता बीच में ही विषय को त्यागता है तो उसका उत्तरदायित्व टण्डनजी पर नहीं हो सकता। यों वे इस बात की भरपूर सावधानी रखते हैं कि उनकी बातों से आगन्तुक का मन न दुखे। मैंने अपराध की उस प्रवृत्ति में उन्हें कभी रस लेते नहीं देखा जिसे शपथपूर्वक बात कहते हैं। वे मानते हैं कि अपराध का पक्ष लेना मस्तिष्क रखने वाले के लिए स्वयं बड़ा अपराध है। यदि कभी किसी समूह में आप टण्डनजी को देखें तो टण्डनजी के स्वभाव, शील और सौजन्य के प्रति आप प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। आनन्द की बात यह है कि कोई भी चर्चा उनकी आदत नहीं हो गयी है। संसार के समस्त गम्भीर प्रश्नों पर वे उत्सुकतापूर्ण जिज्ञासु की तरह विचार करते हैं। उस समय लगता है कि उनकी शक्ति त्रिवेणी की धारा की तरह निर्मलतापूर्वक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बिना रुके बहती रहती है। यह बहुत बड़ी बात है कि कच्चे और भिगोये हुए अनाज को खाने की जिसने आदत डाली हो वह विचारों की और उनकी क्षय करने वाली ताकत की नाशक आदत से सदैव बचा रह सके। जब कि एक आदत से दूसरी आदत रखकर ही और उनकी सीढ़ियों पर अपने स्वभावों के पैर जमा-जमाकर ही मनुष्य आगे बढ़ता रहता है। लगता है, उन्होंने अपनी सम्पूर्ण अधोमुखी आदतों को ऊर्ध्वमुखी स्वभाव बना लिया है। उन्होंने अपने जीवन में जितना सहा है उतना कभी कहा नहीं । मानो सहते जाना वे पीढ़ियों की परम्परा बना देना चाहते हैं। धन की धनिकता हो या सम्पत्ति की धनिकता, रूप की धनिकता हो या ज्ञान की धनिकता—वे किसी को अपने गरीब देशवासी पर सवार होते नहीं देख सकते। कदाचित् इसीलिए जब मैं उनके पास ठहरा, मैंने वहाँ सन्तों का साहित्य ही पड़ा पाया।

इतनी कम आवश्यकताओं पर उन्हें जीवन की लगन लग गयी है मानो उनका अन्तर्बाह्य सन्तत्व झाँक-झाँक उठता है । उनकी साँस मानो उनके अस्तित्व का वह अधिकार है, जो अपने बूते देश की स्वतन्त्रता, विश्व के आदर्श दान और हिन्दी के उन्नयन का काम बराबर किए जायेगी। उनका जीवन डाकखाने की मुहर की तरह जहाँ पड़ता है, अपनी यादें छोड़ता जाता है और वस्तुओं, संस्थाओं और व्यक्तियों के रूप में निर्माण-कार्य किया करता है। रुपया यद्यपि उनके वचनों पर ढेरों एकत्र हो सकता है। एक एडवोकेट के नाते उनके मस्तिष्क में भी अनेक खूबियाँ हैं, किन्तु रुपया और मस्तिष्क की खूबियों से अधिक वे भारतीय संस्कृति का मूल्य आँकते हैं और भारतीय चरित्र को इतना ऊँचा उठाना चाहते हैं कि जिस पर रुपया और मस्तिष्क की शक्ति चढ़ायी जा सके। क्योंकि वे मानते हैं कि मस्तिष्क शक्ति बड़ी भले हो, वह किसी देश और जाति के चरित्र से ऊँची नहीं हो सकती, इसीलिए काव्य, चित्र, कलाकृति, नाटक और धर्मोपदेश इस सबसे परे पुरुषोत्तमदास टण्डन मानो गरीबों के जीवन में घुल-मिल जाना जानते हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ, वे मानते हैं कि जीवन की उच्चता उसका नाम है जिसके लिए कैफियतें नहीं देनी पड़ती हैं। यही कारण है कि टण्डनजी बापूजी द्वारा इतने सम्मानित किए गये कि यदि कभी महात्मा गांधी के साथ उनका मतभेद भी हो जाता तो महात्माजी टण्डनजी की श्रेष्ठता के कारण लगातार मतभेद के विषयों पर भी उनसे सलाह लेते रहते थे।

यदि एक हाथ में कोई सौभाग्य और दूसरे में जनसेवा लेकर आए तो जहाँ तक मैं जानता हूँ, टण्डनजी दूसरे को छाती से लगा लेंगे और पहले को ठुकरा देंगे। लगता है विश्व के यथार्थ शिक्षण और संस्कृति में वे कोई भेद नहीं मानते। जो बात उन्हें कहनी है, वह कहते रहे हैं और कहते रहेंगे। बच्चों से वही कहेंगे, जवानों से वही कहेंगे, बूढ़ों से वही कहेंगे। वे भले ही ऊँचे ग्रन्थों और व्यक्तियों के अवतरण अपने भाषणों में रखें किन्तु हिन्दी-संसार तो केवल उनकी तरफ देखकर, उनके समर्पण के स्वभाव की तरफ देखकर ही जीवित रहा है और जीवित रहेगा। यदि मैं हिन्दी-जगत् के हृदय को जानने का गर्व करूँ, तो हिन्दी-हित के लिए उन्हें किसी अन्य पवित्रता और आदर्शवाद की आवश्यकता नहीं है। उन्हें पुरुषोत्तमदास टण्डन की आवश्यकता है।

शब्दार्थ

आचरण व्यवहार **साश्रुनयन (स + अश्रुनयन)** आँसू भरी आँखें **यथार्थ** वास्तविक **आविष्कार** खोज **शिथिल** ढीला, मंद **उन्नयन** उठाना, उन्नत करना **नगण्य** बहुत कम **विलम्ब** देर **अधोमुखी** निम्न कक्षा की, बुरी **ऊर्ध्वमुखी** उच्च स्तर की, ऊपर की ओर मुँह वाली **शिरस्त्राण** युद्ध के समय सिर पर पहनने की लोहे की टोपी, शिरस्त्र ।

●●●

Downloaded from https:// www.studiestoday.com